भावार्थ रत्नाकर

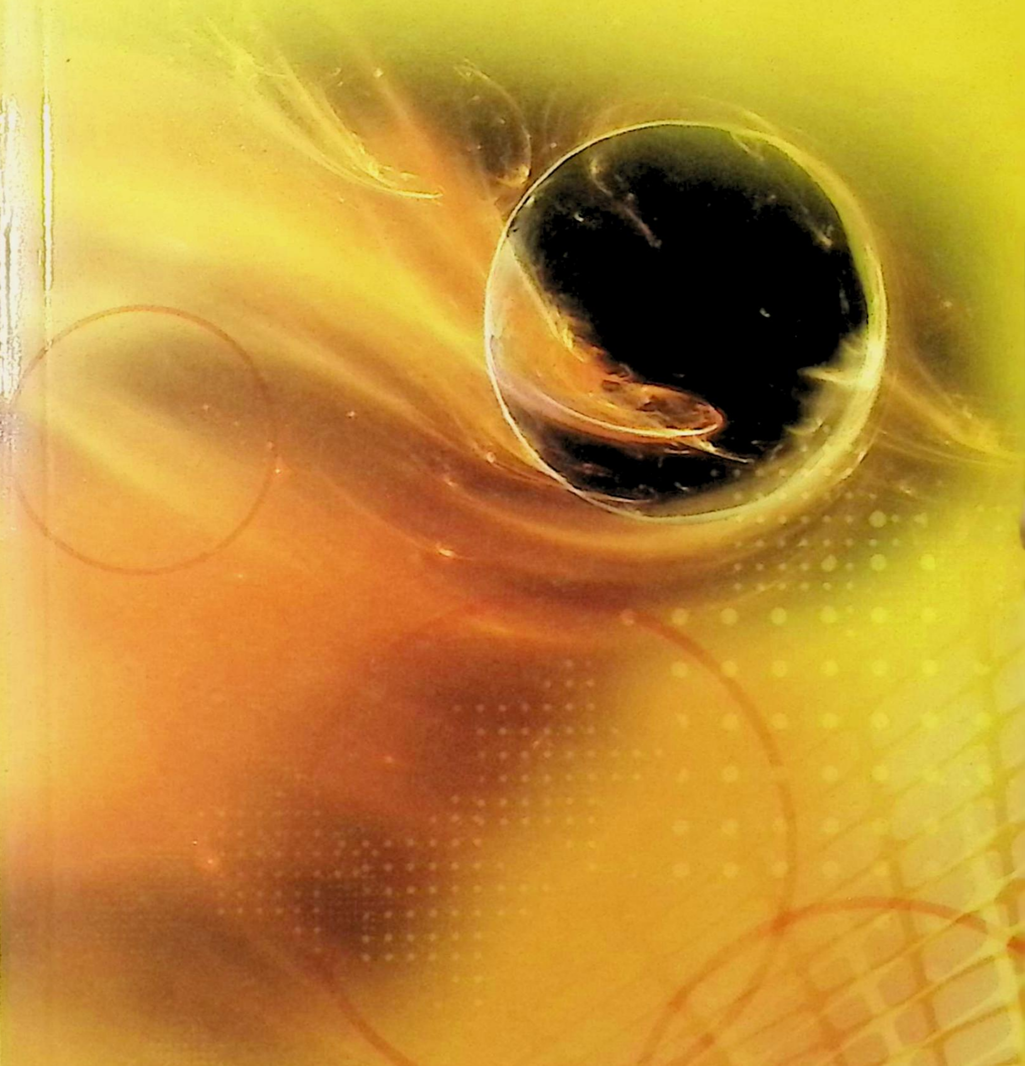

कृष्ण कुमार

भावार्थ रत्नाकर
कृष्ण कुमार

रामानुजाचार्य रचित

भावार्थ रत्नाकर

टीकाकार

कृष्ण कुमार

रामानुजाचार्य रचित

भावार्थ रत्नाकर

टीकाकार

कृष्ण कुमार

ALPHA

अल्फा पब्लिकेशन

2640, रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली - 110 006

प्रकाशक
ए. एल. जैन
अल्फा पब्लिकेशन
2640, रोशनपुरा,
नई सड़क दिल्ली-110 006
फोन : 011-23275468, 30251934

प्रथम संस्करण 2021
मूल्य : ₹ 200/-

पुस्तक मिलने का अन्य स्थान
अल्फा पब्लिशर डिस्टिबुयुट्रस
वुल मिल बेसमेंट
भारतीय विद्या भवन
फोन न: 23381369

टाइपसैटिंग
एच. आर. जी. कम्प्यूटर्ज़
दिल्ली-6

अपनी बात

नई शताब्दी के आरम्भ में मेरा सम्पर्क ज्योतिष शोध मंडल के सदस्यों से हुआ। बातचीत के दौरान भावार्थ रत्नाकर व उसके महत्व पर भी चर्चा हुई। वर्ष 2006 में लगभग 8 माह तक इस श्रेष्ठ कृति का अध्ययन व अध्यापन चला।

आदरणीय डॉ. बी.वी. रमण ने अंग्रेज़ी में, तो श्री जगन्नाथ भसीन ने हिन्दी में इस ग्रन्थ पर टीका लिखी है। श्री गोपेश कुमार ओझा ने अपनी फलदीपिका में भावार्थ रत्नाकर के योगों का संकलन किया है।

श्री रामानुजाचार्य का यह ग्रन्थ निश्चय ही उत्कृष्ट व अद्वितीय है। कदाचित पहली बार द्वादश लग्न पर ऐसा गहन व सटीक विचार इस पुस्तक में हुआ है। शोधार्थियों का आग्रह था कि सूत्र-परीक्षण के लिए लग्न परक कुण्डली संग्रह भी इसमें संलग्न किया जाना चाहिए। पाठकों की सुविधा के लिए 587 कुण्डलियाँ भी सम्मिलित की गईं।

इस कृति का दूसरा खंड विभिन्न योगों पर प्रकाश डालता है। निश्चय ही यह इस पुस्तक का अति महत्वपूर्ण व उपयोगी भाग है।

परस्पर विचार-विमर्श से उपजे विचार व टिप्पणियों का संकलन कब एक पुस्तक बन गया–मुझे तो पता भी नहीं चला।

कुण्डली संग्रह व टीका टिप्पणी के कारण पुस्तक का आकार निश्चय ही बढ़ गया है। किन्तु शायद आकार से कहीं ज़्यादा उपयोगिता बढ़ी है, ऐसा शोधकर्ताओं का विश्वास है।

मैं सर्वश्री राजेश चन्द्र गुप्त, श्री प्रकाश चन्द्र, नीरज खरबन्दा, सचिन सैनी, अनुराग बागड़िया, धर्मवीर तथा श्रीमती सुमेधा कक्कड़ का आभारी हूँ जिनके सहयोग से पुस्तक का प्रारूप तैयार हुआ।

इस पुस्तक में श्री रामानुजाचार्य के विचार व अनुभवों को संजोने का प्रयास हुआ है–यदि कहीं टीका या व्याख्या में मेरी अज्ञानता या प्रमाद से कोई दोष उत्पन्न हुआ हो तो उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

गोपाल की करी सब होई

जो अपना पुरपारथ मानै अति झूठौ है सोई।

सो ये कृति मेरी नहीं है यह तो उस की है जो सदा सबकुछ किया करता है–फिर ये मैं कौन?

बी–1/120
पशिचम विहार
नई दिल्ली–110 063

विद्वत्जन कृपाभिलाषी
कृष्ण कुमार
011-25282850
मोबाईल-(0)9818723460

कृतज्ञता ज्ञापन

परमज्योति के उपासक दिव्य दृष्टा ऋषि मुनि व योगियों ने मानव मात्र के कल्याण के लिए इस ज्ञान का विकास किया, मैं उनका आभारी हूँ।

हज़ारों वर्षों से ज्योतिर्विज्ञान के उपासक इस ज्ञान से समाज का कल्याण व मार्गदर्शन कर रहे हैं वे सभी प्रशंसा के पात्र हैं।

भारत की प्राचीन धरोहर की रक्षा के लिए अनेक विद्वान, ज्योतिष के पठन-पाठन, लेखन प्रकाशन व साहित्य वितरण सम्बन्धी कार्यों से जुड़े हैं वे सभी आदर व प्रशंसा के पात्र हैं। उनको शत-शत नमन।

मेरे गुरुजन श्री रोहित वेदी, श्री रंगाचारी, डॉ. श्रीकान्त गौड़, श्री विनय आदित्य, श्री एस.एस. रुस्तगी, श्री के थ्यागराजन व डॉ. प्रवीण कुमार ने मेरा उत्साह व मनोबल बढ़ाया। मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

श्री अमृतलाल जैन, उनके पुत्र श्री देवेन्द्र व पुनीत जैन तथा कार्यदल के सभी सदस्यों ने निष्ठापूर्वक श्रम कर इस पुस्तक को सजाया व सँवारा। वे निश्चय ही प्रशंसा के पात्र हैं।

मेरे छात्र, प्रशंसक, मित्र व पाठक मेरी लेखनी की प्राण शक्ति हैं। उनके बिना इस पुस्तक का लेखन-सम्पादन असम्भव था-वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

-कृष्ण कुमार

भावार्थ रत्नाकर एक दृष्टि में

द्वादश लग्न विचार

1. मेष लग्न जातक	45 कुण्डलियाँ
2. वृष लग्न जातक	46 कुण्डलियाँ
3. मिथुन लग्न जातक	44 कुण्डलियाँ
4. कर्क लग्न जातक	59 कुण्डलियाँ
5. सिंह लग्न जातक	58 कुण्डलियाँ
6. कन्या लग्न जातक	42 कुण्डलियाँ
7. तुला लग्न जातक	60 कुण्डलियाँ
8. वृश्चिक लग्न जातक	45 कुण्डलियाँ
9. धनु लग्न जातक	53 कुण्डलियाँ
10. मकर लग्न जातक	41 कुण्डलियाँ
11. कुम्भ लग्न जातक	43 कुण्डलियाँ
12. मीन लग्न जातक	51 कुण्डलियाँ
	587 कुण्डलियाँ

विविध योग विचार

13. धनयोग विचार
14. विद्या विचार
15. खान-पान (भोजन रुचि)
16. भ्रातृ सुख
17. वाहन तथा भाग्य
18. शत्रु और रोग
19. स्त्री और काम सुख
20. आयु और स्वास्थ्य
21. भाग्ययोग
22. राजयोग
23. तीर्थ यात्रा व स्नान
24. मृत्यु योग
25. दशा के परिणाम
26. सामान्य योग
27. ग्रह मालिक योग

परिशिष्ट

1. ग्रह व राशि सम्बन्ध
2. 32 नाभस योग-महर्षि पाराशर कृत
3. फलकथन के नियम

भावार्थ रत्नाकर–श्री रामानुजाचार्य कृत

विषय सूची

अध्याय विषय पृष्ठ संख्या

1. मेष लग्न

1.2 चतुर्थे पंचमेश का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध योग कारक 1.3 शुक्र प्रबल मारक 1.4 मृत्युखंड में गुरु भी मारक 1.6 मंगल चोट या व्रण से कष्ट देता है। 1.7 बुध और मंगल की युति होने से बुध की दशा में चोट लगने से मृत्यु भय 1.9 द्वितीयेश शुक्र व्यय भाव में भी शुभ है 1.11 द्वितीय भाव में लग्नेश, भाग्येश व स्वक्षेत्री धनेश की युति धन प्रदायक 1.13 पंचम भाव में मंगल धन प्रदायक है 1.15 षष्ठ भाव में लग्नेश की षष्ठेश से युति रोग कारक 1.16 अष्टमस्थ शुभ है 1.19 सूर्य व बुध की दशा शुभ है 1.21 सूर्य और चन्द्रमा राजयोग देते हैं। मेष लग्न की 45 उदाहरण कुण्डलियाँ।

2. वृष लग्न 16–27

2.1 शनि योग कारक होने पर भी सूर्य या बुध की दृष्टि युति के बिना शुभ फल नहीं देता 2.2 भाग्यस्थ मंगल गुरु की युति शुभ है 2.3 चतुर्थस्थ चन्द्रमा पर धनेश बुध व लाभेश गुरु की दृष्टि धन प्रदायक 2.4 सूर्य+शनि की लाभ स्थान में युति तथा 2.5 बुध और गुरु का परस्पर सम्बन्ध धन प्रदायक है 2.6 मंगल की बुध या गुरु से दृष्टि–युति ऋण भार बढ़ाती है 2.8 बुध गुरु पर शुक्र की दृष्टि योग कारक है 2.9 नीचस्थ गुरु की दशा में भाग्योदय 2.11 गुरु की दशा धन प्रदायक 2.12 षष्ठ भाव की दुर्बलता शुभ फल देती है। वृष लग्न की 46 कुण्डलियाँ।

3. मिथुन लग्न 28–39

3.1 तृतीय भाव में सूर्य बुध की युति होने से बुध की दशा मुक्ति धन प्रदायक 3.2 द्वितीय भाव में चन्द्रमा के साथ मंगल और शुक्र की युति होने से शुक्र की दशा धन वैभव देती है 3.3 लाभेश मंगल द्वितीयस्थ होने पर अपनी दशा में धन लाभ देगा 3.4 धन भाव में शनि मंगल की युति पर चन्द्रमा की दृष्टि शनि–मंगल में धन हानि देती है। 3.5 चन्द्रमा व मंगल लाभ और शनि भाग्य स्थान में होने पर धन लाभ 3.7 नवम भाव में गुरु शनि की युति तीर्थ यात्रा व स्नान देती है 3.8 लाभस्थ बुध बड़े भाई से वैर विरोध कराता है। मिथुन लग्न की 44 कुण्डलियाँ।

4. कर्क लग्न 40–54

4.1 गुरु अधिक धन नहीं देता 4.2 स्वक्षेत्री मंगल योगकारक होने से विशेष शुभ है 4. 3 लाभेश शुक्र व्यय भाव में भी शुभ है 4.4 चन्द्र मंगल गुरु की धन भाव में युति भाग्यवृद्धि करती है 4.5 पंचम भाव की तुला राशि में बुध, शुक्र की युति बुध की दशा को शुभता देती है 4.6 सूर्य गुरु का उच्चस्थ तथा चन्द्र बुध शुक्र की लाभ स्थान में युति महाराजा योग बनाती है 4.7 सूर्य मंगल की दशक भाव में युति धनी बनाती है 4. 9 व्यय भाव में शुक्र बुध की युति, शुक्र की दशा में राजयोग देगी 4.10 लग्न में लग्नेश चन्द्र व भाग्येश गुरु की युति भाग्य व यश बढ़ाए 4.11 चन्द्रमा लग्न में तथा मंगल सप्तम भाव में उच्चस्थ होने से राजयोग देगा 4.12 स्वगृही चन्द्रमा पर उच्चस्थ शनि की दृष्टि

राजयोग देती है 4.13 लग्नेश लग्न में व सूर्य दशम भाव में सूर्य उच्चस्थ होने से राजयोग जानें 4.14 धनेश सूर्य की व्ययेश बुध के साथ लग्न में युति सूर्य की दशा में अर्थ संकट देगी 4.15 शनि और राहु पंचम भाव में तथा गुरु बुध लाभ स्थान में होने से राहु की दशा गंगा स्नान का सुख देगी। कर्क लग्न की 59 कुण्डलियाँ।

5. सिंह लग्न 55-67

5.1 सूर्य, मंगल, बुध की युति से धन लाभ (10 उदाहरण) 5.2 सूर्य, बुध का परस्पर सम्बन्ध धन वैभव देगा (12 उदाहरण) 5.4 गुरु शुक्र की युति अनिष्टप्रद 5.5 दशम भाव में शुक्र अशुभ किन्तु तृतीय भाव में शुभ है 5.7 भाग्येश के साथ बैठा शनि व्यय भाव में भी शुभ है। सिंह लग्न की 59 कुण्डलियाँ।

6. कन्या लग्न 68-77

6.1 व्ययेश सूर्य की युति लाभेश या धनेश से होने पर सूर्य की दशा धन व मान बढ़ाती है 6.2 व्ययेश की युति धनेश से होने पर धनेश शुक्र की दशा हानि करती हैं 6.3 लाभेश चन्द्रमा की युति व्ययेश से होने पर चन्द्रमा की दशा मिश्रित फल देती है 6.4 सप्तम भाव में चन्द्रमा की शुक्र से युति पर लाभस्थ गुरु की दृष्टि उत्तम स्त्री सुख देती है 6. 5 गुरु और शुक्र की युति चतुर्थ भाव में होने से दोनों ग्रह अपनी दशा में शुभ फल देते हैं 6.6 लाभस्थ शनि अशुभ नहीं अपितु शुभ है। कन्या लग्न की 42 कुण्डलियाँ।

7. तुला लग्न 78-92

7.1 योगकारक शनि की दशा धन प्रदायक है 7.2 त्रिषडायेश गुरु की दशा भी धन देगी 7.3 मंगल मारक नहीं है 7.4 शुक्र व गुरु की युति पर मंगल शनि की दृष्टि होने पर गुरु-शुक्र की दशा में रोग पीड़ा व देह कष्ट होता है 7.5 सूर्य बुध की व्यय भाव में युति पर शनि की दृष्टि, पिता को धनी व मध्यम आयु का बनाती है 7.6 सूर्य मंगल बुध शनि का परस्पर दृष्टि युति व राशि सम्बन्ध भाग्य वृद्धि देगा 7.7 सूर्य, मंगल, बुध, शनि सम्बन्ध में चन्द्रमा जुड़ने से उत्कृष्ट राजयोग होता है 7.8 लग्न में लाभेश सूर्य के साथ भाग्येश बुध व लग्नेश शुक्र की युति लग्न में होने से जातक भाग्यशाली होता है 7.9 मंगल बुध की लाभ स्थान में युति राजयोग देती है 7.10 दशमेश चन्द्रमा लग्नस्थ तथा गुरु षष्ठ या व्यय भाव में हो तो शनि की दशा बहुत शुभ होती है 7.11 योगकारक शनि लग्न में उच्चस्थ व दशमेश स्वगृही होने से प्रबल राजयोग जानें 7.12 दशमस्थ राहु तीर्थयात्रा कराता है तुला लग्न की 60 कुण्डलियाँ।

8. वृश्चिक लग्न 93-103

8.1 धनेश गुरु व लाभेश बुध की युति धन या लाभ भाव में होने से धन व सुयश प्राप्त होता है 8.2 तृतीय भाव में नीचस्थ गुरु जातक को उदारता व परोपकार की प्रवृति देता है 8.3 सूर्य, बुध, शुक्र की सप्तम भाव में युति बुध की दशा में धन व सुयश देगी 8.4 पंचम भाव में बुध गुरु की युति पर लाभस्थ चन्द्रमा की दृष्टि धनी, मानी व भाग्यशाली बनाती है 8.5 नवम भाव में चन्द्र, गुरु और केतु की युति होने से गुरु की दशा भाग्य वृद्धि धन व यश तो केतु की दशा आध्यात्मिक सुख देगी 8.5 डॉ.बी.वी. रमण के विचार। वृश्चिक लग्न की 45 कुण्डलियाँ।

9. धनु लग्न 104-115

9.1 पंचमस्थ शनि की दशा धन व यश देती है 9.2 लाभ स्थान में बैठे उच्चस्थ शनि की दशा धन लाभ व सत्ता सुख देती है, उदाहरण सम्राट नीरो 9.3 नवम भाव में भाग्येश व लाभेश की युति पर तृतीयस्थ शनि की दृष्टि हो तो शनि धन व भाग्य वृद्धि देगी 9.4 नवम भाव के राहु पर तृतीय भाव में बैठे सूर्य मंगल की दृष्टि होने से राहु की दशा में तीर्थ स्थान का सुख होगा 9.5 डॉ. बी.वी.रमण के विचार धनु लग्न की 53 कुण्डलियाँ।

10. मकर लग्न 116-126

10.1 शुक्र सप्तम में बुध अष्टम भाव में तथा गुरु लग्न में नीचस्थ होने पर जातक निर्धन व दीर्घायु होता है 10.2 स्वक्षेत्री शुक्र पंचम भाव में धन प्रदायक है किन्तु दशमस्थ शुक्र दिग्बल से हीन होने से धन मान नहीं दे पाता 10.3 बुध शुक्र की लग्न में युति हो तथा पंचम भाव में उच्चस्थ चन्द्रमा गुरु से दृष्ट हो तो महाराजा योग होता है। 10.4 तृतीयेश गुरु लग्न में नीचस्थ हो तथा लाभ स्थान में मंगल और शुक्र की युति हो तो भाइयों से धन मिलता है। 10.6 सूर्य चन्द्रमा और बुध की युति लग्न में हो तथा मंगल और शुक्र व्यय भाव में हो तो जातक के भाई धनी व भाग्यशाली होते हैं। 10.7 भाग्येश बुध की लग्नेश-लाभेश शनि के साथ नवम भाव में युति तथा मंगल और शुक्र व्यय भाव में हो तो भाग्यवृद्धि होती है 10.8 लाभेश मंगल लग्न में उच्चस्थ होकर स्वक्षेत्री चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक राजयोग पाता है।

11. कुम्भ लग्न 127-141

11.1 सिंह या कुम्भ लग्न में नवमेश दशमेश की युति योगकारक नहीं होती 11.2 शुक्र की राहु के साथ लगन में युति हो तथा सूर्य दशम भाव में हो तो राहु और गुरु की दशाएँ धन, मान व सुख देंगी 11.3 अष्टम भाव में सूर्य और मंगल की युति हो तो बुध की दशा धन देगी 11.4 धनेश व लग्नेश की राशि परिवर्तन होने पर शनि की दशा बहुत शुभ परिणाम देगी 11.5 लाभ स्थान में शुक्र और शनि की युति होने से शुक्र की दशा शुभ फल देती है 11.6 सूर्य, बुध, गुरु की युति तृतीय भाव में होने से सूर्य की दशा धन व सत्ता सुख देगी उदाहरण पैगम्बर हज़रत मौहम्मद साहेब 11.7 डॉ. बी.वी. रमण के विचार व श्री ब्रज किशोर व डॉ.बी.वी.रमण की कुण्डलियाँ कुम्भ लग्न की 46 कुण्डलियाँ।

12. मीन लग्न 142-157

12.1 कुम्भ व मीन लग्न के लिए व्ययस्थ शुक्र शुभ नहीं है। कारण शनि क्षेत्री शुक्र प्राय: शुभ फल नहीं दे पाता 12.2 लाभेश शनि का व्ययस्थ होना शनि को शुभ बनाता है किन्तु व्यय भाव में बैठा चन्द्रमा बहुधा अनिष्टप्रद होता है 12.3 गुरु की दशा में व्ययस्थ चन्द्रमा अशुभ परिणाम नहीं देता 12.4 धनेश पंचमेश का राशि परिवर्तन पंचमेश चन्द्रमा की दशा में धन लाभ देता है 12.6 षष्ठस्थ गुरु, अष्टम भाव में शुक्र तथा नवम भाव में शनि और चन्द्रमा मंगल की युति लाभ स्थान में होने से जातक भाग्यशाली होता है। 12.7 लाभ स्थान में चन्द्र, मंगल और बुध की युति धन व वाहन सुख देती है 12.8 शनि व चन्द्रमा की युति लग्न में हो, शुक्र षष्ठस्थ व मंगल लाभ स्थान में होने पर

शुक्र की दशा धनप्रदायक होती है 12.9 चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु की युति सुख स्थान में होने से जातक धन, वैभव, यश व सत्ता सुख पाता है 12.10 दशम भाव में स्वक्षेत्री गुरु धन लाभ व सत्ता सुख देता है 12.11 चन्द्रमा तृतीय भाव सूर्य षष्ठभाव, बुध सप्तम, शुक्र अष्टम, गुरु दशम, मंगल लाभ व शनि कम भाव में होने पर जातक भाग्यशाली व यशस्वी होता है। मीन लग्न की 51 कुण्डलियाँ।

13. धन योग विचार **158–162**

13.1 धनेश का पंचमेश या लाभेश से परिवर्तन 13.2 पंचम व नवम भाव अपने स्वामी से युक्त हों 13.3 लाभेश व धनेश का परस्पर दृष्टि, युति या धन भाव अपने स्वामी की दृष्टि युति पाने से धन लाभ व यश देते हैं 13.4 धन की सादृश्यता (धनेश, लाभेश, पंचमेश, नवमेश) न होने पर बहुधा अधिक धन नहीं मिल पाता, 13.5 धनेश या लाभेश की व्ययेश के साथ युति धन योग 13.6 गुरु तथा बुध का धनेश से दृष्टि–युति सम्बन्ध 13.7 लग्नेश लग्न में, धनेश धन भाव में तथा लाभेश लाभ स्थान 13.8 लग्न में धनेश और लाभेश की युति धन, मान व सुयश देती है 13.9 कारक ग्रह का सम्बन्धित भाव में बैठना 13.10 यदि चंद्रमा सप्तमेश होकर धन (द्वितीय) भाव में स्थित 13.11 लग्नेश, सुखेश व भाग्येश की युति अष्टम भाव में होने पर अर्थ संकट व दरिद्रता हो 13.12 धनेश का व्ययेश से राशि परिवर्तन व्यय बढ़ाकर आर्थिक संकट देता है 13.13 व्ययेश लग्नस्य होकर मारकेश से दृष्ट हो तो सुख–वैभव में कमी होती हैं 13.14 मंचमेश षष्ठ तथा नवमेश अष्टम भाव में मारक ग्रह से दृष्ट भी हो तो धन की कमी होती है।

14. विद्या विचार **163–166**

14.1 चतुर्थ भावस्थ शुक्र गायन विद्या में रुचि देता है 14.1 II चतुर्थभाव में स्थित बुध ज्योतिष में रुचि देगा 14.2 पंचम भाव में स्थित सूर्य की युति बुध या राहु से होने पर जातक ज्योतिष या विष चिकित्सक होता है 14.3 द्वितीय भाव में सूर्य और बुध की युति गणित में कुशलता देती है 14.4 द्वितीय भाव में सूर्य मंगल की युति तर्क शास्त्री बनाती है (ii) सूर्य, बुध और शनि की युति पंचम भाव में होने से जातक वेदान्ती होता है
14.5 (i) सूर्य, बुध यदि केन्द्र त्रिकोण या लाभ भाव में युति करें तो जातक कम्प्यूटर कुशल होता है (ii) द्वितीयस्थ शुक्र जातक को आशु कवि बनाता है 14.6 (i) पंचमस्थ राहु जातक को गूढ़ विद्या का ज्ञाता बनाता है (ii) चतुर्थस्थ राहु माता को दीर्घायु बनाता है 14.7 द्वितीयस्थ गुरु स्वक्षेत्री या उच्चस्थ हो तो जातक वेद वेदांग में निपुण होता है 14.8 द्वितीयेश की युति गुरु के साथ केन्द्र या त्रिकोण भाव में हो तो अनेक विषयों का ज्ञाता व प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है 14.9 द्वितीयस्थ मंगल तर्क कुशल हो तो इसी भाव में बैठा चन्द्रमा धार्मिक पूजा अनुष्ठान में रुचि देता है 14.10 द्वितीय भावस्थ शुक्र काक व अलंकार का ज्ञाता तो शनि मूर्ख व दुष्ट बनाता है।

15 खान पान **167–170**

15.1 तृतीय भाव का संबंध शनि से होने पर जातक खट्टे या कड़वे पदार्थ खाने में रुचि लेता है 15.2 तृतीयस्थ मंगल गरम भोजन में रुचि देता है तो इसी भाव में स्थित गुरु सात्विक भोजन में रुचि देगा 15.3 द्वितीस्थ शुक्र जातक के राजसी भोजन में रुचि देगा 15.4 द्वितीयस्थ शनि वाणी में कटुता या कठोरता देता है (ii) द्वितीय भाव में गुरु या केतु

की स्थिति वार्ता कुशल बनाती है 15.5 द्वितीय भाव में सूर्य मंगल की युति वाणी में क्षोभ व कटुता देती है (ii) चन्द्रमा द्वितीयस्थ होने से जातक को प्रिय व मधुरभाषी बनाता है 15.6 द्वितीस्थ बुध तथ्य परक व प्रमाणिक बातें कराता है इसी भाव का राहु वाणी में कपट व दीनता देता है 15.7 द्वितीस्थ शुक्र खीर व दुग्ध उतपाद में रुचि देता है (ii) द्वितीय भाव में बैठा राहु बिना संकोच व पूर्वाग्रह के सभी प्रकार के भोजन में रुचि देता है 15.8 द्वितीयस्थ शनि हीन व उच्छिष्ट भोजन दिलाता है 15.9 ग्रहों की स्वाद तालिका 15.10 ग्रहो की दिशा तालिका 15.11 द्वितीय भाव, द्वितीयेश या कारक चन्द्रमा से राहु का दृष्टि युति संबंध मादक पदार्थ में रुचि देता है।

16. भ्रात भाव **171**

16.1 तृतीयेश का मंगल के साथ संबंध बल, पराक्रम व भाइयों के सुख की वृद्धि दर्शाता है 16.2 तृतीय भाव में सूर्य मंगल व तृतीयेश की युति जातक को साहसी व धैर्यवान बनाती है 16.3 तृतीयस्थ राहु जातक को साहसी तो कभी उद्दंड बनाता है 16.4 मंगल का संबंध गुरु से होने पर भाइयों की संख्या अधिक होती है 16.5 लाभस्थ मंगल शनि की दृष्टि बड़े भाई का अभाव देती है (1) इसी प्रकार अष्टमस्थ तृतीयेश भाइयों को अल्पायु बनाता है 16.6 द्वितीयेश व तृतीयेश की युति उदार व परोपकारी बनाती है।

17 वाहन तथा भाग्य **172-173**

17.1 लग्न में चतुर्थेश व नवमेश की युति भाग्य व वाहन सुख देती है 17.2 चतुर्थ भाव में चतुर्थेश और शुक्र की युति उत्तम वाहन देगी सुखेश व शुक्र की युति नवम, दशम या लाभ स्थान में होने से उत्तम वाहन सुख जानें17.3 चतुर्थ भाव में स्थित शनि जन्म स्थान से दूर परदेस में पुराना मकान दिलाता है 17.4 सुखेश का भाग्येश के साथ राशि परिवर्तन भाग्य वृद्धि व वाहन सुख देता है, सुखेश का लाभेश के साथ स्थान परिवर्तन धन, मान व यश तथा सुख देता है 17.5 सुखेश व लग्नेश का परस्पर संबंध भूमि भवन, वाहन का श्रेष्ठ सुख (ii) चतुर्थ व पंचम भाव अपने स्वामियों से दृष्ट या युक्त से तो जातक विद्वान व सुखी होता है 17.6 पंचमेश भाग्य भाव में और भाग्येश दशमस्थ हो तो जातक भाग्यशाली और वाहन सुखी होता है 17.7 गुरु का संबंध पंचमेश से हो या लग्नेश, पंचमेश और गुरु केन्द्र/त्रिकोण में हों तो उत्तम पुत्र सुख होता है।

18 शत्रु व रोग विचार **174**

18.1 अष्टमेश का लग्न में बैठना रोग व पीड़ा देता है (ii) षष्ठेश लग्नस्थ होने पर ऋण, रोग व शत्रु भय देता है 18.2 लग्नेश, षष्ठेश की सूर्य से युति पित्त या गर्मी से उत्पन्न रोग किन्तु 12+62 की चन्द्रमा से युति जल संबंध या शीत रोग देती है। लग्नेश या षष्ठेश के साथ मंगल मांस पेशियों का रोग, बुध स्नायुपर्वक रोग, गुरु आरोग्य व स्वस्थ देह, शुक्र यौन या रतिज रोग, शनि चोर भय राहु विष संक्रमण से कष्ट तो केतु दस्यु से पीड़ा देता है 18.3 षष्ठेश नीचस्थ या व्यय भाव में हीन बली हो और लग्नेश बली हो तो आरोग्य लाभ होता है (ii) षष्ठेश का शुभ ग्रहों से संबंध शत्रु से मैत्री कराता है

19 स्त्री व काम सुख **175-176**

19.1 सप्तम भाव, सप्तमेश व शुक्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि युति श्रेष्ठ दाम्पत्य सुख देती है 19.2 सप्तम भाव, सप्तमेश और शुक्र का पाय पीड़ित होना विवाह में अनबन व क्लेश

देता है 19.3 विवाह कारक शुक्र पर मंगल और शनि का पाप प्रभाव पति या पत्नी की मृत्यु व पुनर्विवाह योग देता है 19.5 कुटुम्ब भाव में शनि और सप्तम भाव में राहु विवाह में विघ्न बाधा तो कभी पुनर्विवाह देता है 19.7 शनि और शुक्र की सप्तम भाव में युति सुदीर्घ काल तक श्रेष्ठ दाम्पत्य सुख देती है 19.8 सप्तमस्थ गुरु मनवांछित पति/पत्नी दिलाता है 19.11 सप्तमस्थ राहु जातक को रति कुशल, बुद्धिमान व सक्षम बनाता है।

20 आयु व स्वास्थ्य 177–178

20.1 गुरु का संबंध लग्न या लग्नेश होने पर जातक स्वस्थ व दीर्घायु होता है 20.2 शनि की अष्टमेश से युति दीर्घायु देती है 20.4 लग्न में अष्टमेश और केतु की युति अल्पायु बनाती है 20.5 सूर्य की दृष्टि-युति नवमेश से हो तो पिता को दीर्घायु जानें 20.7 नवमस्थ सूर्य पिता के सुख में कमी करता है 20.8 नवमेश यदि लाभस्थ हो तो पिता दीर्घायु व धन लाभ में सहायक होता है 20.13 पंचमस्थ गुरु पुत्र की आयु क्षीण करता है 20.15 चन्द्रमा की सुखेश के साथ नवम, दशम या लाभ भाव में युति माता को दीर्घायु बनाए 20.17 हीन बली चन्द्रमा, चतुर्थ भाव व चतुर्थेश पर शनि की दृष्टि माता को अल्पायु बनाती है।

21 भाग्य योग 179–183

21.1 भाग्य व लाभ स्थान का परस्पर संबंध जातक को भाग्यशाली व धनी-मानी व्यक्ति बनाता है 21.2 तीन या चार राशियों में दो ग्रहों का साथ बैठना भाग्यशाली बनाता है 21.4 चन्द्र बुध गुरु शुक्र पाप प्रभाव से मुक्त हो तो धन व यश मिलता है 21.5 पाप ग्रह सूर्य, मंगल, शनि, राहु केतु त्रिषडाय में होने से जातक भाग्यशाली व प्रतिष्ठित होता है 21.6 व्यय भाव मे बैठा ग्रह अपने कारकत्व की वृद्धि करता है 21.7 चतुर्थेश-सप्तमेश, नवमेश की युति शुक्र के साथ भाग्य या लाभ स्थान में हो तथा इस युति पर शनि की दृष्टि हो तो शनि की दशा में वाहन प्राप्ति होती है 21.8 लग्नेश, सुखेश और भाग्येश की केन्द्र स्थान में युति सत्ता सुख देती है 21.9 पंचम या नवम भाव का उच्च ग्रह धन व यश देगा 21.11 नवमेश और सूर्य की युति कम भाव में होने से पिता के कारण विभिन्न भोग मिलते हैं 21.3 कारक ग्रह संबंधित भाव से उपचय भाव 3,6,10,11 भाव में नीचस्थ होने पर भी शुभ फल देता है 21.14 व्यय भाव में बैठे ग्रह शुभ होते हैं 21.15 षष्ठ भाव का बुध लाभप्रद है 21.16 पंचमेश और गुरु उच्चस्थ होने पर भाग्यशाली सन्तान का सुख देते हैं।

22 राजयोग 184–189

22.1 धनेश और पंचमेश की युति 2,5,9,10 भाव में राजयोग देगी 22.2 धनेश और लाभेश की युति दशम भाव में होने से सत्ता सुख होता है 22.3 राहु 4,5,10,11 भाव में होने पर अपनी दशा मुक्ति में धन मान व सत्ता सुख देता है 22.5 तृतीय भाव में चन्द्रमा और शुक्र की युति होने से शुक्र की दशा धन-वैभव देती है 22.7 दशमेश होकर गुरु का तृतीस्थ होना भाई से अनबन व धन लाभ देता है 22.8 भाग्येश गुरु अष्टम भाव में होने पर भी धन लाभ देता है 22.9 नवमेश युक्त अष्टमेश की दशा धन देती है 22.11 दशमेश से दृष्टि-युति प्राप्त लाभेश अपनी दशा में सत्ता लाभ देता है 22.13 दशमेश लाभेश का परस्पर संबंध होने पर सप्तमस्थ शनि धन व सुख देता है 22.14 तृतीय या नवम भाव में स्थित शनि शुभ देता है 22.15 व्यय भाव में स्थित गुरु

मरणोपरान्त उत्तम लोकों की प्राप्ति कराता है 22.16 नवमेश और दशमेश की युति नवम या दशम भाव में होने पर उत्तम राजयोग जाने 22.17 नवमेश दशमेश का परस्पर राशि परिवर्तन हो 22.18 नवम और दशम भाव अपने स्वामियों से युक्त हो तो श्रेष्ठ राज योग होता है 22.19 पंचमेश और दशमेश की युति 5 या 10 वें भाव में हो तो राजयोग जानें 22.20 भाग्येश और दशमेश की युति लग्न या सप्तम भाव में हो तो उत्तम राजयोग होगा

तीर्थ स्नान 190-194

23.1 दशमेश के साथ गुरु का दृष्टि-युति संबंध धार्मिक व सदाचारी बनाता है 23.2 पंचमेश या नवमेश का संबंध सप्तमेश या दशमेश से, जल तत्व राशि में, होना तीर्थ स्नान योग देता है 23.4 मिथुन लगन जातक दशमेश गुरु की युति शनि से हो तो ये दोनों ग्रह अपनी दशा में तीर्थ स्नान कराते हैं 23.5 मेष लग्न जातक का सूर्य, शुक्र व गुरु यदि दशम भाव में युति करें तो जातक गंगास्नान करता है 23.6 गुरु के साथ दशमेश की धार्मिक उत्सव व अनुष्ठान में रुचि देती है 23.8 डॉ.बी.वी रमण की कुण्डली 23.9 वैरागी सन्त की कुण्डली

24. मृत्यु योग 195-198

24.1 द्वादशेश में द्वितीयेश की मुक्ति या कमेश में धनेश की मुक्ति मृत्यु देगी 24.2 व्ययेश की दशा में धनेश से संबंध करने वाले ग्रह की मुक्ति या 24.3 द्वितीयेश की दशा में व्ययस्थ तथा व्ययेश से दृष्ट ग्रह की मुक्ति मृत्यु देती है 24.4 व्ययेश की दशा मे व्ययस्थ ग्रह की मुक्ति या 24.5 व्ययेश के साथ द्वितीय भाव में बैठे पाप ग्रह की दशा मुक्ति मृत्यु दे सकती है 24.6 व्यय भाव में स्थित पाप ग्रह का संबंध द्वितीयेश से हो तो उस पाप ग्रह की दशा मुक्ति मारक होगी 24.7 अष्टमेश की दशा-मुक्ति या (ii) षष्ठेश में अष्टमेश की मुक्ति या 24.8 अष्टमेश की दशा में षष्ठस्थ पापी ग्रह की मुक्ति या 24.9 षष्ठेश की दशा में अष्टमस्थ पाप ग्रह की मुक्ति मारक हो जाती है 24.10 अष्टमेश की दशा में अष्टमेश से दृष्ट या षष्ठेश से युक्त ग्रह की दशा मारक है 24.11 अष्टमस्थ पाप ग्रह की दशा में षष्ठेश की मुक्ति या 24.12 षष्ठस्थ ग्रह में अष्टमेश की मुक्ति या 24.13 षष्ठस्थ पापी ग्रह की दशा में स्वक्षेत्री अष्टमेश की मुक्ति मारक होती है। 24.14 अष्टमस्थ पापी ग्रह की दशा में षष्ठ में बैठे पाप ग्रह की मुक्ति मृत्यु देती है 24.15 शुभ ग्रह दु:स्थान के स्वामी या मारकेश होने पर अपनी दशा मुक्ति में मृत्यु या कष्ट देते है 24.16 त्रिक भाव का स्वामी केन्द्र या त्रिकोण में बैठकर भी मृत्यु दे सकता है 24.17 योग कारक ग्रह भी कुसंगति (त्रिकेश से संबंध) के कारण मृत्युपद हो जाता है 24.19 दो या तीन पुत्रों की राहु की दशा होने पर पिता को मृत्यु भय होता है 24.20 सूर्य नारायण राव के विचार 24.21 डॉ.बी.वी.रमण के विचार

25 दशा के परिणाम 199-205

25.1 शनि में शुक्र तथा शुक्र में शनि की मुक्ति अनिष्टप्रद है 25.2 गुरु क्षेत्री शुक्र की दशा में शनि की मुक्ति धनप्रदायक होती है 25.3 अष्टमेश त्रिकभाव में होने से दृष्टमेश की दशा में अष्टमेश नियंत्रक की मुक्ति मृत्यु देगी 25.4 दशमेश व तृतीयेश का परस्पर सम्बन्ध तृतीयेश बहुत शुभ बनाता है 25.6 लग्नेश या भाग्येश सप्तमस्थ होने पर जातक अपने पुरुषार्थ से धन पाता है 25.7 शनि, राहु केतु की दशा मुक्ति पिता के लिए अशुभ व अनिष्टप्रद जानें 25.9 सूर्य बुध की युति होने पर बुध की दशा बहुत शुभ किन्तु सूर्य

की दशा मध्य होती है 25.10 चन्द्र मंगल योग में चन्द्रमा में मंगल की मुक्ति उत्कृष्ट फल देगी 25.11 गुरु-शनि की युति होने पर शनि शुभ फल देगा 25.12 गुरु-मंगल संबंध होने पर मंगल शुभ फल देगा 25.13 गुरु चन्द्र योग होने पर चन्द्रमा श्रेष्ठ हो तो गुरु की दशा सामान्य फल देगी 25.15 बुध, गुरु शुक्र का परस्पर दृष्टि युति संबंध इन ग्रहों की दशा मुक्ति को शुभ बनाता है 25.18 सूर्य का संबंध जिस ग्रह से हो उस ग्रह की दशा मुक्ति सत्ता सुख देती है 25.19 राहु प्राय: अपने साथ बैठे या दृष्टा ग्रह का फल देता है 25.22 डॉ.बी.वी.रमण के विचार 25.23 जातक की मृत्यु के योग 25.24 धन व यश प्राप्ति की दशा 25.25 पिता की मारक दशा।

26. सामान्य योग 206-209

26.1 भावेश का कारक ग्रह से संबंध भाव संबंधी श्रेष्ठ फल देगा 26.2 लाभेश या लाभस्थ ग्रह की दशा लाभ वृद्धि देती है 26.3 अष्टयस्थ गुरु 3,6,8 भाव का स्वामी होने से अशुभ नहीं अपितु धन प्रदायक है 26.4 राहु केन्द्र/त्रिकोण भाव में शुभ व कल्याणकारी है 26.6 पाप ग्रह केन्द्राधि युति होने पर शुभ फल देते हैं 26.8 तृतीय व नवम भाव पर शनि की दृष्टि शुभ है 26.10 मंगल की दृष्टि युति लग्न या अष्टम भाव के चन्द्रमा से हो तो शुभ परिणाम जानें 26.12 भाव, भावेश या कारक पाप कर्तरी में होने भाव की हानि होती है 26.13 लाभेश का व्ययेश से संबंध जातक को उदार व परोपकारी बनाता है 26.14 भाग्येश का अष्टमस्थ होना भाग्य की कमी दर्शाता है 26.15 षष्ठस्थ चन्द्रमा जातक को तीक्ष्ण बुद्धि और विद्वान बनाता है 26.16 सूर्य, मंगल, गुरु विषम राशि में तो चन्द्रमा और शुक्र सम राशि में अधिक शुभ व बली होते हैं।

27 ग्रह मालिका योग 210-212

27.1 लग्न से पंचम भाव तक सभी भाग ग्रह युक्त हो तो पंचमालिका योग से धन, बुद्धि, भूमि भवन, बल पराक्रम व सुन्दर रुप की प्राप्ति होती है 27.2 लग्न से षष्ठ भाव तक सभी भाव ग्रह युक्त होने से षट्मालिका योग के कारण जातक धनी, मानी, विद्वान, सुखी व शत्रुहन्ता होता है 27.3 लग्न से सप्तम भाव तक सभी भाव ग्रह युक्त हो तो सप्तमालिका के कारण सुन्दर सुशील पत्नी का सुख 27.4 अष्टमालिका योग से स्वास्थ्य व दीर्घायु 27.5 नवमालिका योग से जातक महान धार्मिक और भाग्यशाली होता है 27. 8 लगन से पंचम भाव तक सभी भाव ग्रह युक्त होने पर जातक भाग्यशाली होती है 27.9 सम राशि के ग्रह दशा के पूर्वार्ध में मूल त्रिकोण राशि का फल देते हैं 27.10 विषम राशि में स्थित ग्रह अपनी मूल त्रिकोण राशि वाले भाव का फल उत्तरार्ध में देते हैं 27.11 सूर्य से एकादश या द्वादश भाव में गोचर ग्रह अतिचारी तो सूर्य से युति करने वाले या सूर्य से द्वितीय भाव के ग्रह शीघ्र युति होते हैं। सूर्य से पंचम भाव से अष्टम तक वक्री तो नवम भाव व दशम भाव पर गोचर करते ग्रह कुटिल गति होते हैं।

परिशिष्ट

1. ग्रहों का राशि अधिपत्य व मैत्री विचार 213

2. नाभस योग (32 योग) 214-217

3. फल कथन के सूत्र 218-219

फल कथन के सूत्र/नियम

नियम 1: जिन भावों के स्वामी उन भावों के कारकों के साथ संयुक्त हो, उनकी वृद्धि होती है।

भाव	कारक ग्रह	भाव	कारक ग्रह	भाव	कारक ग्रह
लग्न	सूर्य, चन्द्र	पंचम	गुरु	नवम	सूर्य, गुरु
द्वितीय	गुरु	षष्ठ	बुध,शनि	दशम	सूर्य, बुध,शनि
तृतीय	मंगल	सप्तम	शुक्र	एकादश	गुरु
चतुर्थ	चन्द्रमा	अष्टम	शनि	द्वादश	शनि

नियम 2: कोई भी कारक ग्रह यदि उस भाव मे स्थित हो जिसका कि वह कारक है तो उसके भाव का बहुत थोड़ा फल मिलता है।

नियम 3: वह भाव जिसका कारक लग्न से द्वादश भाव में स्थित हो, फलता-फूलता है।

नियम 4: यदि किसी केन्द्र का स्वामी नैसर्गिक पापी ग्रह हो और वह केन्द्र ही में स्थित हो तो राजयोग का शुभ फल करता है।

लग्न	पापी ग्रह	लग्न	पापी ग्रह
मेष	10Lशनि	तुला	4Lशनि, 7Lमंगल
वृष	4Lसूर्य, 7Lमंगल, 10Lशनि	वृश्चिक	4Lशनि, 10Lसूर्य
कर्क	7Lशनि, 10Lमंगल	मकर	4Lमंगल
सिंह	4Lमंगल, 7Lशनि	कुम्भ	7Lसूर्य, 10Lमंगल

नियम 5: जो ग्रह अष्टम भाव में स्थित हो वह उस भाव से सम्बन्धित बातों को, जिसका कि वह स्वामी है, हानि पहुँचाता है और साथ ही अपने कारकत्व को; परन्तु शनि इस नियम में अपवाद है। अष्टम भाव मे शनि अच्छी आयु देता है।

नियम 6: शुक्र द्वादश अथवा छठे स्थान मे स्थित होकर भी शुभ फल करता है।

नियम 7: जो ग्रह अपनी दोनों राशियों से बुरे भावों में स्थित होता है उन भावों के लिए अशुभ फल करता है।

नियम 8: जो ग्रह दो भावों का स्वामी होता है वह उस भाव का फल करता है जिसमें कि उसकी मूल त्रिकोण राशि होती है।

नियम 9: नैसर्गिक शुभ ग्रह जब द्वितीय और द्वादश भावों के स्वामी हो तो मारक होते हैं।

नियम 10: यदि दो ऐसे ग्रहों की युति हो जो किसी साझी बात के द्योतक हैं तो वह साझी बात फलीभूत होती है।

नियम 11: जब दो से अधिक ग्रहों का परस्पर सम्बन्ध हो तो कोई एक ग्रह अपनी दशा भुक्ति में उन गुणों की अभिव्यक्ति करेगा जो उन ग्रहों में साझे हैं जो कि इसे प्रभावित कर रहे हैं।

नियम 12 : यदि कोई ग्रह किसी लग्न विशेष के लिए योगकारक हो परन्तु दिग्बल से शून्य हो तो ऊँचा फल न करेगा।

वृष और तुला लग्न मे शनि योगकारक है। लग्नस्थ शनि शून्य दिग्बल पाता है। कर्क व सिंह लग्न मे योग कारक मंगल चतुर्थ भाव में दिग्बल से शून्य होता है। मकर तथा कुम्भ लग्न मे शुक्र योगकारक है। दशम भाव में बैठा शुक्र शून्य दिग्बल पाने से विशेष शुभ फल नहीं दे पाता।

नियम 13: ग्रह उस भाव का मुख्यतया पुल करते हैं जिसमें कि उन की मूल त्रिकोण राशि पड़ती है।

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
5	2	1	6	9	7	11	मूल त्रिकोण राशि

नियम 14: द्वादश भाव का स्वामी कमी (अल्पता) का सूचक है। यदि यह धन द्योतक ग्रहों के साथ हो तो धन को घटा देता है।

नियम 15: दो ग्रह धनादि साझे गुणों वाले यदि परस्पर सम्बन्ध न भी रखते हो, परन्तु यदि वह अपने-अपने भावों में स्वक्षेत्री होकर बलवान हो तो शुभ फल करते हैं।

नियम 16: विद्या का मुख्य स्थान द्वितीय भाव है जिसके द्वारा विद्या की मात्रा आदि का विचार करना चाहिए।

कारण 5H बुद्धि तो 2H बुद्धि का कर्म स्थान है। वाणी से विद्या बुद्धि की परीक्षा हो जाती है।

नियम 17 : कुण्डली का चतुर्थ स्थान 'जनता' का और स्त्री जाति का भाव होने से जनता की स्त्री का प्रतिनिधित्व करता है। यदि चतुर्थेश का सम्बन्ध सप्तम सप्तमेश से हो तो मनुष्य व्यभिचारी होता है।

नियम 18: जब दो ग्रह एक स्थान में हों तो वे अपनी दशा मुक्ति में साथी ग्रह का बहुत हद तक फल करते हैं।

अध्याय	विषय सूची	पृष्ठ संख्या
1.	मेष लग्न	1–15
2.	वृष लग्न	16–27
3.	मिथुन लग्न	28–39
4.	कर्क लग्न	40–54
5.	सिंह लग्न	55–67
6.	कन्या लग्न	68–77
7.	तुला लग्न	78–92
8.	वृश्चिक लग्न	93–103
9.	धनु लग्न	104–115
10.	मकर लग्न	116–126
11.	कुम्भ लग्न	127–141
12.	मीन लग्न	142–157
13.	धन योग विचार	158–160
2. जीवन के विविध आयाम का विचार		**163-166**
14.	विद्या विचार	167–170
15.	खान-पान बड़ा साहज	
16.	भ्रातृ-भाव	171
17.	वाहन तथा भाग्य	172–173
18.	शत्रु और रोग	174
19.	स्त्री और काम सुख	175–176
20.	आयु और स्वास्थ्य	177–178
21.	भाग्ययोग	179–183
22.	राजयोग	184–189
23.	तीर्थ स्नान	190–194
24.	मृत्युयोग	195–198
25.	दशा के परिणाम	199–205
26.	सामान्य योग	206–209
27.	ग्रह मालिका योग	210–213

परिशिष्ट–सूची

1. ग्रहों के राशि आधिपत्य व राशि मैत्री विचार 214-217
2. नाभस योग
3. फलकथन के सूत्र

गणेशम एकदन्तं च

हेरम्बं विघ्ननायकम्।

लम्बोदरं शूर्पकर्णम्

गजवक्त्रं गुहाग्रजम्॥

नामाष्टार्थ च पुत्रस्य

शृणु मातर्हरप्रिये।

स्तोत्राणां सारभूतं च

सर्वविघ्न हरम् परम्॥

अध्याय–1

मेष लग्न

मेष लग्नोदये जातो, गुरुभक्तः प्रियंवदः ।
गुणी कांतः प्रियालुब्धः, शूरः सर्वजन प्रियः ।।
(यवन जातक 10:01)

1.1 मेष लग्न में उत्पन्न जातक गुरुभक्त तथा मधुरभाषी या प्रिय वचन बोलने वाला गुणवान और सुन्दर व्यक्तित्व का धनी होता है। वह पराक्रमी, शूरवीर तथा लोकप्रिय होता है। 1. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, 2. सरदार वल्लभभाई पटेल 3. पृथ्वीराज चौहान, 4. श्री.के.पी.एस. गिल 5. श्री सत्यजीत रे 6. डॉक्टर सम्पूर्णानन्द, 7. खलील जिब्रान, 8. जॉर्ज वॉशिंग्टन तथा 9. चन्द्रबाबू नायडू–ये सभी मेष लग्न जातक इस तथ्य की पुष्टि करते हैं।

1.2 **चतुर्थेश पंचमेश का सम्बन्ध योगकारक**–मेष लग्न कुण्डली में 4L चन्द्रमा तथा 5L सूर्य का परस्पर दृष्टि युति सम्बन्ध राजयोग देता है। मेष लग्न कुण्डलियों की संख्या 2, 13, 21 व 36 में उक्त दोनों ग्रह सम सप्तक हैं।

1.3 **शुक्र मारक**–2L–7L शुक्र मेष लग्न के लिए प्रबल मारक है। इसकी दशा अन्तर्दशा मृत्यु दे सकती है। कारण विद्वानों ने अष्टम भाव और अष्टम से अष्टम होने के कारण तृतीय भाव को आयुष्य या जीवन अवधि का भाव माना है। अब क्योंकि सप्तम और द्वितीय भाव क्रमशः अष्टम एवं तृतीय भाव के द्वादश या हानि स्थान हैं, अतः द्वितीय व सप्तम भाव को मारक कहा जाता है।

1.4 **मृत्यु खंड में गुरु भी मारक**–9L–12L गुरु यदि 10 H में हो तो मृत्यु खंड में गुरु की दशा भुक्ति भी मृत्यु दे सकती है। ध्यान रहे, गुरु की मूल त्रिकोण राशि नवम भाव में है। अतः गुरु भाग्येश होकर कर्म भाव में शुभ होना चाहिए किन्तु भाग्येश का नीचस्थ होकर दशम भाव में बैठ कर द्वितीय व षष्ठ भाव (2H–6H) से दृष्टि सम्बन्ध अनिष्ट परिणाम दे सकता है।

1.5 **मात्र नवमेश दशमेश का सम्बन्ध योगकारक नहीं**–कुछ विद्वानों का विचार है कि केन्द्र व त्रिकोण भाव के स्वामी यदि नैसर्गिक पाप ग्रह नहीं हो तभी वे योगकारक होते हैं। यदि कभी किसी शुभ ग्रह की अन्य राशि दुःस्थान में पड़े या फिर कोई दुष्ट ग्रह नवम या दशम भाव में हो तो भी **राजयोग कमज़ोर** पड़ जाता है। फिर यहाँ तो शनि की मूल त्रिकोण राशि एकादश भाव में है। महर्षि पाराशर ने 3L-11L को पापी ग्रह माना है। अन्य शब्दों में 9L गुरु तथा 10L शनि का सम्बन्ध राजयोग नहीं दे पाता। कुण्डली 3, 4, 5, 6, 8, 10,11,14, 15, 16, 21, 24, 25, 28, 31, कुल 37 में से 17 कुण्डलियों में इस गुरु–शनि का सम्बन्ध पाया गया ।

1.6 **शस्त्र की चोट या फोड़े से कष्ट**—मंगल को विद्वानों ने चोट लगने का कारक माना है। अग्नितत्व ग्रह लग्नेश व अष्टमेश होने से शस्त्राघात, जख्म या फोड़े आदि की पीड़ा देता है। यदि कहीं केतु का प्रभाव लग्न या अष्टम भाव पर हो तो देह कष्ट की सम्भावना निश्चय ही बढ़ जाती है।

1.7 **षष्ठेश की दशा में सिर पर चोट**—यदि षष्ठेश बुध की मंगल से युति हो तो बुध की दशा-भुक्ति में सिर पर चोट लगने से मृत्यु होती है।

1.8 **6L+ मंगल की युति होने से षष्ठेश की दशा में सिर पर चोट और मृत्यु**—कारण, लग्न सिर है तो अष्टम भाव मृत्यु है अत: षष्ठेश का अष्टमेश से सम्बन्ध दुर्घटनावश सिर पर चोट और मृत्यु दे सकता है।

1.9 **धनेश शुक्र व्यय भाव में भी शुभ**—द्वितीयेश शुक्र का व्यय भाव में उच्चस्थ होना निश्चय ही धन की वृद्धि करेगा। कारण, शुक्र भोग कारक ग्रह है, तो द्वादश भाव भी लौकिक सुख भोग और वैभव को दर्शाता है। अत: शुक्र की द्वादश भाव में स्थिति तो शुभ है किन्तु धनेश का व्यय भाव में बैठना शुभ नहीं है। मात्र मेष और कन्या लग्न को छोड़कर अन्य सभी लग्नों में 2L का 12 H में होना अशुभ माना जाता है। कारण, भोग कारक ग्रह शुक्र भोग स्थान में कभी अशुभ नहीं होता।

1.10 **मंगल योगकारक और मारक भी**—मेष लग्न के लिए मंगल और शुक्र की युति कभी लग्नेश मंगल को भी मारकत्व दे दिया करती है। ध्यान रहे, **मारेकश के संगदोष से कोई भी ग्रह मारकत्व पाता है।** अत: मंगल भले ही लग्नेश हो, किन्तु 2L-7L शुक्र के साथ बैठने से, मंगल की दशा भुक्ति मारक प्रभाव देगी। किन्तु लग्नेश व धनेश की परस्पर युति धन व कुटुम्ब सुख भी अवश्य देगी। अत: यह सम्बन्ध योग कारक भी है।

1.11 **धन भाव में लग्नेश, भाग्येश और धनेश की युति शुभ**—द्वितीय भाव की वृष राशि में धनेश शुक्र, भाग्येश गुरु और लग्नेश मंगल की दृष्टि-युति निश्चय धन प्रदायक हैं। (1L+2L+9L) 2H में—धन प्राप्ति योग

कुण्डली संख्या व नाम	विवरण
2. चन्द्रशेखर (पूर्व प्रधानमंत्री)	धनेश धन भाव में स्वगृही है तो भाग्येश गुरु लाभ स्थान से, तृतीय भाव में बैठे लग्नेश मंगल को देखता है।
7. कांशीराम (पूर्व ब.स.पा. अध्यक्ष)	धनेश धन भाव में स्वगृही है तो लग्नेश मंगल पर भाग्येश गुरु की दृष्टि है।
8. खलील जिब्रान	धनेश शुक्र धन भाव को तो भाग्येश गुरु भाग्य स्थान में बैठे लग्नेश मंगल को देख रहा है।
10. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	धन भाव में बैठे लग्नेश मंगल की भाग्य स्थान और भाग्येश गुरु पर दृष्टि है तो लाभस्थ धनेश शुक्र भी भाग्येश से दृष्ट है।

12. आर. पी. गोयनका	भाग्येश गुरु धन भाव में बैठकर उच्चस्थ लग्नेश मंगल को देखता है। धनेश शुक्र लाभ स्थान में सूर्य 5L, चन्द्रमा 4L के साथ है।
13. राखी गुलज़ार (अभिनेत्री)	का लग्नेश मंगल धन भाव में बैठकर धनेश शुक्र को देख रहा हैं भाग्येश गुरु, धनेश नियंत्रक के साथ सुख स्थान में हैं।
14. सत्यजीत रे (फिल्म निर्माता)	लग्नेश मंगल व धनेश शुक्र का राशि परिवर्तन हुआ है तो भाग्येश गुरु, लग्नस्थ धनेश को देख रहा है।
15. डॉ. सम्पूर्णानन्द	लग्नेश मंगल की दृष्टि लग्न तथा धन भाव पर हैं। भाग्येश गुरु की धनेश शुक्र के साथ युति और लग्न पर दृष्टि है।
16. रोहित खुर्जा	लग्नेश मंगल लाभ स्थान से धन भाव को देखता है तो धनेश शुक्र की भाग्येश गुरु के साथ युति और धन भाव पर दृष्टि है।
17. इंजी.मदन (अंजु)	लग्नेश धन भाव में बैठकर, धनेश शुक्र तथा भाग्य स्थान को देख रहा है तो भाग्येश गुरु की लग्न पर दृष्टि है।
18. शशि अग्रवाल	भाग्येश गुरु, भाग्य स्थान में स्वगृही होकर, लग्न व लग्नेश मंगल को देखता है। लग्नेश मंगल की उच्चस्थ धनेश शुक्र पर दृष्टि है।
20. पृथ्वीराज चौहान	भाग्येश की धनेश शुक्र के साथ युति और धन भाव पर दृष्टि है तो लग्नेश मंगल, धनेश-भाग्येश की दशम भाव में युति पाकर लग्न तथा धन भाव को देख रहा है।
21. चन्द्रप्रभा शास्त्री जम्मू	लग्नेश मंगल उच्चस्थ होकर लग्न तथा भाग्येश गुरु (उच्चस्थ) को देख रहा है तो धनेश शुक्र की दृष्टि भी लग्न पर है।
22. रुक्मिणी-महेश	स्वगृही भाग्येश गुरु का दृष्टि सम्बन्ध धनेश शुक्र, लग्न तथा लग्नेश मंगल से हुआ है।
23. मंजु गोयल	भाग्येश गुरु तथा लग्नेश मंगल की धन भाव पर
	दृष्टि है तो धनेश शुक्र भाग्यस्थान में लाभेश शनि से दृष्ट है।
25. अनीता निगम	भाग्येश गुरु की दृष्टि धनेश शुक्र तथा लग्नेश मंगल पर है तो धन भाव अपने स्वामी से दृष्ट हैं।
27. ओंकार नाथ (विद्युत अभियन्ता)	लाभ स्थान में लग्नेश मंगल की धनेश शुक्र के साथ युति पर भाग्येश गुरु की दृष्टि है।

28. सरदार पटेल	धनेश शुक्र की भाग्येश गुरु के साथ युति तथा लग्न पर दृष्टि है तो लग्नेश मंगल दशम भाव में उच्चस्थ होकर लग्न को देख रहा है।
29. इंजी, कैलाश	धन भाव में स्थित लग्नेश मंगल की, धनेश शुक्र तथा भाग्य स्थान पर दृष्टि है तथा भाग्येश गुरु उच्चस्थ होकर, दशम भाव में लग्नेश की उच्चराशि को देख रहा है।
30. योगी भास्करानन्द	लाभेश शनि धन भाव से लग्नेश मंगल को देखता है। लग्नेश मंगल की दृष्टि धनेश शुक्र पर तो शुक्र की दृष्टि लग्न पर है।
31. गुलशन कुमार (टी. सीरीज)	लग्नेश मंगल धन भाव में बैठकर भाग्यस्थान को देख रहा है तो भाग्येश गुरु उच्चस्थ होकर धनेश शुक्र को देख रहा है, 1L धन भाव (2H) से 9H को देखता है तो 9L की 2L पर दृष्टि योग कारक बनी)
33. डॉ. पोद्दार	धनेश शुक्र की स्वगृही लग्नेश मंगल के साथ युति पर भाग्येश की दृष्टि है।
34. संजीव जम्मू	भाग्येश गुरु तथा लग्नेश मंगल की धन भाव पर दृष्टि है। धनेश शुक्र की सुखेश चंद्रमा के साथ सुख स्थान में युति है।
37. अखिल इंजी.	लग्नेश मंगल की धनेश नियंत्रक के साथ युति और भाग्य स्थान पर दृष्टि है तो भाग्येश गुरु भी धन भाव को देख रहा है।

(24 कुण्डलियों में 2L, 9L और 1L का सम्बन्ध पाया गया)

1.12 तृतीय भाव में लग्नेश-धनेश-भाग्येश की युति योगप्रद नहीं:

(1) लग्नेश का सभी योगों में विशेष महत्व है। अब यदि ऊपर दिया गया योग तीसरे भाव में बने तो विशेष शुभ नहीं है। भाग्येश व धनेश की लग्नेश से युति, लाभ और भाग्य वृद्धि तो अवश्य करेगी। किन्तु यहाँ लग्नेश मंगल के लिए मिथुन राशि लग्न से तृतीय है तो वृश्चिक से भी अष्टम है। अत: लग्नेश मंगल के लिए यह स्थिति शुभ नहीं है। **जो ग्रह अपनी राशि से त्रिक या त्रिषडाय में हो वह ग्रह उन भावों के लिए अशुभ हो जाता है।** चतुर्थ भाव में मंगल और गुरु की युति शुभ है।

(2) यदि भाग्येश गुरु त्रिकोणेश होकर चतुर्थ भाव अर्थात केन्द्र में उच्चस्थ हो तथा लग्नेश मंगल से युति और दशम भाव से दृष्टि सम्बन्ध करे तो निश्चय ही भाग्य वृद्धि में सहायक होगा।

1.13 पंचमस्थ मंगल धनप्रदायक

मेष लग्न जातक का लग्नेश **मंगल सिंह राशि** में अपनी मेष राशि से पंचम तथा वृश्चिक से दशम भाव में होने से **बहुत शुभ** है। पुनः पंचमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ स्थान पर भी होगी। अब यदि त्रिकोण भाव में मित्रक्षेत्री लग्नेश अपनी दशा भुक्ति में धन दे तो आश्चर्य कैसा?

श्री जगन्नाथ भसीन–जन्म : 8 अगस्त, 1908; जन्म दशा–बुध 4 वर्ष शेष।

मंगल अपनी राशि मेष से केन्द्र तो वृश्चिक से त्रिकोण में होने के कारण शुभ हैं। दशमेश की धनेश के साथ लग्न में युति है तो भाग्येश गुरु धन भाव में मित्रक्षेत्री होकर दशम भाव को देख रहा है। मंगल की दशा भुक्ति जातक को धन, मान व यश देने वाली बनी।

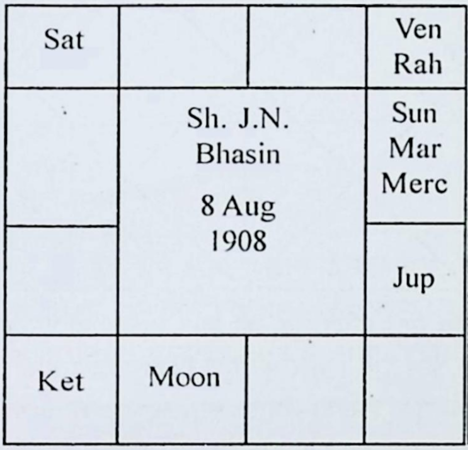

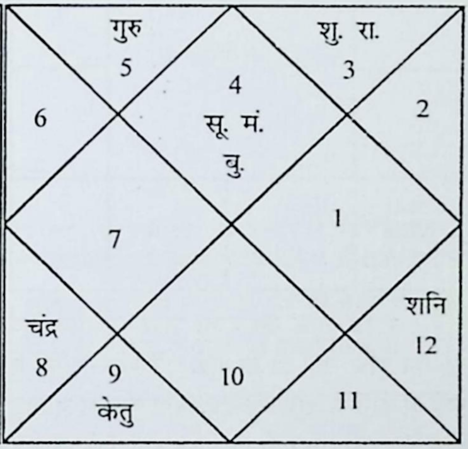

1.14 लाभस्थान में गुरु शुभ नहीं है। यूँ तो भाग्येश का लाभस्थ होना, भाग्य और लाभ की वृद्धि करता है किन्तु यहाँ गुरु अपनी धनु राशि से तृतीय तो मीन से द्वादश भाव में स्थित है। इसलिए भाग्येश होकर भी निष्फल ही है।

1.15 लग्नेश और षष्ठेश की षष्ठ भाव में युति रोगकारक

(1) मंगल नैसर्गिक रूप से आघात, व्रण व रोग पीड़ा का कारक है। पुनः इसका षष्ठ भाव में षष्ठेश से युति करना घाव और पीड़ा देगा। अतः **मंगल-बुध या बुध में मंगल की भुक्ति देह कष्ट** देगी।

(2) मंगल और शुक्र की सप्तम भाव में युति लग्नेश मंगल, वीर्य स्थान में वीर्य कारक शुक्र के साथ है। सम्भव है, ऐसा जातक रति क्रीड़ा में दक्ष व सुन्दरियों का प्रेम भाजन हो। शुक्र धनेश और सप्तमेश होकर सप्तम भाव में स्वक्षेत्री तथा मंगल के साथ है। अतः ऐसा जातक अपने प्रयास, परिश्रम व पुरुषार्थ से धन व यश पाता है।

1.16 अष्टमस्थ मंगल स्वगृही होने पर भी शुभ नहीं

लग्नेश मंगल की मूल त्रिकोण राशि मेष है जो अष्टम से गणना करने पर षष्ठस्थ होती है। अतः **अष्टम भाव में वृश्चिक राशि का मंगल ऋण रोग व शत्रु भय देता है** किन्तु पंचमेश **सूर्य या धनेश शुक्र के साथ यदि मंगल की युति** हो तो निश्चय ही **धन लाभ** देगा।

1.17 नवमस्थ मंगल शुभ

यदि दशमेश-लाभेश शनि सप्तम भाव में उच्चस्थ हो तथा लग्नेश मंगल की पंचमेश सूर्य, धनेश शुक्र तथा स्वगृही भाग्येश गुरु के साथ युति हो तो मंगल की दशा शुभ फल देगी। कारण, द्वितीय पंचम और नवम--ये सभी धन लाभ देने वाले हैं। पुनः लाभेश शनि का भाग्येश-लग्नेश से भाग्यस्थ होना भी धन वृद्धि करता है।

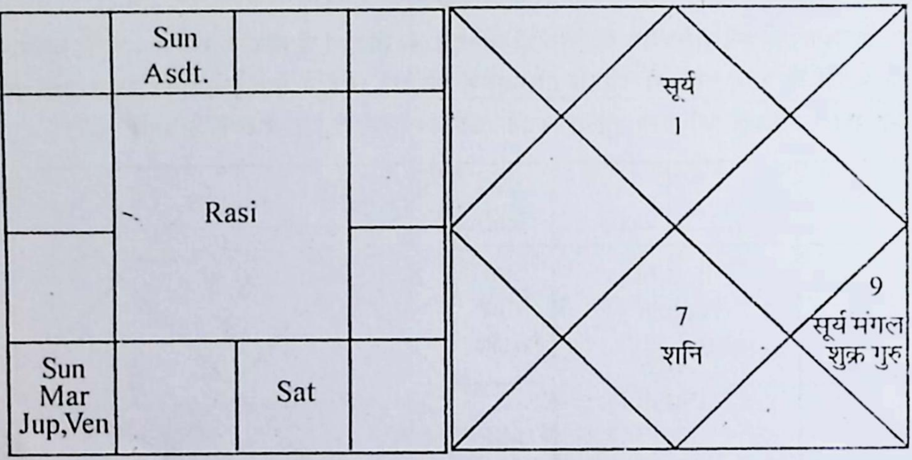

1.18 शुक्र की दशा शुभ–पंचमेश सूर्य के साथ धनेश शुक्र की लग्न में युति हो किन्तु गुरु की दृष्टि नहीं हो तो शुक्र की दशा-भुक्ति शुभ फल देगी । शुक्र की मूल त्रिकोण राशि सप्तम भाव में होने से शुक्र केन्द्राधिपति दोष से पीड़ित है। पुनः इस का शत्रु ग्रह सूर्य से युति करना भी शुक्र को दुर्बल कर रहा है। अतः यहाँ विपरीत राजयोग से धन योग बना है। यदि भाग्येश ग्रह का दृष्टि सम्बन्ध भी हो तो गुरु की शुभ दृष्टि के कारण विपरीत राजयोग भंग हो जाएगा।

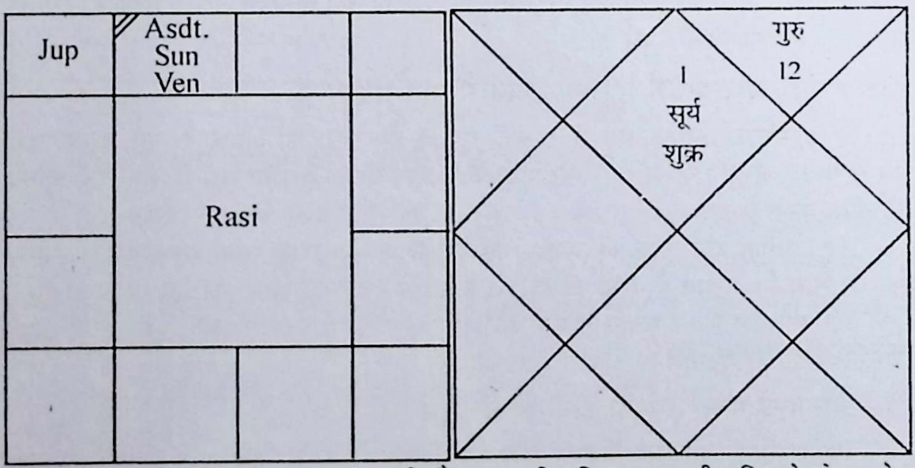

1.19 सूर्य की दशा शुभ–यदि सूर्य और शुक्र की युति पर गुरु की दृष्टि हो तो भाग्येश गुरु की पंचमेश सूर्य पर दृष्टि सूर्य की दशा को शुभ व धनप्रदायक बनाएगी।

1.20 लाभस्थान में बुध भी शुभ है—लाभ स्थान में यदि सूर्य, बुध और शुक्र की युति हो, तो धनेश शुक्र और भाग्येश सूर्य के संग प्रभाव से बुध भी धनप्रदायक होगा। यहाँ सूर्य, बुध और शुक्र की दशा भुक्ति धन सम्बन्धी शुभ फल देगी।

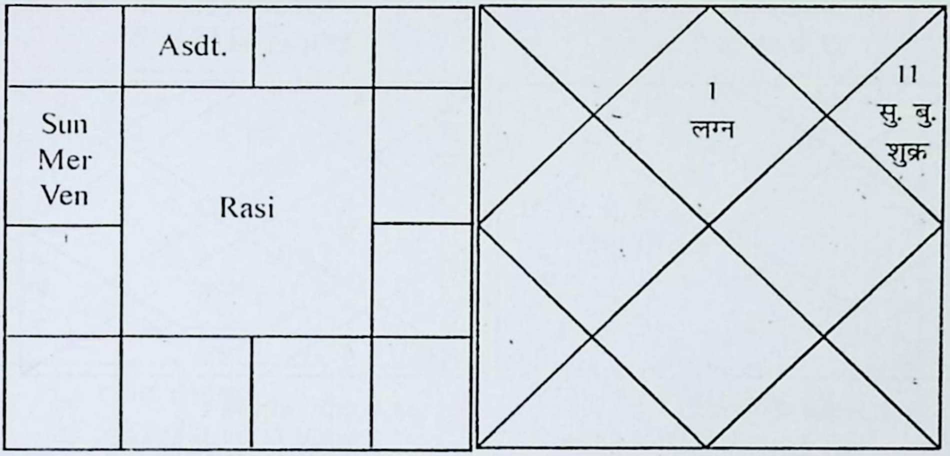

1.21 सूर्य और चन्द्रमा से राजयोग—यदि पंचमेश सूर्य लग्न में उच्चस्थ हो तो जातक निश्चय ही पद-प्रतिष्ठा व भाग्य वृद्धि पाएगा। पुनः सुखेश का सुख स्थान में स्वगृही होना भी सुख बढ़ाएगा। पुनः केन्द्रेश चन्द्रमा के साथ त्रिकोणेश सूर्य का केन्द्र में सम्बन्ध राजयोग देगा।

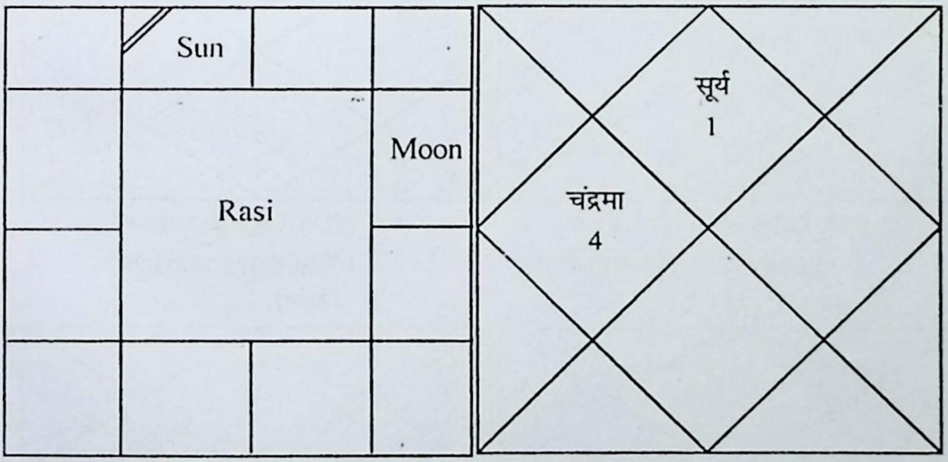

1.22 गंगा स्नान—यदि सूर्य, गुरु और शुक्र की युति दशम भाव की मकर राशि में हो तो ये सभी ग्रह अपनी दशा भुक्ति में गंगास्नान का पुण्य लाभ देते हैं। ध्यान रहे, सूर्य और गुरु सात्विक ग्रह हैं। ये क्रमशः पंचमेश और नवमेश भी हैं। अतः इनकी दशा भुक्ति गंगा स्नान की बात समझ में आती है। शुक्र संग प्रभाव से तथा अपनी मूल त्रिकोण राशि दशमात् दशम के कारण शुभ फल देगी।

॥ मेष लग्न जातकम् ॥

1.1 आबा साहेब गरवारे

21.12.1903; 14:0 घंटे

17 N 04 74 E 41

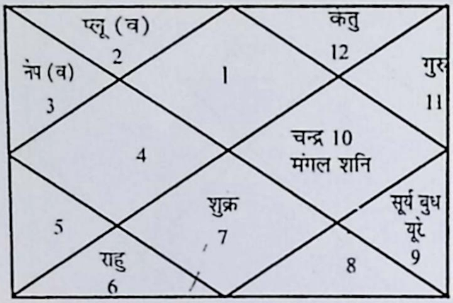

1.2 चंद्रशेखर

17.04.1927; 5:32 प्रातः बलिया

25 N 45 84 E 09

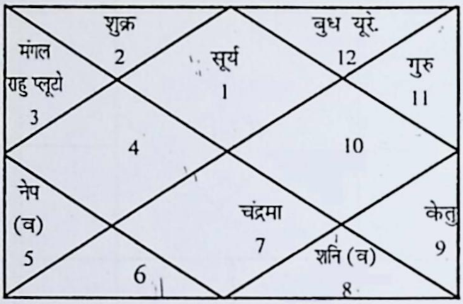

1.3 जॉर्ज फर्नाण्डीस

03.03.1930; 06.04: प्रातः

12 N 54 74 E 51

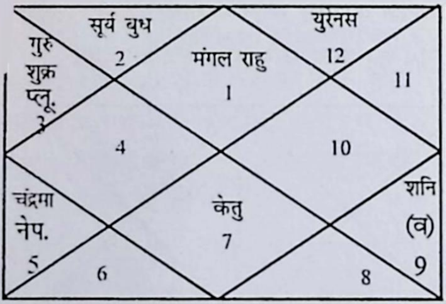

1.4 जॉर्ज वॉशिंग्टन

22.02.1732; 10.00 प्रातः

38 N 10 76 W 52

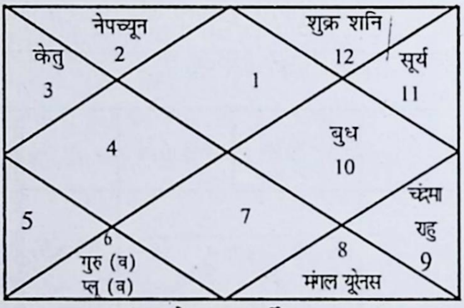

1.5 के.पी.एस.गिल

29.12.1934; 14:10 घंटे, लाहौर

31 N 32 74 E 22

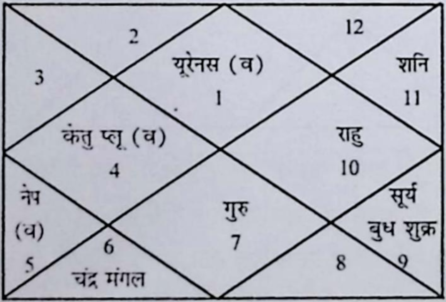

1.6 काजोल मुखर्जी

07.10.1975; 19:08 घंटे

दिल्ली

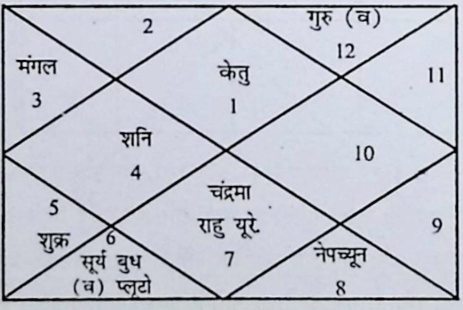

॥ मेष लग्न जातकम् ॥

1.7 कांशीराम

12.04.1932 7:30 प्रातः

30 N 09 74 E 11

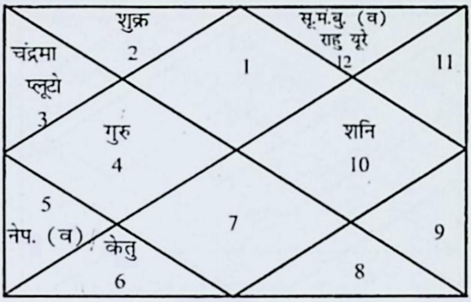

1.8 खलील जिब्रान

06.01.1883 1:00 घंटे बसरा

34 N 15 36 E

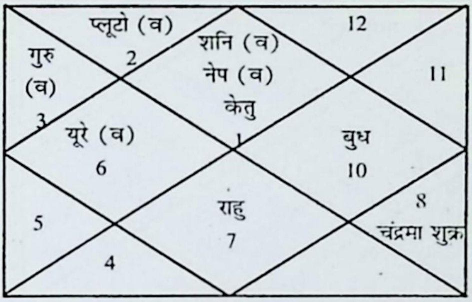

1.9 चन्द्रबाबू नायडू

27.04.1951 06:30 प्रातः

हैदराबाद 17 N 22 78 E 26

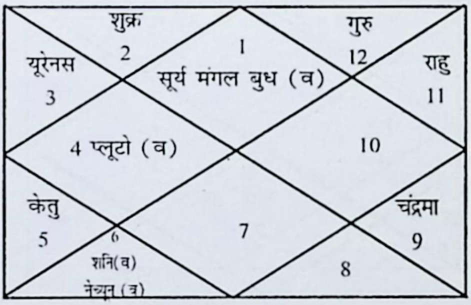

1.10 नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

12:29 घंटे

20 N 26 85 E 56

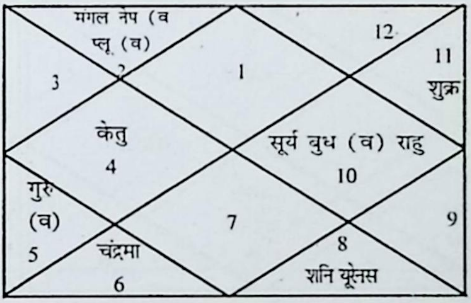

1.11 प्रकाश पादुकोण

10.06.1930 03:27 रात्रि

13 N 00 77 E 35

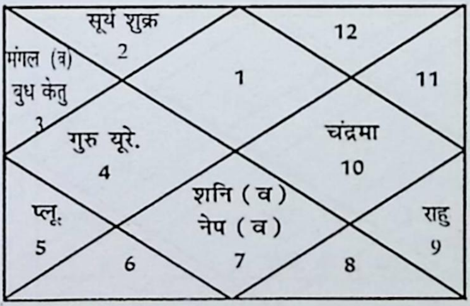

1.12 आर.पी. गोयनका

01.03.1930 08:40 प्रातः

27 N 30 88 E 26

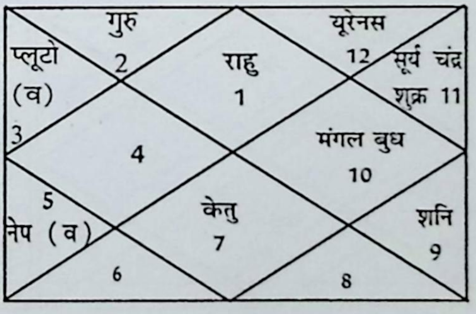

॥ मेष लग्न जातकम् ॥

1.13 राखी गुलज़ार
15.08.1943; 11:30 रात्रि
कलकत्ता

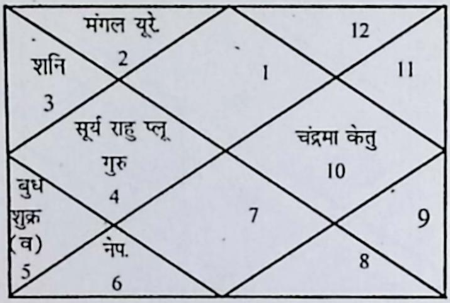

1.14 सत्यजीत रे
02.05.1921; 05:00 बजे, प्रात:
कलकत्ता

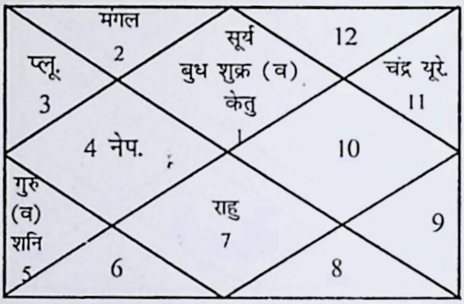

1.15 डॉ. सम्पूर्णानन्द
01.01.1890; 13:07 वाराणसी

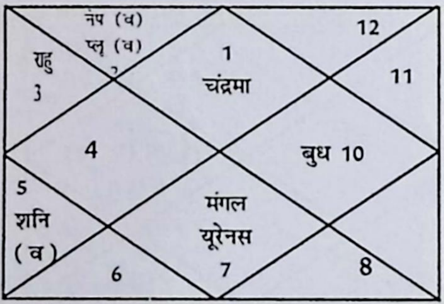

1.16 रोहित (प्रिंटिंग प्रेस)
04.11.1971 खुर्जा

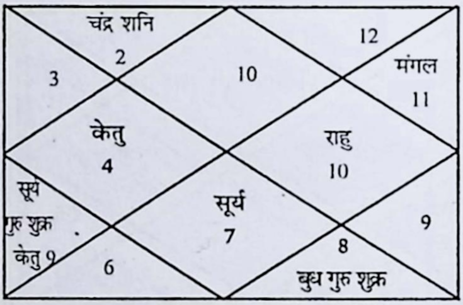

1.17 मंदन इंजी.
11.09.1958
(पत्नी से तलाक) चंडीगढ़

1.18 शशि अग्रवाल
(महिला उद्यमी)
11.02.1948 दिल्ली

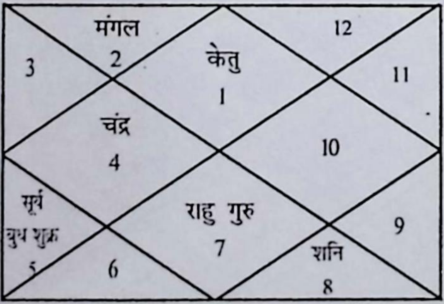

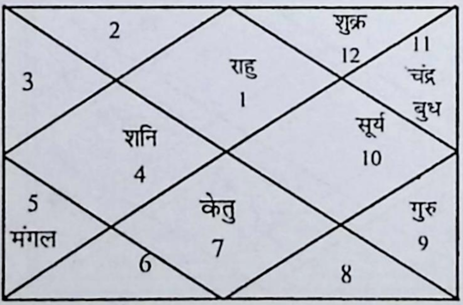

॥ मेष लग्न जातकम् ॥

1.19 सिकन्दर बादशाह

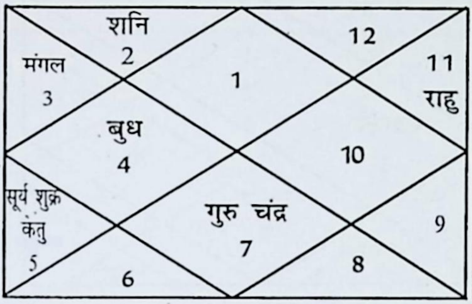

1.20 पृथ्वीराज चौहान

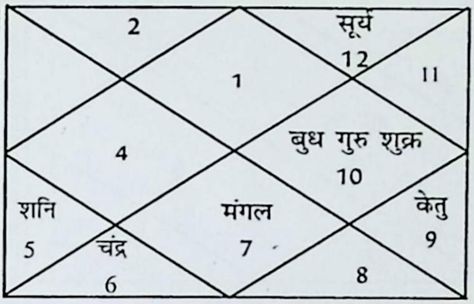

1.21 चन्द्रप्रभा शास्त्री जम्मू
01.11.1954 17:05

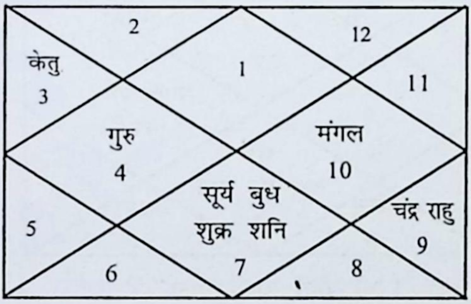

1.22 रुक्मिणी-महेश
(व्यापारी की पत्नी)
(केवल बेटियाँ चार)

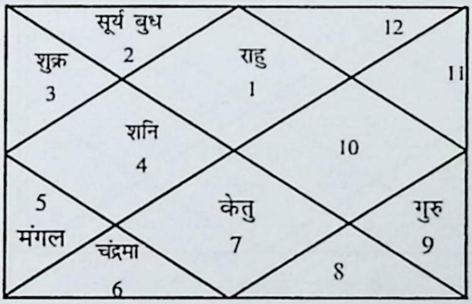

1.23 मंजु गोयल
मार्गशीर्ष शुक्ल 04, 2001 विक्रमी
(उद्यमी महिला)

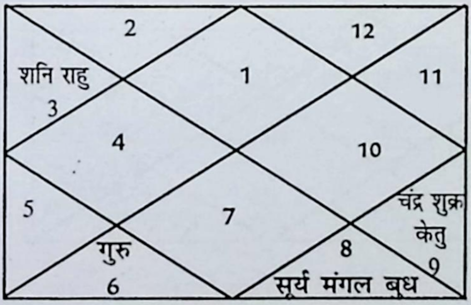

1.24 पुनीत
(मंजु का पुत्र)
22.01.1970 12:22 घंटे

॥ मेष लग्न जातकम् ॥

1.25 अनीता निगम
(ज्योतिषी अंक शास्त्री)
09.01.1955, 14:15 दिल्ली

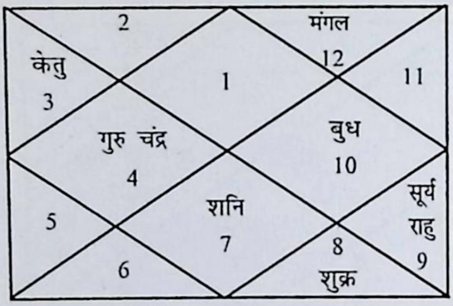

1.26 डॉ. गौरव (कृषि)
11.09.1972, 20:30 घंटे
मेरठ

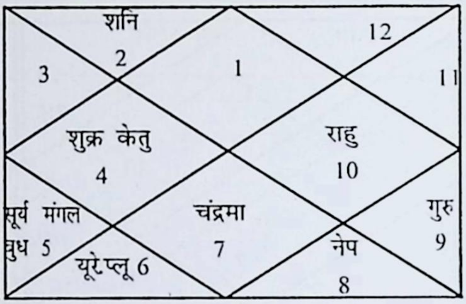

1.27 ओंकारनाथ मिश्र
विद्युत अभियन्ता

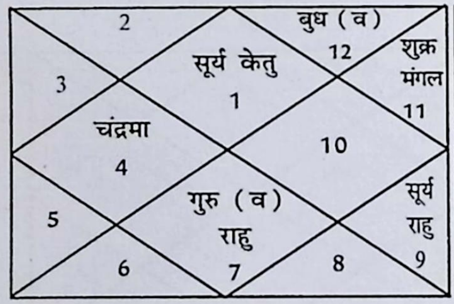

1.28 सरदार पटेल
31.10.1875, 17:56 घंटे
22 N 7 72 E 09

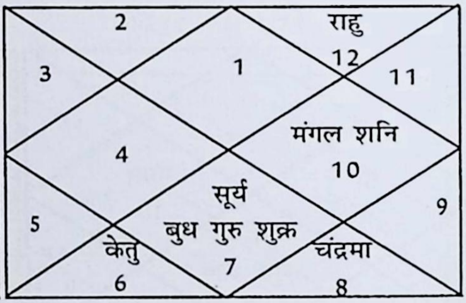

1.29 इंजी. कैलाश
15.09.1943 दिल्ली

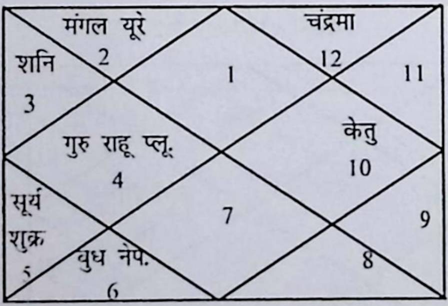

1.30 योगी भास्करानन्द
01.12.1913–16:25 घंटे
अहमदाबाद

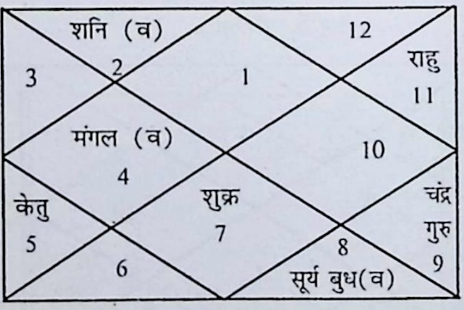

॥ मेष लग्न जातकम् ॥

1.31 गुलशन कुमार
(टी-सीरीज़)
05.05.1995–4:59 प्रातःदिल्ली

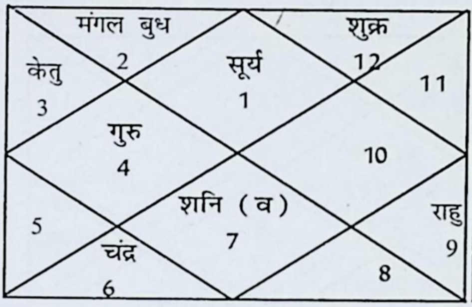

1.32 ऐडोल्फ इचमैन
19.03.1906, 08:17 प्रातः
50 N 47 6 E 04

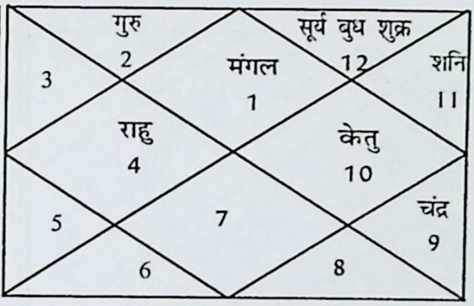

1.33 डॉ. पोद्दार
18.05.1947, 04:19 प्रातः

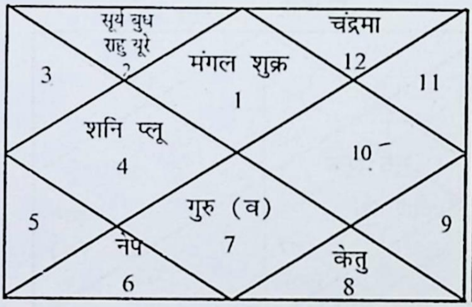

1.34 संजीव
07.09.1966

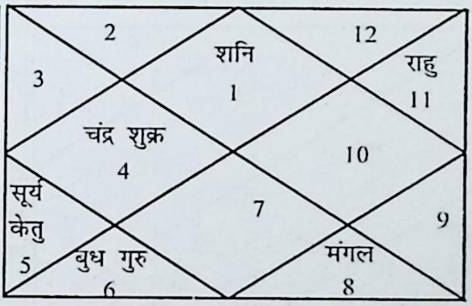

1.35 विवेक
(अर्चना का अग्रज)
11.01.1972,13:35 घंटे, दिल्ली

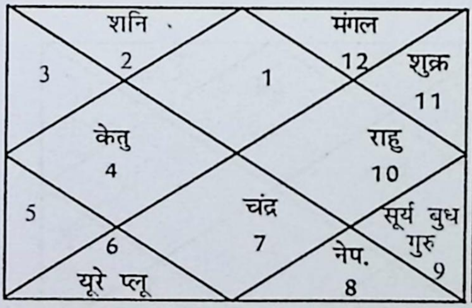

1.36 गुलज़ारीलाल नन्दा
04.07.1898 00:52 घंटे
सियालकोट (पाक)

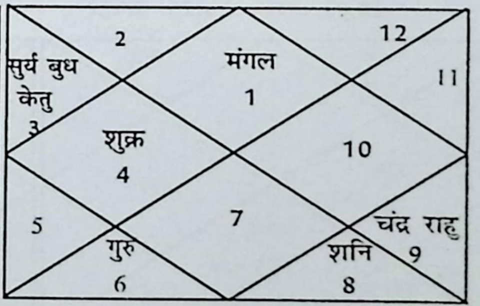

॥ मेष लग्न/जातकम् ॥

1.37 अखिल (मधु)
04.07.1983, 01:20 घंटे

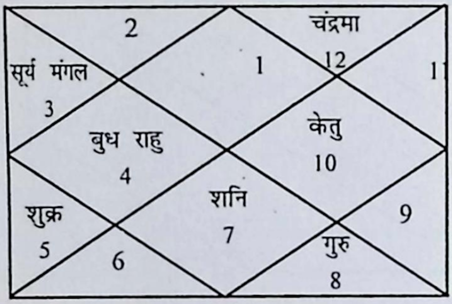

1.38 अनुज भसीन
28.12.1977
दहेली

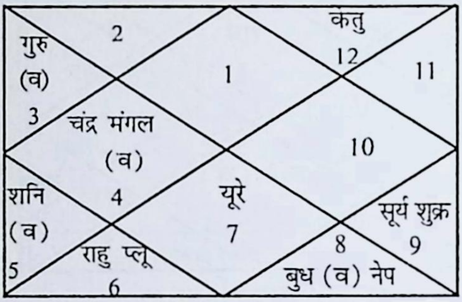

1.39 आराधना सिंह
30.10.1978, 17:50 (K-486)
खन्ना (पंजाब) विदेश गमन

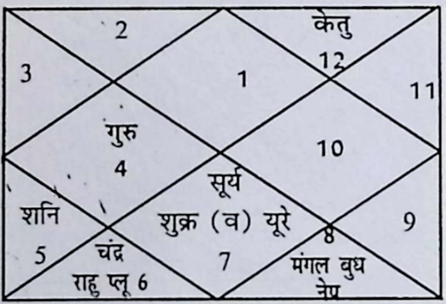

1.40 आशुतोष
21.08.1931, 22:34(K-497)
दिल्ली

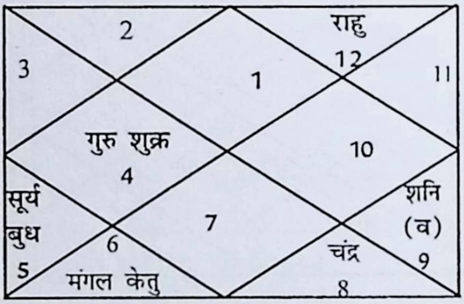

1.41 अमित बटाला
(व्यापारी का पुत्र)
28.07.1978, 23:25 दोपहर

1.42 भव्या
20.04.1993 K-213

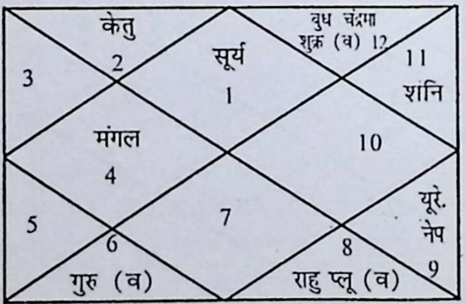

॥ मेष लग्न जातकम् ॥

1.43 छवि

10.03.1965, 09:10 प्रातः

दिल्ली-K 322

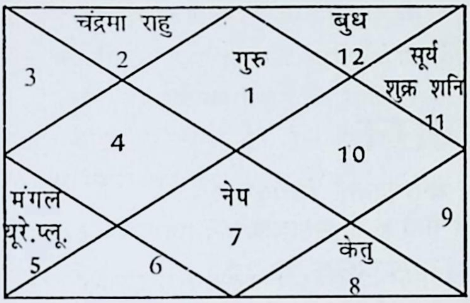

1.44 दीपिका

30.06.1986, 01:37 रात्रि

रोहतक

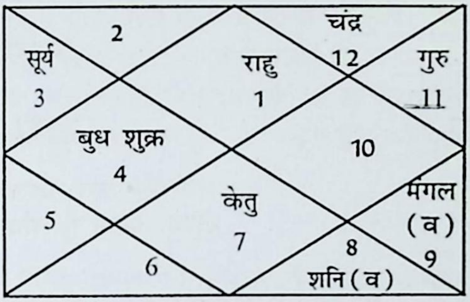

1.45 लालू प्रसाद यादव

11.06.1948–02:57 रात्रि

गोपालगंज (बिहार)

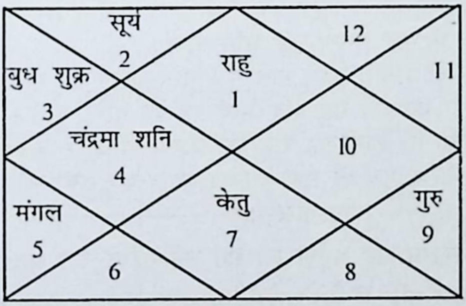

मेष लग्न कुण्डलियाँ 45

अध्याय - 2

वृष लग्न

वृषोदये नरो जातः धनीकान्तः प्रियंवदः
लुब्धः कामी गुरोर्भक्तो मैत्रो मानी महाबलः॥

(यवन जातक 10:2)

वृष लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर व धनी होता है। वह प्रिय वक्ता, लोभी, कामी, गुरुभक्त, मित्रों को सम्मान देने वाला तथा महान बलशाली होता है।

2.1 शनि योगकारक होने पर भी निर्बल

वृष लग्न जातक का शनि नवमेश दशमेश होने से योगकारक होता है किन्तु सूर्य तथा बुध की युति (दृष्टि) के अभाव में वह शुभ फल नहीं दे पाता। शनि का नैसर्गिक बल सबसे कम है। अतः सुखेश सूर्य या पंचमेश बुध की दृष्टि युति के अभाव में मंगल विशेष शुभ नहीं कर पाता।

2.2 नवम भाव में गुरु मंगल की युति शुभ

यदि राहु दशमस्थ हो अथवा नवम भाव में (गुरु+मंगल) की युति हो तो गंगास्नान का पुण्य फल मिलता है। ध्यान रहे, एकाकी राहु यदि अन्य ग्रह की दृष्टि-युति से वंचित हो तो जिस भाव में बैठे, उसी का फल देता है। छाया ग्रह **राहु का दशम भाव में बैठना सत्कर्म या पुण्य कर्म** देगा। धर्म के नैसर्गिक कारक गुरु के साथ व्ययेश मंगल का उच्चस्थ होकर धर्म या नवम भाव में बैठना भी तीर्थ यात्रा व तीर्थ स्नान कराएगा।

2.3 चतुर्थ भाव के चन्द्रमा पर धनेश लाभेश की दृष्टि धन प्रदायक

चतुर्थ भाव की सिंह राशि में बैठे चन्द्रमा पर यदि धनेश-पंचमेश बुध तथा लाभेश गुरु की दृष्टि हो तो जातक चन्द्रमा की दशा भुक्ति में धन लाभ पाता है। ध्यान रहे, चन्द्रमा भी लग्न सरीखा है। उस पर धनेश, त्रिकोणेश व लाभेश की दृष्टि-युति धन प्राप्ति में सहायक होगी। कदाचित चंद्रमा को तृतीयेश होने का दोष नहीं लगता।

2.4 लाभ स्थान में सूर्य+शनि की युति धन व आयु बढ़ाए

विद्वानों का मत है कि वृश्चिक राशि में सप्तमस्थ मंगल स्वक्षेत्री होने से शुभ फल देता है, अशुभ नहीं। इसी प्रकार सुखेश सूर्य की नवमेश-दशमेश शनि के साथ लाभ स्थान में युति, धन लाभ व दीर्घायु देती है। 11H में (सूर्य+शनि) की युति = धन लाभ और दीर्घायु

2.5 बुध और गुरु का परस्पर सम्बन्ध धनदायक

गुरु को विद्वानों ने धन का नैसर्गिक कारक कहा है। अब यदि यही गुरु लाभ स्थान का स्वामी होकर, धनेश-पंचमेश बुध के साथ दृष्टि-युति सम्बन्ध करें तो निश्चय ही धनप्रदायक होगा।

2.6 व्ययेश सप्तमेश मंगल की बुध गुरु से युति ऋणग्रस्त करे

वृष लग्न में बुध द्वितीयेश-पंचमेश तो गुरु अष्टमेश-लाभेश और मंगल व्ययेश-सप्तमेश है। गुरु की मूल त्रिकोण राशि अष्टमभाव में तो मंगल की मूल त्रिकोण राशि द्वादश भाव में होने से धन का अभाव होना सम्भव है। बुध संग दोष से शीघ्र प्रभावित हो जाता है। अतः मंगल, बुध, गुरु, की किसी राशि में युति **आर्थिक संकट** देकर जातक को ऋणग्रस्त करती है।

अन्य विद्वानों का मत है कि मंगल, बुध, गुरु की युति होने पर मंगल की दशा में धन प्राप्ति होगी। कारण, मंगल केन्द्रेश होने से पापी नहीं रहता। पुनः लाभेश गुरु और धनेश बुध की युति पाने से मंगल धन देने वाला बनेगा।

2.7 गुरु की दशा मिश्रित फल देगी

बुध का शुभ प्रभाव तथा व्ययेश मंगल का अनिष्ट प्रभाव एक साथ पड़ने से गुरु की दशा भुक्ति में मिले-जुले परिणाम मिलेंगे।

2.8 लग्नस्थ बुध तथा शुक्र पर सप्तमस्थ गुरु की दृष्टि योग कारक

बुध और शुक्र की वृष लग्न में युति तथा स्वगृही लग्नेश के साथ धनेश-पंचमेश की युति है। पुनः सप्तमस्थ गुरु लाभेश होकर अपने लाभ स्थान व लग्न में बैठे लग्नेश और धनेश को देखेगा। अतः उच्चकोटि का फल देगा। शुक्र का अपनी मूल त्रिकोण राशि अर्थात षष्ठ से अष्टम भाव में होना तथा गुरु का अष्टमस्थ धनु से द्वादश भाव में बैठना भी ऋण, रोग व अपयश की हानि करके **धन-वैभव और मानवृद्धि** में सहायक होगा।

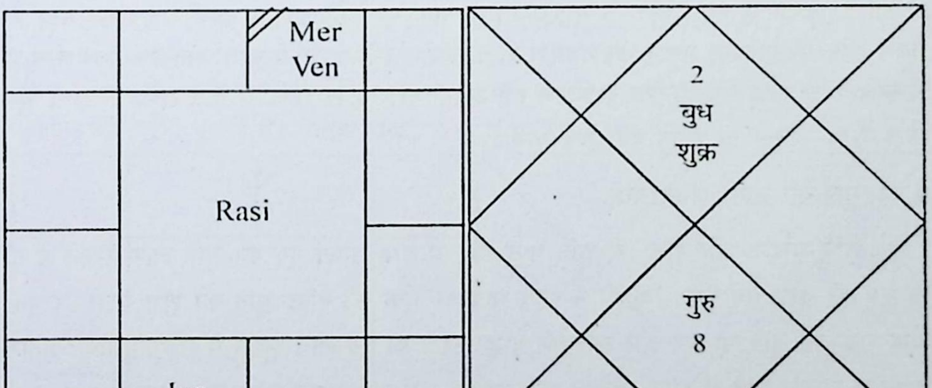

2.9 नीचस्थ गुरु की दशा में भाग्योदय

लग्न की वृष राशि में मंगल और शुक्र की युति पर नवम भाव में बैठे गुरु की दृष्टि होने पर गुरु और मंगल की दशा-अन्तर्दशा, भाग्य व धनवृद्धि करेगी। कारण, गुरु धनु से द्वितीय या धन भाव में तो अपनी मीन राशि से एकादश या लाभ स्थान में है। अतः ऐसे भाग्यस्थ गुरु की दशा निश्चय ही धन प्रदायक होगी। मंगल के केन्द्राधिपति होने से अशुभ नहीं, अपितु तटस्थ या

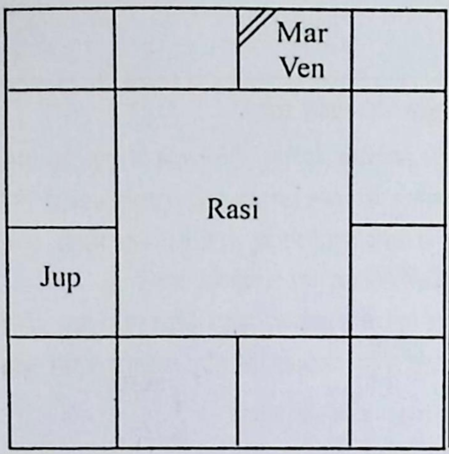

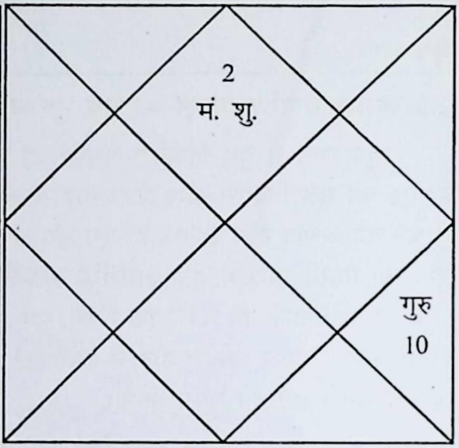

सम़ है। मंगल से स्वगृही लग्नेश शुक्र की युति तथा लाभेश गुरु की दृष्टि मंगल की दशा को लाभ देने वाली दशा बनाएगी।

दशमस्थ राहु की दशा गंगास्नान का पुण्य लाभ दे

यदि नवम भाव में मंगल बुध और शनि की युति हो तथा राहु दशम भाव में हो तो राहु क़ी दशा-भुक्ति गंगास्नान का पुण्य देगी।

2.10 राहु की दशा में गंगा स्नान

ध्यान रहे, नवम भाव धर्म तो दशम भाव कर्म को दर्शाता है। धर्म स्थान में किसी ग्रह का उच्चस्थ होना या नवम भाव का अपने स्वामी से दृष्टि युति पाना निश्चय ही जातक को धार्मिक बनाता है। नवम से नवम होने के कारण पंचम भाव भी देवोपासना या धर्म संचय का भाव है। नवम भाव में उच्चस्थ मंगल की नवमेश शनि तथा पंचमेश बुध से युति जातक को तीर्थ यात्रा में रुचि देगी। सत्कर्म के प्रतीक दशामस्थ राहु अपनी दशा भुक्ति में नवम भाव सम्बन्धी सभी शुभ फल देगा। जातक गंगास्नान का पुण्य कमाएगा।

2.11 गुरु की दशा धनदायक

यदि चन्द्रमा और शुक्र की युति षष्ठ भाव में तथा मंगल गुरु की युति लाभ स्थान में हो तो गुरु की दशा धन देगी। विद्वानों ने व्यय भाव पर शुक्र की दृष्टि-युति को शुभ माना है। पुनः चन्द्र शुक्र की युति भी धन और सुख की वृद्धि करती है। गुरु लाभ स्थान में स्वगृही होकर तृतीय पंचम व सप्तम भाव से दृष्टि सम्वन्ध कर रहा है। यहाँ व्ययेश का व्यय भाव से द्वादश स्थान में बैठना भी व्यय की हानि व लाभ वृद्धि दर्शाता है। अतः गुरु की दशा धनदायक होगी।

(संदर्भ 2.11)

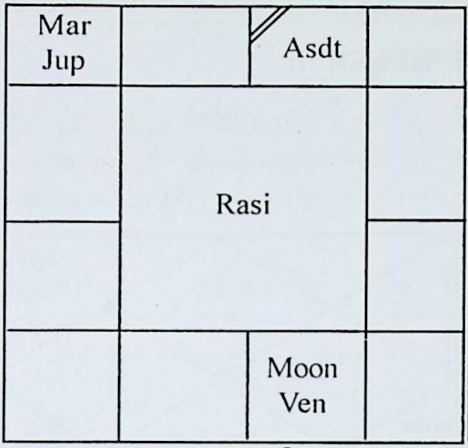

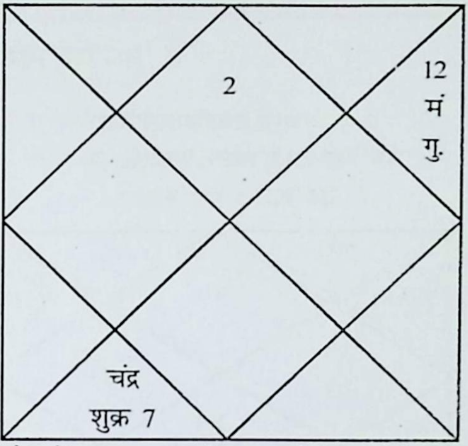

2.12 षष्ठस्थ शुक्र भी शुभ–ऊपर दिए योग में षष्ठस्थ स्वगृही शुक्र की चन्द्रमा से युति पर व्ययेश मंगल की दृष्टि के कारण षष्ठ भाव और षष्ठेश पीड़ित हुए हैं। कारण, चन्द्रमा तृतीय भाव का स्वामी और सूर्य के समीप होने से पक्षबल में दुर्बल है। **षष्ठभाव की दुर्बलता अनिष्ट का नाश कर विपरीत राज योग द्वारा धन लाभ देगी।**

2.13 लग्न में चन्द्रमा धनप्रदायक नहीं–यहाँ पर दो विचारधाराएँ हैं। पहली विचारधारा में मान्यता है कि त्रिषडाय भाव के स्वामी अशुभ होते हैं। अत: तृतीयेश का उच्चस्थ होकर लग्न में बैठना धन नहीं दे पाएगा। ऐसा चन्द्रमा बहिन का सुख व बल पराक्रम की वृद्धि तो देगा किन्तु धन नहीं। अन्य विद्वान कहते हैं कि जब सूर्य व चन्द्रमा को अष्टयेश होने को दोष नहीं लगता तो भला तृतीयेश होने का दोष क्योंकर लगेगा। हाँ, पक्षबल से हीन चन्द्रमा अवश्य ही समुचित धन नहीं दे पाता किन्तु पक्ष बली चन्द्रमा अवश्य धन लाभ देता है।

उदाहरण–29 दिसम्बर, 1933 में जन्मे इस एडवोकेट ने जन्म दशा चन्द्र 3 वर्ष 11 महीने 7 दिन शेष पाई। चन्द्र पक्षबली होकर लग्न में बैठा है तथा लाभेश गुरु से दृष्ट है। लग्नेश शुक्र की भाग्येश कर्मेश शनि और मंगल के साथ भाग्य स्थान में युति पर लाभेश की दृष्टि भी उच्चस्तरीय व लाभ की पुष्टि करती है। जातक धनी, मानी व प्रतिष्ठित था।

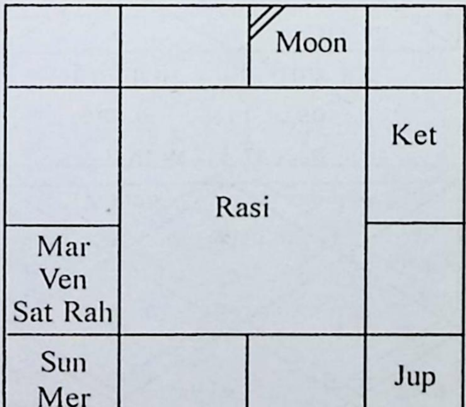

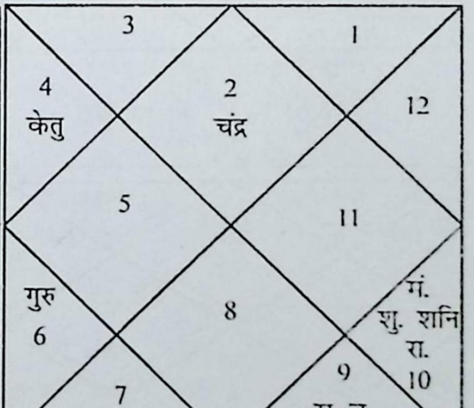

॥ वृष लग्न जातकम् ॥

2.1 आचार्य रजनीश 'ओशो'
11.12.1931, 17:13 घंटे
23 N 53 75 E 17

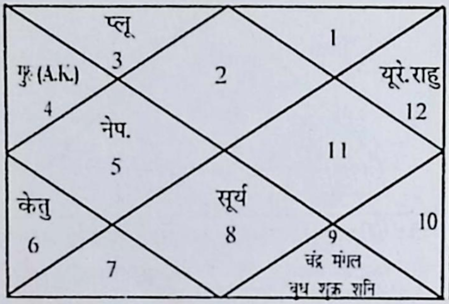

2.2 (40) बिल गेट्स
23.10.1955, 20:58 घंटे
47 N41 122 W15 (A.K शनि)

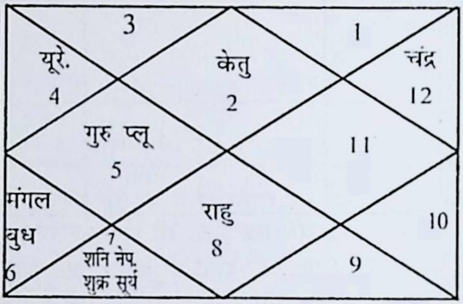

2.3 कार्लसमान (खगोल शास्त्री)
09.11.1934–17:05 घंटे
40 N 42 74 W 0

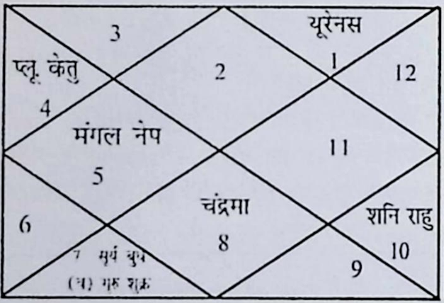

2.4 दलाई लामा
06.07.1935–4:38 प्रात:
36 N 32 101 E 12

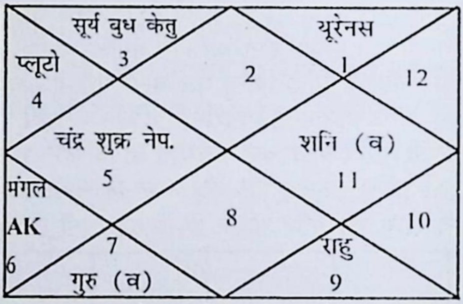

2.5 जॉर्ज बर्नार्ड शॉ
26.07.1856–00:40 घंटे
53 N 20 6 W 18

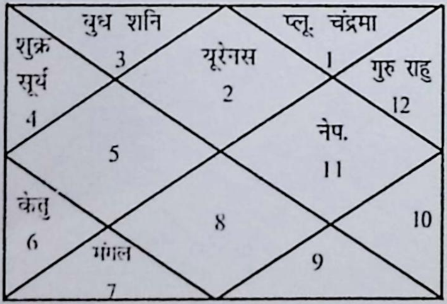

2.6 ग्रेगरी पेक (अभिनेता)
05.04.1916, 8:0 प्रात:
32 N 47 117 W 15

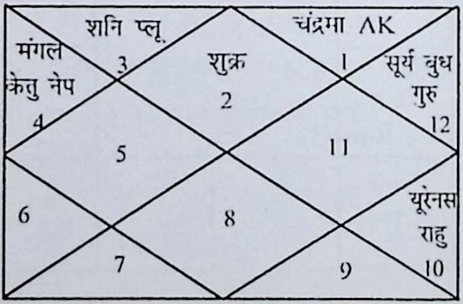

॥ वृष लग्न जातकम् ॥

2.7 हेनरी किसिंजर
27.05 1923, 5:30 प्रातः
50 N 07 8 E 40

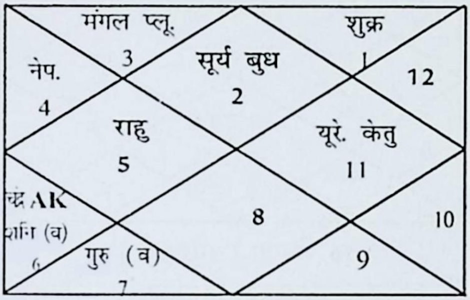

2.8 लता मंगेशकर
28.09.1929, 23:00 घंटे
18 N 58 72 E 50

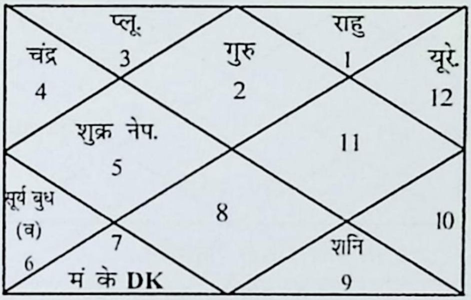

2.9 मोहन सिंह ओबेराय
15.08.1900, 23:55 घंटे
32 N 55 72 E 45

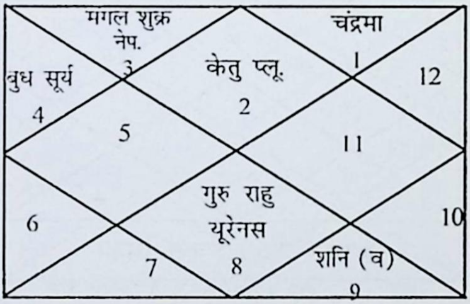

2.10 नरगिस दत्त
01.06.1929, 04:15 घंटे
22 N 30 88 E 20

2.11 नुस्ली वाडिया
15.02.1944, 13:30
18 N 58 72 E 50

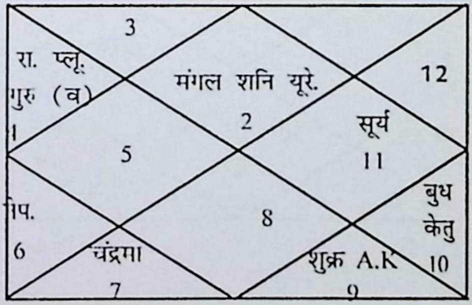

2.12 ओ. हेनरी (लेखक)
11.02.1862, 21:00 घंटे
36 N 04 79 W 46

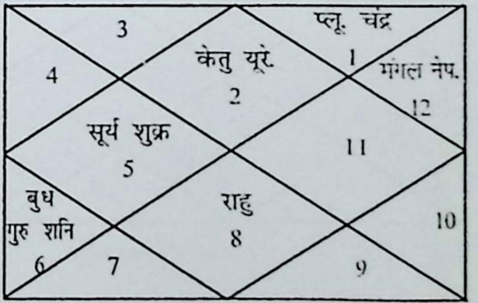

॥ वृष लग्न जातकम् ॥

2.13 उमर ख़य्याम

18.05.1048, 04:45 घंटे

36 N 13 58 E 45

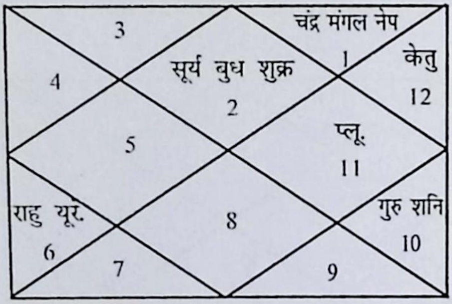

2.14 राहुल बजाज

10.06.1938, 05:10 घंटे

22 N 30 88 E 20

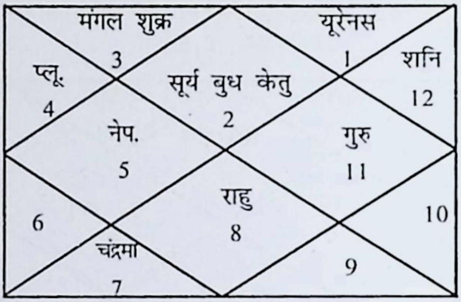

2.15 रवि शास्त्री क्रिकेटर

27.05.1962, 06:27 घंटे

18 N 58 72 E 50

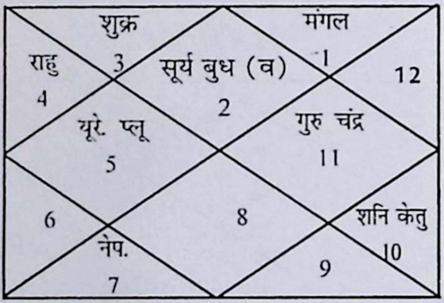

2.16 साधना (अभिनेत्री)

02.09.1941, 23:03 घंटे

24 N 53 67 E 00

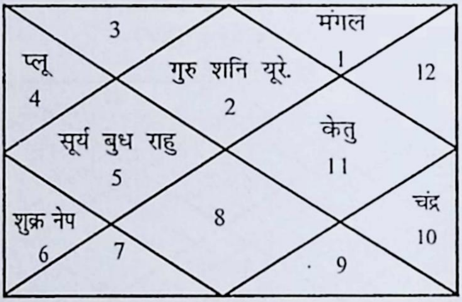

2.17 सेरेना विलियम्स (टेनिस)

26.09.1981, 20:28 घंटे

43 N 25 83 W 57

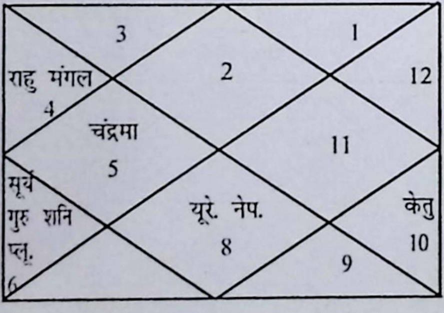

2.18 (286) शत्रुघ्न सिन्हा

09.12.1945, 17:20 घंटे

25 N 37 85 E 12

॥ वृष लग्न जातकम् ॥

2.19 सोहराब मोदी

02.11.1897, 20:00 घंटे

18 N 58 72 E 50

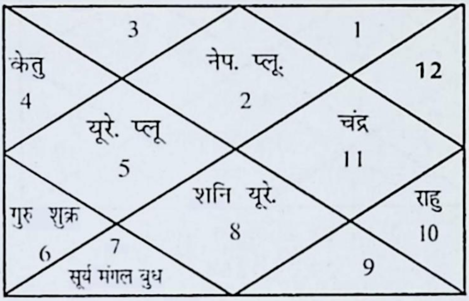

2.20 सन्त ज्ञानेश्वर

15.08.1275, 23:55 घंटे

19 N 09 72 E 52

2.21. स्टीव फोर्ब्स (उद्योगपति)

18.07.1947, 01:35 घंटे

40 N 25 74 W 15

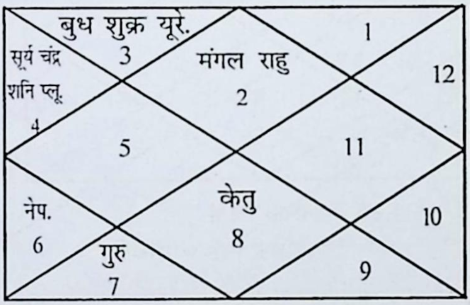

2.22 स्वामी अभेदानन्द

02.10.1866, 21:45 घंटे

22 N 30 88 E 20

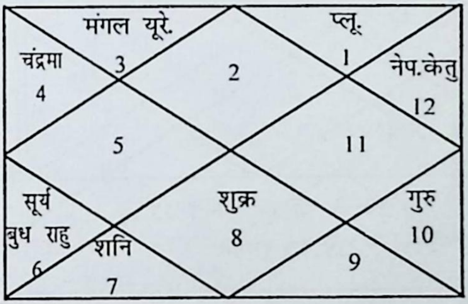

2.23 स्वामी सनातन श्री

12.05.1912, 05:59 घंटे

25 N 26 77 E 39

2.24 भगवान कृष्ण

मध्य रात्रि भाद्र कृष्ण अष्टमी

मथुरा

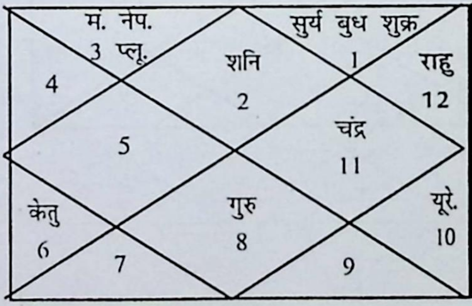

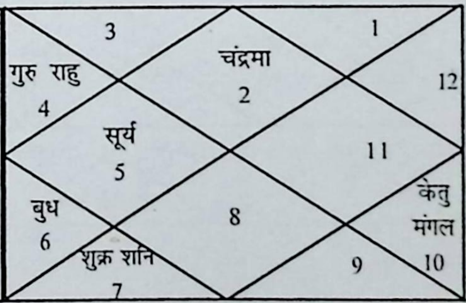

॥ वृष लग्न जातकम् ॥

2.25 महारानी विक्टोरिया
23.05.1819

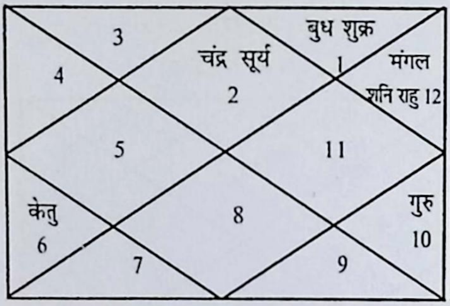

2.26 डॉ. शर्मिला घोष
17.02.1965,12:55 घंटे
दिल्ली

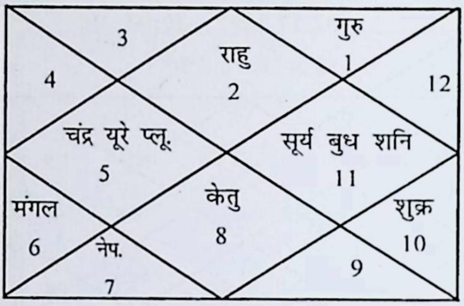

2.27 अजय (व्यापार)
05.08.1961, 01:25 घंटे

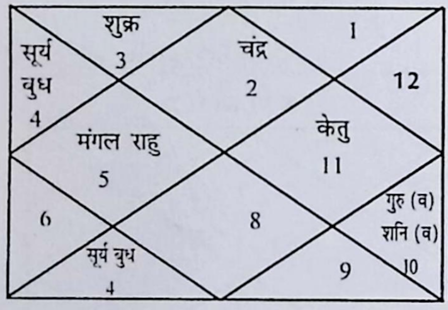

2.28 सर आशुतोष मुखर्जी
29.09.1864

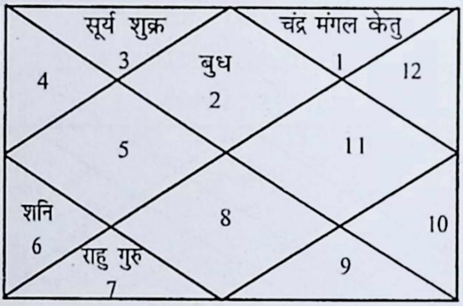

2.29 के पी.एस. मेनन I.C.S
29.10.1898

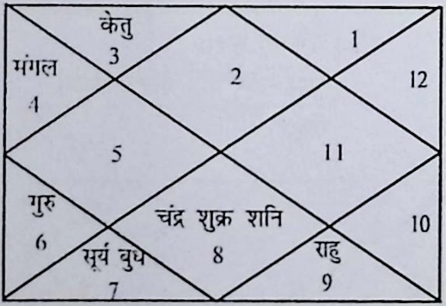

2.30 अशोक-रंजना
15.09.1950 मुम्बई

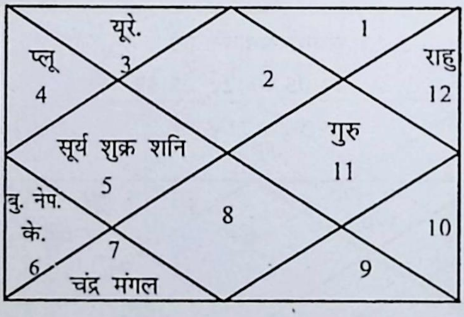

॥ वृष लग्न जातकम् ॥

2.31 आशीष त्रिपाठी (अपर्णा)
09.12.1974–विवाह
25.09.2006

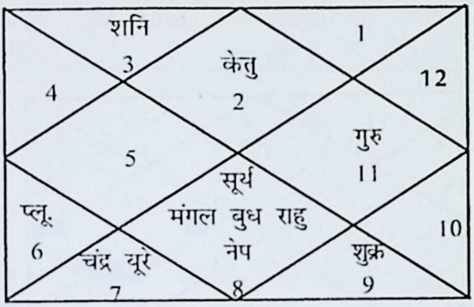

2.32 निधि
04.10.1978–21:35 घंटे
(धनी परिवार में जन्मी)

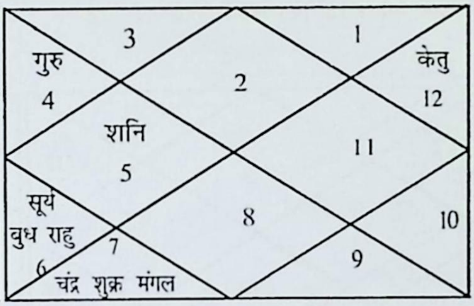

2.33 डॉ. उषा प्रिंसिपल
02.03.1946, 12:25 घंटे
क्वेटा (पाक)

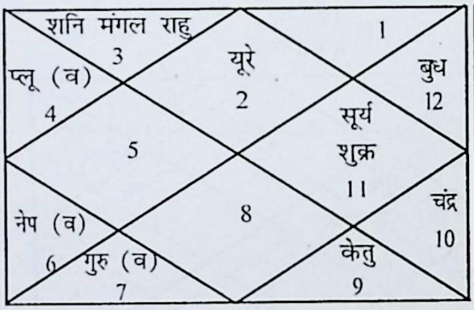

2.34 नेहा (अध्यापिका)
06.10.1980, 20:15
खुर्जा

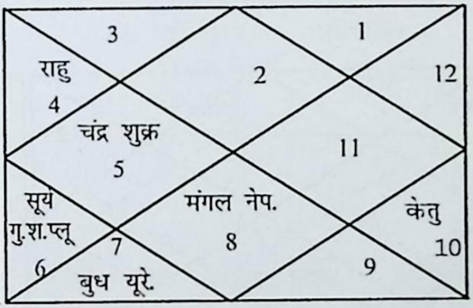

2.35 डॉ. रवि सेठी
06.09.1947, 23:40 घंटे
क्वेटा (पाक)

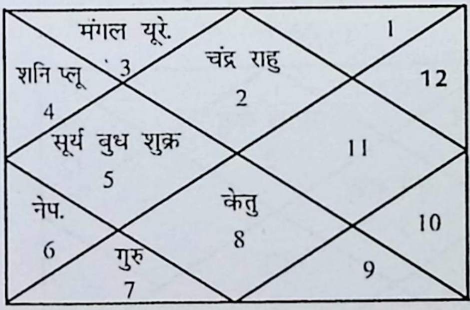

2.36 आदित्य
03.08.1967

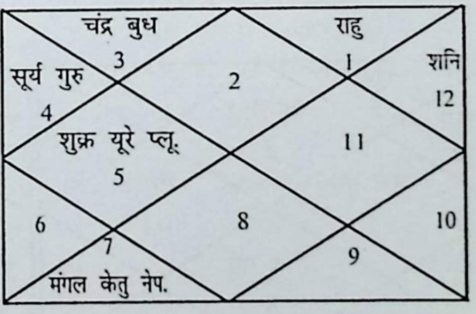

॥ वृष लग्न जातकम् ॥

2.37 अमित 2.38
25.12.1985, 16:32 घंटे
मुम्बई

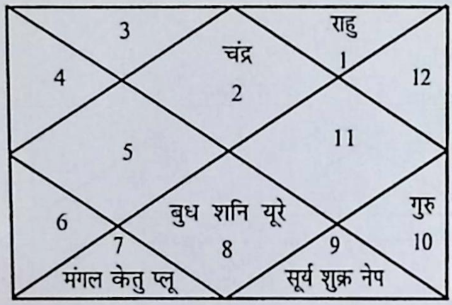

2.38 अनुराग
10.04.1967, 8:55 घंटे
दिल्ली

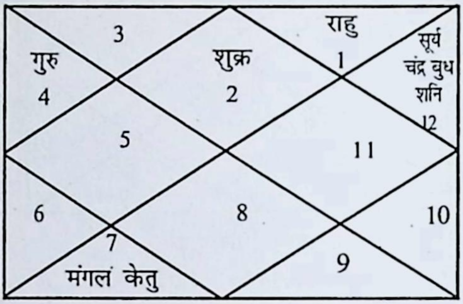

239. चंद्रप्रभा शास्त्री
01.11.1954

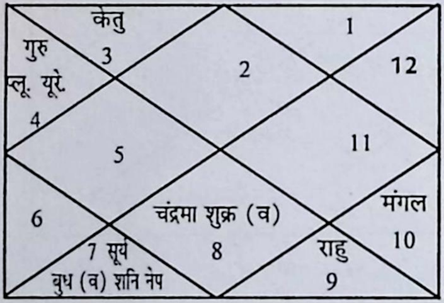

2.40 उपाध्यक्ष सीमा सुरक्षा बल
16.08.1968–23:31
हनुमानगढ़

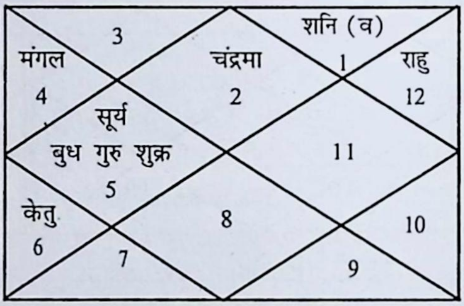

2.41 दिलीप
02.08.1956 K-118

2.42 दमन
14.12.1975, 22:26 रात्रि
दिल्ली

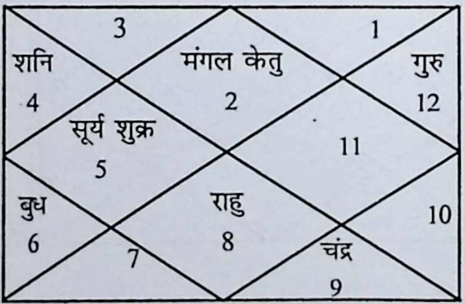

॥ वृष लग्न जातकम् ॥

2.43 कुणाल
18.04.1983
दिल्ली

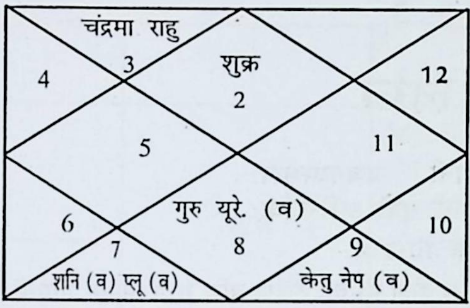

2.44 कल्पना चावला
(अन्तरिक्षयान में मृत्यु)
17.03.1962, प्रातः 10:00 बजे,
करनाल

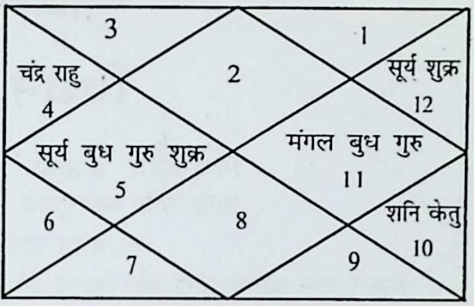

(16 जनवरी, 2003 को
शुक्र-बुध की दशा में मृत्यु)

2.45 ममता हरीश (अमरीका)
18.11.1962 K-186

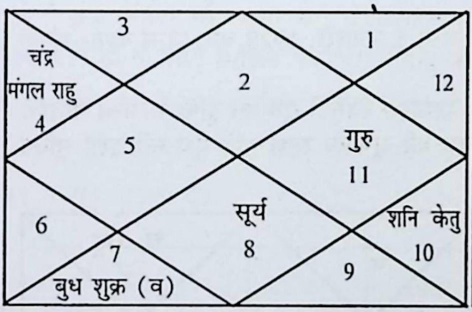

2.46 डॉ. सुनयना (अविवाहित)
12.09.1955, 22:55 रात्रि
हैदराबाद

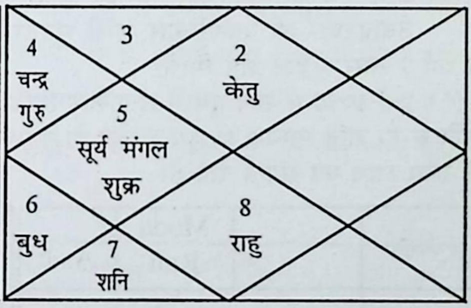

वृष लग्न कुण्डलियाँ 46

बुध-गुरु में डाक्टर बनी
केतु-शनि में विदेश-यात्रा

अध्याय - 3

मिथुन लग्न

मिथुनोदय संजातो ज्ञानी यजनवत्सलः
नाना मति समायुक्तो दीर्घ सूत्रो अरिमर्दकः
॥ यवन जातक 10:3 ॥

मिथुन लग्न जातक ज्ञानी और विद्वानों को प्रिय होता है। वह तीक्ष्ण बुद्धि तथा अनेक विषयों का ज्ञाता होता है। वह थोड़ा आलसी या आज का काम कल पर टालने वाला तथा शत्रुओं का मान-मर्दन करने वाला पराक्रमी होता है।

3.1 बुध की दशा धनदायक—यदि स्वगृही सूर्य के साथ लग्नेश-सुखेश बुध की पराक्रम भाव में युति हो तो बुध की दशा भुक्ति धन देने वाली बनती है। सूर्य भी लग्न सरीखा है जिसे तृतीयेश होने का दोष नहीं लगता। फिर यहाँ बुध से मिथुन राशि एकादश भाव तो कन्या धन भाव में है। अतः बुध की दशा भुक्ति धनप्रद होगी।

उदाहरण—श्री ज़ुल्फीकार अली भुट्टो—जन्म 5 जनवरी, 1928 को; जन्म दशा—मंगल 4 वर्ष 7 मास 7 दिन शेष मिली।

इन्हें 1970 में शनि बुध में सत्ता लाभ मिला। दशमस्थ स्वगृही गुरु का दृष्टि सम्बन्ध षष्ठस्थ शनि से है। शनि भाग्येश तो बुध लग्नेश है। पुनः बुध की सूर्य के साथ युति बुध की दशा भुक्ति में राज्य लाभ का संकेत देती है।

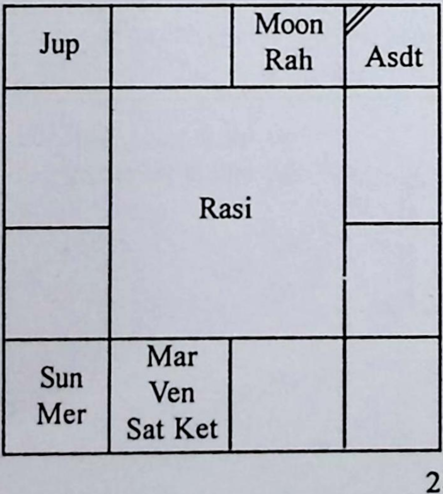

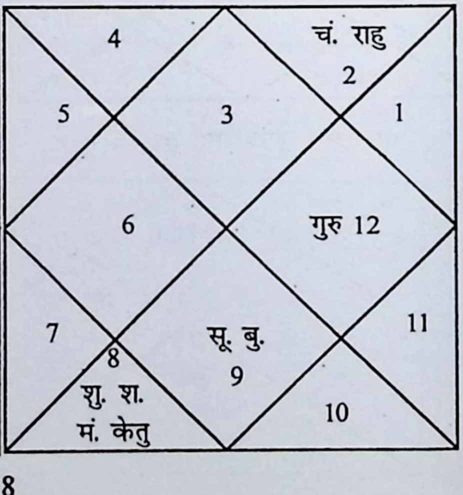

3.2 शुक्र की दशा में धन लाभ–यदि द्वितीय भाव में द्वितीयेश (धनेश) चन्द्रमा के साथ लाभेश मंगल और शुक्र की युति हो तो शुक्र की दशा भुक्ति वैभव देगी। ध्यान रहे, चन्द्रमा धनेश, शुक्र पंचमेश तो मंगल लाभेश है। तीनों का धन स्थान में युति करना इन्हें धन प्रदायक बनाता है। शुक्र पंचमेश व भोगेश होने से धन-वैभव प्राप्ति में विशेष भूमिका निभाएगा।

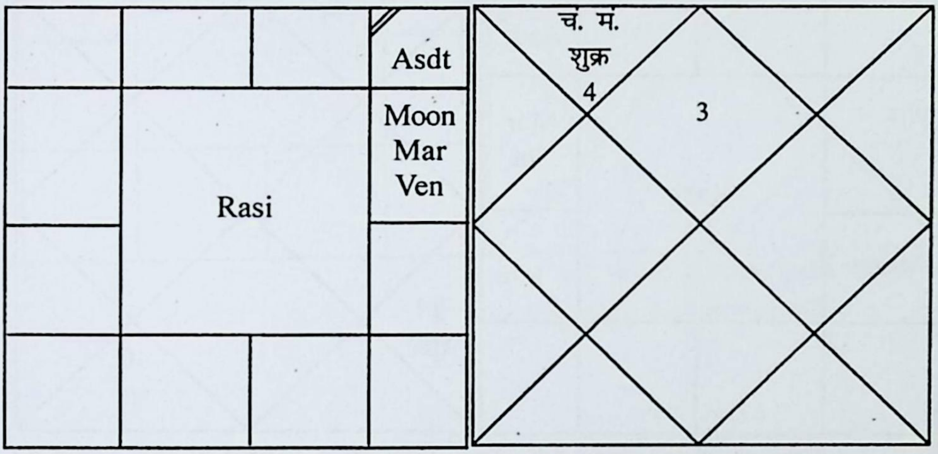

3.3 मंगल की दशा धन प्रदायक–मंगल यदि द्वितीय भाव में तथा चन्द्रमा और शनि अष्टम में हों तो शनि मिश्रित फल देगा किन्तु मंगल निश्चय ही अपनी दशा भुक्ति में उत्तम लाभ देगा। ध्यान रहे, मंगल लाभेश, चंद्रमा धनेश तो शनि भाग्येश है। लाभेश मंगल का धन भाव में भाग्येश शनि से दृष्टि प्राप्त कर, भाग्य स्थान को देखना, मंगल की दशा को धन और भाग्य वृद्धि का कारक बनाता है।

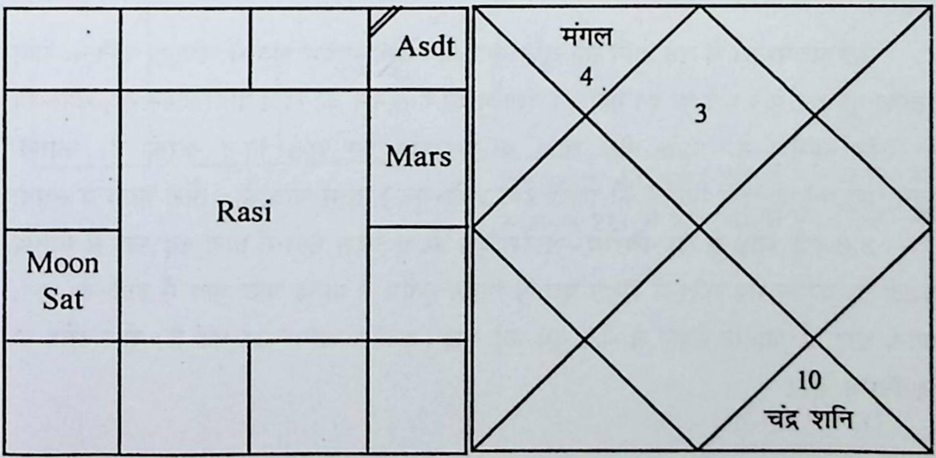

3.4 शनि और मंगल की दशा में धन हानि

यदि शनि और मंगल द्वितीय भाव में अष्टमस्थ चन्द्रमा से दृष्ट हों तो शनि और मंगल की दशा धन हानि देती है। धन भाव का स्वामी चन्द्र अष्टम भाव में शत्रु क्षेत्री है तो शनि और मंगल क्रूर ग्रह होकर धन भाव में शत्रु क्षेत्री हैं। मंगल-शनि या शनि में मंगल की भुक्ति संचित धन में कमी देगी।

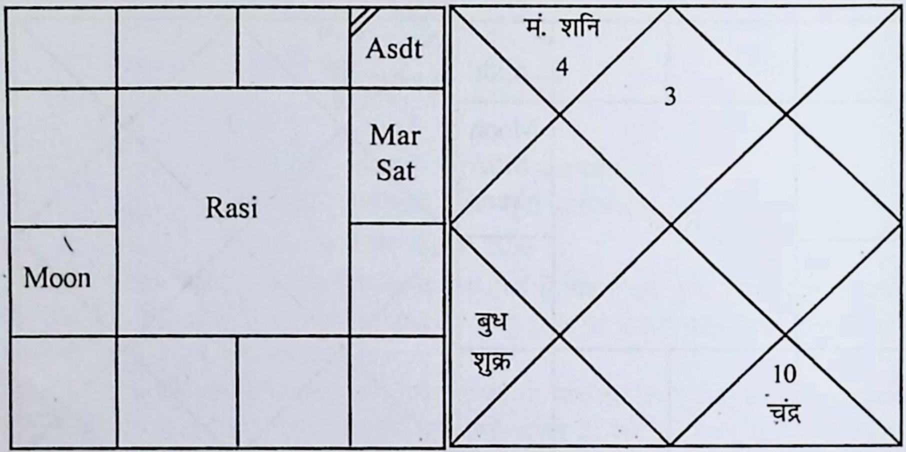

3.5 द्वितीयेश चन्द्रमा मारक नहीं—मिथुन लग्न जातक के लिए द्वितीयेश चन्द्रमा को मारक होने का दोष नहीं लगता। ध्यान रहे, लग्न रूप होने से सूर्य और चन्द्रमा को तृतीयेश, षष्ठेश, अष्टमेश, व्ययेश या मारेकश होने का दोष नहीं लगता। यदि चन्द्रमा पक्ष बली है तो निश्चय ही अशुभ फल कदापि नहीं देगा।

3.6 धन प्राप्ति का योग—यदि चन्द्रमा और मंगल लाभ स्थान तथा शनि भाग्य स्थान में हो तो इसे धन प्राप्ति का उत्कृष्ट योग जानें। यहाँ लाभ स्थान में स्वगृही लाभेश मंगल के साथ धनेश चन्द्रमा की युति पर भाग्येश शनि की दृष्टि निश्चय ही धन और भाग्य वृद्धि में सहायक होगी।

3.7 नवमभाव में गुरु शनि की युति गंगास्नान देगी—नवम भाव में स्वगृही शनि के साथ दशमेश गुरु की युति होने पर इन ग्रहों की दशा भुक्ति गंगास्नान का लाभ देगी। ध्यान रहे, धर्मस्थान में धर्मेश कर्मेश की युति तीर्थ यात्रा व गंगास्नान का सुख दिया करती है। कारण, नवम भाव धर्म तो दशम सत्कर्म को दर्शाता है। **(शनि+गुरु) नवम भाव में = तीर्थ यात्रा व स्नान।**

3.8 बड़े भाई से वैर-विरोध—लग्नेश बुध का एकादश भाव में होना बड़े भाई से मतभेद कराता है। कारण मेष राशि में स्थित बुध से मिथुन तृतीय व कन्या षष्ठ भाव में होती है। अतः अपनी राशि से अनिष्ट स्थान में बैठा बुध बड़े भाई (क्योंकि लाभ बड़ा भाई है) से मतभेद या वैर-विरोध देगा।

(सन्दर्भ 3.6)

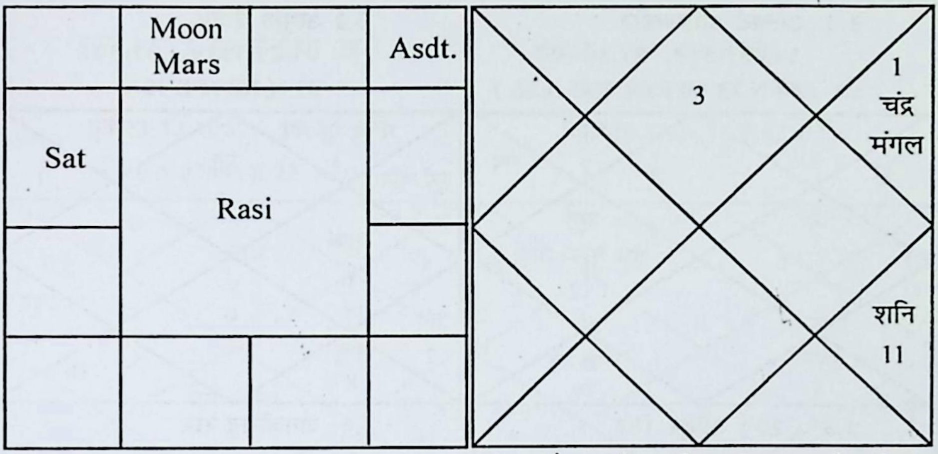

धनेश और लाभेश की लाभ स्थान में युति पर स्वक्षेत्री भाग्येश की दृष्टि धन देगी।

(सन्दर्भ 3.8)

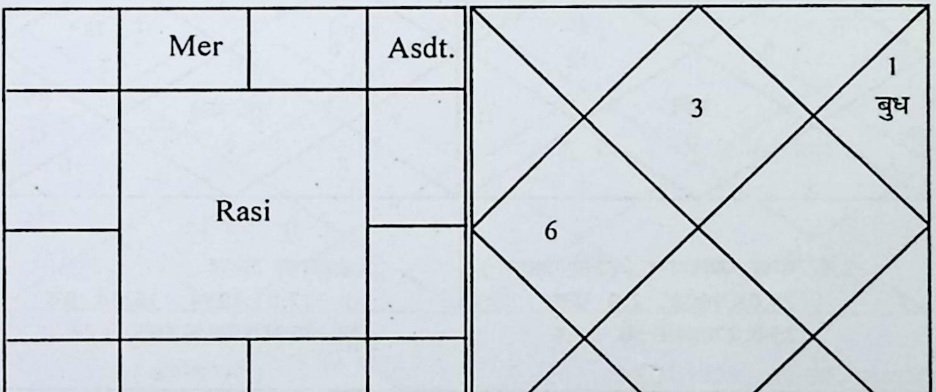

बुध से बुध की अपनी राशियाँ 3,6 अर्थात अशुभ स्थान में होने से बड़े भाई से वैर-विरोध देगा।

॥ मिथुन लग्न जातकम् ॥

3.1 अल्बर्ट आइन्सटीन
14.03.1879, 11:30 घंटे
48 N 23 10 E 0 (शुक्र A.K.)

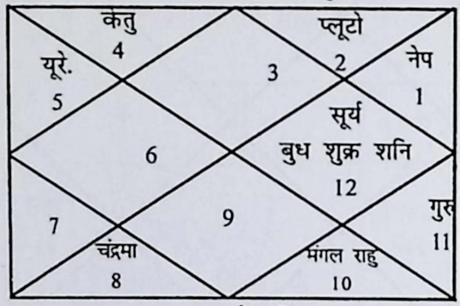

3.2 अमृता प्रीतम
01.09.1919, 01:30
32 N 10 74 E 12

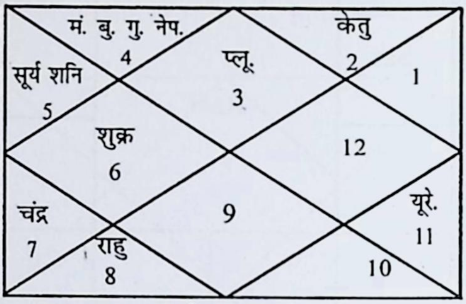

3.3 (20) अर्जुन सिंह
05.11.1930, 22:0 घंटे
24 N 32 81 E 18

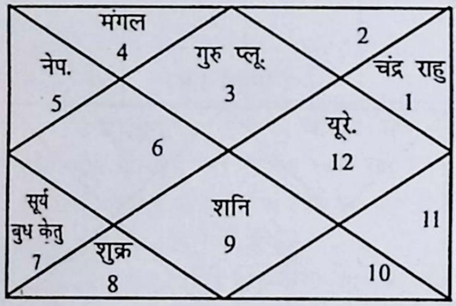

3.4 जगजीवन राम
05.04.1908, 11:00
25 N 34 84 E 40

3.5 मेजर ध्यानचन्द (हॉकी जादूगर)
29.08.1905, 2:0 प्रातः
25 N 27 81 E 50

3.6 दया शंकर
17.01.1954, 16:14 घंटे
27 N 0 78 E 56

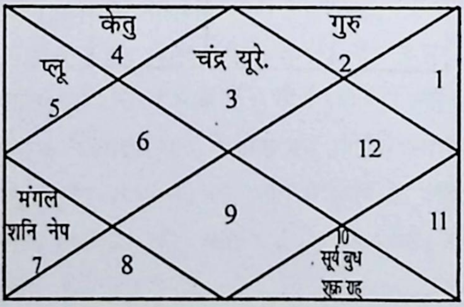

॥ मिथुन लग्न जातकम् ॥

3.7 (63) देवकीनन्दन खत्री
(उपन्यासकार)
23.12.1867, 17:30 घंटे
26 N 07 85 E 23

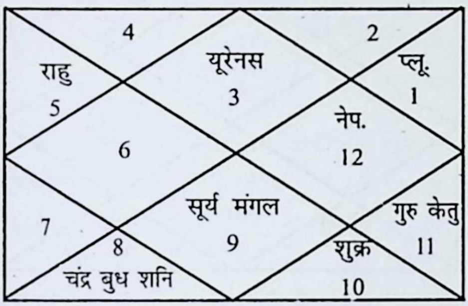

3.8 114 जयललिता
24.02.1948, 15:0 घंटे
10 N 46 76 E 42

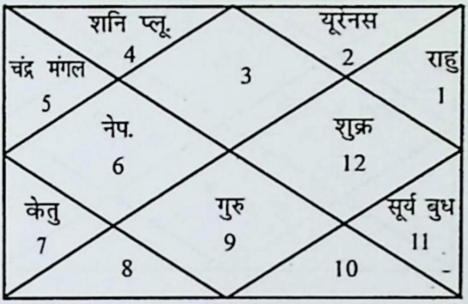

3.9 जान्स केपलर (वैज्ञानिक)
6.1.1572, 14.36
48 N 45 8 E 52

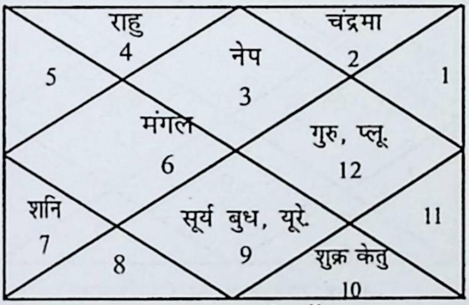

3.10 जूलीक्रिस्टी (अभिनेत्री)
14.04.1941, 10:00 प्रातः
25 N 35 91 E 53

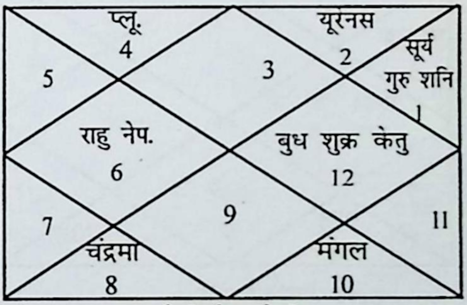

311. लक्ष्मण राव किर्लोस्कर
(उद्योगपति)
20.06.1869, 6:00 घंटे
15 N 48 75 E 15

3.12 माँ निर्मला देवी
21.03.1923, 12:00 मध्यान्ह
22 N 04 78 E 58

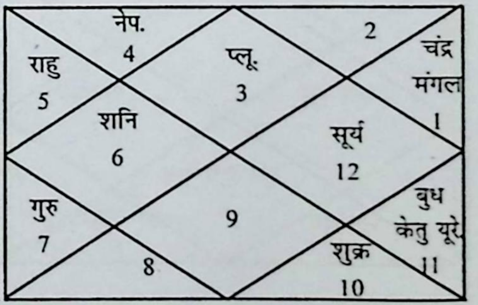

॥ मिथुन लग्न जातकम् ॥

3.13 मैथिलीशरण गुप्त (कवि)

3.08.1886, 3:00

25 N 34 78 E 49

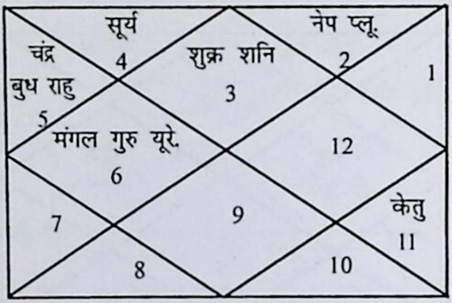

3.14 मोरारजी देसाई

29.02.1896, 13:00

20 N 40 72 E 55

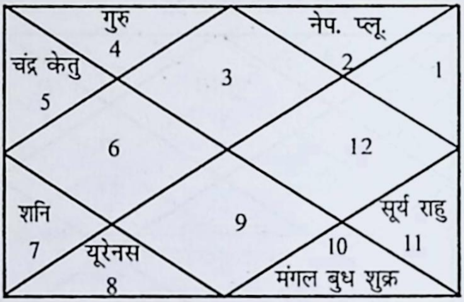

3.15 मुमताज (अभिनेत्री)

31.07.1946, 5:00 प्रातः

मुम्बई

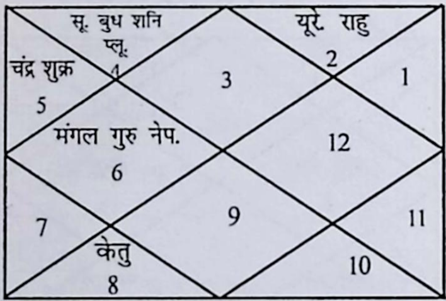

3.16 पी.वी. अखिलन्दम (लेखक)

27.06.1922, 05:30

10 N 26 79 E 19

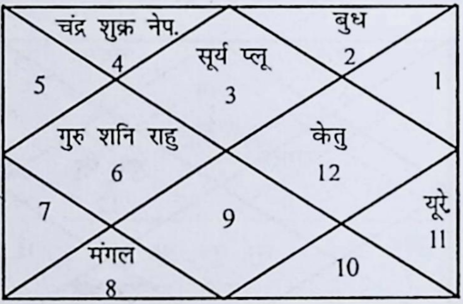

3.17 प्रियंका गांधी

12.01.1972, 16:42

नई दिल्ली

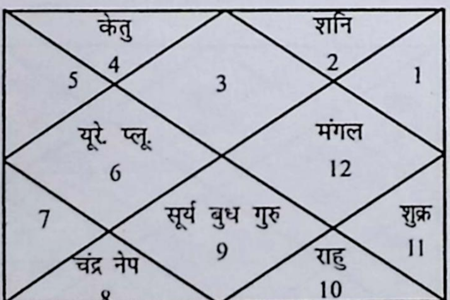

3.18 राजेश खन्ना (अभिनेता)

29.12.1942, 17:45

31 N 35 74 E 56

॥ मिथुन लग्न जातकम् ॥

3.19 रामकृष्ण डालमिया (उद्योग)
7.04.1893, 10:42
28 N 12 75 E 42

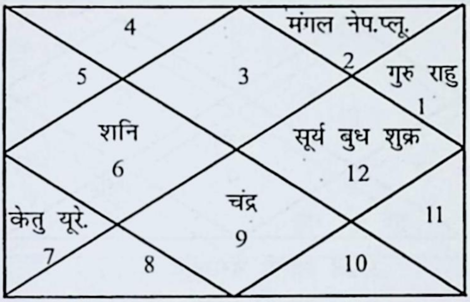

3.20 रुड्यार्ड किपलिंग
(लेखक)
30.12.1865, 17:00
18 N 58 72 E 50

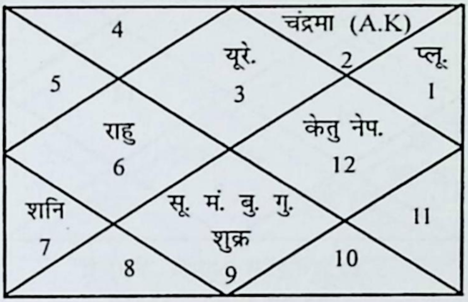

3.21 समर्थ गुरु रामदास
14.03.1608, 12:00 दोपहर
19 N 33 75 E 50

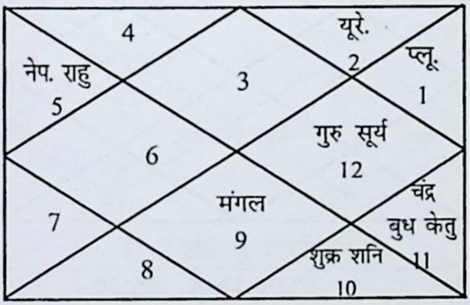

3.22 शम्मी कपूर (अभिनेता)
21.10.1931, 22:30
18 N 58 72 E 50

3.23 प्रोफेसर शील मिश्र
7.11.1959, 20:25
25 N 27 81 E 50

3.24 स्टेफी ग्राफ
14.06.1969, 4:40
49 N 28 8 E 29

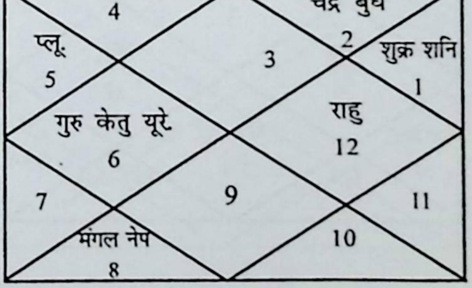

॥ मिथुन लग्न जातकम् ॥

3.25 स्टीवन स्पील बर्ग
18.12.1946, 18:16
39 N 09 84 W 27

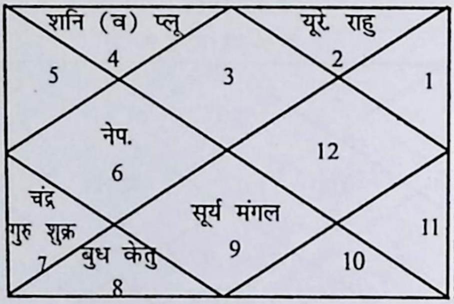

3.26 सुमित्रानन्दन पन्त
20.05.1900, 8:00 प्रातः
29 N 37 79 E 40

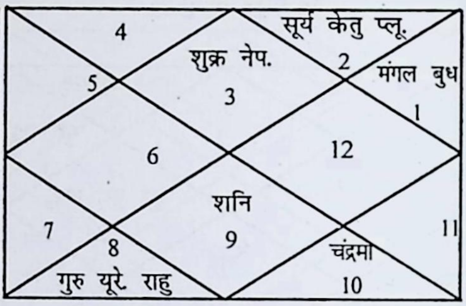

3.27 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
21.02.1899, 13:30
22 N 25 87 E 24

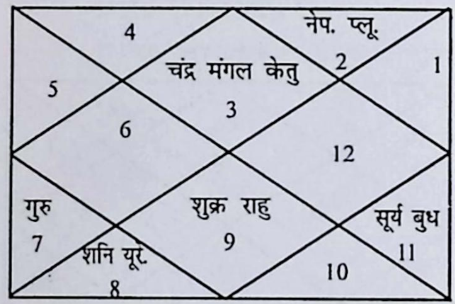

3.28 स्वामी दयानन्द
28.02.1825, 13:30
22 N 20 71 E 00

3.29 स्वामी स्वरूपानन्द
15.12.1903, 19:00 घंटे
17 N 00 73 E 22

3.30 शेरपा तेनसिंह
01.06.1914, 06:30
27 N 50 86 E 39

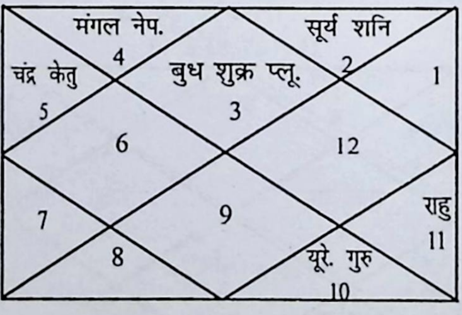

॥ मिथुन लग्न जातकम् ॥

3.31 विजयराजे सिंधिया
12.10.1919, 23:00
26 N 12 78 E 09

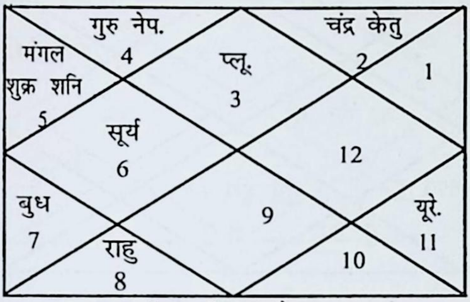

3.32 विलियम ब्लेक
(फिल्म निर्माता)
28.11.1757, 18:45
लन्दन

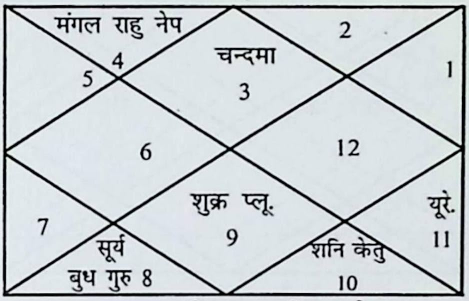

3.33 डॉ. ज़ाकिर हुसैन
(राष्ट्रपति)
08.02.1897, 15:15
17 N 22 78 E 26

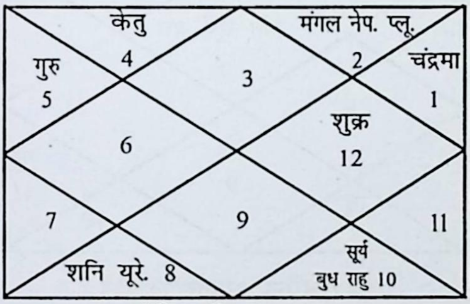

3.34 जुल्फीकार अली भुटटो
05.11.1928, 17:26 घंटे
27 N 32 68 E 02

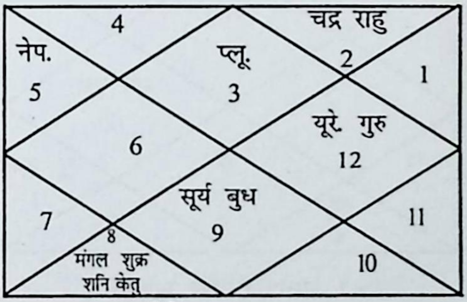

3.35 इंजी. तृप्ति
18.11.1969
दिल्ली

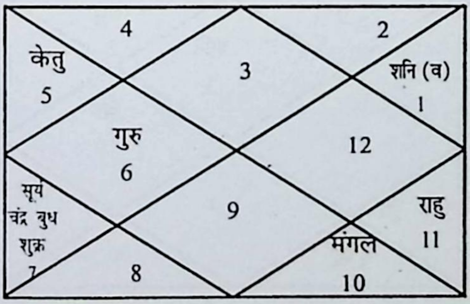

3.36 प्रीति गुप्ता
01.10.1966, 23:05
दिल्ली

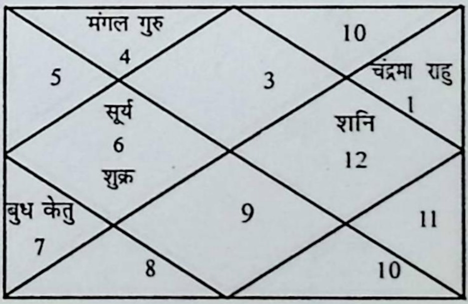

॥ मिथुन लग्न जातकम् ॥

3.37 पूनम
26.08.1968, 01:28
दिल्ली

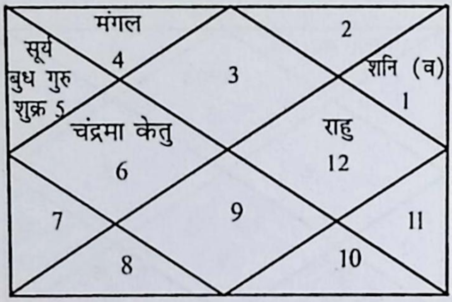

3.38 डॉ. प्रणोति
21.12.1970

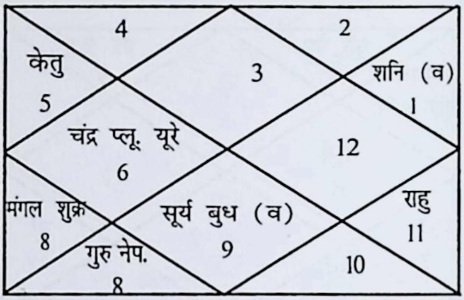

3.39 अर्चना MBA
08.04.1974

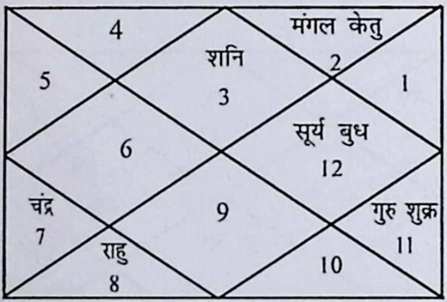

3.40 इंजी. अनुज पूजा
03.07.1974
दिल्ली

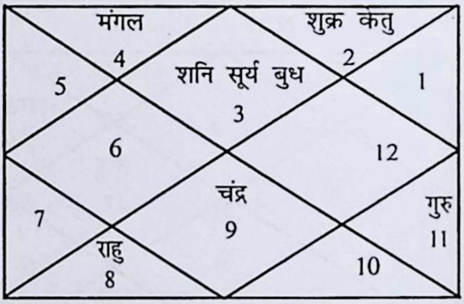

3.41 आर्यन (रुचि खुर्जा)
27.08.2002, 02:34 रात्रि
न्यू जर्सी अमरीका

3.42 देवेन्द्र अमृतलाल जैन
25.11.1974
दिल्ली

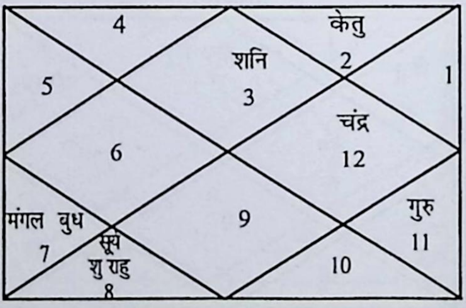

॥ मिथुन लग्न ॥

3.43 गरिमा ऋषि
25.05.1976

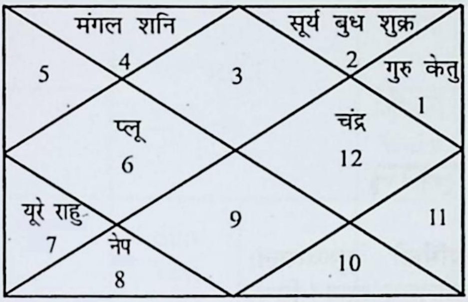

3.44 इन्दर सिंह
02.05.1974, 10:30 प्रातः दिल्ली
(पत्नी रूठ कर मायके गई 13.8.98 मं मं)

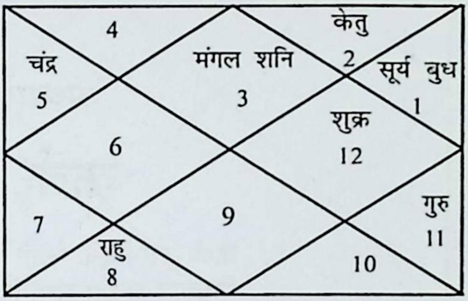

विवाह 8.7.1998 मं. चंद्र बुध

मिथुन लग्न जातक 44

अध्याय - 4

कर्क लग्न

कर्क लग्नोदये जातो धर्मिष्ठो गुरुवत्सलः
मिष्ठान्न भुक्स संभोगी सौभाग्य स्वजन प्रियः
॥ (यवन जातक 10:4)॥

कर्क लग्न में पैदा हुआ व्यक्ति धार्मिक, गुरुभक्त, मिष्ठान्न प्रेमी, लौकिक सुख-भोग में आसक्ति वाला, सुन्दर, भाग्यशाली तथा स्वजनों को प्रिय होता है।

4.1 गुरु विशेष धनदायी नहीं-

कर्क लग्न के लिए गुरु की मूल त्रिकोण राशि षष्ठ भाव में होने से, गुरु भाग्येश होकर भी, धन दायक नहीं होता। इसके विपरीत मकर लग्न के लिए बुध षष्ठेश और नवमेश होने पर शुभ फल देता है। कारण, यहाँ बुध की मूल त्रिकोण राशि भाग्यस्थान में पड़ती है। अतः बुध मकर लग्न जातक को अपनी दशाभुक्ति में भाग्य वृद्धि देगा।

4.2 स्वक्षेत्री मंगल विशेष शुभ है-

कर्क लग्न जातक के लिए मंगल पंचमेश दशमेश होने से योग कारक है। अब यदि ऐसा मंगल पंचम या दशम भाव में स्वक्षेत्री हो तो निश्चय ही अधिक शुभ फल देनेवाला बनेगा।

4.3 व्यय भाव में शुक्र शुभ है-

कर्क लग्न के लिए शुक्र की मूल त्रिकोण राशि चतुर्थ भाव में पड़ती है तो अन्य राशि लाभ स्थान में। शुक्र का अपनी मूल त्रिकोण राशि तुला से त्रिकोण या नवम भाव में होना शुभ है। यूँ भी भोग कारक ग्रह को भोग स्थान में शुभ व कल्याणकारी माना जाता है। यदि शुक्र धन भाव में हो तब लाभेश की धन भाव में स्थिति निश्चय ही धन लाभ देगी।

4.4 धन भाव में चन्द्र मंगल गुरु की युति भाग्यशाली बनाए-

यदि (चन्द्र+मंगल+गुरु) द्वितीय भाव में तथा (सूर्य+शुक्र) पंचम भाव में हों तो जातक, धनी मानी और भाग्यशाली होता है। ध्यान रहे, दशमेश मंगल की लग्नेश के साथ युति और भाग्यस्थान पर दृष्टि है तो भाग्येश गुरु भी दशमेश से युति कर दशम भाव को देख रहा है। पुनः धनेश-पंचमेश का स्थान परिवर्तन और लाभेश का लाभ स्थान को देखना लाभ वृद्धि दर्शाता है।

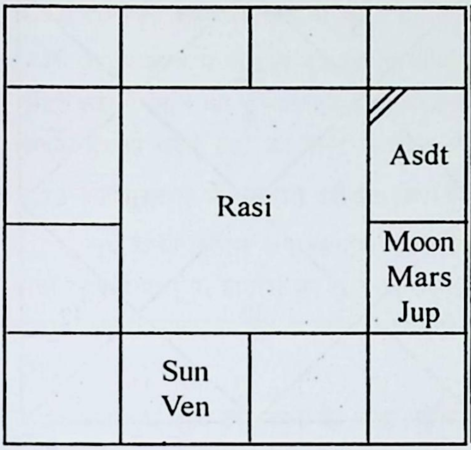

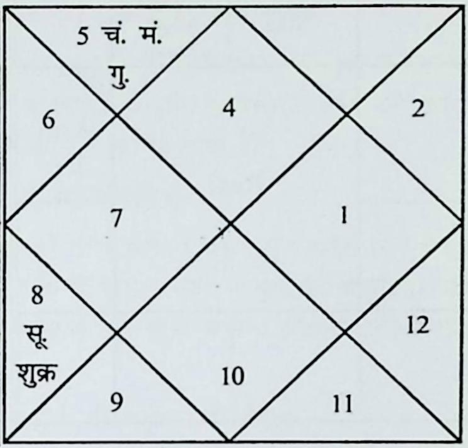

4.5 पंचमस्थ बुध शुक्र युति होने पर बुध की दशा शुभ–

कर्क लग्न वालों का शुक्र सुखेश और लाभेश तो बुध तृतीयेश और व्ययेश होता है। शुक्र लाभेश है तो बुध अपनी दशा में शुक्र के फल देगा। बुध तृतीय व द्वादश भाव व दो अनिष्ट भावों का स्वामी होकर अपनी दोनों राशियों से तीसरे व छठे भाव में बैठने से विपरीत राजयोग बना रहा है। अत: शुभ फल देगा।

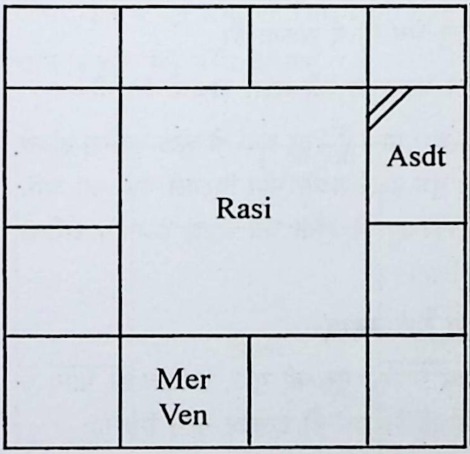

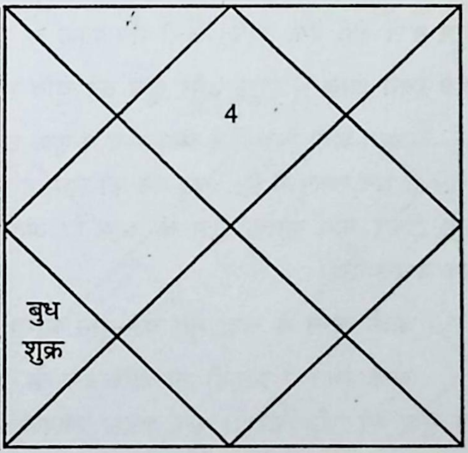

4.6 महाराजा योग–

(चन्द्र+बुध+शुक्र) एकादश भाव में, गुरु लग्न में तथा सूर्य दशम भाव में हो तो जातक उत्साही, गुणी, व यशस्वी राजा होता है। इस योग में सत्ता सुख का नैसर्गिक कारक सूर्य दशम भाव में उच्चस्थ है। भाग्येश गुरु भी लग्न में उच्चस्थ होकर पंचम व नवम भाव को देख रहा है। लग्नेश चन्द्रमा भी उच्चस्थ होकर लाभेश शुक्र के साथ लाभ स्थान में है। ऐसा जातक निश्चय ही उत्कृष्ट राजयोग का फल पाएगा।

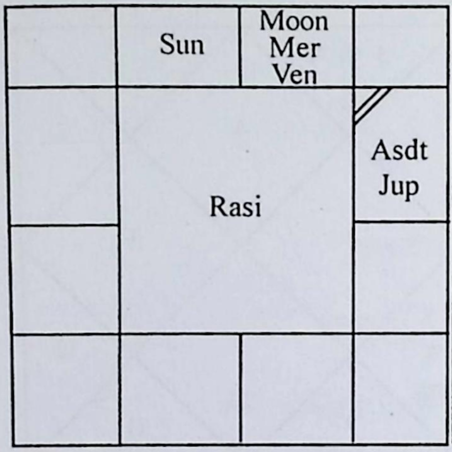

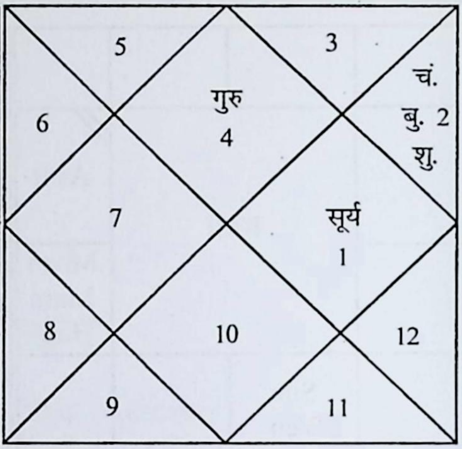

4.7 दशम भाव में सूर्य मंगल की युति धनी बनाए–

कर्क लग्न जातक का धनेश सूर्य दशम भाव में उच्चराशिस्थ होता है। यदि धनेश की स्वगृही दशमेश से युति हो तो धन, मान की वृद्धि होना निश्चित है।

4.8 गुरु की दशा मारक–

जैसा कि पहले भी कहा गया है कि गुरु की मूल त्रिकोण राशि षष्ठ भाव में होने से गुरु शुभ फल नहीं देगा अपितु कभी रोग शोक या मृत्यु भय भी दे सकता है।

4.9 व्यय भाव में शुक्र और बुध की युति होने पर शुक्र की दशा राजयोग देगी–

प्राय: सभी विद्वानों ने व्यय भाव में शुक्र को शुभ माना है फिर यहाँ तो शुक्र लाभेश होकर लाभ से धन स्थान में है; अत: धन का लाभ देगा। बुध द्वादशेश या भोग विलास भाव का अधि पति होकर भोग कारक शुक्र के साथ है। अत: निश्चय ही शुक्र की दशा राजयोग सरीखा धन वैभव देगी।

4.10 कर्क लग्न में चन्द्र गुरु की युति भाग्य व यश बढ़ाए–

कर्क लग्न में स्वगृही लग्नेश चन्द्रमा के साथ भाग्येश गुरु की युति, निश्चय ही भाग्य व देह सुख की वृद्धि करेगी। यदि चन्द्रमा पक्षबली हो तो निश्चय ही उत्कृष्ट फल मिलेगा।

4.11 चन्द्रमा लग्न में और मंगल सप्तम भाव में होने से राजयोग–

कर्क लग्न के लिए मंगल केन्द्र (दशम भाव) और त्रिकोण (पंचम भाव) का स्वामी होने से योगकारक होता है। योगकारक मंगल का सप्तम भाव में उच्चस्थ होकर दशम भाव में अपनी मूल त्रिकोण राशि, लग्नेश चन्द्रमा तथा धन भाव से दृष्टि सम्बन्ध कर निश्चय ही राजयोग सरीखा शुभ फल देगा।

4.12 लग्न में स्वक्षेत्री चन्द्रमा और शनि चतुर्थ भाव में होने से राजयोग–

कर्क लग्न में चन्द्रमा का लग्नेश होकर लग्न से युति करना निश्चय देह सुख व यश की वृद्धि करेगा। शनि का उच्चराशिस्थ होकर लग्न व लग्नेश से दृष्टि सम्बन्ध उत्कृष्ट योग कारक बनाता है। दो बली ग्रहों का लग्न से केन्द्र में होना योग कारक होता है।

4.13 कर्क लग्न में चन्द्रमा और दशमस्थ सूर्य से राजयोग–

सूर्य धनेश होकर धन भाव से नवम स्थान में उच्च होने से बहुत शुभ होगा। सूर्य धन व सत्ता सुख देगा। पुनः लग्नेश का लग्न में स्वगृही होना भी मान-सम्मान व सुख को बढ़ाएगा। अतः दशम भाव में उच्चस्थ सूर्य व लग्न में स्वगृही चन्द्रमा से बना केन्द्र सम्बन्ध राजयोग सरीखा फल देगा।

4.14 लग्नस्थ सूर्य की बुध के साथ युति से सूर्य की दशा में निर्धनता–

लाभेश शुक्र सुख स्थान में स्वगृही हो तथा लग्नेश चन्द्रमा लाभ स्थान में उच्चस्थ होकर यदि पंचमेश मंगल और नवमेश गुरु से युति करें। पुनः धनेश सूर्य की व्ययेश बुध के साथ लग्न में युति हो तो सूर्य को छोड़कर शेष सभी ग्रह अपनी दशा भुक्ति में धन लाभ देंगे। सूर्य की दशा निर्धनता देगी। धनेश का धन भाव से व्यय भाव में व्ययेश के साथ बैठना व्यय की वृद्धि कर धन का अभाव देगा। इसके विपरीत बुध की धनेश सूर्य के साथ युति, बुध को धन प्रदायक बनाएगी। लाभ स्थान में बैठे सभी ग्रह लाभ बढ़ाते हैं तो लाभेश शुक्र का सुखस्थान में स्वगृही होना भी धन लाभ व सुख की वृद्धि करेगा।

(सन्दर्भ 4.14)

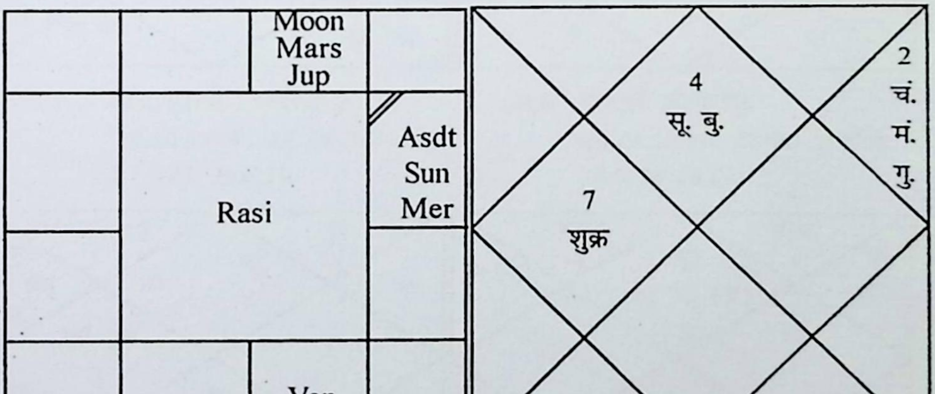

4.15 राहु की दशा में गंगास्नान–

यदि गुरु और बुध की युति लाभ स्थान में हो तथा शनि और राहु पंचम भाव में हों तो राहु की दशा गंगास्नान का सौभाग्य देगी। धर्म या नवम भाव का स्वामी गुरु की व्ययेश बुध के

साथ युति धर्म या पुण्य संचय में रुचि देती है। इसी प्रकार सप्तमेश शनि का पंचम भाव में बैठकर भाग्येश-भोगेश की दृष्टि पाना भी शुभ कर्म कराएगा। कारण सप्तम भाव दशमात् दशम होने से कर्म का सूक्ष्म रूप है। राहु, शनि व धर्मेश गुरु का प्रभाव आत्मसात कर, अपनी दशा में गंगास्नान का लाभ देगा।

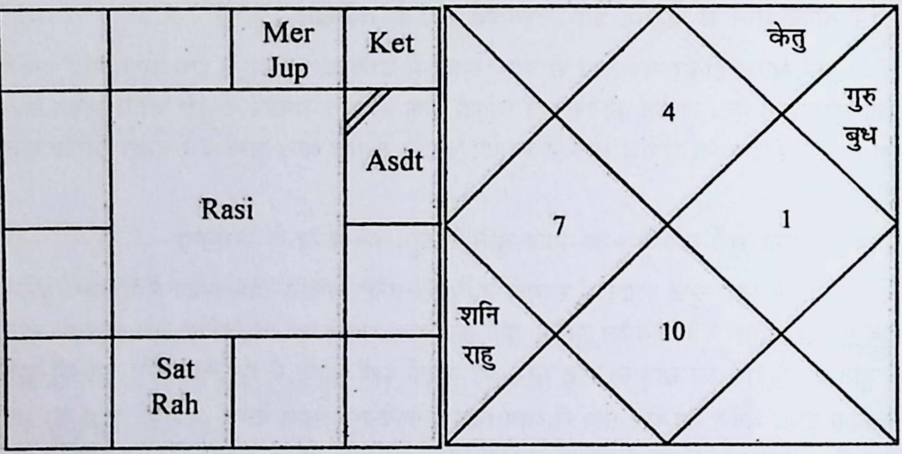

॥ कर्क लग्न जातकम् ॥

4.1 एंडी कौफमैन
17.01.1949, 18:03 घंटे
40 N 41 73 W 48

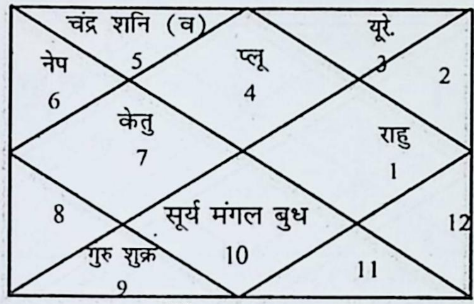

4.2 एंजलीना जूली (अभिनेत्री)
04.06.1975, 9:06 घंटे
34 N 0 118 W 15

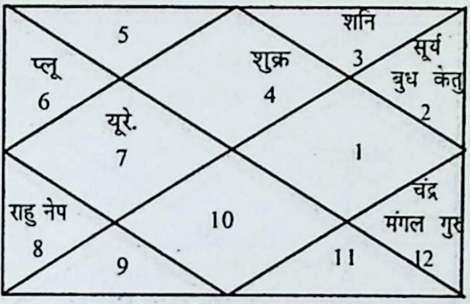

4.3 महर्षि अरविन्द
15.08.1872, 4:50
कलकत्ता

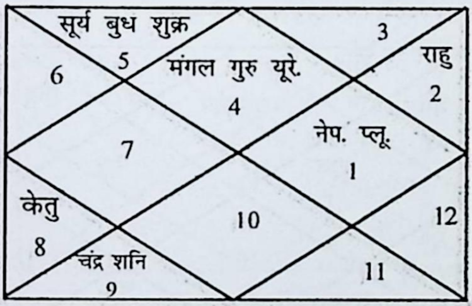

4.4 बिल क्लिण्टन
19.08.1946, 5:0 घंटे
35 N 0 92 W 30

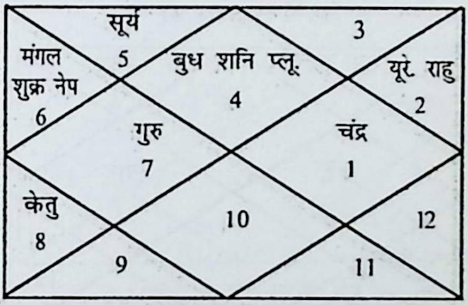

4.5 चंद्रास्वामी ('तांत्रिक)
30.10.1949, 23:45 घंटे
27 N 52 76 E 20

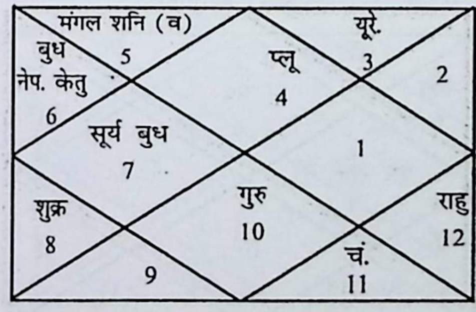

4.6 चार्ल्स शोभराज
06.04.1944, 12:00 मध्यान्ह
21 N 20 10 E 0

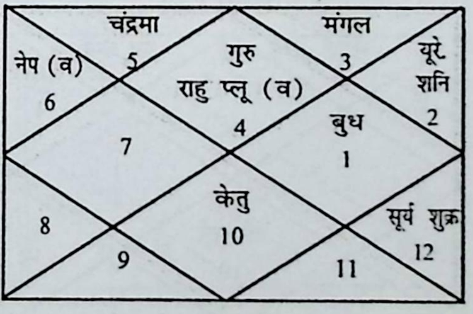

॥ कर्क लग्न जातकम् ॥

4.7 जॉर्ज बुश
06.07.1946, 7:26 प्रातः
41 N 18 72 W 55

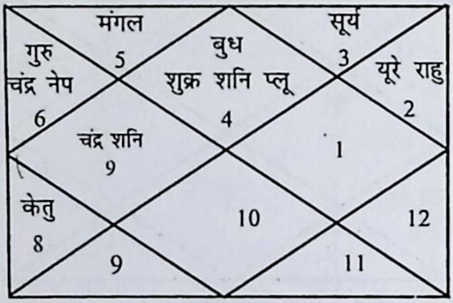

4.8. एच.डी. देवगौड़ा (हासन)
18.05.1933, 11:00 घंटे
13 N 01 76 E 03

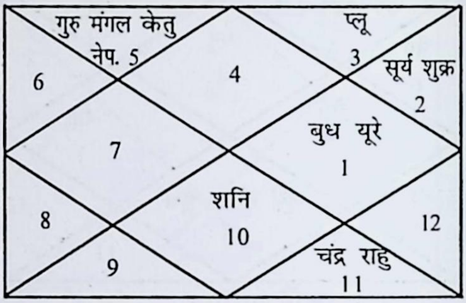

4.9 हेमा मालिनी (अभिनेत्री)
16.10.1948, 0:30
10 N 49 78 E 41

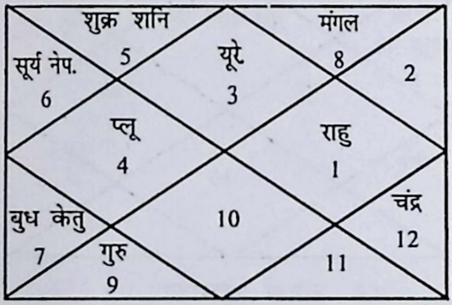

4.10 इन्द्र कुमार गुजराल
04.12.1919, 22:00 घंटे झेलम
33 N 0 73 E 45

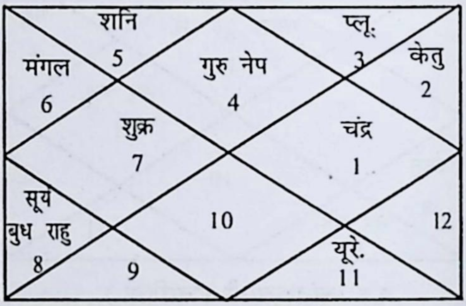

4.11 इन्दिरा गांधी
19.11.1917, 23:11 घंटे इलाहाबाद
25 N 27 81 E 50

4.12 पं. जवाहरलाल नेहरू
14.11.1889, 23:06 इलाहाबाद
25 N 57 81 E 50

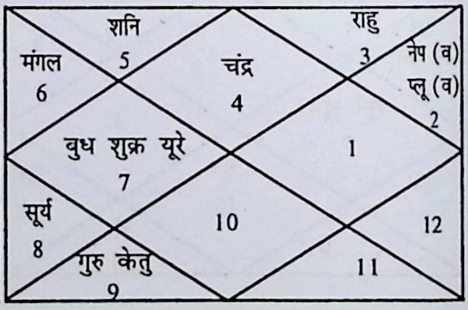

॥ कर्क लग्न जातकम् ॥

4.13 जॉन ट्रैवोल्टा (अभिनेता)
18.02.1954, 14:53 घंटे
40 N 53 73 W 58

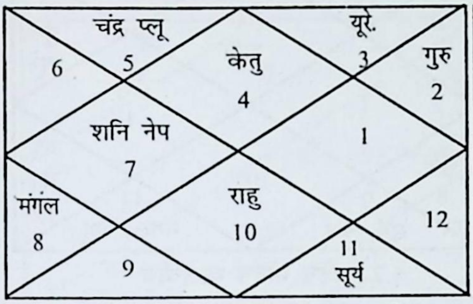

4.14 जूलिया रॉबर्ट्स (अभिनेत्री)
28.10.1967, 0:16 एटलांटा

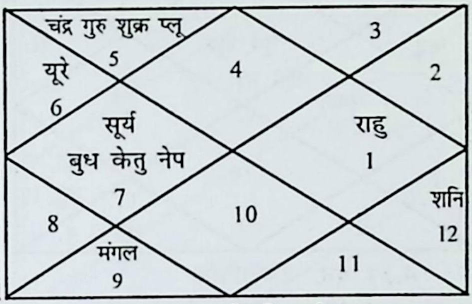

4.15 के.आर. नारायण (राष्ट्रपति)
04.02.1921, 17:00 घंटे
कोचीन

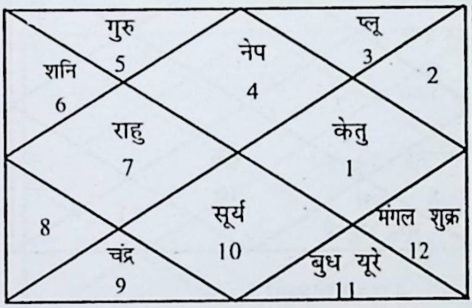

4.16 कमलापति त्रिपाठी
04.09.1905, 03.00 घंटे, औरंगाबाद
25 N 15 83 E 0

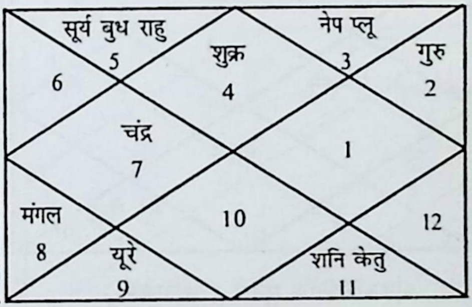

4.17 कुमार मंगलम बिड़ला
14.6.1967, 8:45 प्रातः
कलकत्ता

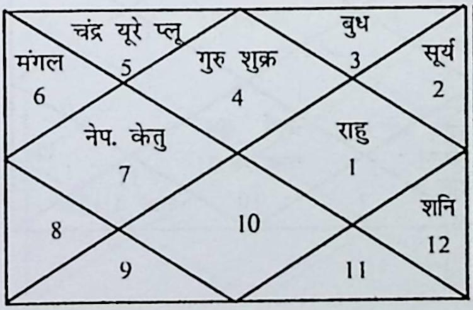

4.18 लिओ टॉल्सटॉय
(लेखक)
09.09.1828, 4:00 प्रातः
54 N 13 37 E 32

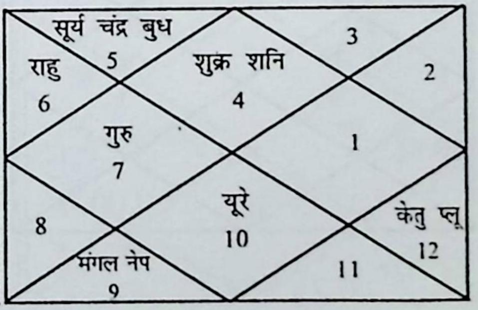

॥ कर्क लग्न जातकम् ॥

4.19 लोकमान्य तिलक 23.07.1856
6.25 AM 20N21 76E15

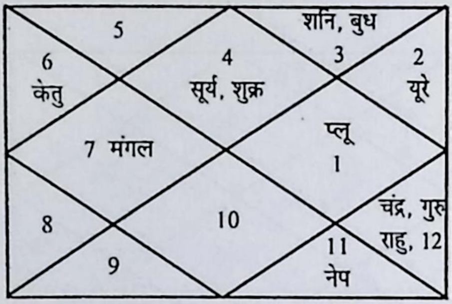

4.20 लॉर्ड कर्जन 11.01.1859 17.20 घंटे
52N 07 0/W33

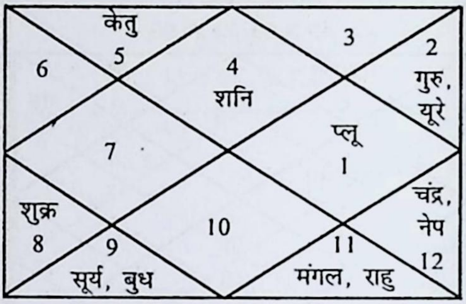

4.21 एम. करुणनिधि
03.06.1924, 9:30 घंटे
11 N 59 79 E 13 इलाहाबाद

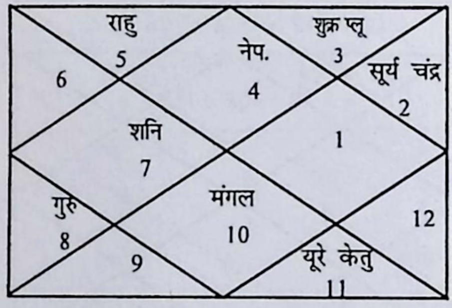

4.22 मदन मोहन मालवीय
25.12.1861, 19:00 घंटे
25 N 27 81 E 5

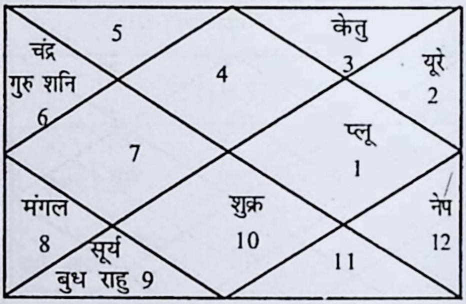

4.23 मर्लिन मुनरो (अभिनेत्री)
01.06.1926, 09:23 लॉस एंजेल्स
34 No M 8 W 15

4.24 मायावती
15.01.1956, 19:50 घंटे
28 N 39, 77 E 26

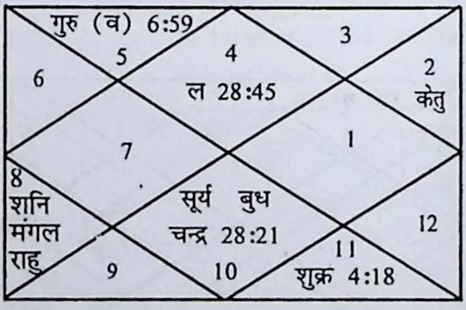

॥ कर्क लग्न जातकम् ॥

4.25 (192) मोहम्मद अली (बॉक्सर)
17.01.1942, 18:35 घंटे
38 N 15 85 W 45

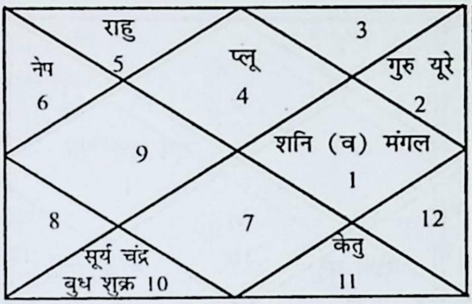

4.26 मुंशी प्रेमचन्द
31.07.1880, 6:00 प्रात: वाराणसी
25 N 20 83 E 0

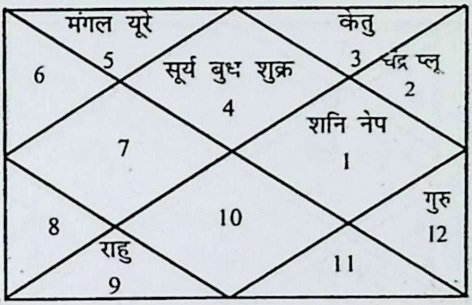

4.27 नज़मा हेपतुल्ला
13.04.1940, 12:30
मुम्बई

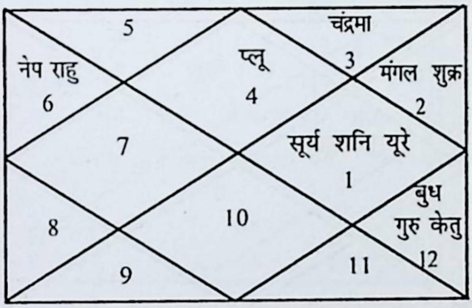

4.28 नेल्सन मंडेला
18.07.1918, 9:00
32 S 21 22 E 35

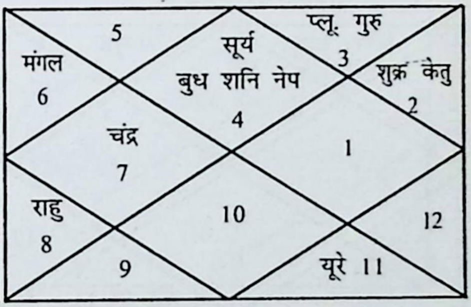

4.29 पैब्लो पिकासो (चित्रकार)
25.10.1881, 23:15
36 N 43 04 W 23

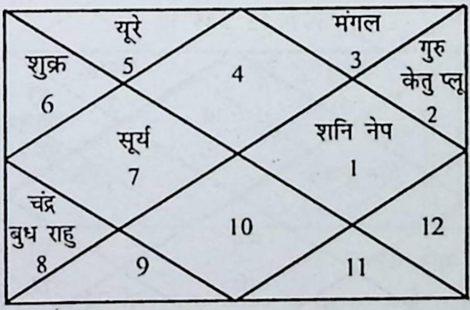

4.30 प्रिंस चार्ल्स
14.11.1948, 21:15 लन्दन
51 N 30 0 W 5

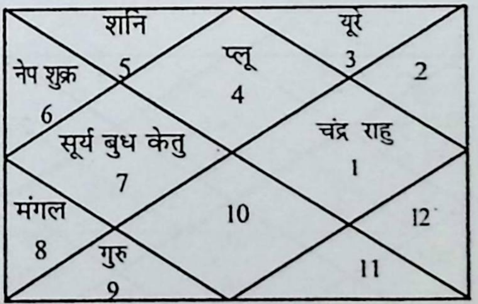

॥ कर्क लग्न जातकम् ॥

4.31 राजकपूर (अभिनेता)
14.12.1924, 22:00 घंटे
पेशावर

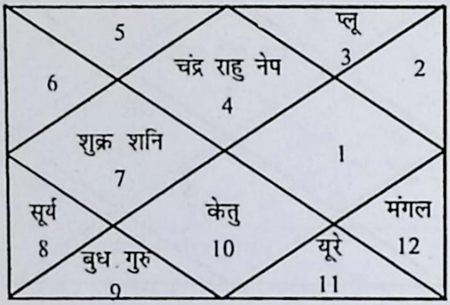

4.32 रामानुजाचार्य (वेन्दान्ती संत)
04.04.1017, 12:00
12 N 2 80 E 16

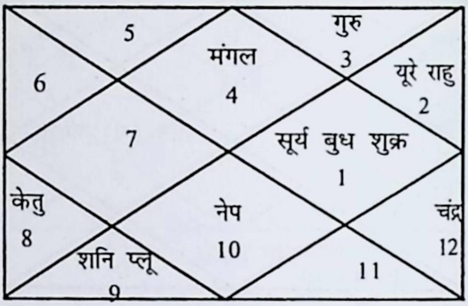

4.33 मीराबाई (सन्त भक्त)
12.07.1504, 5:30 प्रातः
26 N 39 74 E 07

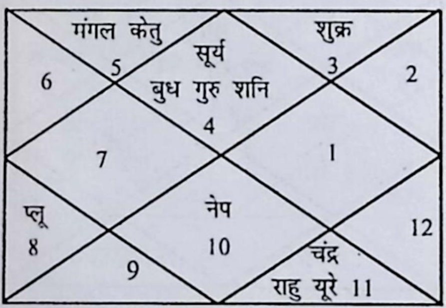

4.34 सोनिया गांधी
09.12.1946, 21:30 घंटे
45 N 04 07 E 40

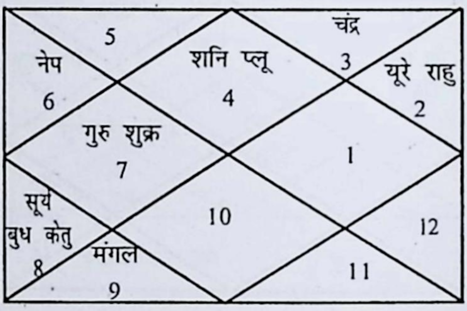

4.35 जमशेद जी टाटा
03.03.1839, 15:08 घंटे
20 N 58 73 E 01

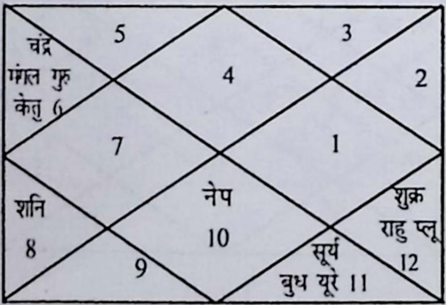

4.36 थॉमस हार्डी
(उपन्यासकार)
2.6.1840, 8.00 प्रातः
50 N 45 2 W 30

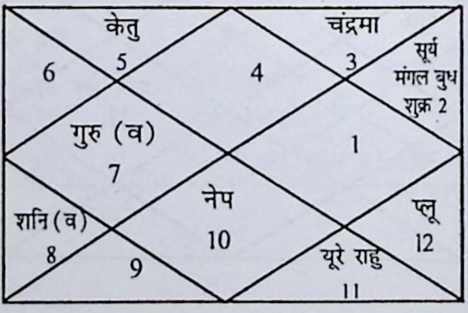

॥ कर्क लग्न जातकम् ॥

4.37 वी. पी. सिंह
25.06.1931, 7:00 प्रातः
25 N 6 82 E 15

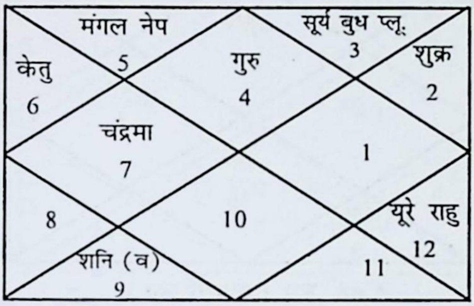

4.38 भगवान श्री राम
चैत्र शुक्ल नवमी मध्यान्ह

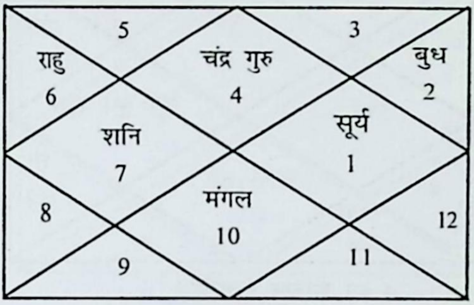

4.39 गौतम बुद्ध
कपिलवस्तु

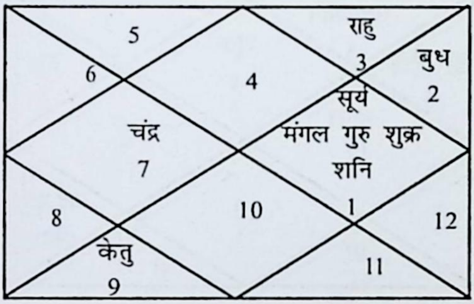

4.40 राजा विक्रमादित्य

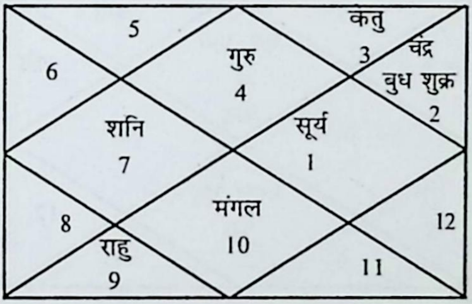

4.41 आदि गुरु शंकराचार्य

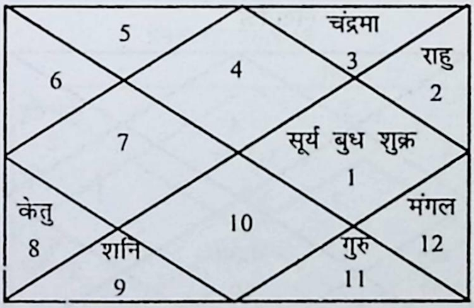

4.42 महाराजा रणजीत सिंह

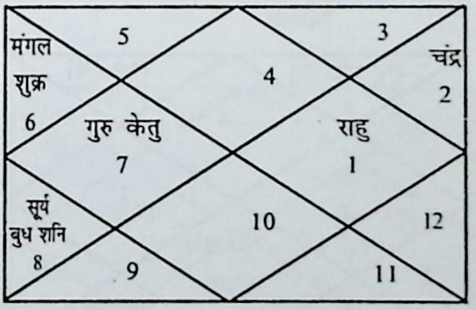

॥ कर्क लग्न जातकम् ॥

4.43 मोतीलाल नेहरू

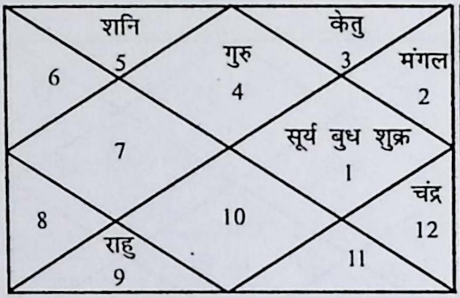

4.44 संजय खुर्जा (पॉटरीज़)
15.07.1963

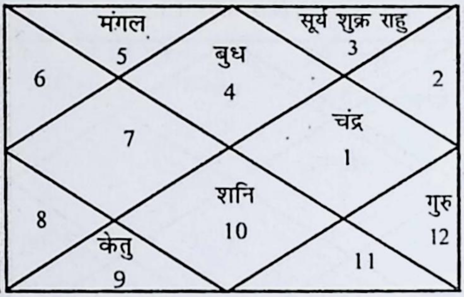

4.45 सचिन (शशि)
16.08.1971 4:52 प्रात:

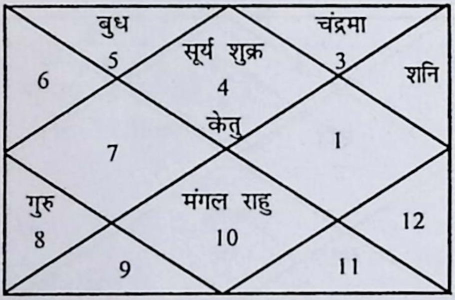

4.46 मधु (अध्यापिका)
31.08.1950
03: 15 घंटे दिल्ली

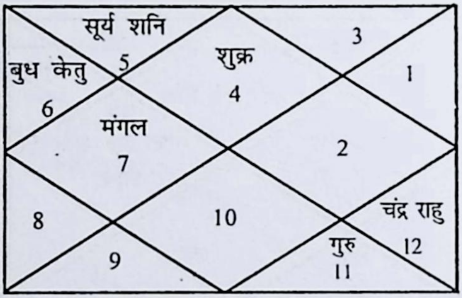

4.47 संध्या (अध्यापिका)
16.01.1961, 19:43 घंटे
दिल्ली

4.48 बबली आशा (मूक)
27.03.1965, 13:10
लखनऊ

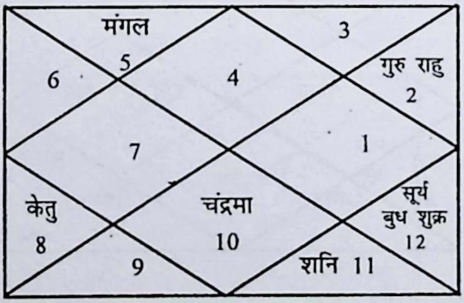

॥ कर्क लग्न जातकम् ॥

4.49 कवि बिन्दु जी
वृन्दावनधाम

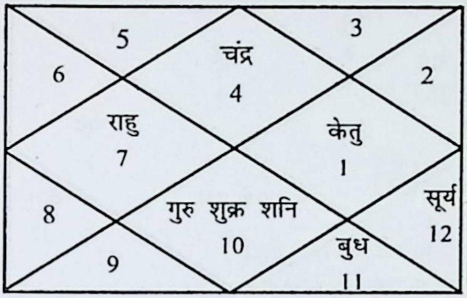

4.50 पं. राधेश्याम कथावाचक

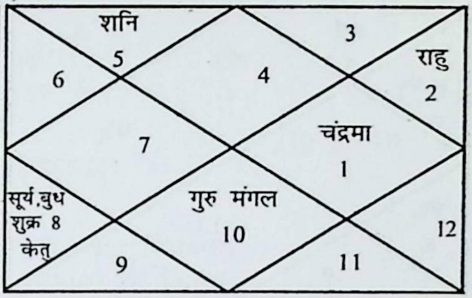

4.51 रेणु-संजय
15.08.1965
रात्रि–1:00 बजे, पटना

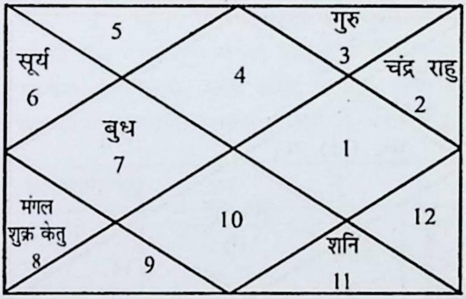

4.52 रविन्द्र पाठक
ज्योतिषीय कर्मकांड

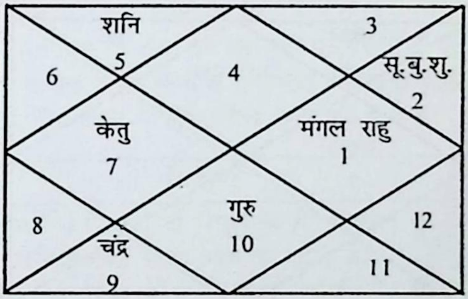

4.53 डॉ. पी.के. घोष
13.03.1934 14:04 घंटे
89E 3Z 26N 18

4.54 अविनाश शर्मा
13.04.1941 जालन्धर

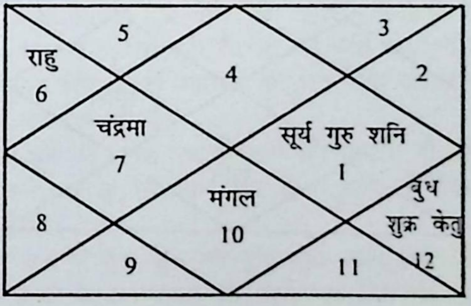

।। कर्क लग्न जातकम् ।।

4.55 रेणुका शर्मा
30.08.1976
03:10 रात्रि दिल्ली

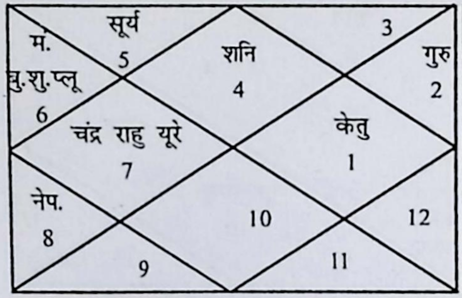

4.56 लक्ष्मी चन्द्र
04.02.1960, 18:44 घंटे
उदयपुर

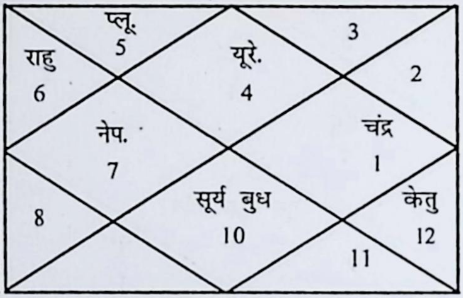

4.57 रंजना
22.07.1950, 6:18 प्रातः
दिल्ली

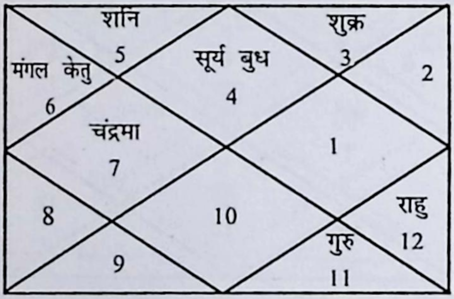

4.58 जय प्रकाश नारायण
11.10.1902 00:42
वैलोर

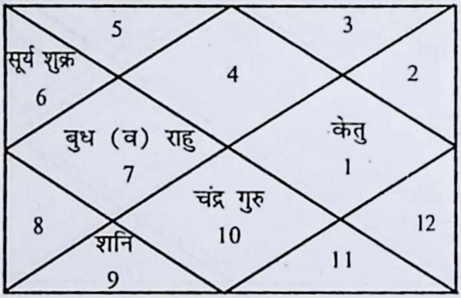

4.59 समृद्धि (धनी प्रतिष्ठित परिवार)
11.07.1992 धनबाद 6:59 प्रातः

अध्याय - 5

सिंह लग्न

सिंह लग्नोदये जातो भोगी शत्रु विमर्दकः
स्वल्पोदरो अल्प पुत्रश्च सोत्साही रण विक्रमः
॥ यवन जातक 10:5

सिंह लग्न में उत्पन्न जातक भोगी अर्थात धन वैभव सम्पन्न, शत्रु को पराजित करने वाला, पतली कमर व अल्प सन्तान वाला, उत्साही तथा रणभूमि में पराक्रम दिखाने वाला होता है।

5.1 सूर्य, मंगल, बुध की युति से धन लाभ–सिंह लग्न के लिए सूर्य लग्नेश, मंगल योगकारक तथा बुध धनेश और लाभेश होने से बहुत शुभ है। अतः इन ग्रहों का परस्पर दृष्टि युति सम्बन्ध धन लाभ, भाग्य वृद्धि व सुख देगा। ऐसा जातक धनी, मानी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। उदाहरण कुण्डली संख्या 5 चौधरी बंसीलाल के सिंह लग्न में सूर्य मंगल, बुध की युति है।

कुण्डली सं.	नाम	विवरण
6.	भारेतन्दु हरिचन्द्र	सूर्य, लग्न में स्वगृही तो धन भाव में, भाग्येश की धनेश से युति और भाग्य भाव पर दृष्टि है।
7.	ब्रिटनी स्पियर्स	भाग्येश लग्नस्थ होकर, सुख भाव में लग्नेश धनेश की युति को देख रहा है।
8.	सन्त चन्द्रशेखर सरस्वती	दशम भाव में लग्नेश लाभेश की युति पर भाग्येश की दृष्टि है।
11.	जेन ऑस्टिन	पंचम भाव में सूर्य, मंगल की युति और लाभस्थान पर दृष्टि है तो लाभेश बुध मंगल की राशि में बैठा है।
17.	माला सिन्हा	तृतीय भाव में लग्नेश और लाभेश की युति तथा भाग्य स्थान पर दृष्टि है तो भाग्येश भी धन भाव से भाग्य स्थान को देख रहा है।
19.	सन्त मुरारी बापू	लग्नेश सूर्य की धनेश बुध के साथ धन भाव में युति है, तो नवमेश मंगल भी नवम और दशम भाव को देख रहा है।
22.	स्वामी योगानन्द	पंचम भाव में सूर्य, बुध की युति तथा लाभ स्थान पर दृष्टि है तो भाग्येश मंगल की, सूर्य, बुध नियंत्रक, गुरु के साथ युति और लाभ स्थान पर दृष्टि है।

27.	रिचर्ड निक्सन	पंचम भाव में पंचमेश गुरु के साथ सूर्य, मंगल बुध की युति है।
38.	शिल्पी	लग्नेश की दशमेश के साथ लग्न में युति पर भाग्येश मंगल की दृष्टि है तो धन भाव में बुध स्वगृही है।
41.	भगवती देवी	धन भाव में सूर्य, मंगल, बुध की युति है। भाग्येश मंगल भाग्य स्थान को देखता है तो धनेश स्वगृही है।
21.	ऑस्कर वाइल्ड	तृतीय भाव में सूर्य, बुध की युति है तो पंचमस्थ गुरु, सूर्य व बुध की राशियों को देख रहा है।
24.	राजकुमारी	बुध क्षेत्री सूर्य पर स्वगृही गुरु की दृष्टि है।
30.	शाहरुख़ ख़ां	बुध क्षेत्री लाभस्थ गुरु की सूर्य पर दृष्टि है।
32.	सुरैया	बुध और गुरु की दशम भाव में युति है तो लाभस्थ सूर्य बुध क्षेत्री है।
36.	मीनाकुमारी	सूर्य की राशि सिंह में बुध गुरु की युति है।
37.	शंकर दयाल शर्मा (राष्ट्रपति)	सूर्य की सिंह राशि में सूर्य और बुध की युति है तो गुरु लाभ स्थान में बुध क्षेत्री है।
38.	शिल्पी	सूर्य, बुध, गुरु–तीनों ही स्वक्षेत्री होने से बली हैं।
39.	राजेश	बुध और गुरु का स्थान परिवर्तन हुआ है तो सूर्य उच्चस्थ होकर भाग्येश के साथ नवम भाव में है।
46.	गुरु नानक देव	गुरु, बुध क्षेत्री है तो बुध की सूर्य के साथ सुख भाव में युति है।
53.	राजेश अग्रवाल	लाभ स्थान में सूर्य, बुध की युति पर सप्तमस्थ गुरु की दृष्टि है।

5.2 सूर्य, गुरु, बुध का परस्पर सम्बन्ध भी धनी बनाता है–

सूर्य लग्नेश, बुध लाभेश-धनेश तो गुरु की मूल त्रिकोण राशि पंचम भाव में होने से गुरु भी धन वृद्धि में सहायक होगा।

5.3 सूर्य बुध की युति भी थोड़ा धन अवश्य देती है–

सिंह लग्न जातक के लिए सूर्य लग्नेश तथा बुध धनेश व लाभेश होने से इनका युति सम्बन्ध धन लाभ तो अवश्य देगा किन्तु त्रिकोणेश गुरु या मंगल का दृष्टि युति सम्बन्ध न होने पर शायद धन बहुत अधिक नहीं होगा।

5.4 गुरु और शुक्र की युति अनिष्टप्रद–

सामान्य नियम तो यही है कि सिंह लग्न जातक का पंचमेश गुरु यदि दशमेश शुक्र से दृष्टि युति या राशि सम्बन्ध करें तो राजयोग होना चाहिए। फिर यहाँ योग भंग क्यों कहा? शुक्र की मूल त्रिकोण राशि तुला तृतीय भाव में है तो दशमेश शुक्र केन्द्राधिपति दोष से पीड़ित भी है। पुनः शुक्र

लग्नेश सूर्य का शत्रु भी तो है। अतः गुरु की शुभता को शुक्र नष्ट कर सकता है शायद इसी कारण गुरु शुक्र सम्बन्ध अशुभ व अरिष्टकारक माना है।

5.5 दशमस्थ शुक्र अशुभ किन्तु तृतीयस्थ शुक्र शुभ है–

सिंह लग्न में शुक्र तृतीय व दशम भाव का स्वामी होता है। केन्द्र स्थान में स्वगृही शुक्र मालव्य पंच महापुरुष योग बनाता है। तृतीय भाव का स्वामी त्रिषडाय का अंग होने से भला क्योंकर शुभ होगा? पुनः लग्न से तृतीय व दशम से षष्ठ भाव में शुक्र को शुभ क्यों माना! ऐसा जान पड़ता है कि भावार्थ रत्नाकर के रचयिता शुक्र के दिग्बल की महत्ता दर्शाना चाहते हैं। शुक्र चतुर्थ भाव में 60 विरूप दिग्बल पाता है तथा दशम भाव में शुक्र का दिग्बल शून्य हो जाता है। शायद इसी कारण दिग्बली शून्य शुक्र को दशम भाव में अशुभ माना जाता है। शुक्र का अपनी मूल त्रिकोण राशि में बैठना भी शुक्र की शुभता बढ़ाता है।

5.6 स्वगृही लग्नेश से युक्त बुध की दशा में धन प्राप्ति–

सिंह लग्न में स्वगृही लग्नेश सूर्य की लाभेश धनेश बुध तथा भाग्येश मंगल के साथ लग्न में युति होने पर बुध संग प्रभाव के कारण अपनी दशा में धन लाभ, भाग्य वृद्धि व मान-सम्मान देगा।

5.7 भाग्येश के साथ बैठा व्ययस्थ शनि भी शुभ–

(सूर्य+बुध+मंगल) लग्न में = बुध की दशा में धन लाभ। शनि षष्ठेश और सप्तमेश तो मंगल भाग्येश है। षष्ठेश का द्वादश भाव में बैठना शुभ है। पुनः भाग्येश के साथ शनि की युति, शनि की दशा को योग कारक बनाएगी । ध्यान रहे, शनि की मूल त्रिकोण राशि सप्तम भाव में होने से शनि अशुभ नहीं रहा। कारण क्रूर ग्रह यदि केन्द्र के स्वामी हों तो वे अशुभ नहीं रहते। इसी प्रकार मंगल अपनी दोनों राशियों से शुभ स्थान में होने के कारण कर्क राशि में नीच या अशुभ नहीं माना जाता। चौधरी बंसीलाल की कुण्डली सं. 5 में सूर्य, मंगल, बुध की लग्न में युति पर गुरु से दृष्ट शनि की दृष्टि है।

॥ सिंह लग्न जातकम् ॥

5.1 आदि गुरु शंकराचार्य
31.03.670, 15:15 घंटे
10 N 7 76 E 21

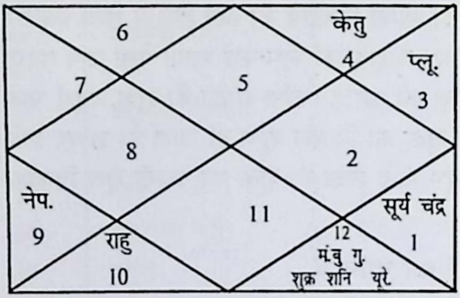

5.2 आगाथा क्रिस्टी (उपन्यासकार)
15.09.1890, 4:00 प्रातः
50 N 30 3 W 30

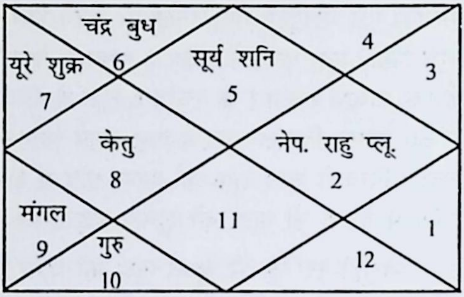

5.3 अरुण बंसल (ज्योतिष का कंप्यूटरीकरण)
13.12.1956, 23:10 घंटे
28 N 39 77 E 13

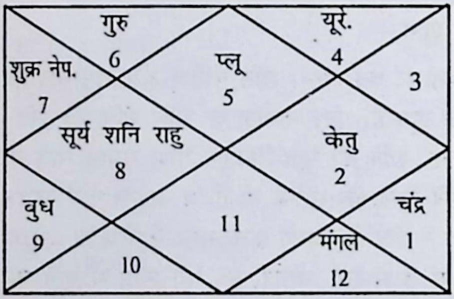

5.4 आयतुल्ला खुमैनी
25.12.1902
33 N 38 50 E 04

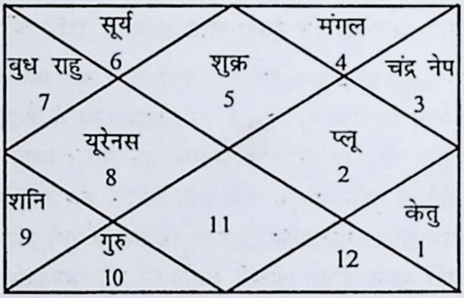

5.5 चौ. बंसीलाल
26.08.1927, 6:00 प्रातः भिवानी
28 N 50 76 E 10

5.6 भारतेन्दु हरिश्चंद्र
09.12.1850, 4:37 प्रातः
25 N 20 83 E 0

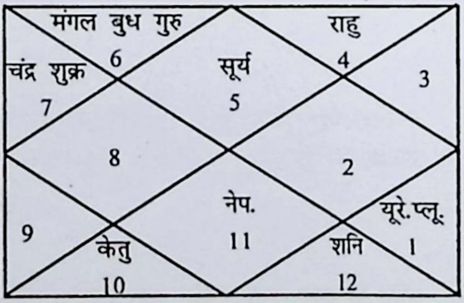

॥ सिंह लग्न जातकम् ॥

5.7 ब्रिटनी स्पीयर्स (गायिका-अभिनेत्री)

02.12.1981 1:30 रात्रि

34 N 49 89 W 31

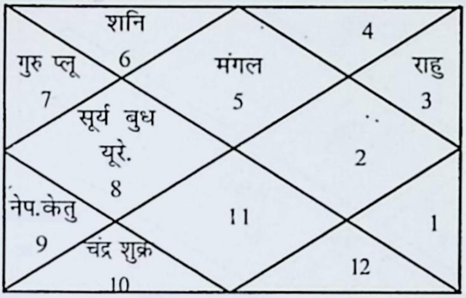

5.8 चन्द्रशेखर सरस्वती (सन्त मठाधीश)

20.05.1894, 13:16

11 N 56 79 E 29

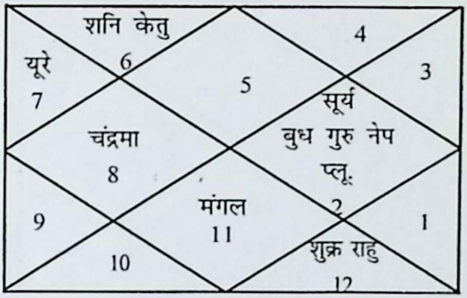

5.9 ई. हेमिंग्वे (नोबल पुरस्कार विजेता)

21.07.1899, 7:50

41 N 53 87 W 48

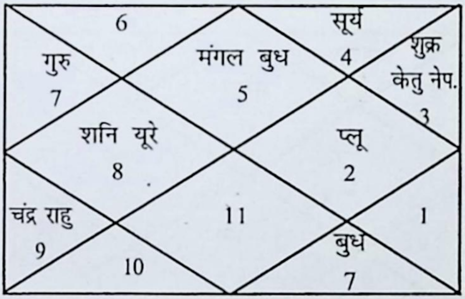

5.10 गोकुलदास मोरारजी (उद्योगपति)

28.10.1934, 2:30 रात्रि

18 N 58 72 E 50

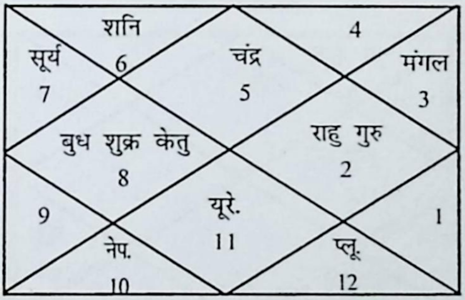

5.11 जेन ऑस्टिन (लेखक)

16.12.1775, 23:00 रात्रि

51 N 03 01 W 20

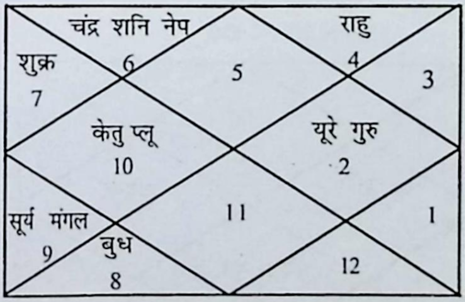

5.12 के.के. पाठक (ज्योतिष लेखक)

28.06.1933, 9:00

26 N 14 84 E 21

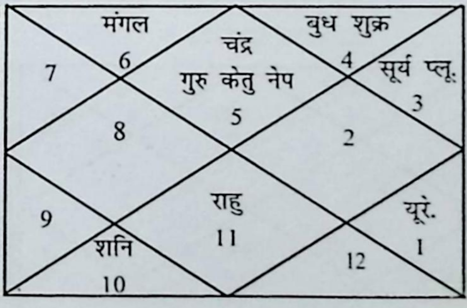

॥ सिंह लग्न जातकम् ॥

5.13 करिश्मा कपूर (अभिनेत्री)
25.06.1975, 12:00 दोप. मुम्बई
18 N 58 72 E 50

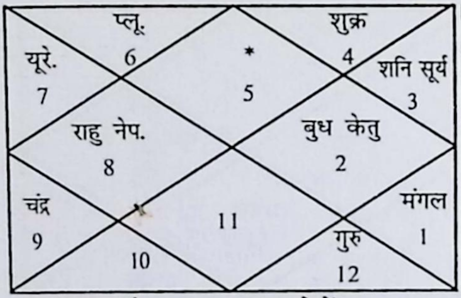

* (कर्क लग्न लगाकर देखें)

5.14 लियोनेद ब्रेजनेव
(रूसी राज्याध्यक्ष)
19.12.1906, 21:18 रात्रि
48 N 32 34 E 30

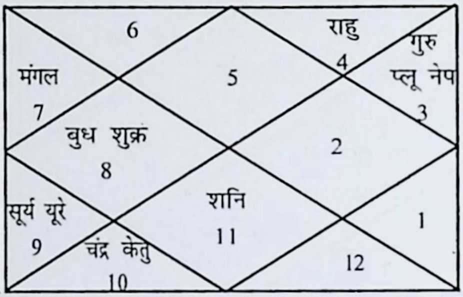

5.15 जय प्रकाश नारायण
12.10.1902 03:00 बजे रात्रि
25 N 11 85 E 32

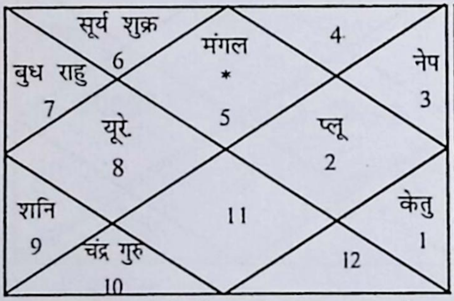

(* कुछ लोगों ने कर्क लग्न माना है)

5.16 प्रमोद महाजन (भा.ज.पा. नेता)
30.01.1948 21:00 रात्रि
17 N 22 78 E 26

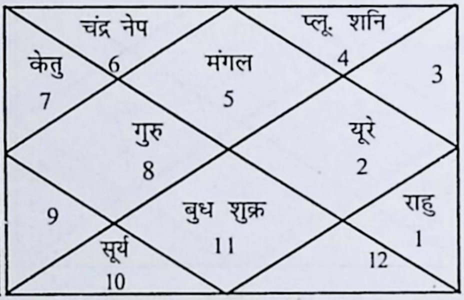

5.17. माला सिन्हा (अभिनेत्री)
11.11.1936 01:50 रात्रि कलकत्ता
22 N 30 88 E 22

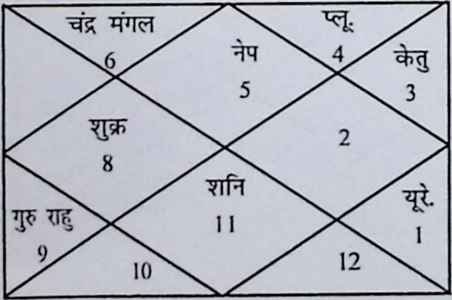

5.18 मैक्सिम गोर्की (साहित्यकार)
28.03.1868, 15:00 घंटे
56 N 20 44 E 0

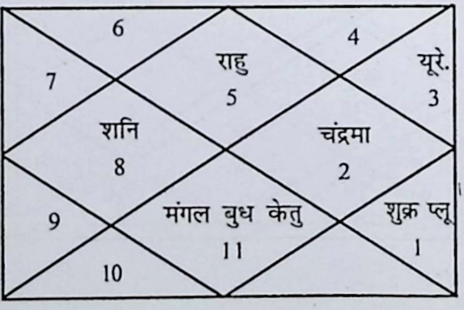

॥ सिंह लग्न जातकम् ॥

5.19 सन्त मुरारी बापू
25.09.1946, प्रातः 06:00 बजे महुवा
21 N 05 71 E 48

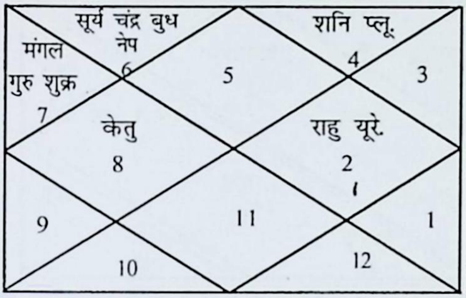

5.20 निकोलसको परनिक्स (वैज्ञानिक)
19.02.1473, 16:48 सांय
53 N 00 18 E 39

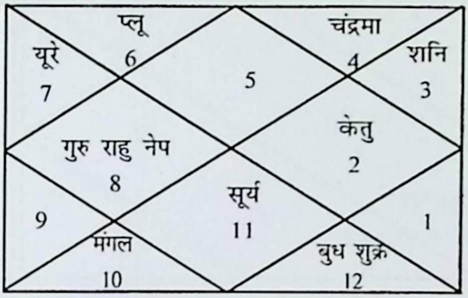

5.21 ऑस्कर वाइल्ड (लेखक)
16.10.1854 02:38 रात्रि डबलिन
53 N 20 06 W 18

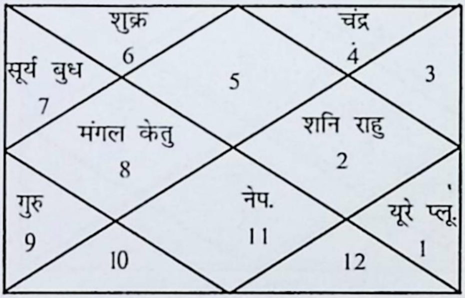

5.22 स्वामी योगानन्द (अध्यात्म)
05.01.1893, 20:38 रात्रि
26 N 45 83 E 23

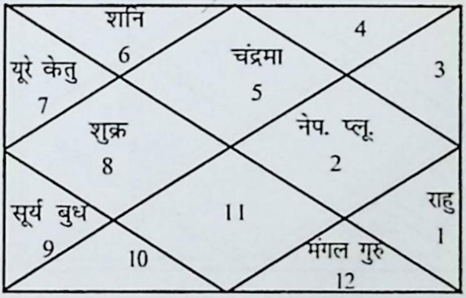

5.23 प्रोफेसर सिंहल (ज्योतिष)
22.08.1954, प्रातः 06 बजे
26 N 50 80 E 54

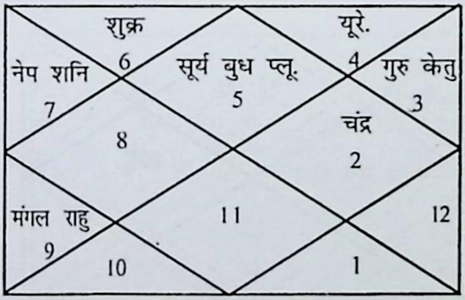

5.24 राज कुमार (अभिनेता)
09.10.1927, 03:30 घंटे
30 N 29 68 E 30

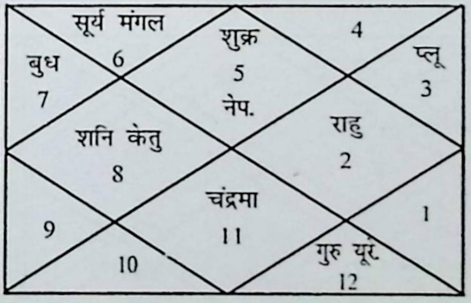

॥ सिंह लग्न जातकम् ॥

5.25 रजनीकान्त (नेता/अभिनेता)
12.12.1950, 23:50 घंटे, मद्रास
13 N 05 80 E 18

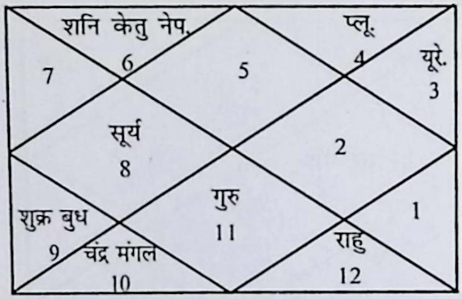

5.26 राममनोहर (लोहिया राजनेता)
23.03.1910, 16:10 सायं
26 N 25 82 E 32

5.27 रिचर्ड निक्सन (अमरीकी राष्ट्रपति)
09.01.1913, 21:44 रात्रि
35 N 50 117 W 55

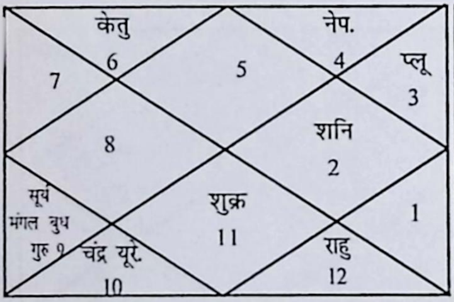

5.28 शर्मिला टैगोर (अभिनेत्री)
08.12.1944, 23:45 रात्रि कानपुर
26 N 27 80 E 19

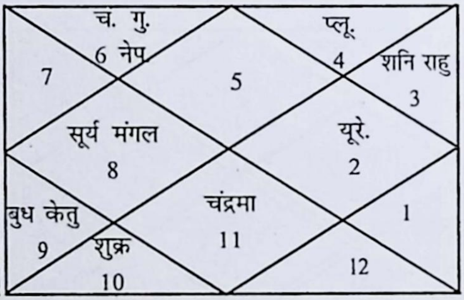

5.29 सरोजिनी नायडू
राज्यपाल (उ॰प्र॰)
13.02.1879, 18:00 घंटे
17 N 22 78 E 26

5.30 शाहरुख़ ख़ान (अभिनेता)
02.11.1965, 02:30 रात्रि दिल्ली
28 N 39 77 E 13

॥ सिंह लग्न जातकम् ॥

5.31 सुनील दत्त (अभिनेता)
06.06.1931, 11:30 प्रातः झेलम
33 N 00 73 E 45

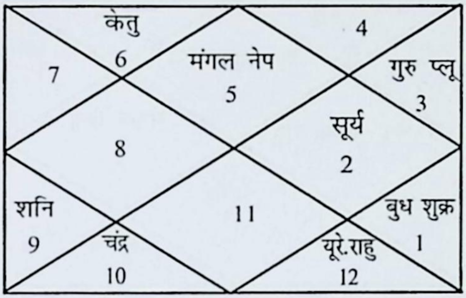

5.32 सुरैया (अभिनेत्री-गायिका)
15.06.1929, 10:30 प्रातः
लाहौर
31 N 32 74 E 22

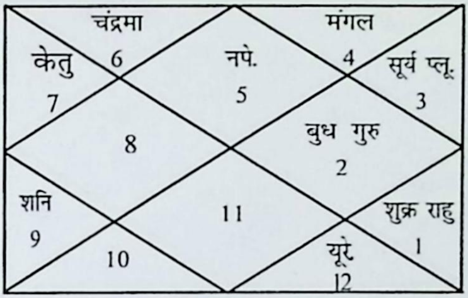

5.33 सन्त स्वामी माधवाचार्य
24.01.1200, 19:10 सायं
10 N 37 77 E 16

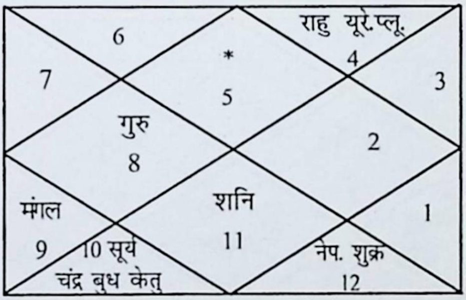

(* कर्क लग्न बनाकर देखें)

5.34 टोनी ब्लेयर (प्रधानमंत्री ब्रिटेन)
06.05.1955, 14:0 दोप. लन्दन
51 N 30 0 W 5

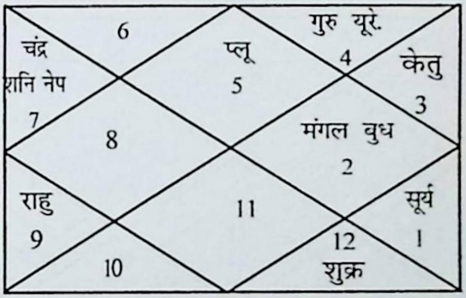

5.35 विलियम शेक्सपियर
16.04.1564, 12:25 घंटे
52 N 13 1 W 45

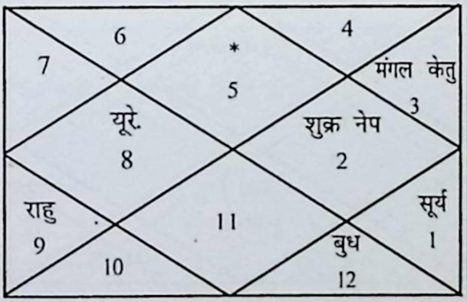

5.36 मीना कुमारी (अभिनेत्री)
01.08.1932, प्रातः 9:30 मुम्बई
18 N 58 72 E 50

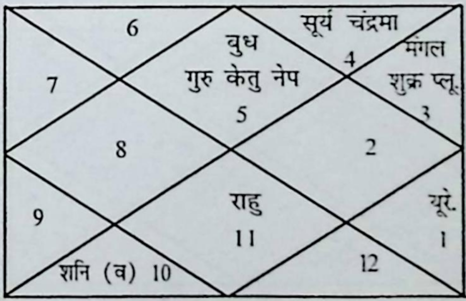

॥ सिंह लग्न जातकम् ॥

5.37 शंकरदयाल शर्मा (पूर्व राष्ट्रपति)
19.08.1918

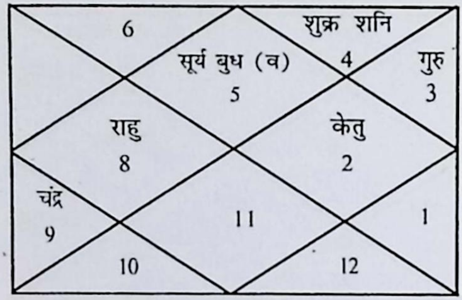

5.38 शिल्पी MCA
11.09.1975, 05:32 प्रातः
खुर्जा (उत्तर प्रदेश)

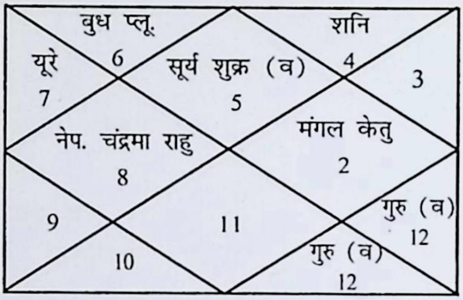

5.39 राजेश (उद्योग ज्योतिष)
04.05.1966, 14:00 घंटे
दिल्ली

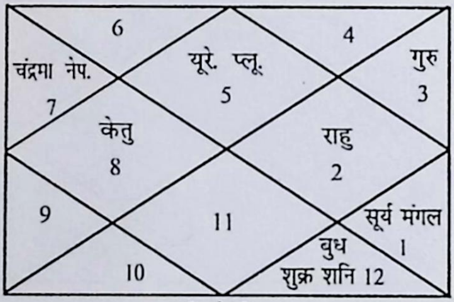

5.40 नीति
30.01.1975
दिल्ली

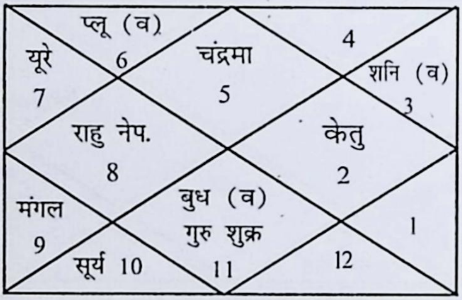

5.41 भगवती देवी
07.10.1923
इगलास (अलीगढ़)

5.42 चैतन्य महाप्रभु
18.02.1486
5:50 स्थानीय समय नवद्वीप बंगाल

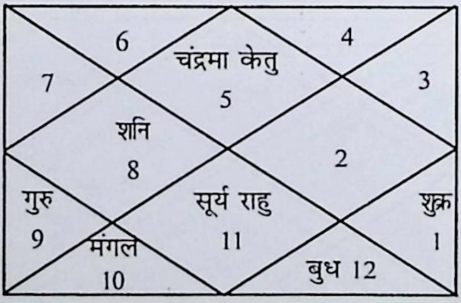

॥ सिंह लग्न जातकम् ॥

5.43 सुरेन्द्र (इंजीनियर)
30 अप्रैल 1960
02:20 दोपहर दिल्ली

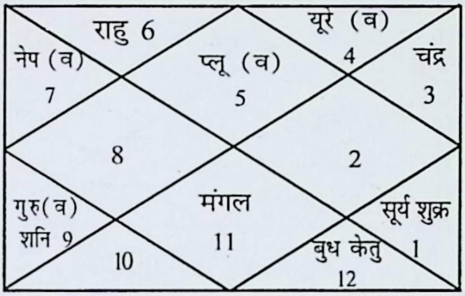

5.44 सुशील (T.V. कलाकार)
07 सितंबर 1951

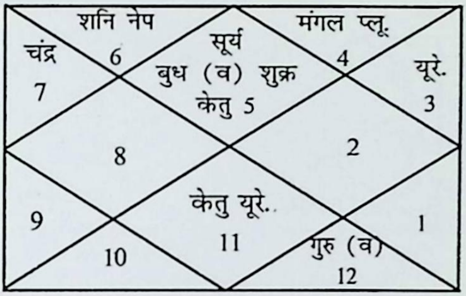

5.45 छत्रपति शिवाजी

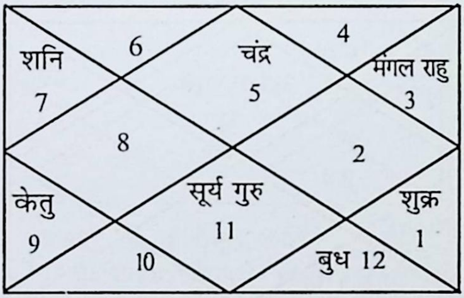

5.46 गुरुनानक देव
08.11.1469

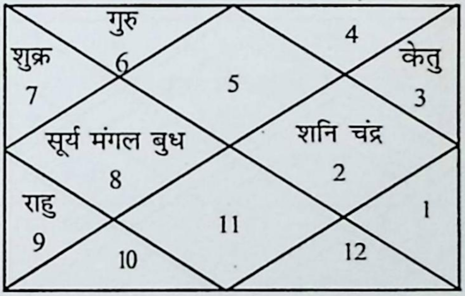

5.47 बालगाविन्द ब्रह्मचारी

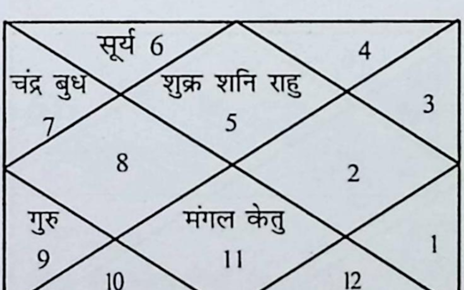

5.48 रणजीत सिंह (इंजी.)
(पत्नी मनोरोगी)

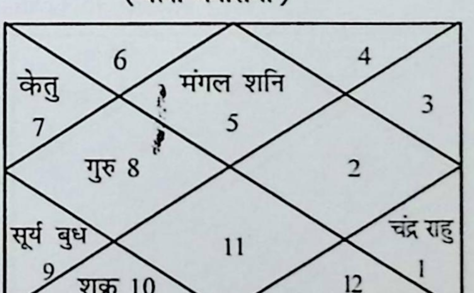

॥ सिंह लग्न जातकम् ॥

5.49 शमिका
(पुत्री सतीश जैक्सन)
04.10.970, 03 घंटे 45 मिनट

5.50 ई० एम० एस० (राजनीतिज्ञ)

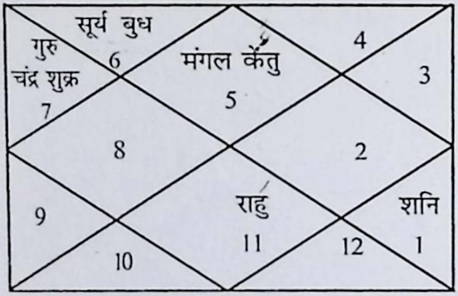

5.51 अनुज मित्तल (L.M.)
17.09.1970, 04:38
दिल्ली

5.52 वत्सल इंजी. (साधना)
09.09.1985, 05:19 प्रातः
कानपुर

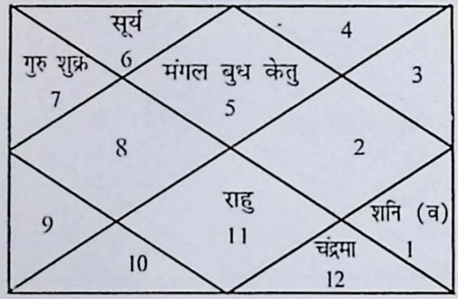

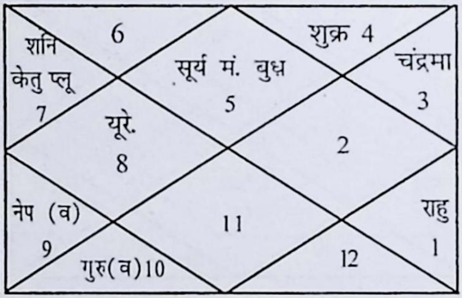

5.53 राजेश अग्रवाल
(चावल विक्रेता)
13.07.1962 अमृतसर 10:15 प्रातः

5.54 बड़ी बहन से भूसम्पदा की प्राप्ति

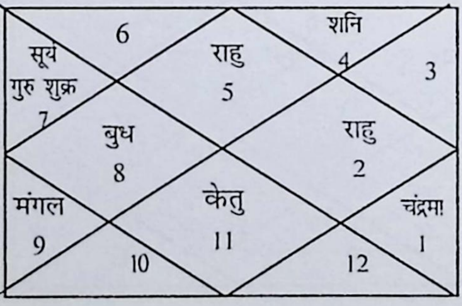

॥ सिंह लग्न जातकम् ॥

5.55 एअर लाइन्स में अफसर (स्टोर)

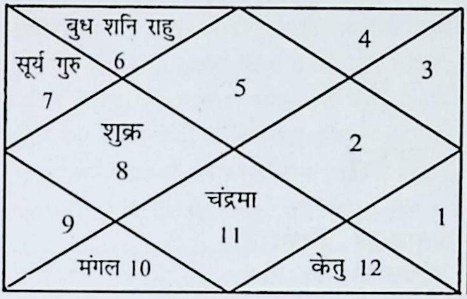

5.56 एयर लाइन्स लेखा अधिकारी

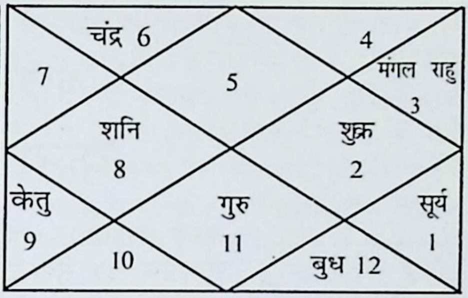

5.57 प्रशासनिक अधिकारी
28.06.1933

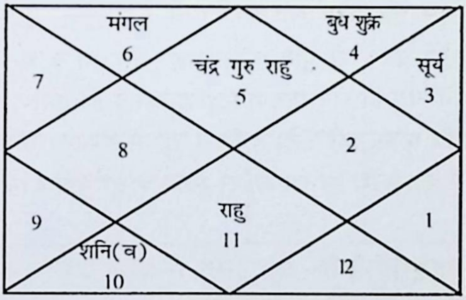

5.58 अजीत
(अपंग मेरुदंड अस्थिदोष)
13.04.1955, 16:05 घंटे
दिल्ली

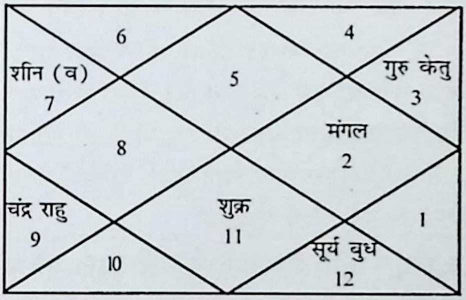

5.59 डॉ. अशोक (सर्जन)
12.04.1958, दिल्ली 15:59

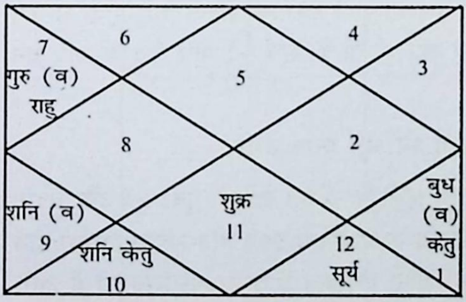

सिंह लग्न की कुण्डलियाँ 59

अध्याय - 6

कन्या लग्न

कन्या लग्नोदये जातो नानाशास्त्र विशारदः
सौभाग्य धन सम्पन्नः सत्यवादी नृप प्रियः
॥ (यवन जातक 10:6) ॥

कन्या लग्न में पैदा हुआ मनुष्य अनेक विषयों का विद्वान, भाग्यशाली, धन, वैभव सम्पन्न, सत्यनिष्ठ, सदाचारी व राजा या उच्च अधिकारियों को प्रिय होता है।

6.1 सूर्य की चंद्र या शुक्र से युति होने पर सूर्य की दशा धन मान देती है

सूर्य का व्ययेश होकर धनेश शुक्र या लाभेश चंद्रमा से युति करना भले ही लाभ व धन भाव के स्वामियों की क्षति करें किन्तु स्वयं सूर्य निश्चय ही धन मान की वृद्धि करता है। कारण, **द्वितीय व द्वादश भाव के स्वामी कभी भी स्वतंत्र फल नहीं देते।** वे जिस ग्रह से सम्बन्ध करें उसी के अनुसार फल दिया करते हैं। यहाँ भी सूर्य का धनेश या लाभेश से सम्बन्ध सूर्य की दशा को धन देने वाली बनाएगा।

6.2 सूर्य और शुक्र की युति से शुक्र की दशा हानि देगी

धनेश शुक्र की व्ययेश सूर्य के साथ युति होने पर सूर्य भले ही शुभ हो जाए। किन्तु शुक्र की दशा तो निश्चय ही धन हानि या व्यय की अधिकता से चिन्ता परेशानी देगी। सूर्य का व्ययेश होना उसे अधिक क्रूर व पापी बनाता है। सूर्य का पृथकतावादी स्वभाव जातक को पैतृक सम्पदा से बेदखल कर सकता है। पुनः शुक्र व सूर्य परस्पर शत्रु भी तो हैं। सूर्य की युति से शुक्र यदि धन की हानि करें तो आश्चर्य कैसा।

6.3 सूर्य और चंद्र की युति से चंद्रमा की दशा मिश्रित फल देगी

लाभेश चंद्रमा की व्ययेश सूर्य से युति लाभ की कमी के संकेत देती है। पुनः सूर्य और चंद्रमा का एक राशि में बैठना चंद्रमा का पक्षबल शून्य सरीखा करता है। पक्षबल हीन चंद्रमा लाभेश होने पर भी लाभ नहीं दे पाएगा। किन्तु सूर्य और चन्द्रमा, दोनों ही लग्न हैं व परस्पर मित्र भी हैं अतः सूर्य व चन्द्रमा की युति थोड़ा शुभ फल मन और आत्मा की एकता या आध्यात्मिक बल बढ़ाकर **सुख-सौभाग्य की वृद्धि भी करेगी।**

6.4 स्त्री सम्बन्धी सुख

यदि (चंद्र+शुक्र) सप्तम भाव में, गुरु एकादश भाव में, सूर्य अष्टम भाव में हो तो गुरु और शुक्र की दशा में जातक अनेक पत्नियों (स्त्रियों) का सुख पाता है। सप्तम भाव में सम राशि में दो स्त्री ग्रहों की युति है। पुनः सप्तमेश गुरु लाभ-स्थान में उच्चस्थ होकर सप्तम भाव में बैठे भाग्येश-धनेश व दाम्पत्य सुख के नैसर्गिक कारक शुक्र और लाभेश चंद्रमा को देख रहा है। शयन सुख के प्रतिनिधि द्वादश भावाधिपति सूर्य अष्टम (प्रजनन अंग) भाव में उच्चस्थ है। अब यदि ऐसा व्यक्ति सप्तमस्थ भाग्येश शुक्र की दशा में स्त्री सुख पाए तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार लाभ स्थान में उच्चराशिस्थ सप्तमेश गुरु की दशा भी स्त्री सुख का लाभ देगी। भोगेश सूर्य का अष्टम भाव में उच्चस्थ होना जातक की पौरुष शक्ति बढ़ाकर उसे रूपसियों का प्रेम भाजन बनाएगा। लग्न पर चंद्र शुक्र की दृष्टि उसे सुन्दर रंग रूप व आकर्षक व्यक्तित्व प्रदान करेगी।

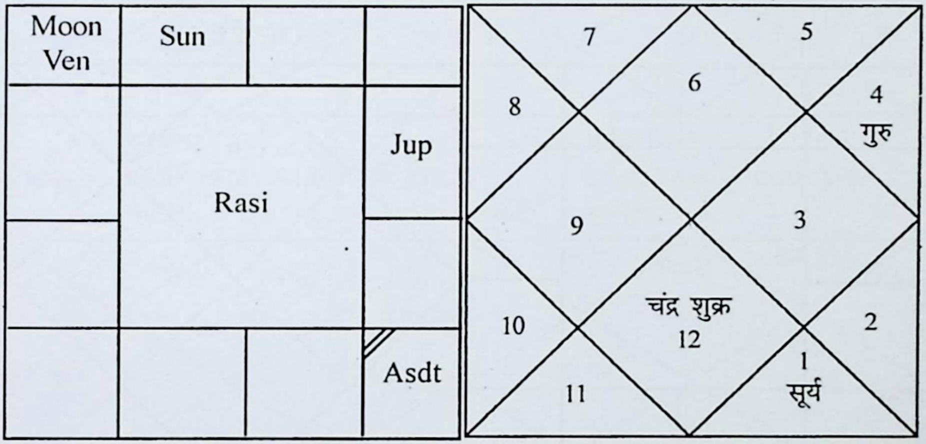

6.5 सुख भाव में गुरु, शुक्र की युति इन ग्रहों की दशा को शुभ बनाती है

सुख स्थान में गुरु का स्वगृही होकर भाग्येश-धनेश शुक्र से युति करना, शुक्र को बल व शुभता प्रदान करता है। कारण, केन्द्र भाव में स्वक्षेत्री **गुरु हंस योग** बना रहा है तो भाग्येश

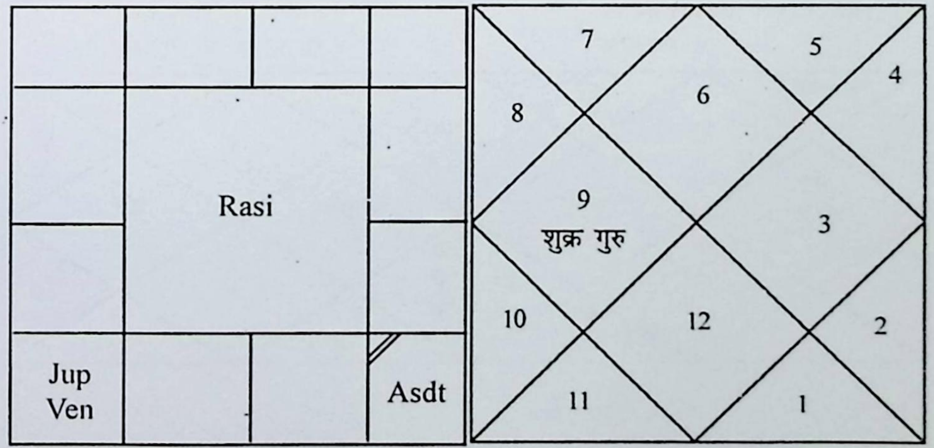

(त्रिकोण पति) शुक्र का केन्द्रस्थ होकर केन्द्रेश से युति करना भी उत्तम है। अत: इन दोनों ग्रहों की दशा में जातक को धन लाभ व भाग्य सम्बन्धी सुख मिलेगा।

6.6 लाभस्थ शनि धनदायक

कर्क राशि लाभस्थान में बैठा शनि अपनी दशा में धन लाभ देता है। शनि का पंचमेश होकर पंचम व लग्न स्थान से दृष्टि सम्बन्ध निश्चय ही शुभ फल देगा किन्तु शनि की मूल त्रिकोण राशि षष्ठ भाव में है और षष्ठेश का लाभस्थ होना बहुधा वांछित परिणाम नहीं दे पाता। क्योंकि एकादश भाव दु:स्थान षष्ठ भाव से षष्ठ है (षष्ठात् षष्ठम् लाभस्थानम् सदा शुभम्) अत: षष्ठ भाव के दुष्प्रभाव को नष्ट कर शुभ फल देगा। पुन: षष्ठेश का शत्रु क्षेत्री होना भी षष्ठ भाव को दुर्बल बनाकर शनि के शुभत्व की वृद्धि करेगा।

(सन्दर्भ 6.6)

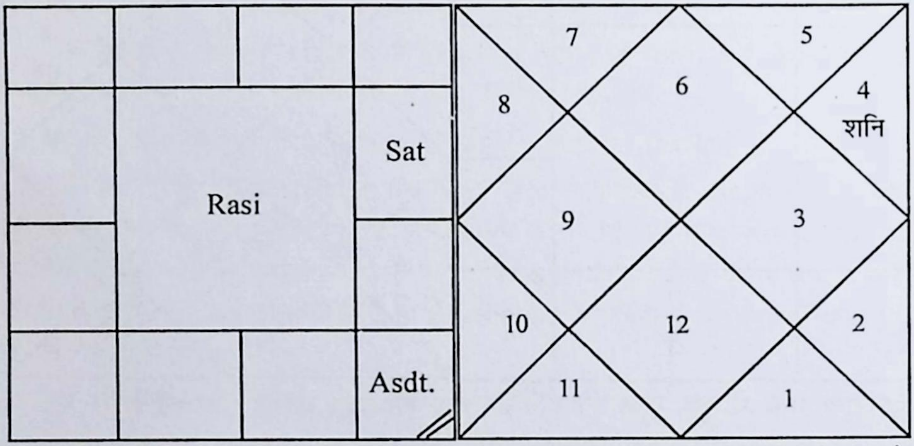

पंचमेश का लाभ व लग्न से सम्बन्ध धन-प्रदायक है।

॥ कन्या लग्न जातकम् ॥

6.1 अल्का याज्ञनिक
20.03.1963, 19:02 कलकत्ता

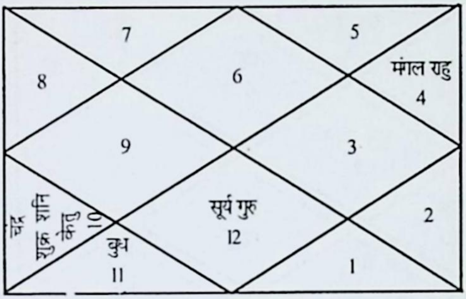

6.2 एलिजाबेथ टेलर
5.12.1901 00:30 रात्रि
शिकागो
41 N 15 87 W 39

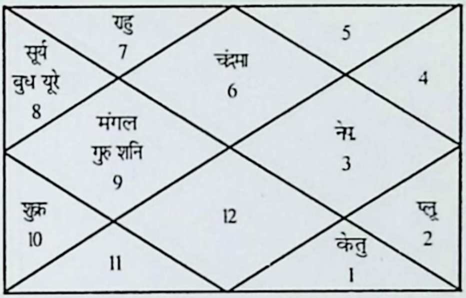

6.3 गुरुदत्त
09.07.1925, 12:00 बजे दोप.
बैंगलूर

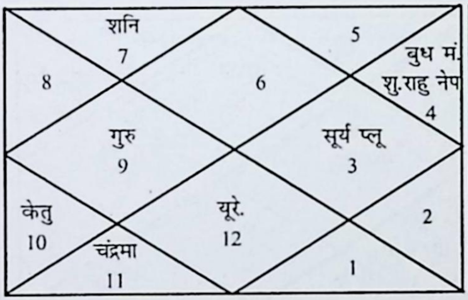

6.4 हर्षद मेहता
29.07.1954, 10:30 प्रातः
मुम्बई

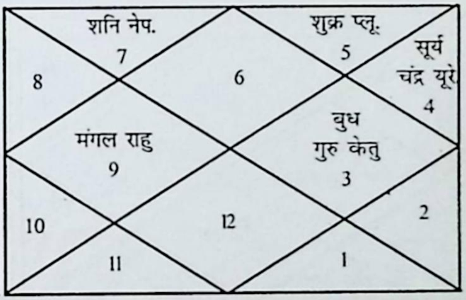

6.5 जॉन एफ. केनडी
29.03.1917, 15:00 घंटे
42 N 19 71 W 07

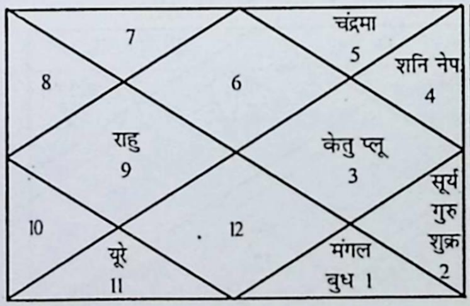

6.6 जयवर्धने (श्रीलंका के प्रधानमंत्री)
17.09.1906, 07:23 घंटे
कोलम्बो

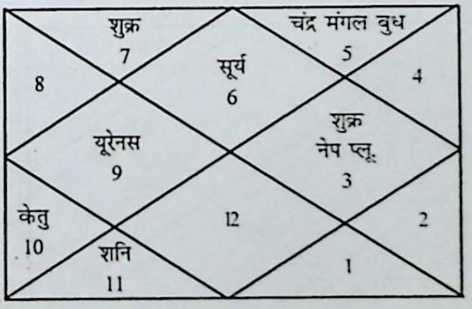

॥ कन्या लग्न जातकम् ॥

6.7 ज्योति बसु
08.07.1914, 11:00 प्रातः कलकत्ता

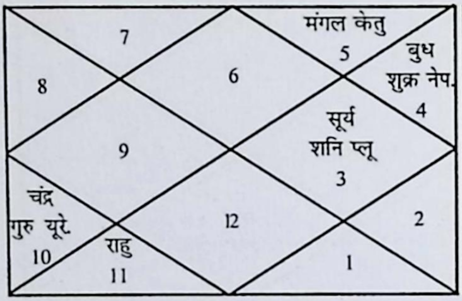

6.8 कपिलदेव (क्रिकेट)
05.01.1959, 1:00 रात्रि, चंडीगढ़
30 N 43 76 E 47

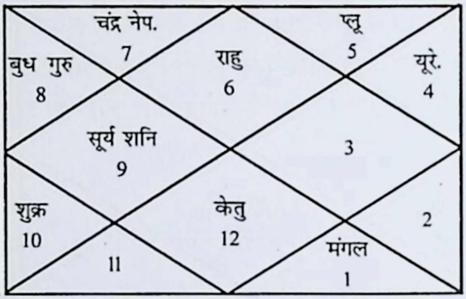

6.9 किरण बेदी (पूर्व पुलिस आयुक्त)
09.06.1949, 14:10 घंटे
अमृतसर

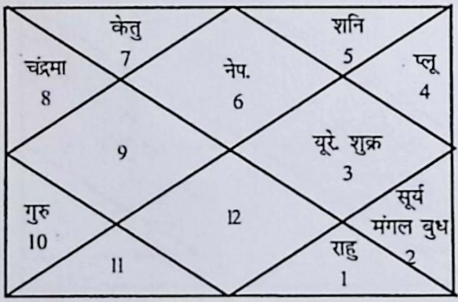

6.10. लाला चरतराम (उद्योगपति)
01.01.1918, 23:30 घंटे
दिल्ली

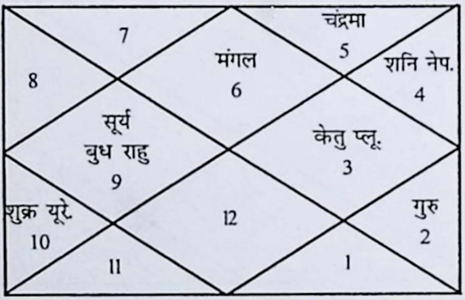

6.11. लिएण्डर पेस (टेनिस खिलाड़ी)
17.06.1973, 12:00 मध्यान्ह
कलकत्ता

6.12. माइकेल जैक्सन (पॉप गायक)
29.08.1958, 07:45 प्रातः
41 N 35 87 W 20

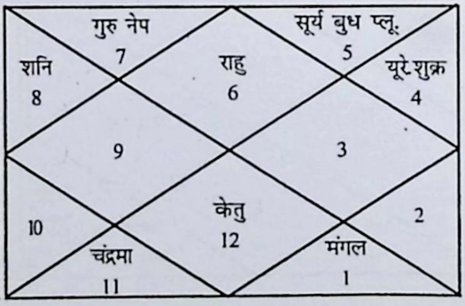

॥ कन्या लग्न जातकम् ॥

6.13. मौहम्मद अज़हरुद्दीन
9.02.1963, 22:25 हैदराबाद
17 N 22 78 E 26

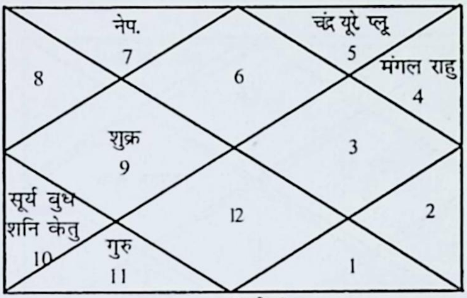

6.14. मोनिका लेविन्सकी
23.07.1973, 11:55 प्रातः
सेनफोस्किो
37 N 46 122 W 25

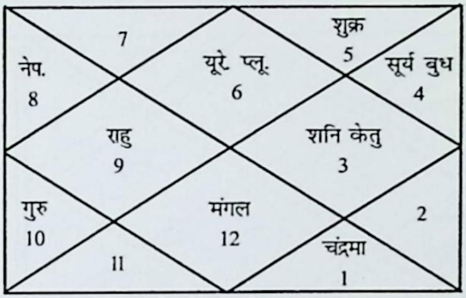

6.15 नूतन (अभिनेत्री)
04.06.1936, 14:15 घंटे
मुम्बई

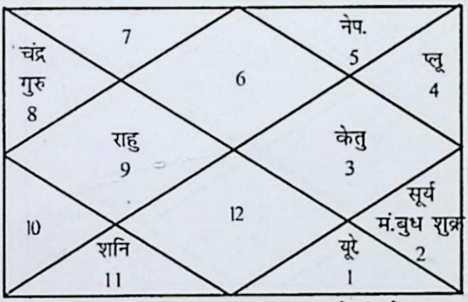

6.16. पी.वी. नरसिंह राव
28.06.1921, 13:00 दोप.
करीमनगर
18 N 27 79 E 06

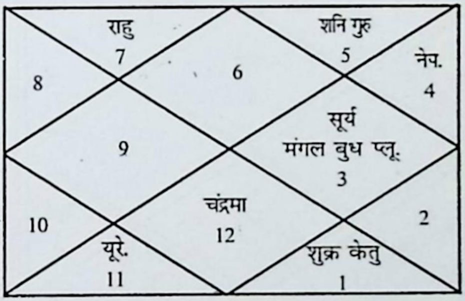

6.17 आर.के. नारायण (अंग्रेज़ी लेखक)
10.10.1906, 04:30 प्रातः
मद्रास

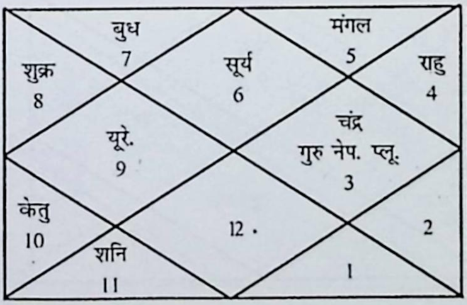

6.18 रामविलास पासवान
05.07.1946, 12:00 दोपहर
मधुवनी
26 N 21 86 E 05

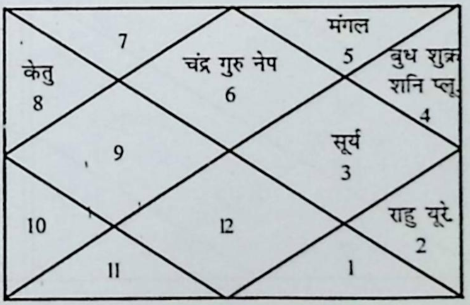

॥ कन्या लग्न जातकम् ॥

6.19 सचिन तेंदुलकर (क्रिकेटर)
21.04.1973, 18:00 सायं
मुम्बई

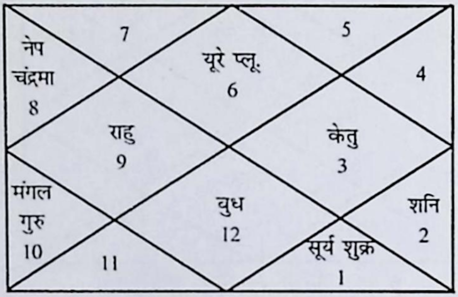

6.20 संत कबीर
07.06.1400, 12:00 बजे दोपहर
लहरतारा
25 N 20 83 E 00

6.21 सूरदास (कृष्ण-भक्त)
07.04.1478, 18:00 सायं, आगरा
27 N 9 78 E 0

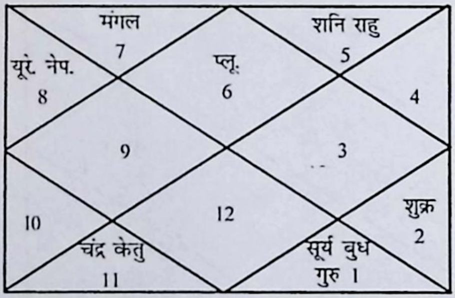

6.22 टाइगर वुड्स (गोल्फ खिलाड़ी)
30.12.1975, 22:50 घंटे
34 N 0 118 W 15

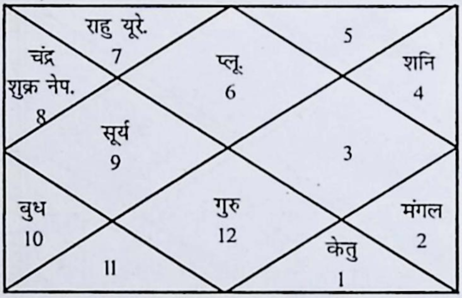

6.23 वीनस विलियम (टेनिस)
17.06.1980, 14:12 घंटे
37 N 55 118 W 55

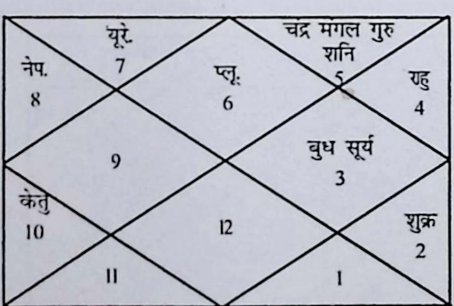

6.24 वॉल्ट डिज़्नी (उद्योगपति)
05.12.1901, 00:35 रात्रि शिकागो
41 N 15 87 W 39

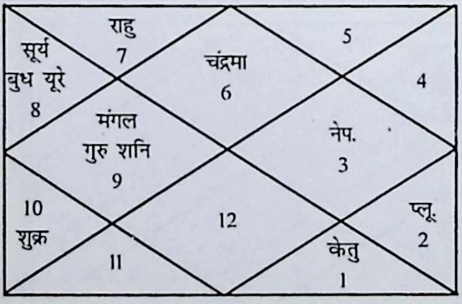

॥ कन्या लग्न जातकम् ॥

6.25 सर विन्सटन चर्चिल
(इंग्लैंड के प्रधानमंत्री)
30.11.1874, 01:30 प्रातः
51 N 52 1 W 21

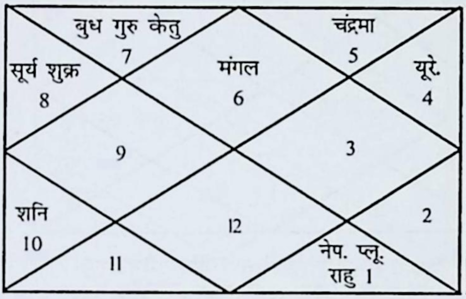

6.26 विपिन जैन
22.04.1951

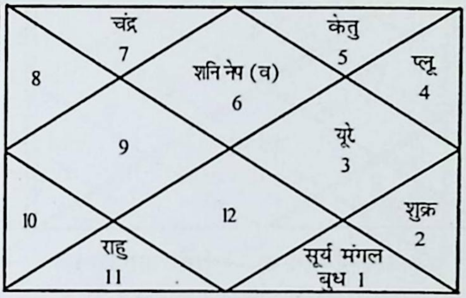

6.27 विवेक इंजीनियर
28.09.1956, 07:07 दिल्ली

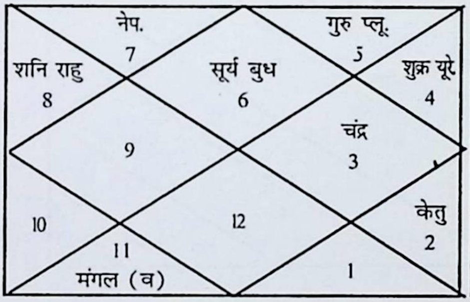

6.28 डॉ. सुषमा
19.07.1952

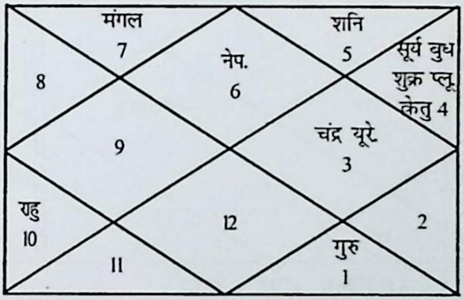

6.29 प्रकाश चंद्र
23.04.1913
(मृत्यु 6 अगस्त 2000 मं./श.)

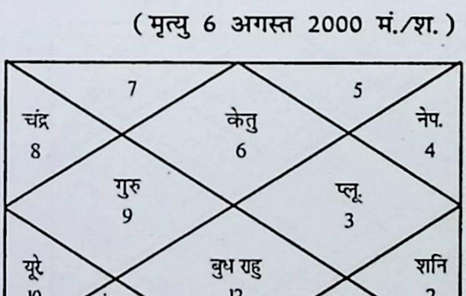

6.30 आकृति (आर्किटेक्ट)
02.07.1987
दिल्ली

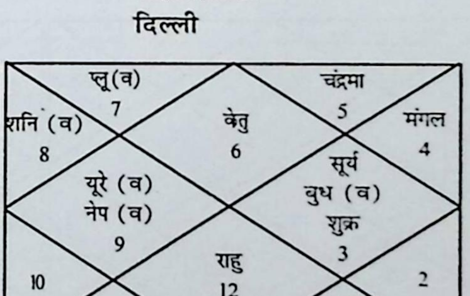

॥ कन्या लग्न जातकम् ॥

6.31. अंजु अध्यापिका (तलाकशुदा)
22.02.1959, दिल्ली

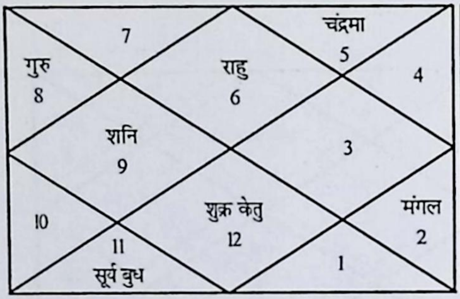

6.32 मोरारी बापू (राष्ट्रीय सन्त)
25.09.1946, प्रातः 06:00 बजे
अहमदाबाद

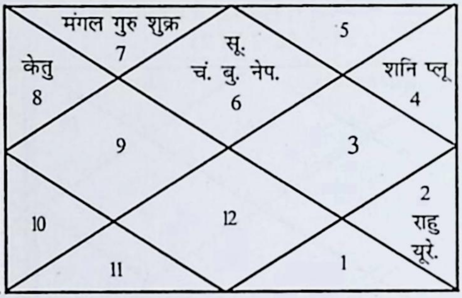

6.33. ऐश्वर्य राय (सिने तारिका)
01.11.1973

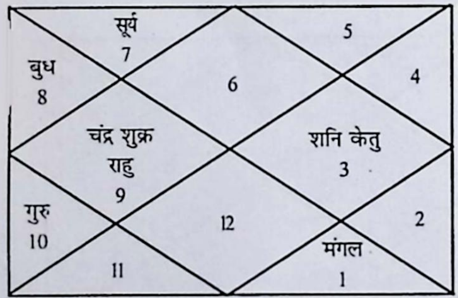

6.34 सतीश पंडित (बैंक मैनेजर)
25.01.1960, 2:00 घंटे
अनन्त नाग (कश्मीर)

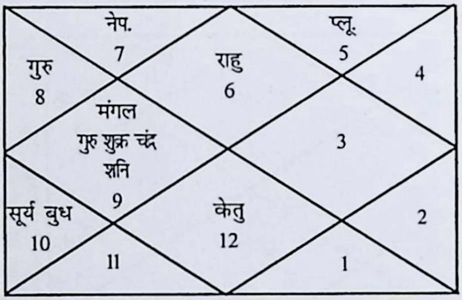

6.35 विनय कपूर (बैंकर)

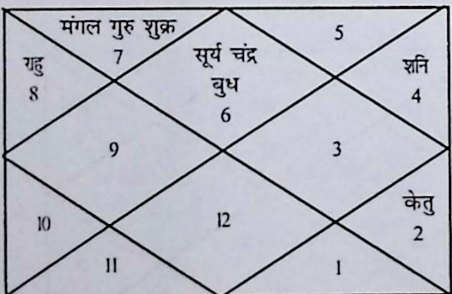

6.36 डॉ. इला
18.11.1962, 03:00 बजे रात्रि
दिल्ली

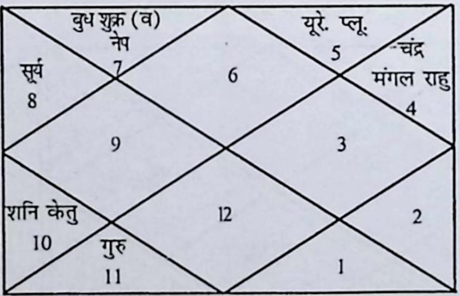

॥ कन्या लग्न जातकम् ॥

6.37 डॉ. आशा रोहतगी
31.12.1944, 00:35
करनाल

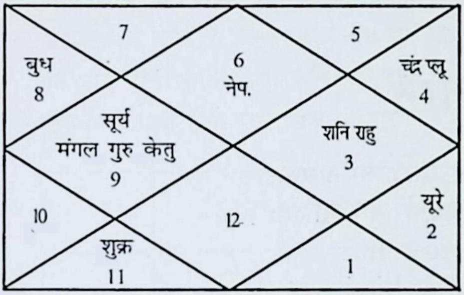

6.38 आभा (B.Tech Comp.)
02.06.1976, 13: 45
दिल्ली

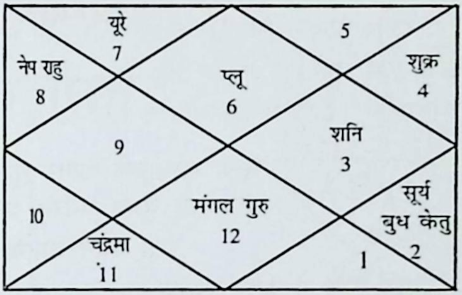

6.39 सी.डी. देशमुख (उपकुलपति)
दिल्ली

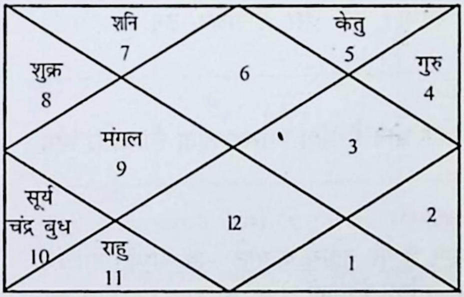

6.40 आलोक (हस्तशिल्प आभूषण नौकरी)
23.11.1970 जयपुर, 02:56 घंटे

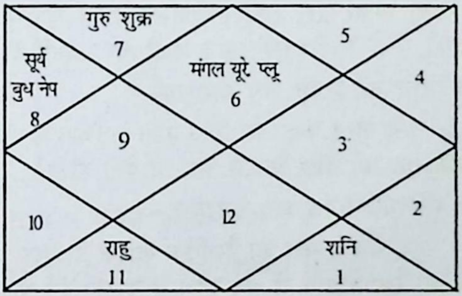

6.41 शिखर (Supdt. Eng.)
14.08.1950, 9:00 प्रातः
बुलन्दशहर

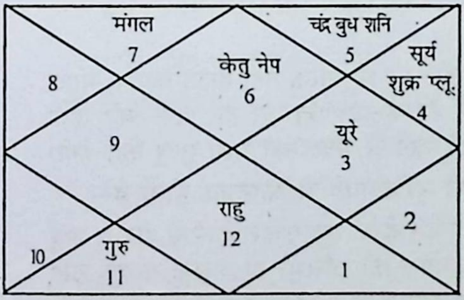

6.42 शेखर चौहान (कम्प्यूटर इंजी.)
16.05.1969 16:00 घंटे, दिल्ली

अध्याय - 7

तुला लग्न

तुला लग्नोदये जातः शुद्ध धीः धर्मनायकः
प्रजावान् युक्त धर्मस्तु धनाढ्यो जन पूजितः
॥ यवन जातक 10:7 ॥

तुला लग्न में जन्मा व्यक्ति शुद्ध मन और विचार वाला, धर्म पालन कराने वाला, धर्म परायण, सदाचारी, प्रजा से स्नेह व सम्मान पाने वाला तथा धनी मानी व्यक्ति होता है।

महात्मा गांधी, श्री के, एन राव, महात्मा फुले, आचार्य श्री राम शर्मा, भास्करानन्द लोहणी, महर्षि रमण, सद्दाम हुसैन, सन्त एकनाथ, सन्त नामदेव, सन्त तुलसीदास, सत्य साईं बाबा, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, सतीश जैकसन, शेख़ मुजीबुर रहमान, टी. एस. ईलियट–इन तुला लग्न जातकों में ये विशेषताएँ सहज देखी जा सकती हैं।

7.1 शनि की दशा धन प्रदायक–

तुला लग्न वालों के लिए शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से योग कारक होता है। अतः योग कारक ग्रह की दशा धन व यश तो देगी ही।

7.2 गुरु की दशा धन प्रदायक–

गुरु धन व यश का नैसर्गिक कारक है। तुला लग्न में गुरु तृतीय व षष्ठ भाव अर्थात उपचय भाव का स्वामी होने से धन लाभ व उन्नति देने वाला बनेगा। विद्वानों ने 3, 6, 10, 11 भाव को उपचय भाव माना है। इनके स्वामी अपनी दशा भुक्ति में जातक के धन, मान व यश की वृद्धि किया करते हैं। भले ही शुरू में थोड़ी बाधा व कठिनाई हो, किन्तु बाद में शुभ परिणाम होना निश्चित है।

7.3 मंगल मृत्यु नहीं देता–

तुला लग्न के लिए मंगल द्वितीयेश व सप्तमेश होने पर भी मारक नहीं होता। कारण, मंगल की मूल त्रिकोण राशि सप्तम भाव या केन्द्र स्थान में है। केन्द्राधिपति क्रूर ग्रह पापी नहीं रहता अपितु थोड़ा शुभ हो जाता है। अतः अशुभता नष्ट हो जाने से मंगल की दशा मृत्यु नहीं देगी।

7.4 गुरु व शुक्र का सम्बन्ध मंगल तथा शनि की दृष्टि पाने से कष्टप्रद होता है–

तुला लग्न में शुक्र लग्नेश होने से देह का प्रतिनिधि है तो गुरु षष्ठेश होने से रोग व शत्रु भय दर्शाता है। अब यदि उन ग्रहों की युति, शनि या मंगल की राशि में हो अथवा ये ग्रह शनि और मंगल की दृष्टि पाएँ तो गुरु शुक्र या शुक्र-गुरु में चेचक या फोड़े से कष्ट होना सम्भव है।

(लग्नेश शुक्र+ षष्ठेश गुरु) पर (मारकेश मंगल+पंचमेश शनि) की दृष्टि से = शुक्र गुरु की दशा भुक्ति में देह कष्ट होगा।

7.5 धनी पिता की मध्यम आयु

व्यय भाव में व्ययेश बुध से सूर्य की युति पर शनि की दृष्टि पिता को धनी किन्तु मध्यम आयु का बनाती है। कारण सूर्य पिता का नैसर्गिक कारक तो बुध नवमेश होने से पिता का प्रतिनिधित्व करता है। नवमेश का उच्चस्थ होना पिता को धनी मानी बनाता है। योगकारक शनि का उपचय भाव में बैठकर सूर्य बुध को देखना भी शुभ प्रभाव देगा। नवम भाव से अष्टमेश शनि का शत्रु क्षेत्री होना तथा शनि की क्रूर दृष्टि नवमेश बुध और कारक सूर्य पर पड़ने से पिता योगकारक शनि से दृष्ट मध्यम आयु वर्ग का होगा। पिता का भाग्यशाली होना सुनिश्चित है।

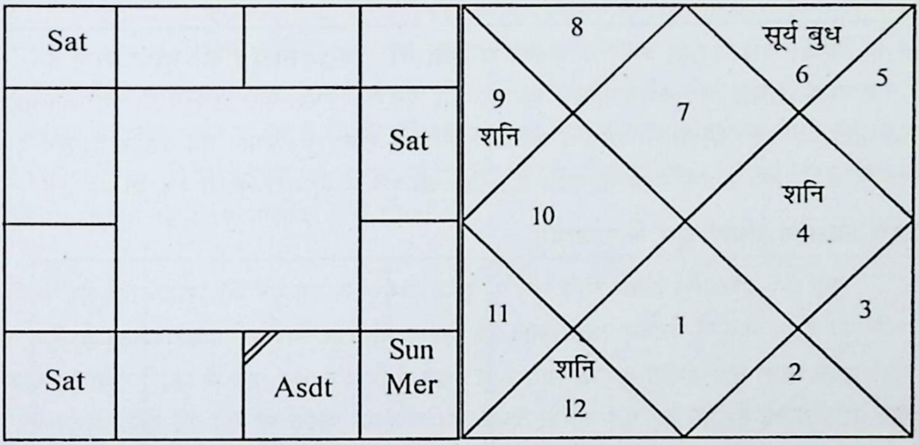

7.6 सूर्य, मंगल, बुध, शनि का परस्पर सम्बन्ध भाग्य वृद्धि देगा

तुला लग्न जातक के लिए सूर्य लाभेश, मंगल धनेश, बुध भाग्येश तो शनि योग कारक होता है। अतः इनका परस्पर दृष्टि-युति या राशि सम्बन्ध जातक को भाग्यशाली व धनी मानी और यशस्वी बनाएगा।

7.7 सूर्य, शनि, बुध का मंगल या चन्द्रमा से सम्बन्ध राजयोग देगा

जैसा कि पहले बताया गया कि सूर्य लाभेश, बुध भाग्येश तो शनि योग कारक होने से बहुत शुभ हैं। पुनः इनका सम्बन्ध यदि दशमेश चन्द्रमा से हो त्रिकोणपति शनि का दशमेश का दशमेश चन्द्रमा से सम्बन्ध श्रेष्ठ राजयोग व सत्ता लाभ देगा। इसी लाभेश सूर्य के साथ धनेश मंगल का सम्बन्ध भी धन व भाग्य वृद्धि कर राजयोग का फल प्रदान करेगा।

7.8 लग्न में सूर्य, बुध, शुक्र की युति धनी व भाग्यशाली बनाए—लग्न में लग्नेश शुक्र का स्वगृही होना कुण्डली की शुभता व शक्ति बढ़ाता है। पुनः लग्नेश की सूर्य व भाग्येश बुध से युति जातक को भाग्यशाली व धनी बनाएगी, इसमें सन्देह कैसा?

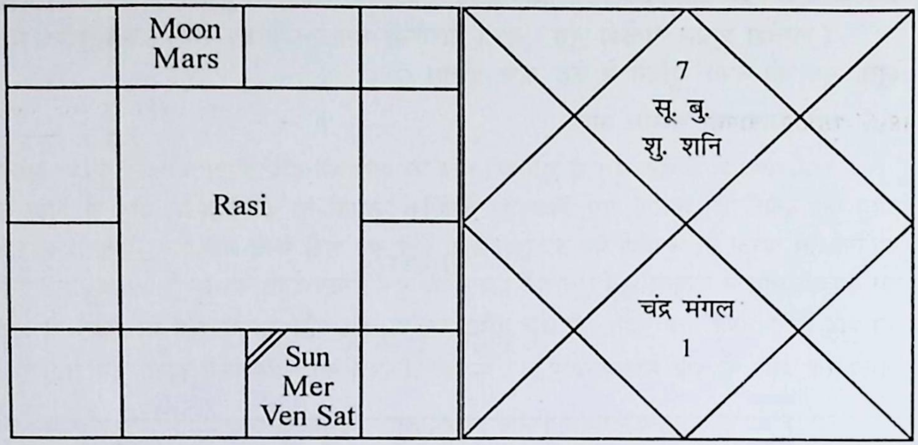

सूर्य, बुध, शुक्र, शनि की लग्न में युति पर (चंद्र+मंगल) की दृष्टि शुभ है–

सूर्य लाभेश, मंगल धनेश, बुध भाग्येश और चन्द्रमा दशमेश होने से शुभ हैं, यह बात पहले ही कही जा चुकी है। इनका सम्बन्ध स्वगृही लग्नेश से होना शुभ प्रभाव को बढ़ाता है। बुध शुभ संगति के कारण अपनी दशा में, साथ बैठे ग्रहों का शुभ फल देगा ये भी स्वाभाविक है।

7.9 लाभस्थ मंगल-बुध से राजयोग

गुरु का अष्टमस्थ होकर व्यय भाव से दृष्टि सम्बन्ध करना गुरु को शुभ बनाता है। पंचमेश शनि का नवम भाव में बैठकर लाभ स्थान को देखना भाग्य व लाभ वृद्धि को दर्शाता है। गुरु का पुन: धनेश मंगल का भाग्येश बुध के साथ लाभ स्थान में बैठकर, धन भाव में अपनी राशि को देखना धन प्रदान करता है। गुरु का धन कारक होकर धन भाव को देखना भी धन की वृद्धि करता है।

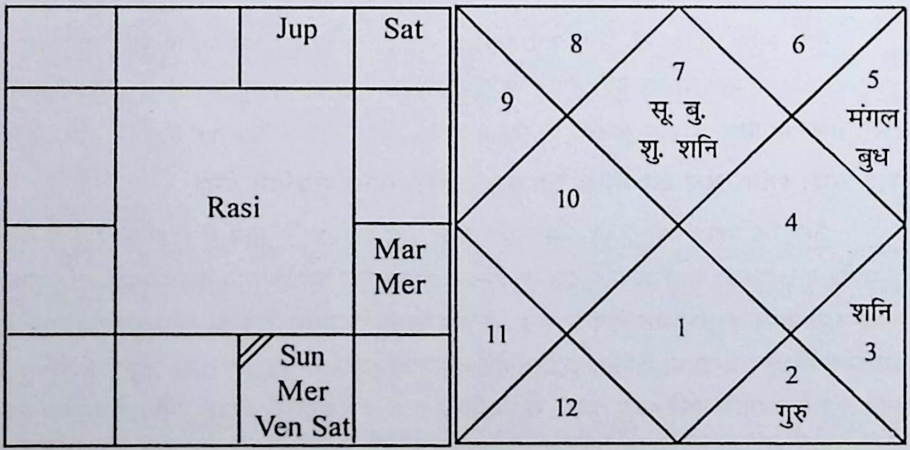

7.10 शनि की दशा बहुत शुभ

चन्द्र, लग्न की तुला राशि में तथा गुरु षष्ठ या द्वादश भाव में हो तो शनि की दशा बहुत शुभ फल दिया करती है। कारण दशमेश का लग्न में या लग्नेश का दशम भाव में होना कार्य क्षेत्र में **सफलता व सिद्धि** देता है।

गुरु भी तृतीयेश-षष्ठेश होकर यदि षष्ठ अथवा व्यय भाव में हो तो षष्ठस्थ बुध की दृष्टि धन व कर्म भाव पर होने से धन लाभ देगी। पुनः व्यय भाव में बैठा गुरु सुख स्थान से दृष्टि सम्बन्ध कर सुख बढ़ाएगा।

शनि केन्द्र व त्रिकोण भाव का स्वामी होने से योग कारक है। इस ग्रह स्थिति से वह निश्चय ही धन को बढ़ाएगा।

तुला लग्न के लिए शुक्र मारक है, मंगल नहीं। तुला लग्न वालों के लिए शुक्र लग्न व अष्टम भाव का स्वामी होने से आयु को दर्शाता है। अब यदि यह शुक्र पाप प्रभाव में या दुर्बल हो तो फिर मारक तो बनेगा ही। मंगल की वृश्चिक राशि द्वितीय भाव में तो मूल त्रिकोण मेष राशि सप्तम या केन्द्र स्थान में पड़ती है। केन्द्रधिपति क्रूर ग्रह पापी नहीं रहता तथा द्वितीय व द्वादश भाव के स्वामी अपनी अन्य राशि का प्रभाव देते हैं, यह बात पहले कही जा चुकी है। अतः मंगल तुला लग्न जातक के लिए मारकेश नहीं होता।

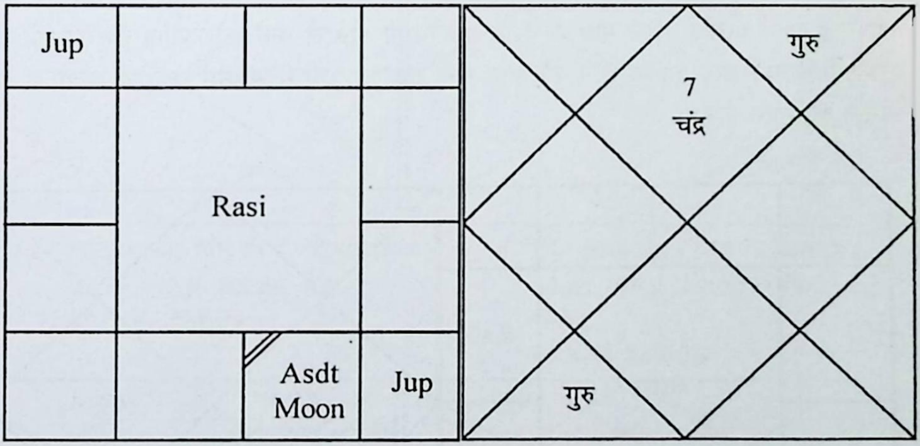

7.11 शनि लग्न में और चन्द्रमा दशम भाव में राजयोग देगा

शनि का लग्न में उच्चस्थ होकर दशम भाव में बैठे स्वगृही दशमेश चन्द्रमा से दृष्टि सम्बन्ध आजीविका क्षेत्र में सफलता व सत्ता सुख देगा। लग्न में बैठे ग्रह का दशम भाव और दशमेश से दृष्टि सम्बन्ध उत्कृष्ट राजयोग बनाता है। कुछ विद्वान चतुर्थ व अष्टम भाव पर ग्रह की त्रिपाद दृष्टि मानते हैं। उनके मतानुसार, दशमस्थ चन्द्रमा की लग्न पर चतुर्थ या त्रिपाद दृष्टि, लग्न व शनि को और अधिक शुभ व बली बनाएगी।

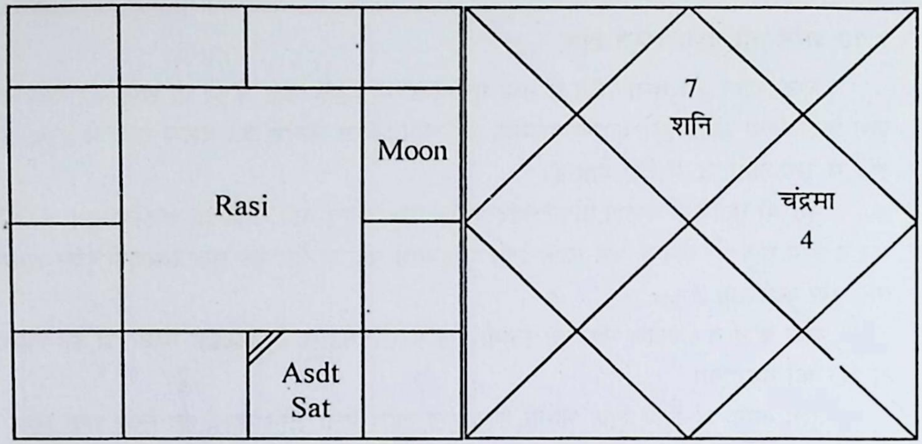

7.12 दशमस्थ राहु की दशा भुक्ति में तीर्थ यात्रा

यदि शनि, बुध, मंगल और गुरु तुला लग्न में तथा कर्क राशि का राहु दशम भाव में हो तो राहु की दशा भुक्ति तीर्थ यात्रा कराती है। यहाँ शनि योग कारक होकर लग्न में उच्चस्थ है तो धर्म के नैसर्गिक कारक गुरु की नवमेश बुध के साथ युति और नवम भाव पर दृष्टि है। मंगल भी धनेश सप्तमेश होकर चतुर्थ भाव (सुख स्थान) और सप्तम भाव को देख रहा है। मंगल दशमात् दशम अर्थात दशम भाव से दशम का स्वामी होने से कर्म को दर्शाता है। राहु का कर्म भाव में बैठकर योग कारक शनि की दृष्टि पाना राहु की दशा में **सत्कर्म व तीर्थ यात्रा** या तीर्थ स्नान का लाभ देगा।

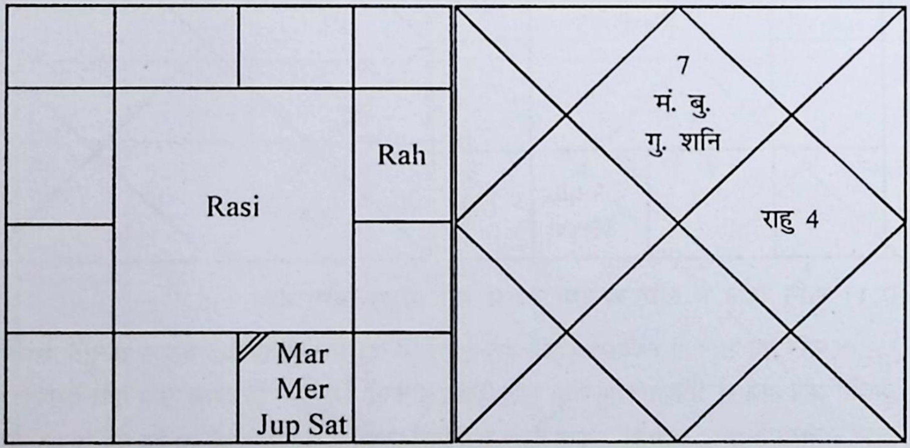

॥ तुला लग्न जातकम् ॥

7.1 आचार्य श्रीराम शर्मा
(सन्त लेखक)
20.12.1911, 08:25 प्रातः आगरा

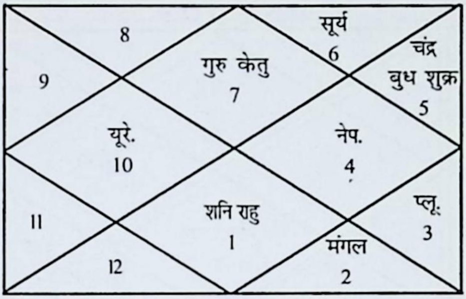

7.2 एडोल्फ हिटलर
20.04.1889, 18:00 दोपहर
48 N 15 13 E 02

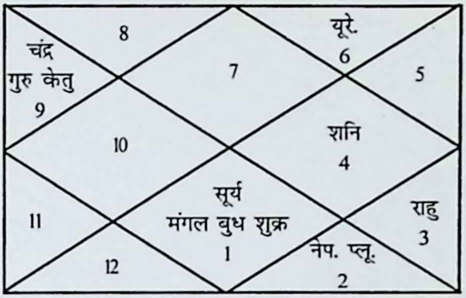

7.3 अल्फ्रेड हिचकॉक (फिल्म निर्माता)
13.08.1889, 11:30 प्रातः
51 N 33 00 W 05

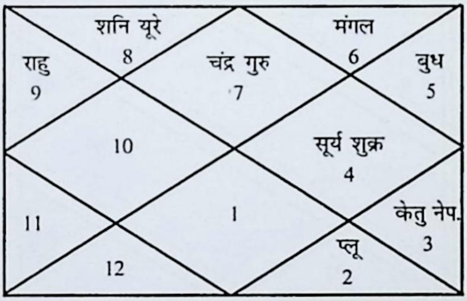

7.4 आंग सांसू क्यू (बर्मा के नेता)
19.06.1945, 12:00 दोपहर
दिल्ली

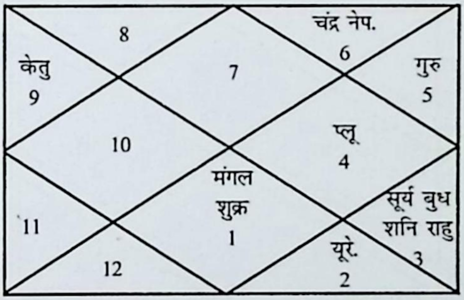

7.5 भास्करानन्द लोहणी (ज्यो.सम्पादक)
24.06.1931, 15:45 घंटे
29 N 36 79 E 40

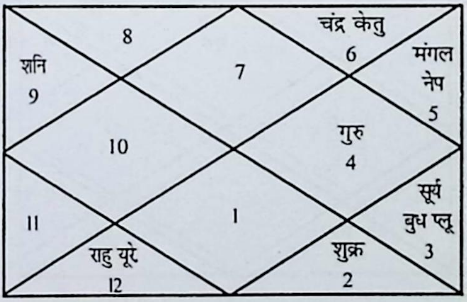

7.6 डॉ. जायसवाल (सैन्य चिकित्सक)
12.02.1954, 22:30 रात्रि
रांची
23 N 24 88 E 56

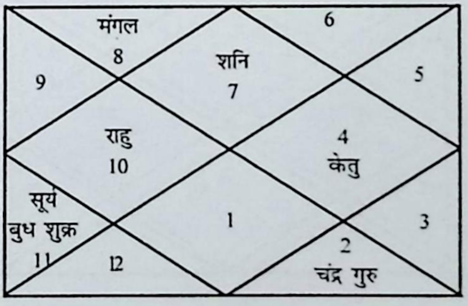

॥ तुला लग्न जातकम् ॥

7.7 चार्ली चैपलिन (हास्य अभिनेता)
16.04.1889, 20:00 घंटे लन्दन
51 N 30 00 W 05

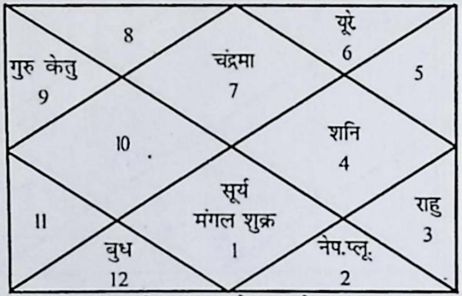

7.8 क्लिंट ईस्टवुड (अभिनेता-लेखक)
31.05.1930, 17:35
37 N 46 122 W 25

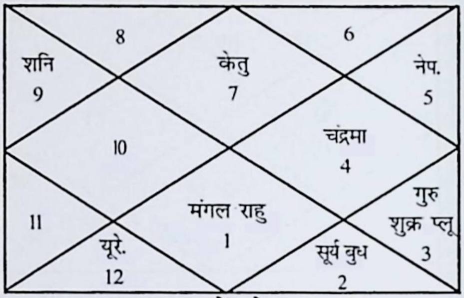

7.9 डी.एच. लारेंस (लेखक)
11.09.1885, 9:45 प्रातः
52 N 57 01 W 10

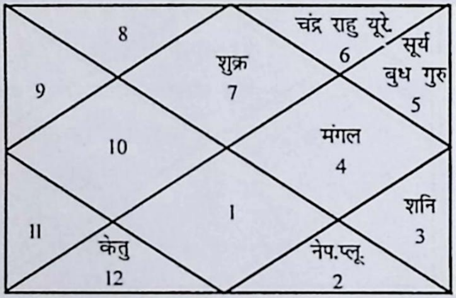

7.10. दादा कोंडके
(फिल्म अभिनेता/निर्देशक)
08.08.1932, 12:00 दोपहर मुम्बई

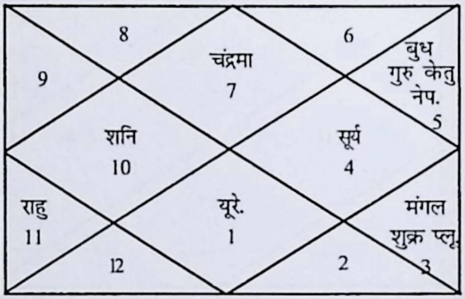

7.11 दादा साहब फाल्के (सिनेमा के जनक)
19.03.1871, 20:00 रात्रि
28 N 39 77 E 13

7.12 देवानन्द (अभिनेता)
26.09.1923, 09:30 प्रातः
32 N 04 75 E 28

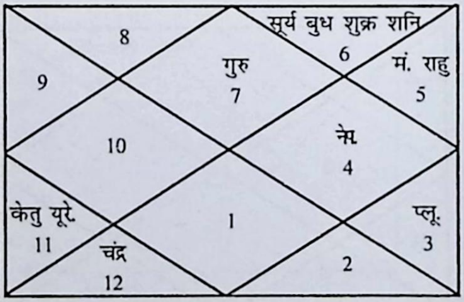

॥ तुला लग्न जातकम् ॥

7.13.फिदेल केस्ट्रो (क्यूबा राज्याध्यक्ष)
13.08.1926, 11:10 प्रातः
20 N 40 75 W 39

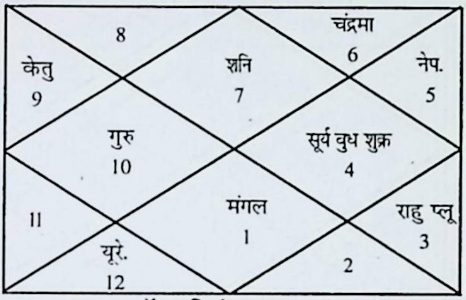

7.14.जी.एस कुरुप (लेखक)
03.06.1901, 15:00 अपराह्न
10 N 16 76 E 39

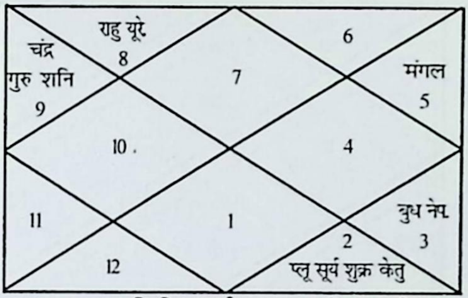

7.15 डॉ. हरिवंशराय बच्चन
27.11.1907, प्रातः 5:30
25 N 27 81 E 50

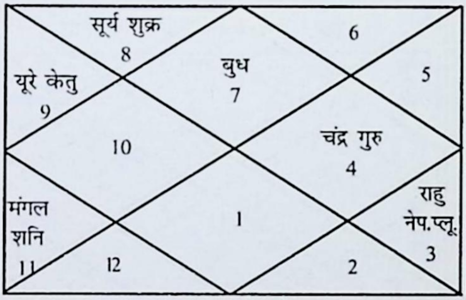

7.16.जिमि कार्टर (राष्ट्रपति अमरीका)
01.10.1924, 08:00 प्रातः
32 N 02 84 W 24

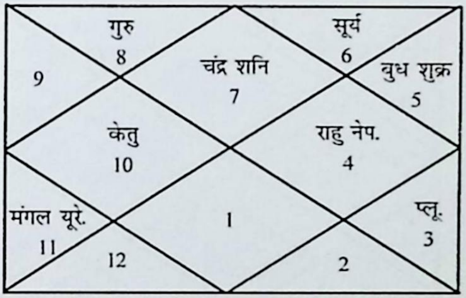

7.17 जॉन कीट्स (कवि)
29.10.1795, 06:00 प्रातः
लन्दन

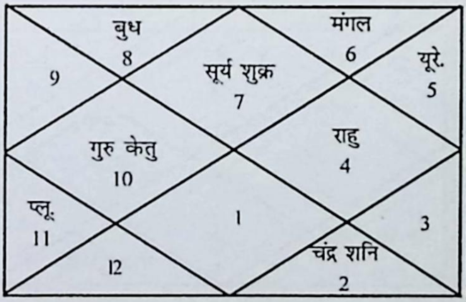

7.18.के. एन. राव (ज्योतिष गुरु)
12.10.1931, 07:55 प्रातः
16 N 13 81 E 12

॥ तुला लग्न जातकम् ॥

7.19 माधुरी दीक्षित (अभिनेत्री)
15.05.1966, 18:00 सायं
17 N 0 73 E 22

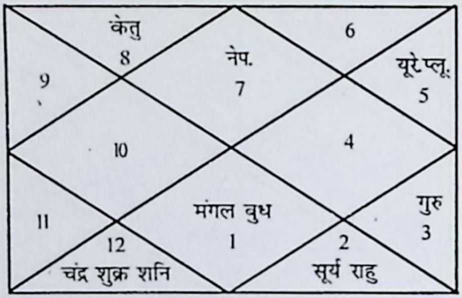

7.20 महात्मा गांधी
02.10.1869, प्रात: 8:40 पोरबन्दर
21 N 40 69 E 40

7.21 महात्मा ज्योतिबा फुले
11.04.1827, पुणे 19:00 सायं
18 N 34 75 E 58

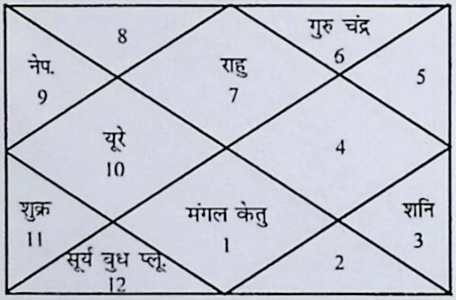

7.22 मार्ग्रेट थैचर (प्रधानमंत्री ब्रिटेन)
13.10.1925, 18:00 दोपहर
52 N 55 0 W 39

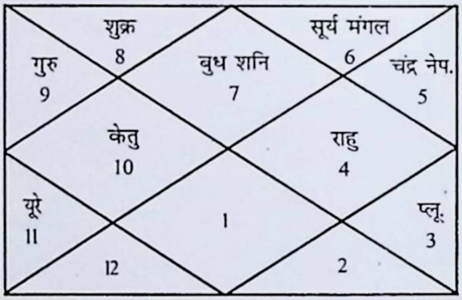

7.23 मार्क ट्वेन (लेखक)
30.11.1835, 04:45 प्रात:
39 N 29 91 W 51

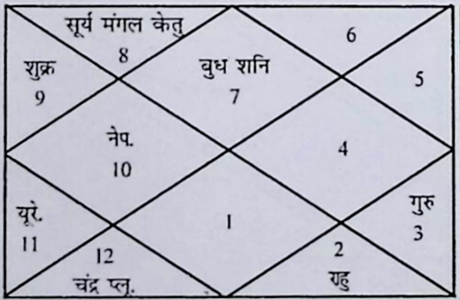

7.24.माइक टायसन (बॉक्सर)
30.06.1966, 15:30 अपराह्न
40 N 51 73 W 54

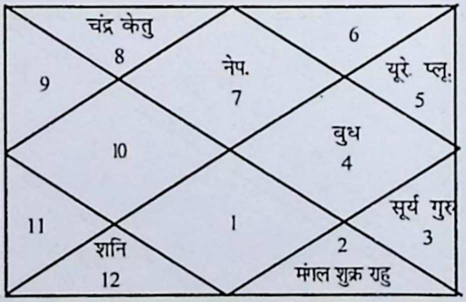

॥ तुला लग्न जातकम् ॥

7.25 मुल्कराज आनन्द (लेखक)
12.12.1905, 3:45 रात्रि पेशावर
34 N 02 71 E 37

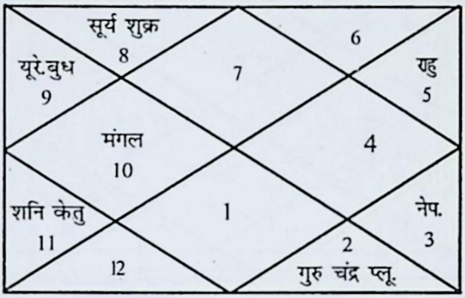

7.26 मुसोलिनी (राजाध्यक्ष इटली)
29.07.1883, 14:00 अपराह्न
44 N 15 12 E 05

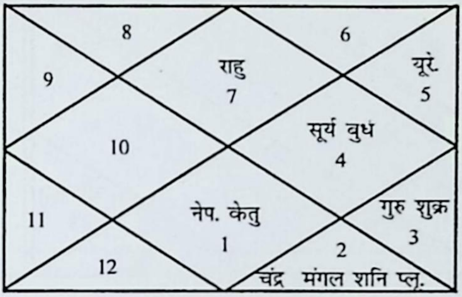

7.27 एन. टी. रामाराव (अभिनेता/मंत्री)
28.05.1923, 16:45 सायं
16 N 27 81 E 03

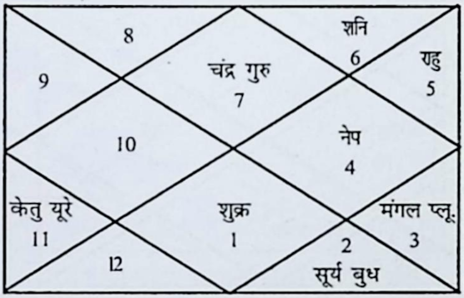

7.28 नानी पालकीवाला (विधि विशेषज्ञ)
16.01.1920, 00:45 रात्रि
20 N 58 73 E 01

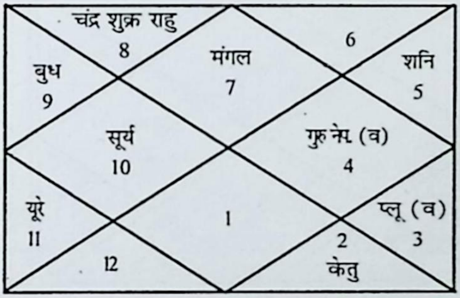

7.29.नेपोलियन बोनापार्ट (राष्ट्राध्यक्ष)
15.08.1769,11.30 प्रातः
41 N 43 08 E 44

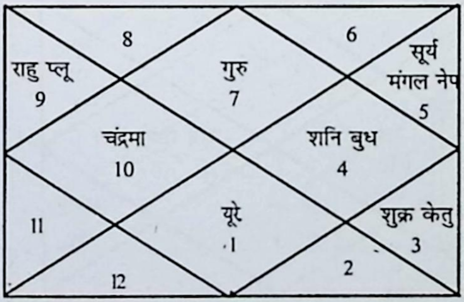

7.30.गोपालदास नीरज (कवि)
01.01.1925, 02:30 रात्रि
26 N 44 79 E 24

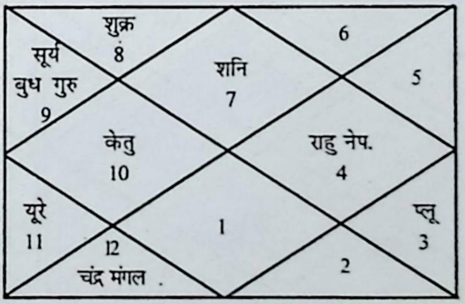

॥ तुला लग्न जातकम् ॥

7.31 महर्षि रमण

30.12.1879, 01:00 बजे रात्रि
08 N 30 78 E 11

7.32 एस.पी. पाहवा (ज्योतिषी)

17.07.1935, 14:00 अप.
32 N 10 74 E 12

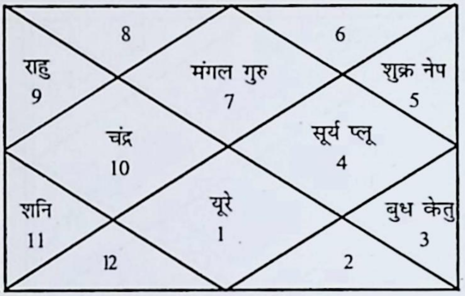

7.33 सद्दाम हुसैन (राष्ट्राध्यक्ष)

28.07.1937, 12:00 बजेमध्यान्ह टिगरीस
37 N 0 42 E 30

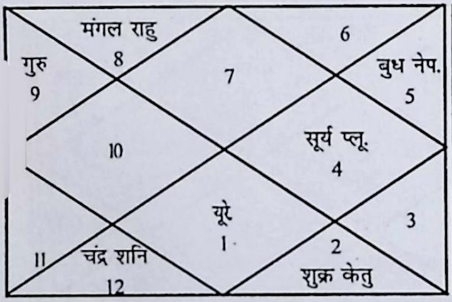

7.34. सन्त एकनाथ

16.03.1533, 19:45 सायं पैठण
19 N 29 75 E 28

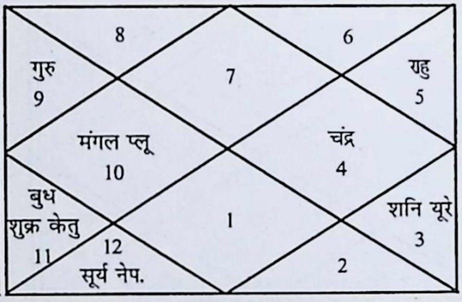

7.35 सन्त नामदेव

26.10.1270, 06:00 प्रातः
17 N 42 75 E 24

7.36 सन्त तुलसीदास

07.08.1543, 10:20 प्रातः
25 N 23 81 E 09

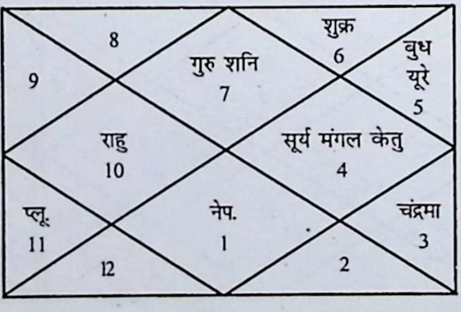

॥ तुला लग्न जातकम् ॥

7.37 सत्य साईंबाबा
23.11.1926, 6:00 प्रातः
12 N 44 75 E 10

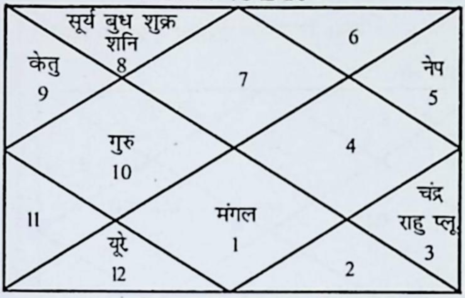

7.38 शांतिप्रसाद जैन (उद्योगपति)
03.01.1912, 02:00 रात्रि बिजनौर
26 N 44 80 E 54

7.39 टी.एस. ईलियट (लेखक)
26.12.1888, 07:45 प्रातः
38 N 38 90 W 12

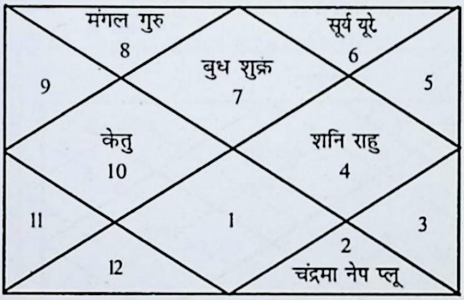

7.40 उत्तम कुमार (अभिनेता)
03.09.1926, 10:25 प्रातः
कलकत्ता

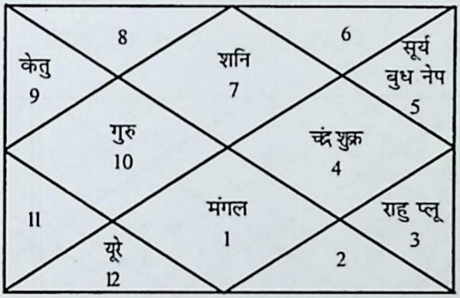

7.41 माताजी भगवती देवी शर्मा (सन्त)
01.10.1931, 08:00 प्रातः आगरा

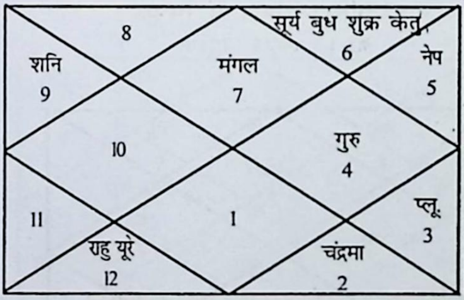

7.42 ब्लादिमिर पुतिन (रूसी राष्ट्रपति)
7.10.1952, 9.30 प्रातः
59 N 55 30 E 15

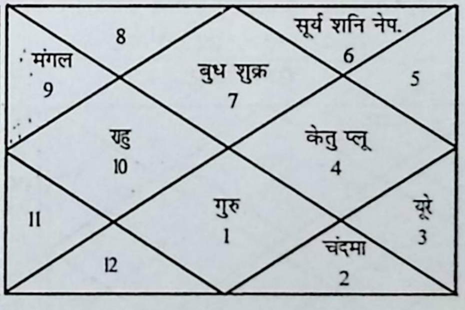

॥ तुला लग्न जातकम् ॥

7.43. ऊषा रानी
01.11.1938 पलवल
06:15 प्रात: (शीघ्रविवाह)
28 N 09 77 E 20

7.44 एम.एस. सुब्बालक्ष्मी (गायिका)
15.09.1916
मृत्यु दिसम्बर 2004 (शनि-शुक्र)

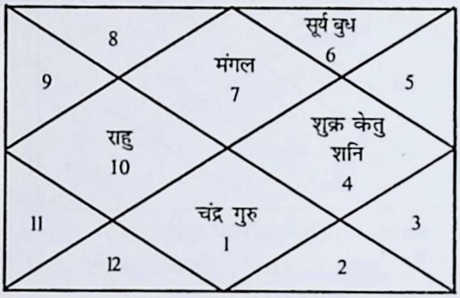

7.45 शेख मुजीबुर रहमान (बंगलादेश)
07.03.1920, 21:09 घंटे ढाका

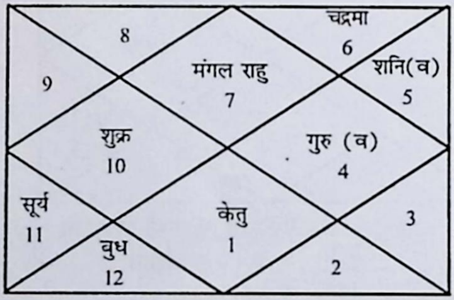

7.46 महारानी झांसी लक्ष्मीबाई
19.11.1828 04:3 प्रात:
सतारा

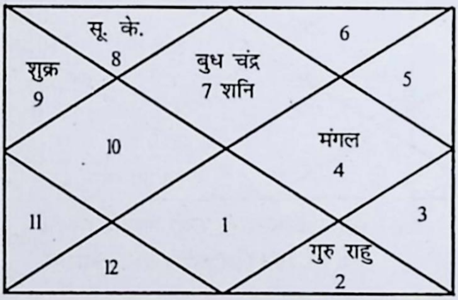

7.47 सतीश जैक्सन (उद्योग व्यापार)
20.02.1937, 22:00 घंटे
सियालकोट

7.48 रुचि (विदेश में विवाह)
30.12.1973 खुरजा

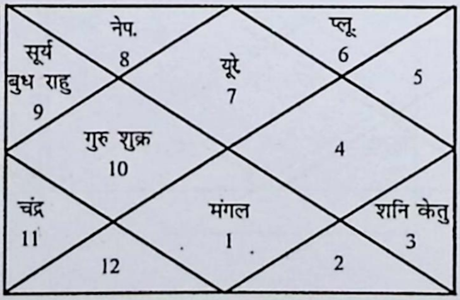

॥ तुला लग्न जातकम् ॥

7.49 इन्दर जी खुशु (खाद्य टैक्नोलोजिस्ट)

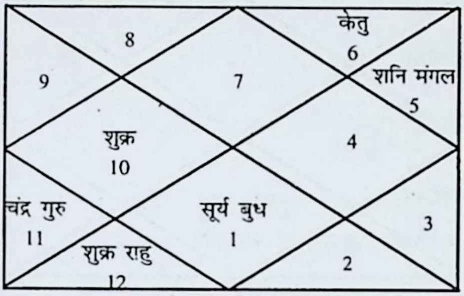

7.50 सचिन (वास्तु)
29.12.1981, प्रातः 3:37 जम्मू

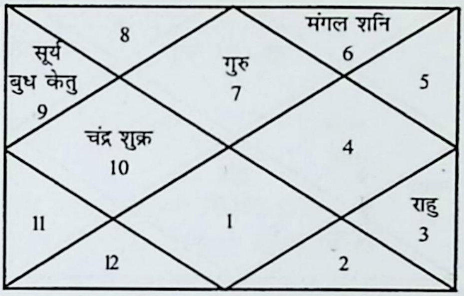

7.51 अतुल
(मामा के साथ व्यापार)
14.07.1972, 10:10 घंटे
दिल्ली

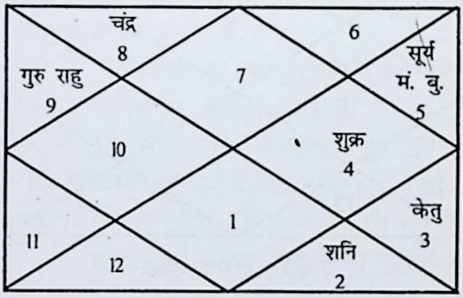

7.52 दीपक (जनरल स्टोर्स)
14.04.1960 भिवानी
(हरियाणा) 19:00 घंटे

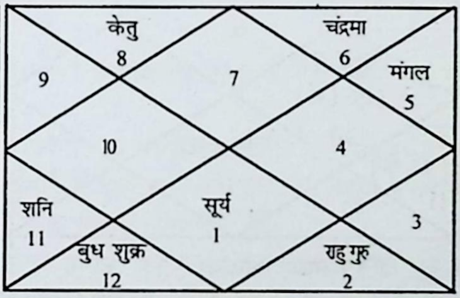

7.53 लेडी.डॉ. रजनी
15.01.1968, 01:30
दिल्ली

7.54 डॉ. श्रीमती जिंदल (प्राध्यापक)
29.04.1943
दिल्ली

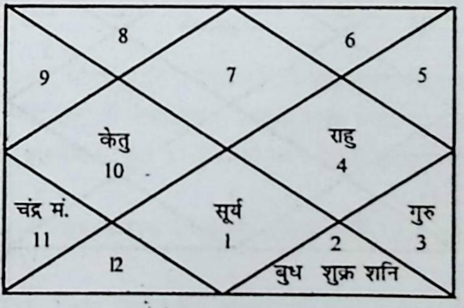

॥ तुला लग्न जातकम् ॥

7.55 सीतारमैया ज्योतिषी

27.03.1911 17:34 सांय चेन्नई

7.56 रजनी (विकलांग) (देह चुनौती)

24.9.1969, 09:00 प्रातः दिल्ली

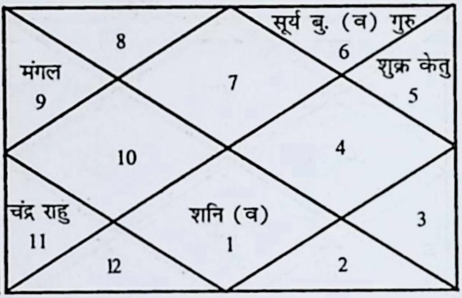

7.57 राधिका

18.09.1998, 10:18 घंटे

सैन फ्रांसिस्को

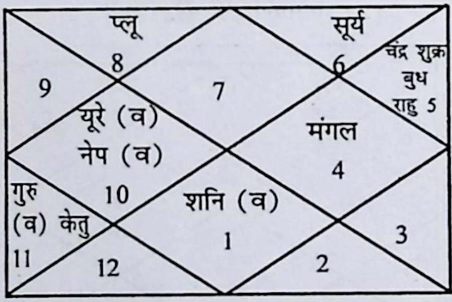

7.58 मोनिका (आशा डा.)

04.02.1971, 00:13 प्रातः

दिल्ली

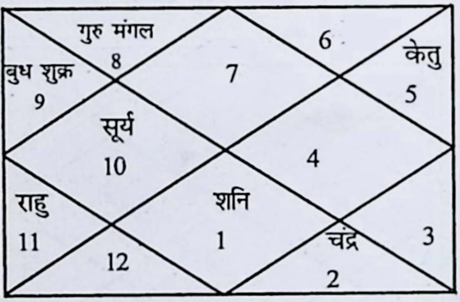

7.59 सम्राट अकबर

15.10.1542 05:00 बजे प्रातः

उमरकोट (अफगानिस्तान)

7.60 निर्धन विद्वान

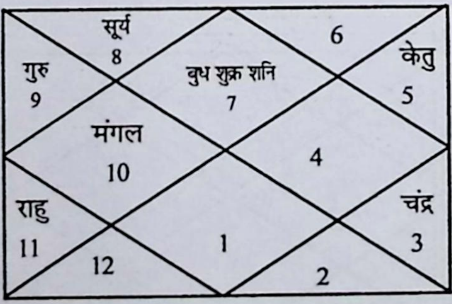

अध्याय - 8

वृश्चिक लग्न

मूर्खः क्रूरः विलोचनो अति चपलो मानी चिरायुर्धनी
विद्वान् वृश्चिक लग्नजश्च सुजन द्वेषी विवाद प्रियः॥

कभी ऐसा जातक मूर्ख, क्रूर दृष्टि, अति चपल, अभिमानी, दीर्घायु, धनी और विद्वान तथा सज्जनों से द्वेष करने वाला, विवाद प्रिय व्यक्ति होता है।

मतान्तर से ऐसा जातक क्रोधी, प्रतिशोधी, साहसी, शूरवीर और शत्रुहन्ता होता है। वह धर्म प्रिय, संयमी, गुणी व तेजस्वी व राजकर्मचारी होता है।

8.1 श्री रामानुजाचार्य ने अपनी कृति 'भावार्थ रत्नाकर' में इस सन्दर्भ में मात्र 5 सूत्र दिए हैं जो निम्न प्रकार हैं:–

गुरु और बुध का परस्पर दृष्टि युति सम्बन्ध धन दायक होता है (विशेषकर यह युति गुरु और बुध के क्षेत्र में हो।)

टिप्पणी–वृश्चिक लग्न में गुरु 2L–5L होने से धन का विशेष कारक है। इसी प्रकार बुध की मूल त्रिकोण राशि (Positive sign) लाभ स्थान में होना बुध को लाभ देने वाला बनाता है। इनका परस्पर दृष्टि युति सम्बन्ध यदि धन की वृद्धि करे तो आश्चर्य कैसा?

8.2 तीसरे भाव में गुरु का नीचस्थ होना जातक को उदार बनाता है। धनेश गुरु का नीचस्थ होना धन की हानि या व्यय देता है। गुरु धर्म व अध्यात्म का नैसर्गिक कारक है। तृतीयस्थ गुरु की दृष्टि धर्म व लाभ स्थान पर होने से जातक पुण्य संचय व धार्मिक कार्यों में ही लाभ मानता हैं अत: शुभ कार्यों में व्यय करना उसका स्वभाव होता है।

8.3 (सूर्य+बुध+शुक्र) सप्तम भाव में दृष्टि युति सम्बन्ध करें तो बुध की दशा जातक को धन, मान और प्रतिष्ठा देती है।

टिप्पणी–सप्तम भाव की वृष राशि में शुक्र भोगाधिपति (व्ययेश) हो कर स्वगृही है तो सूर्य 10L और बुध 11L है। सूर्य भी दशमात् दशम होने से सत्ता लाभ व राज सुख देगा। बुध पर संगति का प्रभाव पड़ता ही है। अत: बुध की दशा में जातक सूर्य व शुक्र के फल देकर सुख वैभव, राज विलास व मान-प्रतिष्ठा देगा।

8.4 (गुरु+बुध) पंचम भाव में + चंद्रमा लाभ स्थान में हों तो जातक धनी मानी और भाग्यशाली होता है।

टिप्पणी–गुरु 2L - 5L है तो बुध 11L और चंद्रमा 9L है।

धनेश-पंचमेश गुरु का लाभेश–बुध के साथ पंचम भाव में स्वगृही होना धनेश और लाभेश की युति तथा लाभ स्थान में बैठे भाग्येश चंद्रमा पर दृष्टि भाग्य वृद्धि या राजकृपा से धन, मान और यश देगी।

8.5 (गुरु+चंद्र+केतु) भाग्य स्थान की कर्क राशि में हो तो गुरु की दशा धन मान देने वाली किन्तु केतु की दशा साधारण होती है। गुरु धनेश और पंचमेश होकर भाग्य स्थान में उच्चस्थ है तथा स्वगृही भाग्येश चंद्रमा के साथ गुरु युति की भी है। भाग्यस्थ गुरु लग्न तथा पंचम भाव को देखेगा। अतः **गुरु की दशा भाग्य वृद्धि** तथा धन और यश देगी।

केतु की भाग्य स्थान में भाग्येश चंद्रमा और अध्यात्म के नैसर्गिक कारक गुरु के साथ युति धर्म व अध्यात्म में तो उपलब्धि देगी किन्तु लौकिक सुख में बाधा भी डालेगी। विद्वानों ने केतु को मोक्ष देने वाला माना है फिर धर्म भाव में बैठा केतु मनुष्य को धन लोभ में भला क्योंकर फँसने देगा।

8.6 डॉक्टर बी.वी.रमण के मतानुसारः-

(*i*) वृश्चिक लग्न में गुरु धनेश और पंचमेश होने से निश्चय ही शुभ है।

(*ii*) इसी प्रकार नवमेश चंद्रमा का दशमेश सूर्य से दृष्टि युति सम्बन्ध भी राजयोग की पुष्टि करेगा।

(*iii*) गुरु व बुध का परस्पर दृष्टि युति सम्बन्ध मात्र लाभेश व धनेश का सम्बन्ध होने से बहुत शुभ मान लेना उचित नहीं जान पड़ता। कारण–बुध अष्टमेश और एकादशेश (त्रिषडायपति) है।

(*iv*) कदाचित अष्टमेश का अपने अष्टम भाव से व्यय स्थान पर लग्न से सप्तम भाव में दशमेश और लाभेश से युति करना बुध की अशुभता मिटाने वाला हो गया।

(*v*) **अष्टमेश बुध** का पंचम भाव में **नीचस्थ** होना भी उसकी **अशुभता को नष्ट करता है।**

वृश्चिक लग्न के योग-सन्दर्भ 8.4

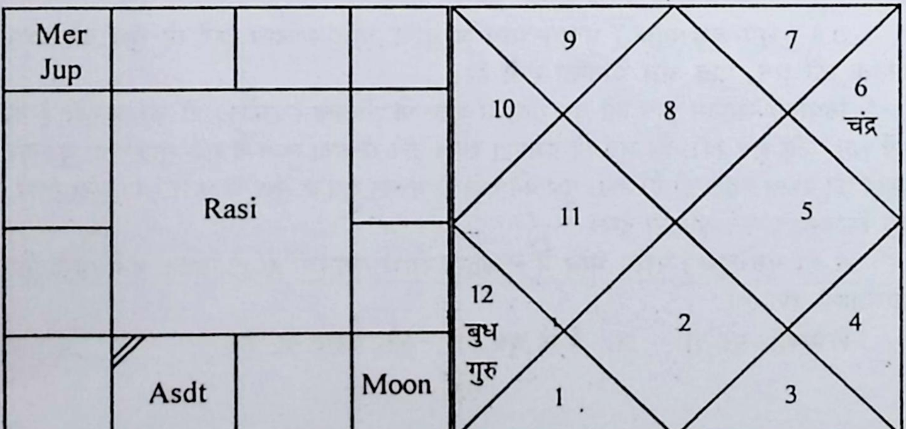

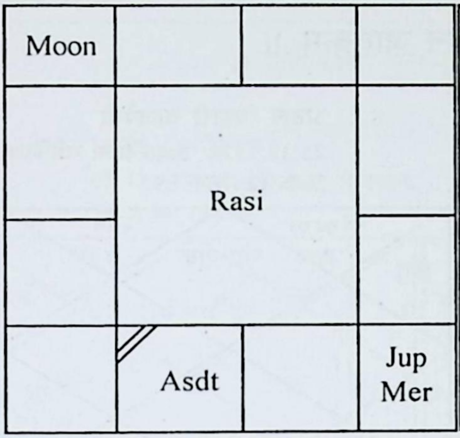
Moon
Rasi
Asdt
Jup
Mer

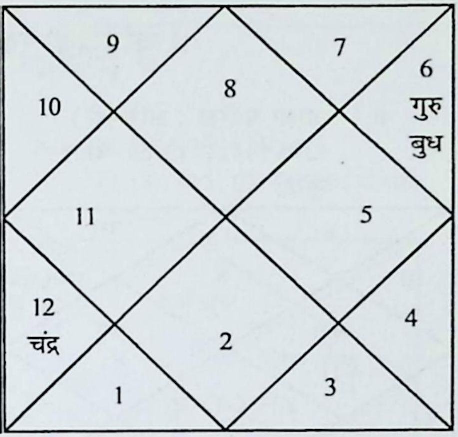
9
7
8
6
गुरु
बुध
10
11
5
12
चंद्र
2
4
1
3

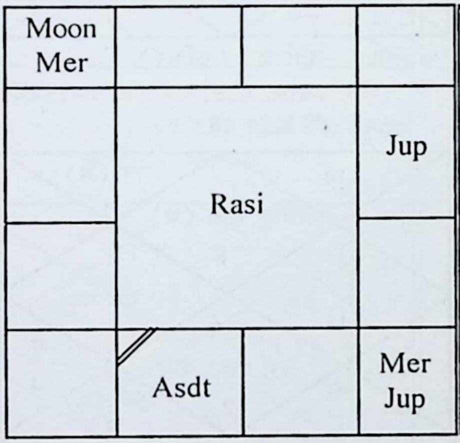
Moon
Mer
Jup
Rasi
Asdt
Mer
Jup

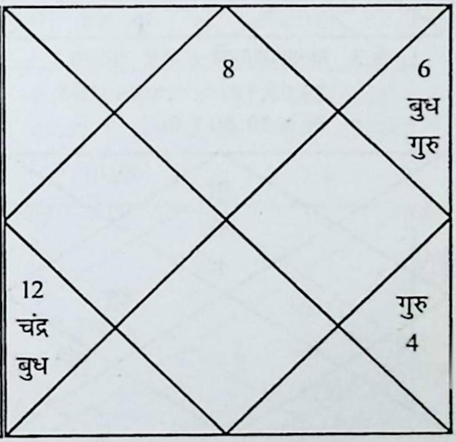
8
6
बुध
गुरु
12
चंद्र
बुध
गुरु
4

॥ वृश्चिक लग्न जातकम् ॥

8.1 आशा पारिख (अभिनेत्री)
2.10.1942, 12:00 दोपहर
मुम्बई

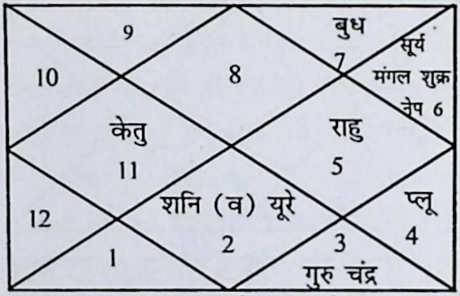

8.2 अटल बिहारी वाजपेयी
25.12.1924, 5:45 प्रातः ग्वालियर
26 N 12 78 E 09

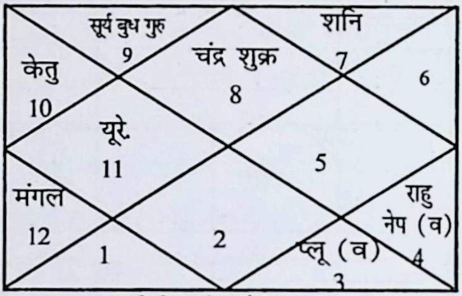

8.3 बल्लभाचार्य (सन्त वेदान्त)
29.03.1478, 21:45 रात्रि
29 N 20 80 E 06

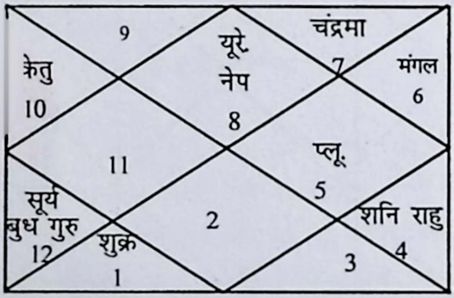

8.4 जोर्न बर्ग (टैनिस)
06.06.1956, स्टॉकहोम 19:15 रात्रि
59 N 26 18 E 03

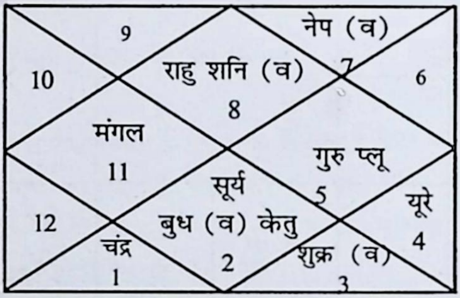

8.5 कैथरीना जेटा जोन्स (अभिनेत्री)
25.09.1969, 14:40 दोपहर
51 N 37 03 W 57

8.6 चेतन शर्मा (ज्योतिष सम्पादक)
12.04.1964, 23:22 रात्रि
28 N 17 76 E 14

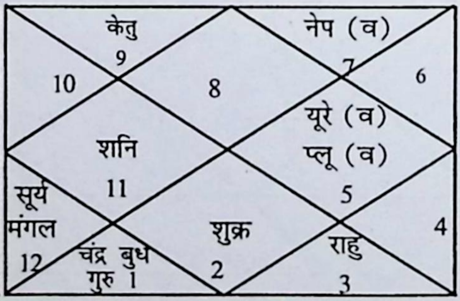

॥ वृश्चिक लग्न जातकम् ॥

8.7 धर्मेन्द्र (अभिनेता)
08.12.1935 06:00 प्रातः लुधियाना
30 N 56 75 E 52

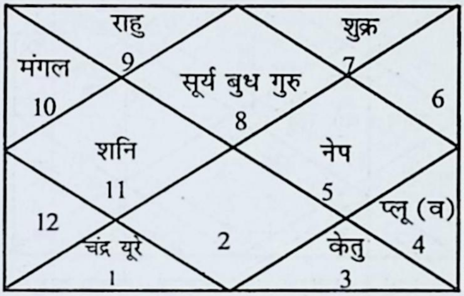

8.8 दोस्तोवयस्की (लेखक)
11.12.1821, 07:47 प्रातः मॉस्को
55 N 45 37 E 34

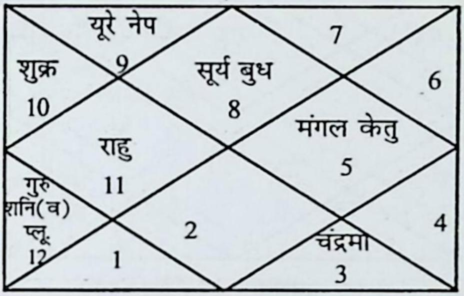

8.9 रूज़वेल्ट (राष्ट्रपति अमरीका)
11.10.1884, 11:00 प्रातः न्यूयॉर्क
40 N 42 74 W 0

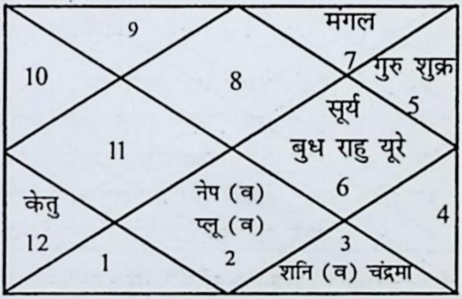

8.10 सर एडमण्ड हिलेरी (पर्वतारोही)
20.07.1919, 12:30 दोपहर ऑकलैंड

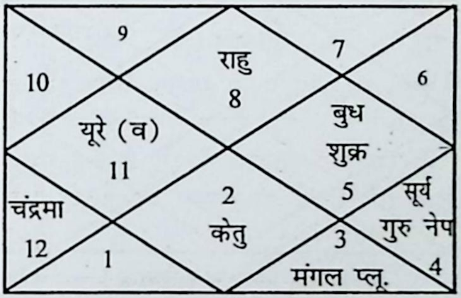

8.11 गारफील्ड सोवर्स (क्रिकेट)
28.07.1936, 13:25 अपराहन
13 N 00 59 W 30

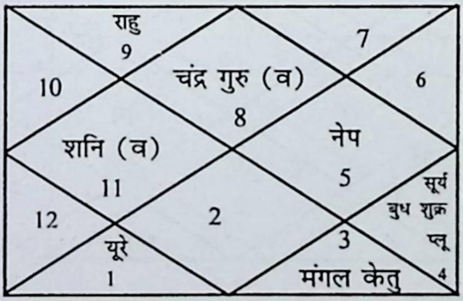

8.12 गुलज़ार (लेखक)
18.08.1936, 13:30 अपराह्न
33 N 00 73 E 36

॥ वृश्चिक लग्न जातकम् ॥

8.13 हेनरी फोर्ड (उद्योगपति)
30.07.1863, 14:10 अपराह्न
42 N 05 83 W 05

8.14 हरमन हीज (लेखक-निदेशक)
2.07.1877, 18:30 सायं
48 N 42 8 E 44

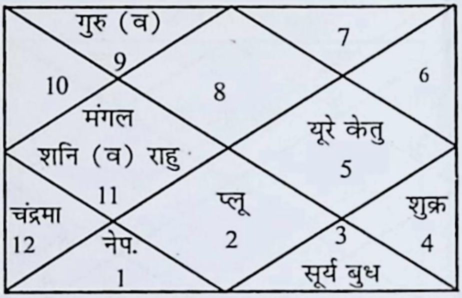

8.15 इमरान ख़ान (क्रिकेटर)
25.11.1952, 6:45 प्रातः लाहौर
31 N 32 74 E 22

8.16 जमनालाल बजाज (उद्योगपति)
04.11.1889, 8:00 प्रातः
27 N 33 75 E 12

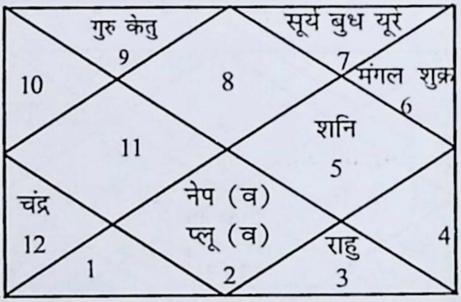

8.17 जॉन मिल्टन (लेखक)
09.12.1608, 6:30 प्रातः लन्दन
51 N 30 00 W 05

8.18 लालकृष्ण आडवाणी (राजनेता)
08.11.1927, 09:20 प्रातः हैदराबाद
25 N 23 68 E 36

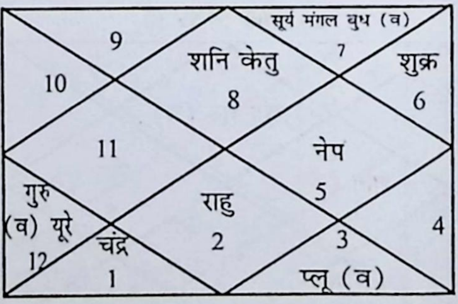

॥ वृश्चिक लग्न जातकम् ॥

8.19 लेनिन (रूसी नेता)
10.04.1870, 22:39 रात्रि
54 N 17 48 E 26

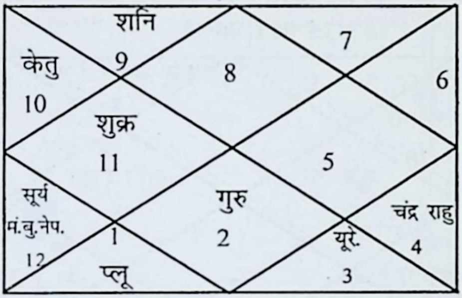

8.20 लिओनार्डो द विंची (चित्रकार)
22.04.1452, 21:48 रात्रि
43 N 46 11 E 15

8.21 माधवराव सिंधिया (राजनेता)
10.03.1945, 01:00 बजे रात्रि ग्वालियर
26 N 12 78 E 09

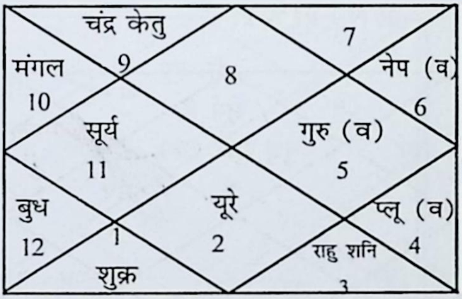

8.22 मिर्ज़ा गालिब
27.12.1797, 05:09 प्रातः आगरा
27 N 9 78 E 0

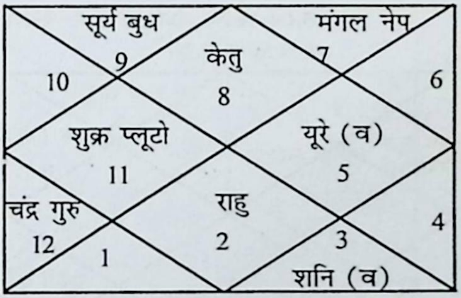

8.23 आर. सन्थानम (ज्योतिष सम्पादक)
21.05.1944, 20:20 तिरुपति
13 N 39 79 E 25

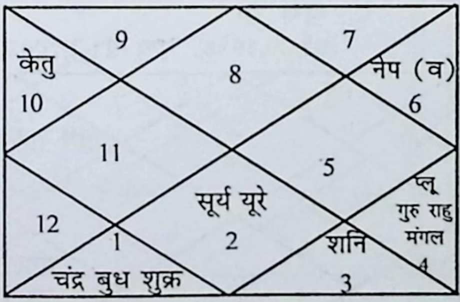

8.24 शरद पवार (राजनेता)
12.12.1940, 5:30 प्रातः बारामती
18 N 12 74 E 39

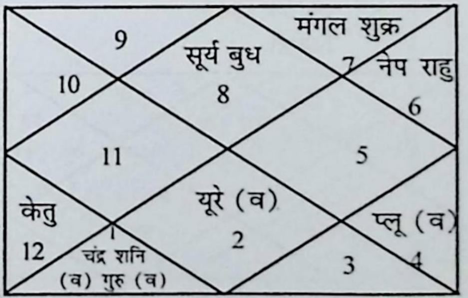

॥ वृश्चिक लग्न जातकम् ॥

8.25 शेख़ हसीना वाजेद
(प्रधानमंत्री बांग्लादेश)
28.09.1946, 11:00 प्रातः ढाका
23 N 43 90 E 26

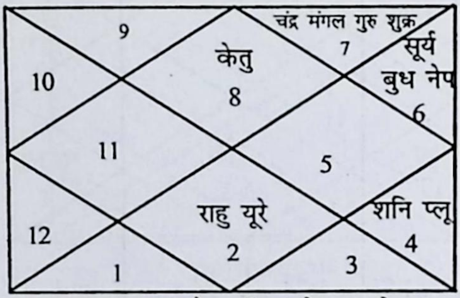

8.26 शेख़ मुजीबुर रहमान
(बांग्लादेश के राष्ट्रपिता)
17.03.1920, 22:38 रात्रि
23 N 15 90 E 00

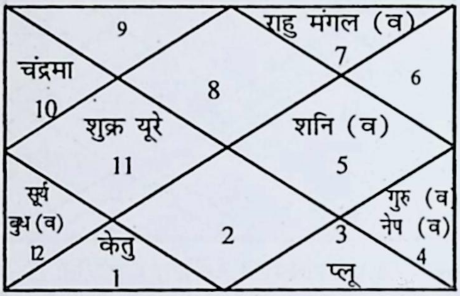

8.27 सामरसैट मॉम (लेखक नोबल विजेता)
25.01.1874, 04:00 प्रातः पैरिस
48 N 50 2 E 20

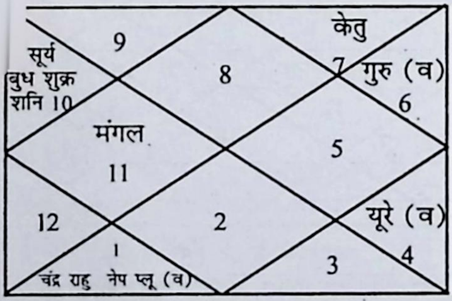

8.28 टेडटर्नर (अध्यक्ष CNN चैनल)
19.01.1938, 08:50 प्रातः
39 N 9 84 W 27

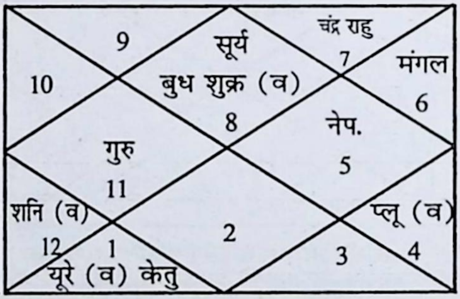

8.29 सन्दीप जैकसन
09.04.1968
दिल्ली

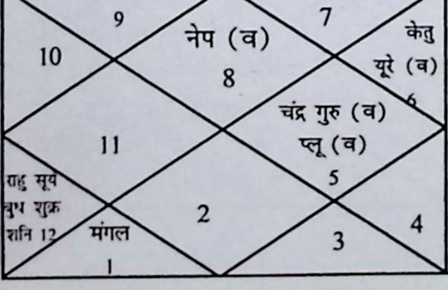

8.30 कैलाश (उद्योग)
खुर्जा
03.09.1936, मृत्यु 21.2.2002

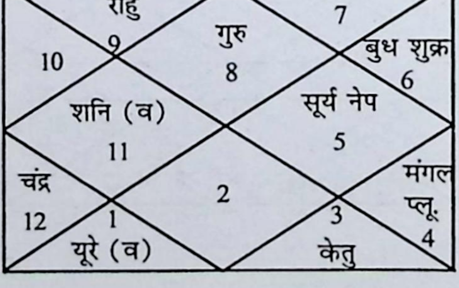

॥ वृश्चिक लग्न जातकम् ॥

8.31 अपर्णा (विदेश)
17.03.1970
आगरा

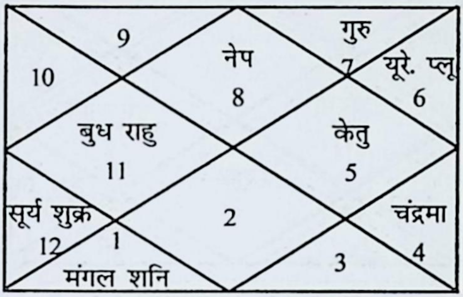

8.32 अमोल (इंजी.)
06.07.1977

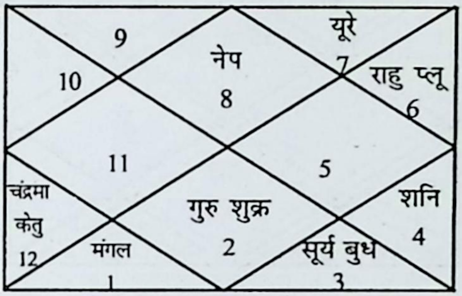

8.33 अंशुल (इंजी.)
03.04.1983, 23:53
मेरठ

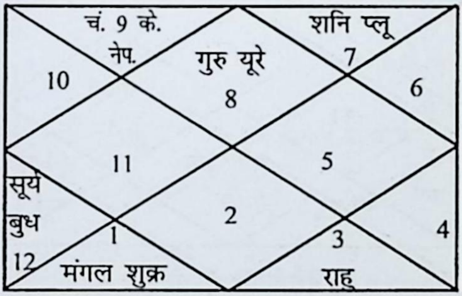

8.34 आशा (अध्यापिका)
05.12.1974
दिल्ली

8.35 अरुण शौरी (पत्रकार)
02.11.1941

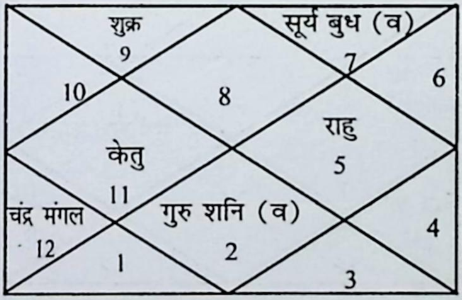

8.36 अनिल
01.09.1963

॥ वृश्चिक लग्न जातकम् ॥

8.37 फील्डमार्शल अयूब ख़ान
18.10.1901, 10:53 प्रातः
31 N 32 74 E 22

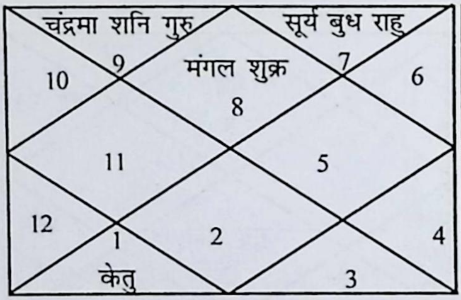

8.38 हरभजन सिंह (क्रिकेटर)

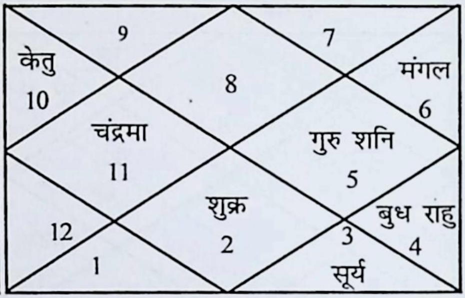

8.39 सुष्मिता सेन (विश्व सुन्दरी)
20.11.1975

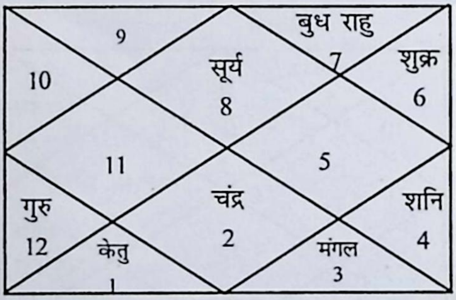

8.40 श्रीमती कनैडी ओनासिस

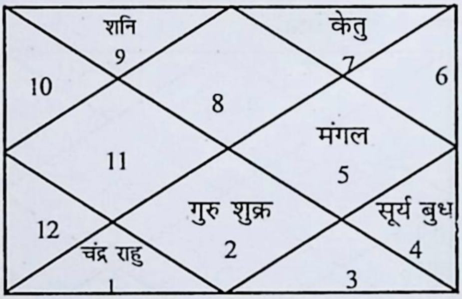

8.41 सेना में जरनल

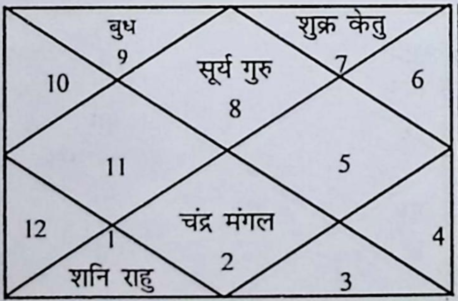

8.42 देवेन्द्रगर्ग (ज्योतिषी)
22.08.1967, 13:06 घंटे
दिल्ली

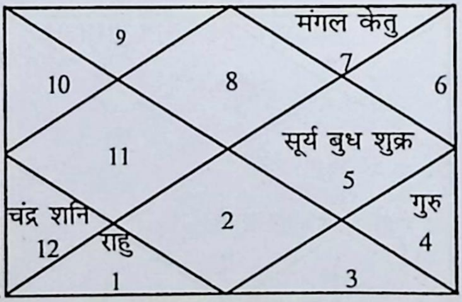

॥ वृश्चिक लग्न जातकम् ॥

8.43 कर्नल नासिर (मिस्र के राष्ट्रपति)
11.02.1918

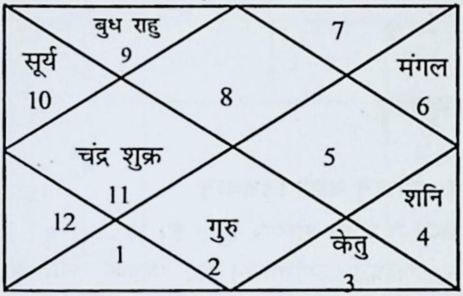

8.44 ओसामा बिन लादेन
13.05.1957 रियाद 19:30 घंटे

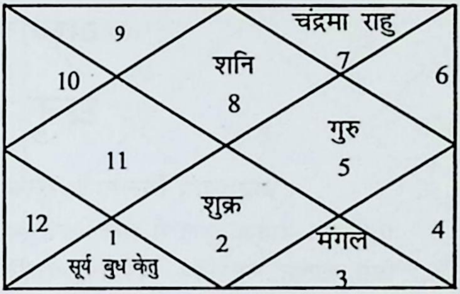

8.45 सुभाष (आभूषण निर्माता)
18.10.1951 जयपुर
09:09 घंटे

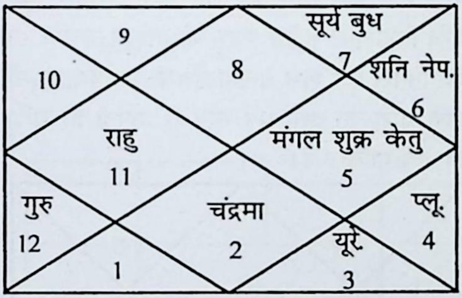

अध्याय - 9

धनु लग्न

प्राज्ञश्चाप विलग्नजः कुलवरः श्रीमान् यशो वित्तवान्

धनु लग्न जातक कुल में श्रेष्ठ, धनी, यशस्वी व वैभव सम्पन्न होता है।

ऐसा जातक न्यायप्रिय, धैर्यवान, वैज्ञानिक, शास्त्रज्ञ, आश्रितजन का पालक, धर्म व परोपकार में रत कार्य कुशल व राजप्रिय होता है। कोई जातक क्रोधी पर छिद्रान्वेषी, मुख या नेत्र रोगी तथा राजदंड से धन हानि पाने वाला भी होता है।

9.1 पंचम भाव में नीच राशिस्थ शनि की दशा में धन-मान की वृद्धि होती है।

टिप्पणी—द्वितीय व द्वादश भाव के स्वामी अपनी अन्य राशि का फल देते हैं। फिर यहाँ तो तृतीय भाव में शनि की मूल त्रिकोण राशि भी है। विद्वानों ने तृतीय भाव को अशुभ बताया है। तृतीयेश का तृतीय से तृतीय भाव में बैठना शनि को निर्बल कर शुभ बनाता है। पंचम भाव लक्ष्मी स्थान है। यहाँ बैठा शनि लाभ स्थान में अपनी उच्च राशि को तथा धन भाव में अपनी ही राशि को देखेगा। अतः शनि की दशा में धन वृद्धि होना स्वाभाविक है।

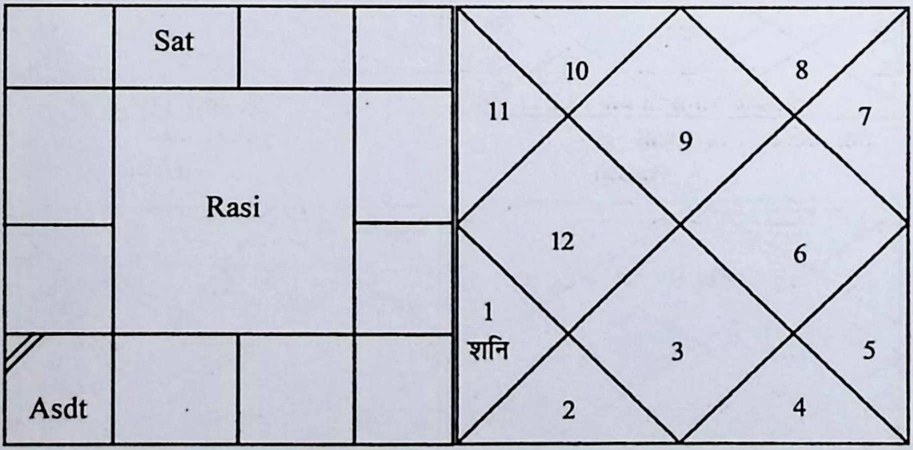

9.2 लाभस्थान में बैठा उच्चस्थ धनेश शनि बहुत लाभ देता है। अन्य लग्नों में धन भाव में बैठा शनि विशेष लाभ नहीं देता।

सम्राट नीरो 15 दिसम्बर, 1837

2L-3L शनि 11H में बैठकर 9L सूर्य को तथा 10L बुध को देख रहा है। इसने जातक का पिता सम्बन्धी सुख छीना मात्र 3 वर्ष की आयु में जातक के पिता की मृत्यु हो गई। धनेश व लाभेश का राशि परिवर्तन, लग्न में 9L-10L की युति तथा लग्नेश नियंत्रक का धन भाव में उच्चस्थ होना सत्ता सुख तथा धन वैभव देने वाला बना।

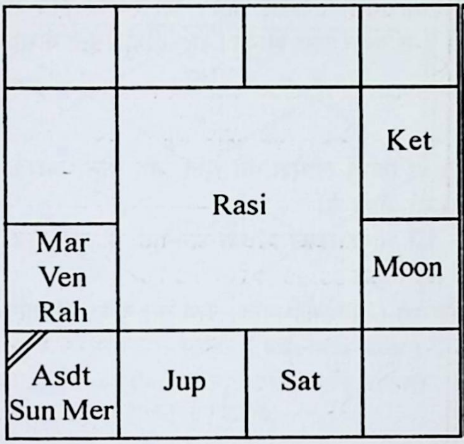

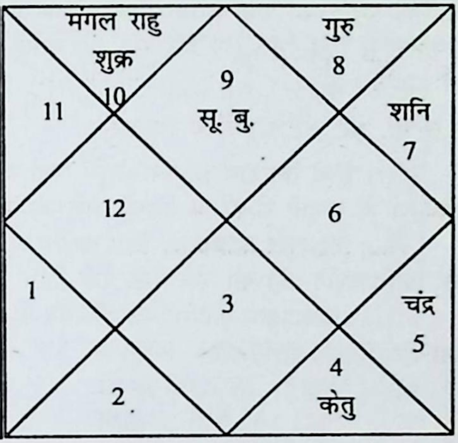

9.3 (सूर्य+शुक्र) नवम भाव में + शनि तृतीय भाव में = शनि की दशा धन और भाग्य वृद्धि में सहायक होगी ।

(सन्दर्भ 9.3)

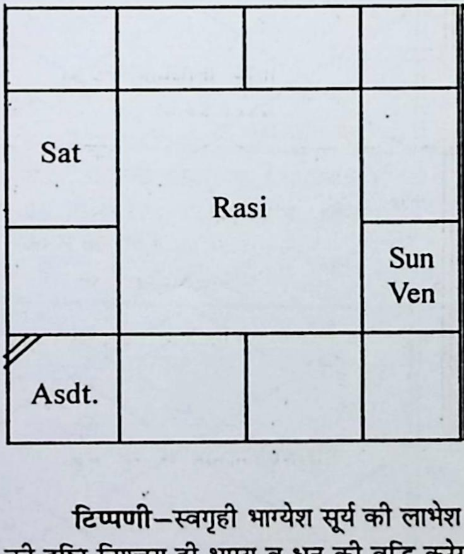

शनि की दशा में धन व भाग्य की वृद्धि

टिप्पणी—स्वगृही भाग्येश सूर्य की लाभेश शुक्र के साथ भाग्य स्थान में युति पर धनेश शनि की दृष्टि निश्चय ही भाग्य व धन की वृद्धि करेगी। शनि का सम्बन्ध सूर्य और शुक्र के साथ होने से शनि की दशा में धन लाभ होगा।

9.4 (सूर्य+मंगल) तृतीय भाव + राहु नवम भाव में = राहु की दशा में तीर्थ स्नान का सुख होता है।

टिप्पणी–सूर्य 9L तो मंगल 5L होकर 3H में युति कर 9H को देखते हैं। पुनः राहु 9H में 9L सूर्य तथा 5L मंगल से दृष्ट है। ध्यान रहे, छाया ग्रह जिस भाव में बैठे उसका कारकत्व ग्रहण करते हैं। धर्म स्थान में बैठा राहु धर्मेश व आत्मा के नैसर्गिक कारक सूर्य से दृष्ट है। अतः धार्मिक प्रवृति को पुष्ट करेगा। मंगल पंचम भाव (या नवम से नवम भाव) का स्वामी होने से उपासना में रुचि देगा। अब यदि सूर्य और मंगल से दृष्ट नवम भाव में बैठा राहु तीर्थ स्नान कराए तो आश्चर्य कैसा?

9.5 डॉ. बी. वी. रमण के विचार

(*i*) यूँ तो त्रिषडायपति को अंशुभ माना गया है। किन्तु लाभेश की युति यदि केन्द्र अथवा त्रिकोण के स्वामी से हो तो उसकी अशुभता नष्ट हो जाती है।

(*ii*) धनु लग्न जातक के लिए लाभेश शुक्र की भाग्य स्थान में भाग्येश सूर्य से युति शुक्र के त्रिषडायपति होने का दोष मिटा देती है।

(*iii*) इसी प्रकार तृतीयेश स्वगृही शनि पर भाग्येश (त्रिकोणाधिपति) सूर्य की दृष्टि भी शनि का दोष मिटाने वाली बनी।

॥ धनु लग्न जातकम् ॥

9.1 अलैक्ज़ेन्डर सोलेक्टसिन (नोबल पुरस्कार)
11.12.1918, 8:59 प्रातः
43 N 58 42 E 43

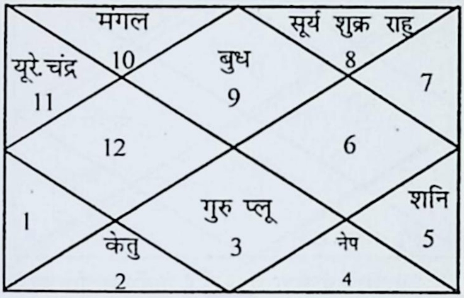

9.2 ड़ॉ. राजेन्द्र प्रसाद (राष्ट्रपति)
03.12.1884, 08:20
छपरा बिहार

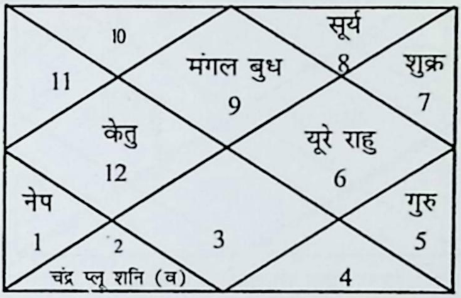

9.3 बेनजीर भुट्टो (प्रधानमंत्री पाक)
21.06.1953, 20:15 रात्रि कराची
24 N 53 67 E 00

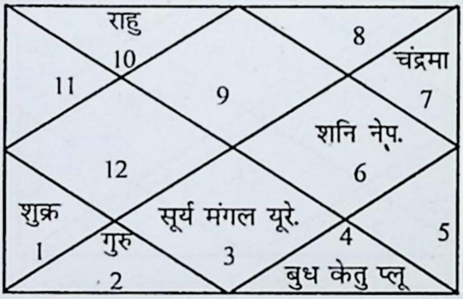

9.4 धीरूभाई अम्बानी (उद्योगपति)
28.12.1932, 06:37 प्रातः वेरावल
20 N 53 70 E 28

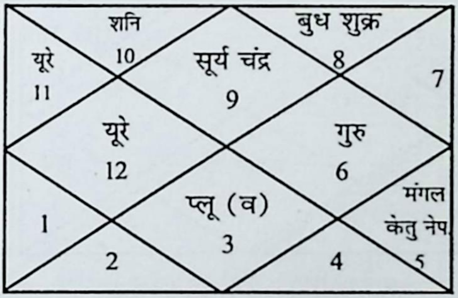

9.5 फ़ारुख़ अब्दुल्ला (मुख्यमंत्री)
21.10.1937, 12:30 दोप. श्रीनगर
34 N 06 74 E 48

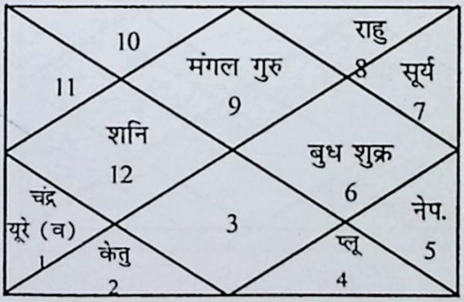

9.6 डॉ. मनमोहन सिंह (प्रधानमंत्री भारत)
26.09.1932, 14:00 घंटे झेलम
33 N 00 73 E 45

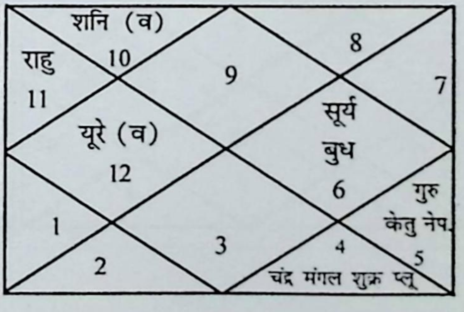

॥ धनु लग्न जातकम् ॥

9.7 एडगर एलन पो (लेखक)
19.01.1809, 05:30 प्रात:बोस्टन
42 N 15 71 W 07

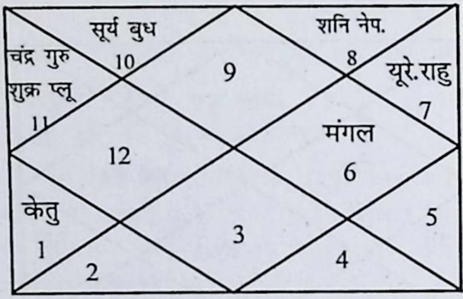

9.8 गिरीश कर्नाड (अभिनेता/लेखक)
19.05.1938, 21.45 रात्रि माथेरन
19 N 00 73 E 18

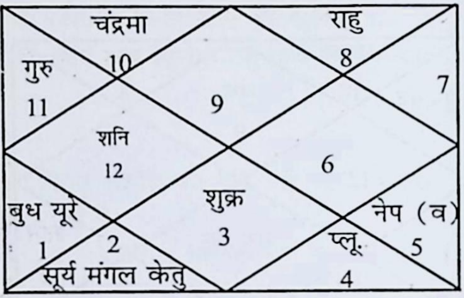

9.9 एच.जी.वेल्स (लेखक)
21.09.1866, 15:30: अप.
51 N 20 00 E 5

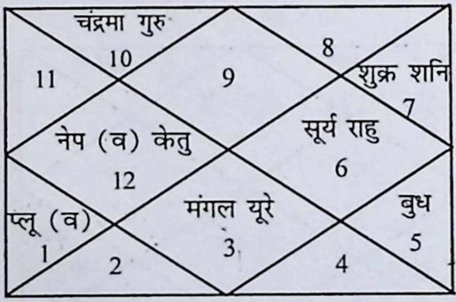

9.10 हृषीकेश मुखर्जी (निर्देशक फिल्म)
30.09.1922, 13:00 अप.: कलकत्ता
22 N 30 8 E 20

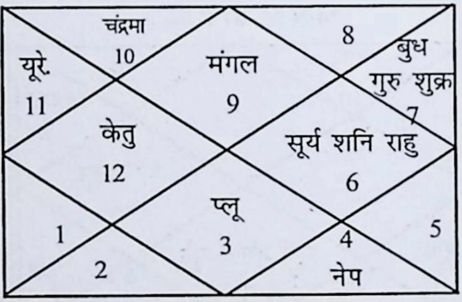

9.11 ईयान थोर्पे (क्रिकेट)
13.10.1982, 10:52 प्रात: सिडनी
33 S 53 151 E 10

9.12 जॉन मेजर (प्रधानमंत्री इंगलैंड)
29.03.1943, 03:00 लन्दन
51 N 30 0 W 5

॥ धनु लग्न जातकम् ॥

9.13 के.डी.सिंह बाबू (हॉकी)
02.02.1923 , 04:00 प्रात: बाराबंकी
26 N 56 81 E 11

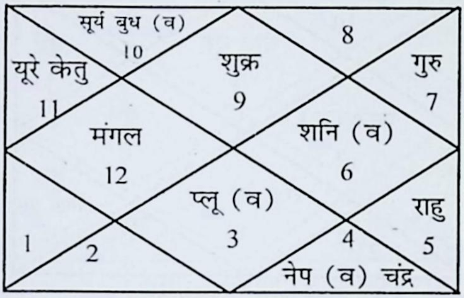

9.14 डॉ. केशव हेडगेवार (विचारक)
01.04.1889 , 01:13 रात्रि नागपुर
21 N 10 79 E 12

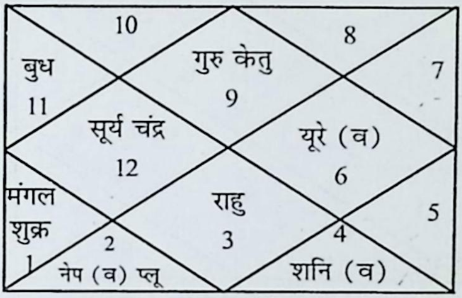

9.15 किशोर कुमार (अभिनेता-गायक)
04.08.1929 , 16:00 सायं खंडवा
21 N 49 76 E 23

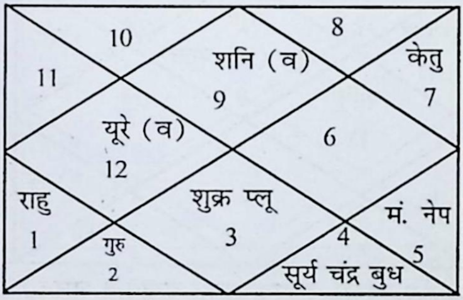

9.16 मैडोना (अभिनेत्री/गायिका)
16.08.1959 , 17:00 प्रात: मिशीगन
44 N 40 85 W 40

9.17 महेश योगी (सन्त)
18.10.1911 , दोप. उत्तरकाशी
30 N 44 78 E 19

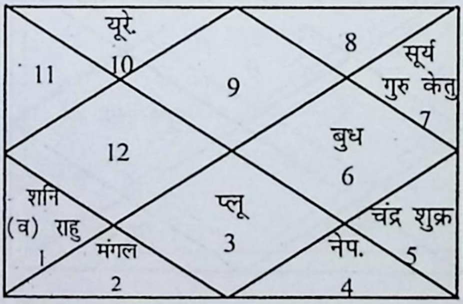

9.18 मनोज कुमार (अभिनेता)
24.07.1937 , 18:45 सायं
34 N 10 73 E 15

॥ धनु लग्न जातकम् ॥

9.19 पैट्रिक रैफ्टर (टेनिस)
28.12.1972, 07:00 प्रातः
20 S 44 139 E 30

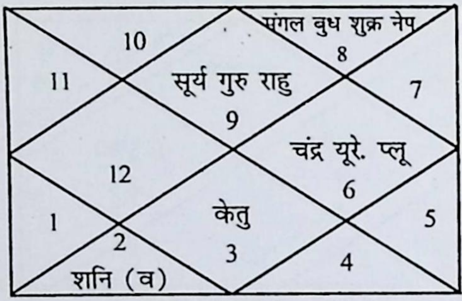

9.20 रामधारीसिंह दिनकर (कवि)
23.09.1908, 12:00 दोपहर
24 N 05 84 E 58

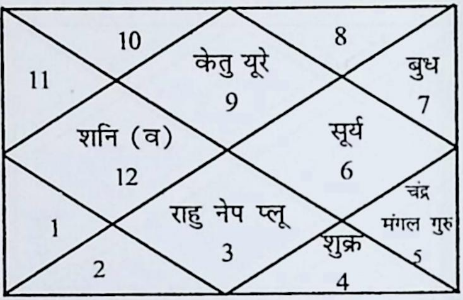

9.21 रानी एलिज़ाबेथ (द्वितीय)
21.04.1926, 2:00 रात्रि लन्दन
51 N 30 0 W 5

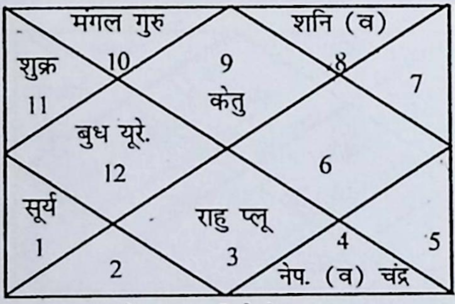

9.22 रतन टाटा (उद्योगपति)
28.12.1937, 6:30 प्रातः मुम्बई
18 N 58 72 E 50

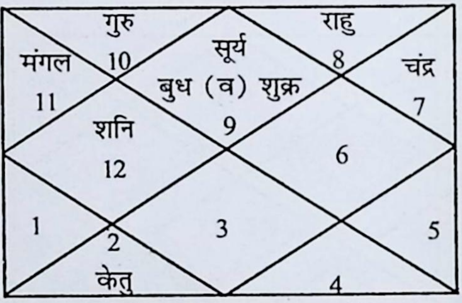

9.23 रेखा (अभिनेत्री)
10.10.1954, 11:00 प्रातः मद्रास
13 N 05 80 E 18

9.24 डॉ. राधाकृष्णन (राष्ट्रपति भारत)
05.09.1888, 13:30 दोपहर
13 N 30 79 E 30

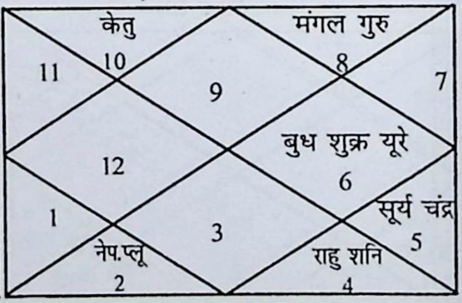

॥ धनु लग्न जातकम् ॥

9.25 साईंबाबा (सन्त)
18.05.1837, 20:21 रात्रि
19 N 17 76 E 30

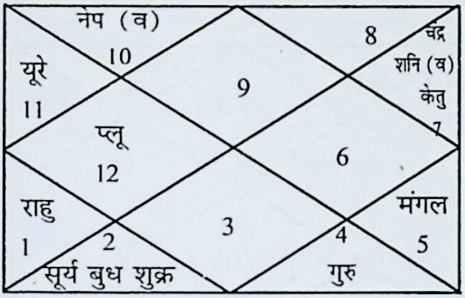

9.26 सोफिया लारेन (अभिनेत्री)
20.09.1934, 14:04 अपराह्न
40 N 50 14 E 17

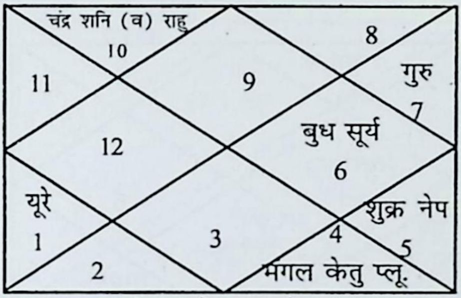

9.27 स्वामी विवेकानन्द (सन्त)
12.01.1863, 6:40 प्रातः
कलकत्ता

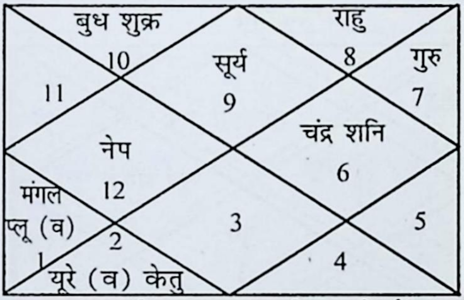

9.28 टी.एन. शेषन (पूर्व चुनाव आयुक्त)
15.12.1932, 08:00 प्रातः पालघाट
10 N 46 76 E 42

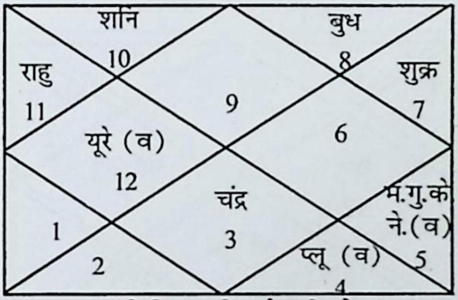

9.29 वी. शान्ताराम (फिल्म निर्माता)
18.11.1901, 9:30 प्रातः कोल्हापुर
16 N 42 74 E 19

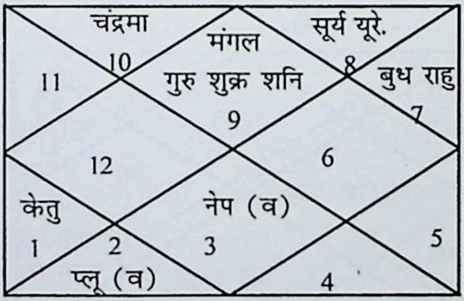

9.30 विवियन रिचर्ड (क्रिकेट)
07.03.1942, 02:00 रात्रि सेंटजोहन
17 N 06 61 W 51

॥ धनु लग्न जातकम् ॥

9.31 डब्ल्यू.बी. यीट्स (लेखक कवि)
03.06.1865, 22:40 रात्रि डबलिन
53 N 20 06 W 18

9.32 डॉ. सुरेन्द्र शास्त्री (प्रोफेसर ज्यो.)
23.12.1945, 5:30 प्रातः जम्मू

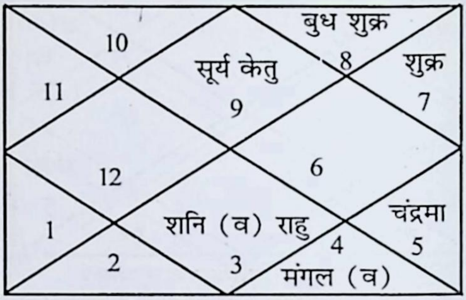

9.33 सलिल (वास्तुशास्त्री)
15.06.1977, 5:30 सायं
जम्मू

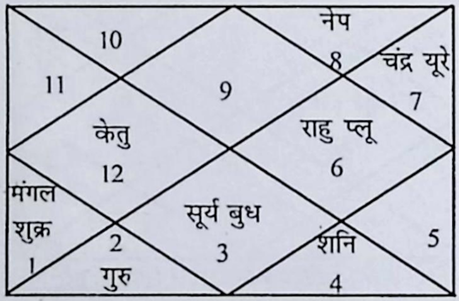

9.34 शिवम (संजय)
10.10.1989, 11:50 प्रातः
गाजियाबाद

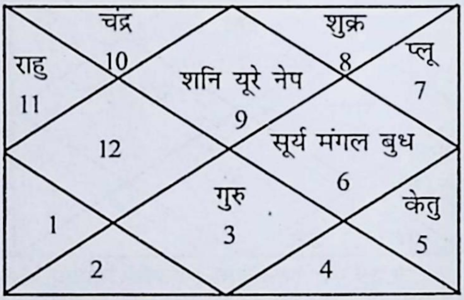

9.35 प्रोफेसर एस.एल. गुप्ता
15.01.1965

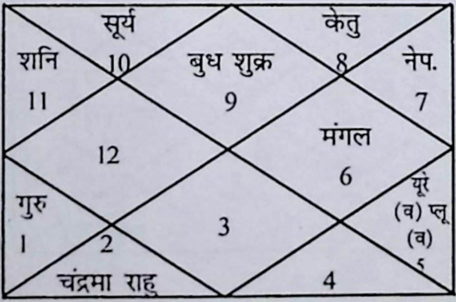

9.36 डॉ. विपुल (कम्प्यूटर)
18.10.1967, 11:45 दोपहर
दिल्ली

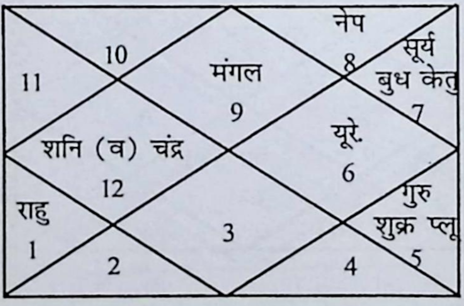

॥ धनु लग्न जातकम् ॥

9.37 विनोबा भावे (सन्त)
11.09.1895, 15:15 घंटे
वर्धा, मृत्यु 15.11.1982

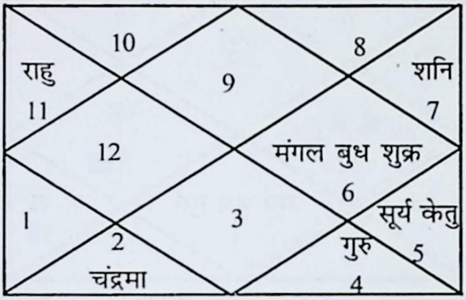

9.38 सर विश्वेश्वरैया (इंजी. पितामह)
15.09.1861
मृत्यु 04.09.1962

9.39 लालबहादुर शास्त्री (पूर्व प्रधानमंत्री)
02.10.1904, 11:10
इलाहाबाद

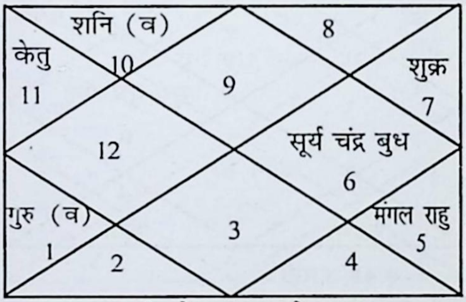

9.40 जगत (लकवाग्रस्त)
16.11.1928, 09:57 प्रातः
दिल्ली

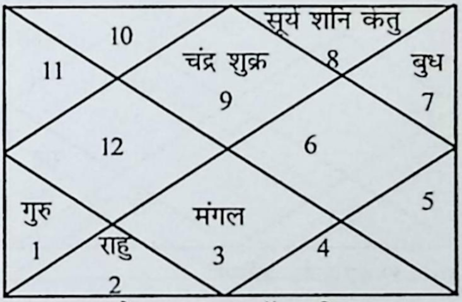

9.41 वी. के. कृष्णा मेनन
भारत के रक्षामंत्री
03.05.1896, 21:40 कालीकट

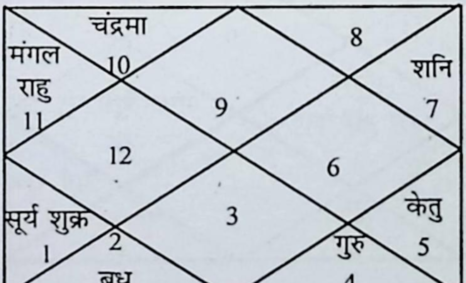

9.42 मेजर जनरल डॉ. ऋषि
06.06.1942, 21:15 रात्रि
दिल्ली

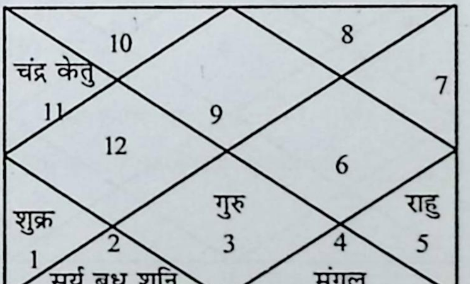

॥ धनु लग्न जातकम् ॥

9.43 अंकित (रंजन)
02.01.1984
दिल्ली

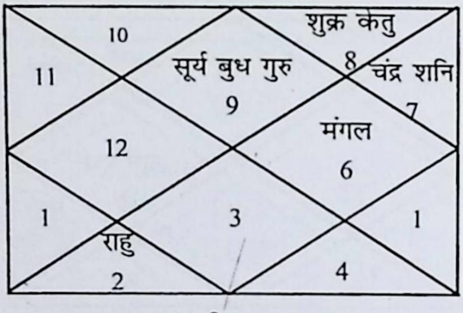

9.44 पुनीत (व्यापार पिता के साथ)
28.06.1978, 18:45 सायं
दिल्ली

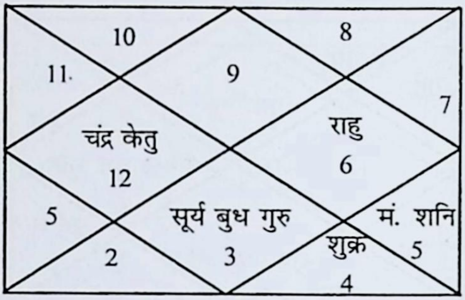

9.45 राधा रानी
कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी

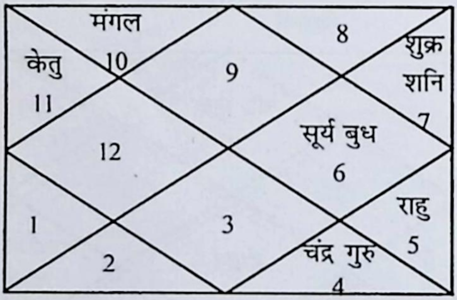

9.46 ईश्वरचन्द्र विद्या सागर

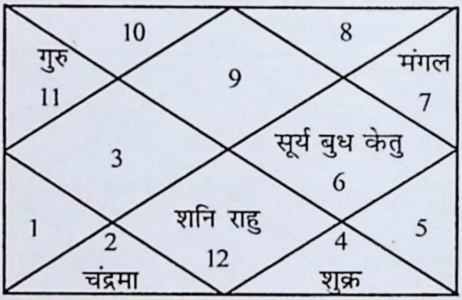

9.47 इंजी. अमित
23.11.1970

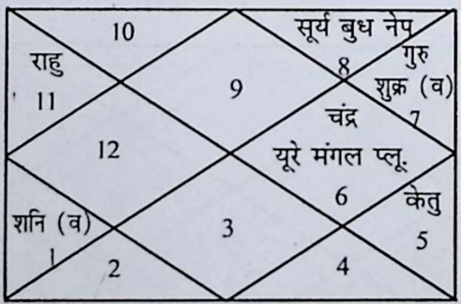

9.48 आरती
23.08.1976 15:40 घंटे
दिल्ली

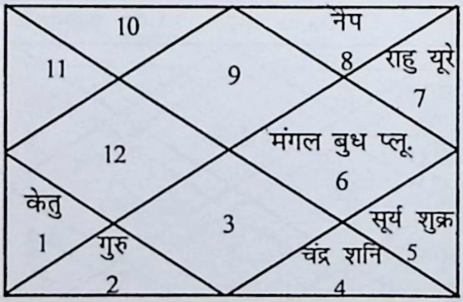

॥ धनु लग्न जातकम् ॥

9.49 ए.पी.जे. कलाम (पूर्व राष्ट्रपति भारत)
15.10.1931, 11:20 प्रातः
चेन्नई

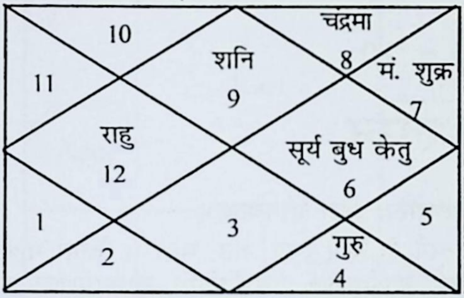

9.50 अल्पना सुन्दरी
08.08.1967, रात्रि 01:00 बजे
फरीदाबाद

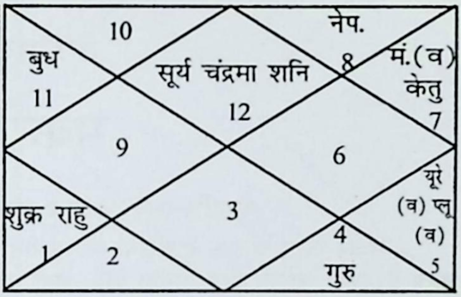

9.51 चौधरी चरण सिंह (पूर्व प्रधान मंत्री)
23.12.1902, 07:30 प्रातः
नूरपुर (गाजियाबाद)

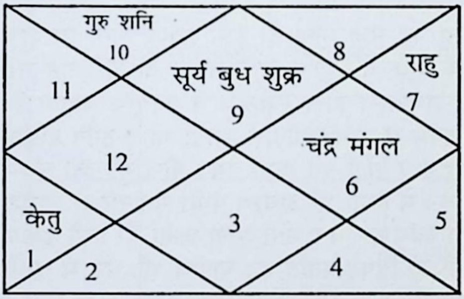

9.52 रानी एलिजाबेथ
21.04.1926

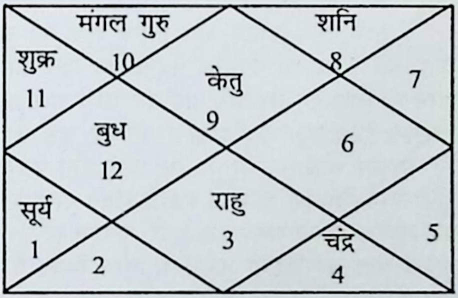

9.53 गौरव विज (विदेश में)
12.08.1978

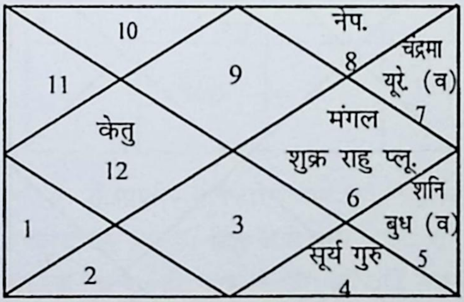

धनु लग्न जातक 53 कुण्डलियाँ

अध्याय - 10

मकर लग्न

कुम्भीरसमुद् भवश्च रमणीलोल; शठो दीनवाक्॥

मकर लग्न जातक रूपसियों से सम्भोग करने के लिए व्यग्र, शठ, मधुर व विनम्र भाषी होता है। कोई जातक गीत-संगीत प्रेमी, धनी, सुखी, कार्यकुशल, राजप्रतिनिधि, सौभाग्यशाली व जलप्रेमी होता है। वह वात-कफ रोगी, भीरु तथा आचार व गुणों में कुछ निर्बल व असंयमी हुआ करता है।

10.1 बुध अष्टम भाव में + लग्नस्थ गुरु पर शुक्र की दृष्टि = जातक दीर्घायु और निर्धन भी होता है।

टिप्पणी—अष्टम और तृतीय भाव को आयु का भाव माना है। इसी प्रकार लग्न पर शुभ ग्रहों का प्रभाव भी आयुष्य बढ़ाता है। योग कारक शुक्र की दृष्टि लग्न पर है तो शुभ ग्रह गुरु लग्न में विद्यमान है। इसी प्रकार षष्ठेश बुध का अष्टमस्थ होना स्वास्थ्य व आयुष्य बढ़ाता है। निश्चय ही जातक दीर्घायु होगा। भाग्येश बुध का नवम से हानि स्थान में बैठना भाग्य हानि दर्शाता है। पराक्रम भाव का स्वामी हीन बली होने पर साहस व शौर्य की कमी देगा। नीच गुरु की पंचम और नवम त्रिकोण भाव या लक्ष्मी स्थान पर दृष्टि धन में कमी भी अवश्य देगी। मतान्तर से व्ययेश का लग्नस्थ होना व्यय बढ़ाता है। कारण लग्न को व्यय का धन भाव माना जाता है। इसी प्रकार तृतीय भाव का स्वामी तृतीय से लाभ स्थान में हो तो त्रिषडायपति का पापत्व भी धन में कमी देता है।

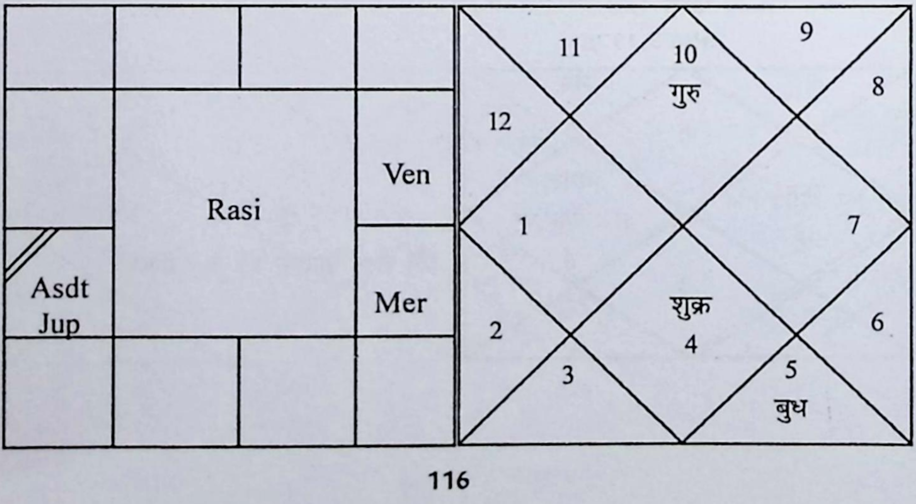

10.2 **पंचमस्थ शुक्र अपनी दशा में धन देता है** किन्तु दशम भाव में बैठा शुक्र धन नहीं देता।

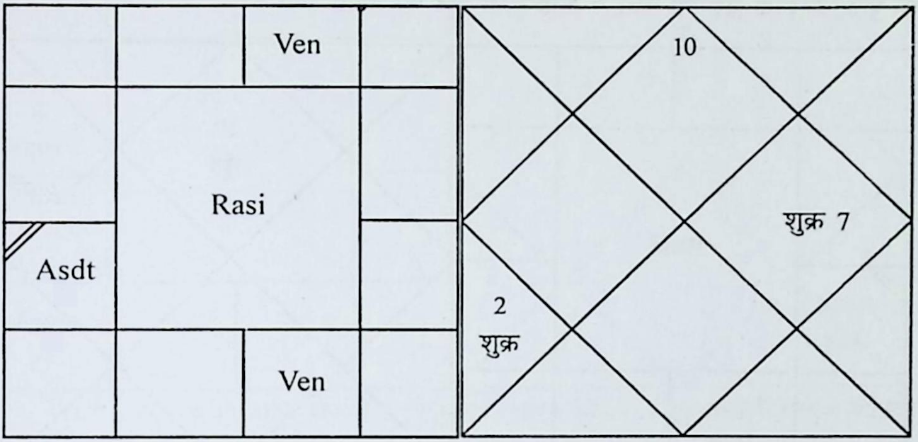

टिप्पणी–पंचम भाव लक्ष्मी स्थान है। शुक्र स्वक्षेत्री है तथा लगभग 50 विरूप दिग्बल से युक्त है। अतः धन देगा। इसके विपरीत दशमस्थ शुक्र भले ही अपनी मूल त्रिकोण राशि में है किन्तु इसका दिग्बल शून्य है।

10.3 (शुक्र+बुध) मकर लग्न में + पंचमस्थ चंद्रमा पर गुरु की दृष्टि = महाराजायोग

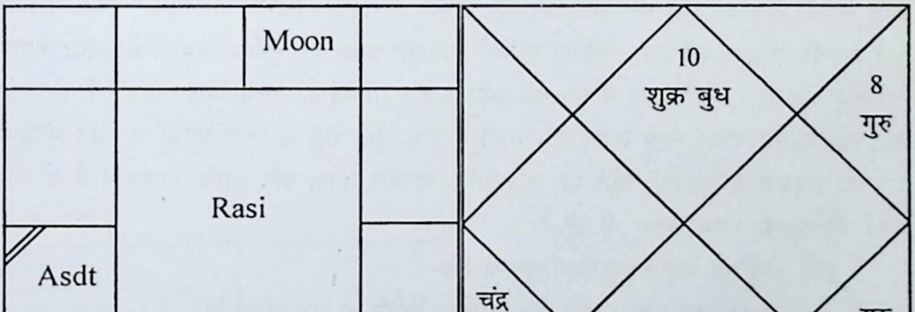

टिप्पणी–योगकारक ग्रह का लग्नस्थ होना कुण्डली को बल व शुभता देता है। पुनः योगकारक ग्रह का मित्र क्षेत्री तथा अपनी दोनों राशियों से शुभ स्थानों में होकर भाग्येश से युति करना निश्चय ही भाग्य व भोग की वृद्धि करेगा। कारण, शुक्र स्वाभाविक रूप से योग प्रदाता है। चंद्रमा (नैसर्गिक धन प्रदायक) का लक्ष्मी स्थान में उच्चस्थ होकर शुभ व मित्र ग्रह गुरु की दृष्टि पाना, जातक को राजाधिराज बनाए तो आश्चर्य कैसा? पुनः चंद्रमा पर गुरु की दृष्टि सम्भव होने के लिए गुरु का भाग्य, लाभ या लग्न में बैठना आवश्यक है।

10.4 (गुरु मकर लग्न में)+ (मंगल लाभ स्थान में स्वगृही होकर दशमेश-पंचमेश शुक्र से युति करे) तो गुरु की दशा में **भाइयों से धन** की प्राप्ति होती है।

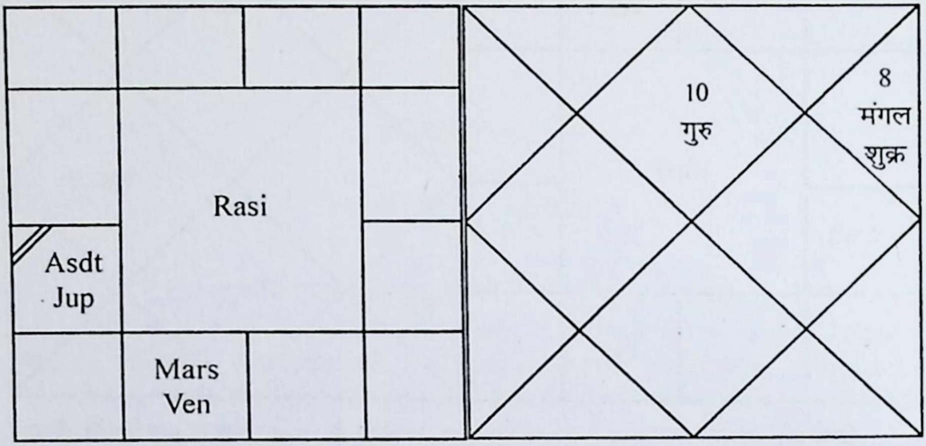

टिप्पणी-विद्वानों ने लग्न और कर्म भाव को आय व आजीविका का साधन माना है। गुरु तृतीयेश व व्ययेश होने से भाइयों पर खर्च कराए, ऐसा कहना चाहिए किन्तु उलटी बात भाइयों से लाभ की बात कही। तनिक गहराई से सोचें, बड़े भाई या एकादश भाव में लाभेश मंगल की योग कारक शुक्र से युति धन लाभ का मार्ग प्रशस्त करती है। लाभेश मंगल की उच्च राशि में धन का नैसर्गिक कारक ग्रह उपस्थित है। बड़े भाई का धनेश गुरु तृतीय भाव में है। अत: जातक को बड़े भाई से गुरु की दशा में धन की प्राप्ति सहज सम्भव है। अन्य विद्वान कहते हैं कि छोटे भाई का कारक मंगल लाभ स्थान में स्वगृही होने से छोटे भाई से लाभ प्राप्ति व आय वृद्धि में सहयोग दिलाता है। कारण, छोटे भाई का धनेश-भाग्येश मंगल यदि उसके भाग्य में है तो वही भाव जातक का लाभ स्थान भी तो है।

इसी बात को बढ़ाते हुए आगे बताया कि-

10.5 मकर लग्न वाला ऐसा जातक सुन्दर वाहन व यश पाता है।

टिप्पणी-चतुर्थेश या सुखेश की वाहन कारक शुक्र के साथ लाभ स्थान में युति वाहन सुख तो अवश्य ही देगी। पुन: गुरु का व्ययेश व तृतीयेश होकर लग्न में नीचस्थ होना भी विपरीत राजयोग बना रहा है।

10.6. **(सूर्य+ चंद्र+बुध) मकर लग्न में + (मंगल+ शुक्र) द्वादश भाव धनु राशि = जातक और उसके भाई भाग्यशाली हों।**

टिप्पणी-भाग्येश बुध लग्न में मित्र क्षेत्री है। सूर्य लग्न, चंद्र लग्न और जन्म लग्न अर्थात तीनों लग्नों का भाग्येश लग्नस्थ होकर भाग्य वृद्धि कर रहा है। यदि तृतीय भाव को लग्न मान कर छोटे भाइयों का विचार करें तो भाग्येश मंगल का धनेश मंगल के साथ दशम भाव में युति करना **भाइयों को भी धनी** बनाएगा।

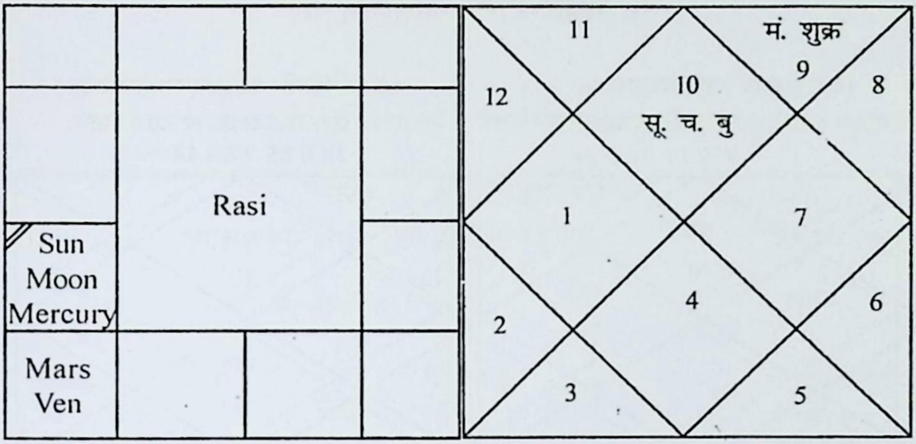

10.7 (शनि+बुध) नवम भाव में + (राहु+गुरु) द्वादश भाव में = **भाग्य वृद्धि** कुछ विद्वानों ने इन्हें दो विभिन्न योग माना है।

टिप्पणी-भाग्येश बुध का भाग्य स्थान में उच्चस्थ होकर लग्नेश शनि से युति करना निश्चय ही भाग्यशाली बनाता है।

(सन्दर्भ 10.7) भाग्य वृद्धि

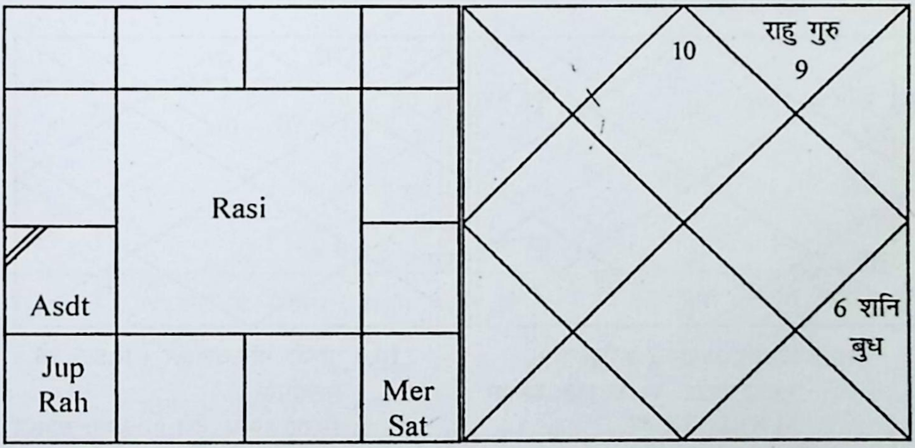

इसी प्रकार व्यय भाव में नैसर्गिक धन प्रदायक गुरु की राहु से युति पर भाग्येश बुध की त्रिपाद दृष्टि (4, 8 वी दृष्टि त्रिपाद दृष्टि होती है) भी शुभ है। अत: राहु की दशा में धन लाभ की सम्भावना है। अन्य विद्वानों के मतानुसार, गुरु तृतीय व द्वादश भाव का स्वामी होकर व्यय भाव में नीचस्थ राहु के साथ है। गुरु भी नीचाभिलाषी है अत: व्यय और भोग में कमी कर धन की वृद्धि करेगा।

10.8 उच्चस्थ मंगल लग्न में + चंद्रमा सप्तम भाव में स्वगृही = राजयोग का फल

लग्न में कोई भी ग्रह उच्चस्थ होना शुभ होता है। फिर मंगल तो लाभेश और सुखेश होकर उच्चस्थ है। अत: सुख व लाभ की श्रेष्ठता देगा। सप्तमस्थ चन्द्रमा की लग्नस्थ मंगल पर दृष्टि भी शुभ है। कारण स्वगृही चंद्रमा को धन प्रदायक माना गया है। चन्द्रलग्न का बली होना भी धन वृद्धि देगा।

॥ मकर लग्न जातकम् ॥

10.1 ऐश्वर्य राय बच्चन
01.11.1973 दोपहर 12:00 बजे दिल्ली

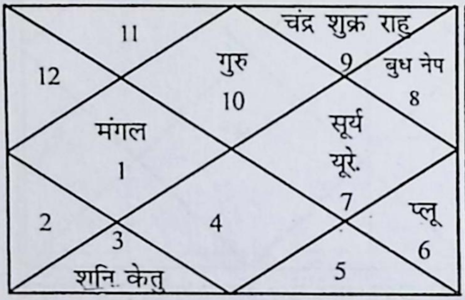

10.2 ऐन्टोनी चेखव (साहित्यकार)
29.01.1860, 07:15 प्रातः
38 E 55 47 N 14

10.3 डॉ. अरस्तु प्रभाकर
(ज्योतिषी/लेखक)
09.06.1968, 22:20 रात्रि
27 N 09 78 E 00

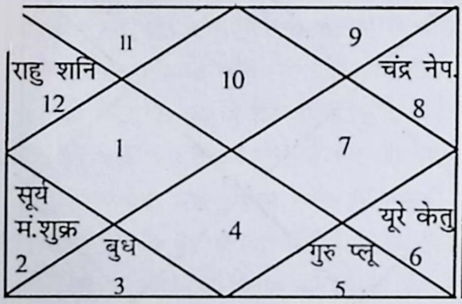

10.4 बंकिमचन्द्र चटर्जी (उपन्यासकार)
27.06.1838, 21:10 रात्रि
22 N 54 88 E 26

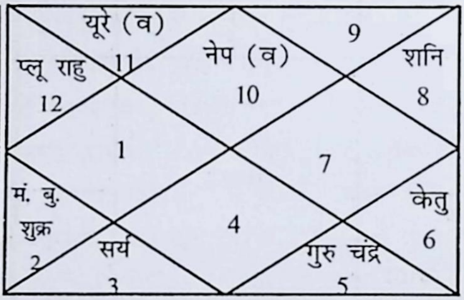

10.5 दिलीप कुमार (अभिनेता)
11.12.1922, 11:15 प्रातः पेशावर
34 N 02 71 E 37

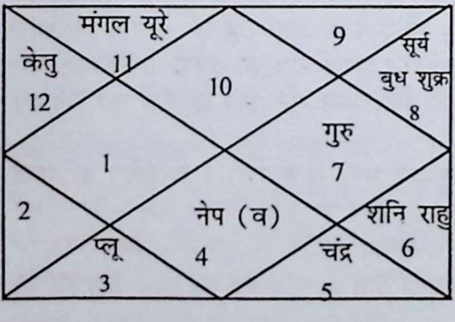

10.6 गुरुजी गोलवलकर (R.S.S के संस्थापक)
19.02.1906, 04:30 प्रातः नागपुर
21 N 10 79 E 12

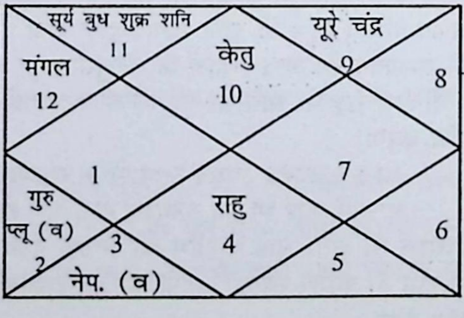

॥ मकर लग्न जातकम् ॥

10.7 जे. कृष्णामूर्ति (दार्शनिक)
21.05.1895, 00:30 रात्रि मदनपल्ली
13 N 33 78 E 30

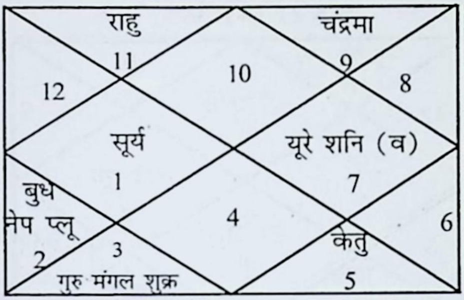

10.8 जॉनरोक फैलर (उद्योगपति)
08.07.1839, 21:00 रात्रि न्यूयॉर्क
40 N 42 74 W 0

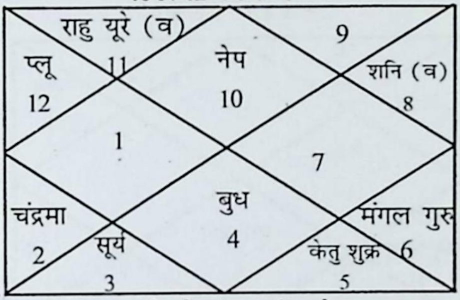

10.9 जूही चावला (अभिनेत्री)
13.11.1967, 12:00 दोपहर लुधियाना
30 N 56 75 E 52

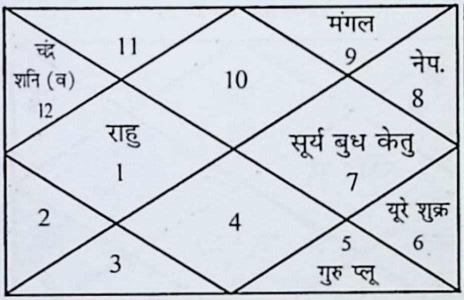

10.10 माओ त्से तुंग (चीन के राष्ट्राध्यक्ष)
26.12.1893, 08:30 प्रातः
27 N 53 112 E 40

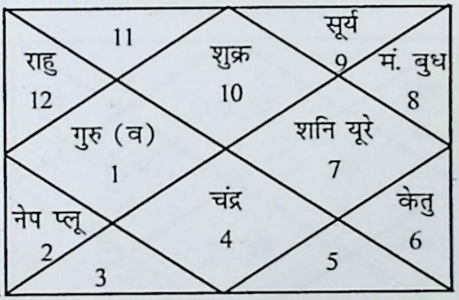

10.11. माइकल जे. फॉक्स (फिल्म निर्माता)
09.06.1961, 00:15 रात्रि
53 N 30 113 W 30

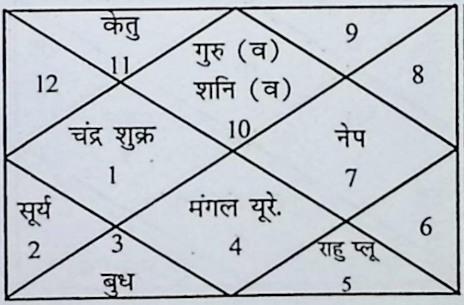

10.12 के. एस. कृष्णामूर्ति (के.पी. पद्धति)
01.11.1908, 12:11 दोपहर
10 N 48 79 E 15

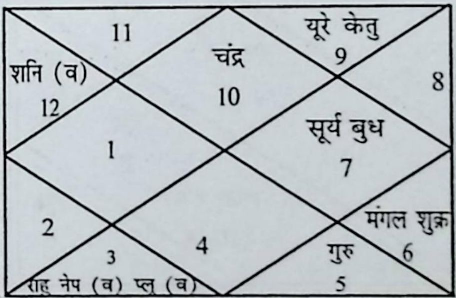

॥ मकर लग्न जातकम् ॥

10.13 पुरुषोत्तम दास टंडन (नेता)
01.08.1882, 18:30 सायं इलाहाबाद
25 N 27 71 E 50

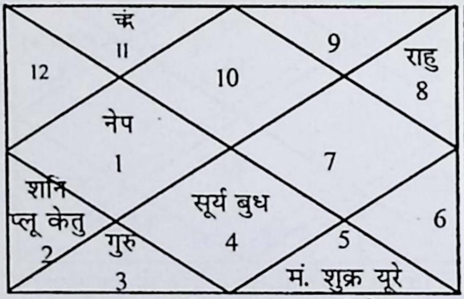

10.14 राम जेठमलानी (विधिवेत्ता)
14.09.1923, 16:12 सायं हैदराबाद
25 N 23 68 E 36

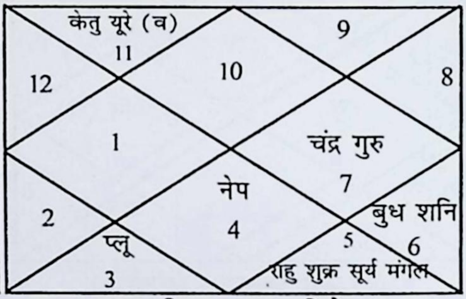

10.15 संजीव कुमार (अभिनेता)
09.07.1937, 21:00 रात्रि मुम्बई
18 N 58 72 E 50

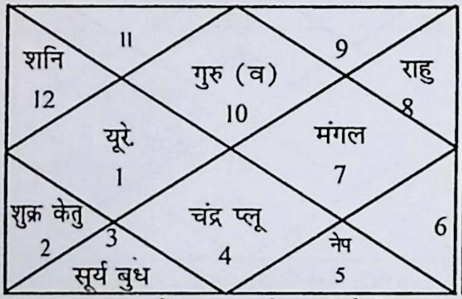

10.16 शशि कपूर (अभिनेता)
18.03.1938, 03:30 रात्रि कलकत्ता
22 N 30 88 E 20

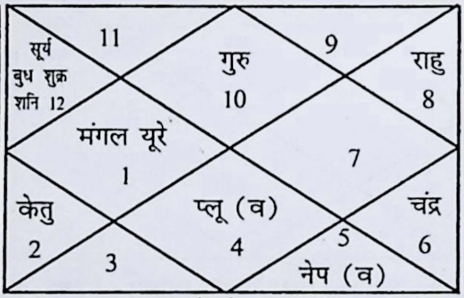

10.17 शोभना समर्थ (अभिनेत्री)
17.11.1916, 12:10 दोप. मुम्बई
18 N 58 72 E 50

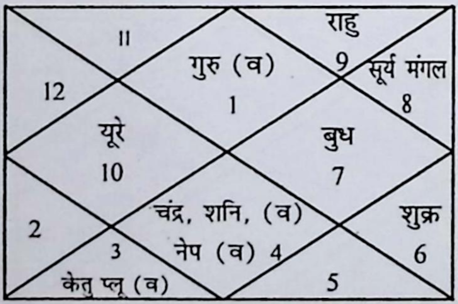

10.18 सर ब्रैडमैन (क्रिकेट)
27.08.1918, 12:30 दोपहर
34 S 52 138 E 30

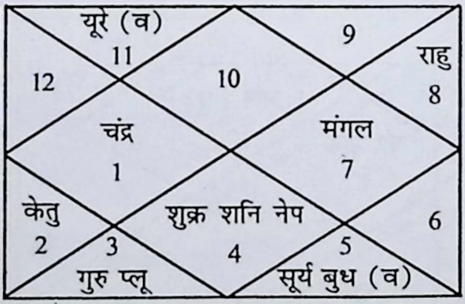

॥ मकर लग्न जातकम् ॥

10.19. सुनील गावस्कर (क्रिकेटर)
10.07.1949, 20:42 रात्रि मुम्बई
18 N 58 72 E 50

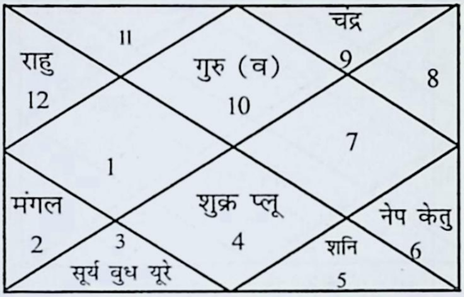

10.20 स्वामी प्रभुपाद (इस्कॉन)
01.09.1896, 16:00 कलकत्ता
22 N 30 88 E 20

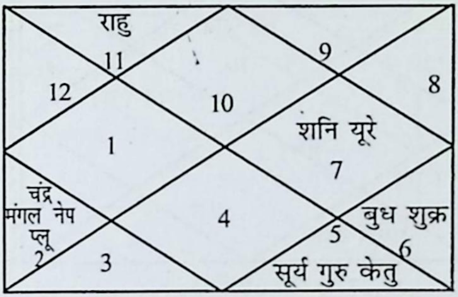

10.21 स्वामी शिवानन्द (सन्त)
16.11.1854, 11:10 प्रातः कलकत्ता
22 N 30 88 E 20

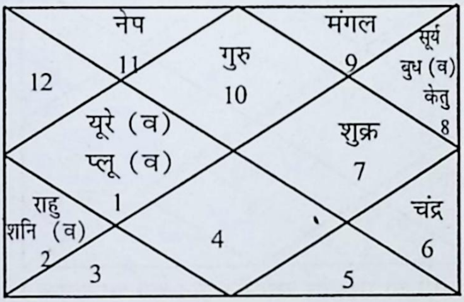

10.22 स्वामी तुरीयानन्द (सन्त)
03.01.1863, 09:00 प्रातः कलकत्ता
22 N 30 88 E 20

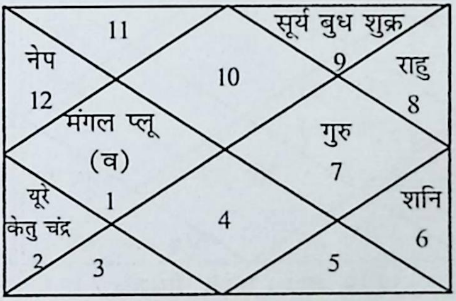

10.23 वी.सी. शुक्ला (राजनेता)
02.08.1927, 19:15 सायं
24 N 34 81 E 27

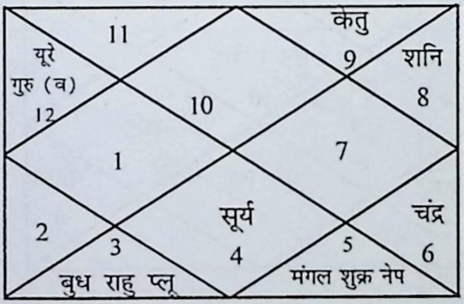

10.24. वहीदा रहमान (अभिनेत्री)
03.02.1938, 03:30 प्रातः
12 N 42 80 E 01

॥ मकर लग्न जातकम् ॥

10.25 यशवन्त पेंडकर (लेखक)
09.03.1899 , 04:00 प्रातः शेफल
17 N 25 74 E 02

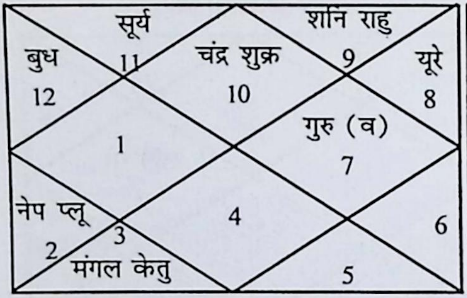

10.26 संजय गांधी (युवा नेता)
14.12.1946 , 09.27 प्रातः दिल्ली
मृत्यु 23.06.1980

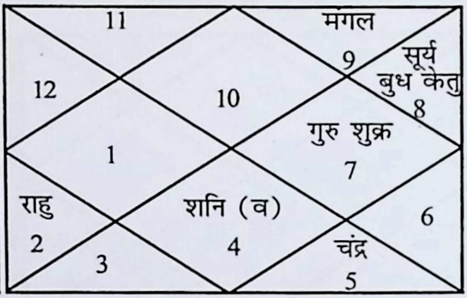

10.27 कृष्ण (इंजी.)
07.12.1940 , 15:50 सायं
दिल्ली

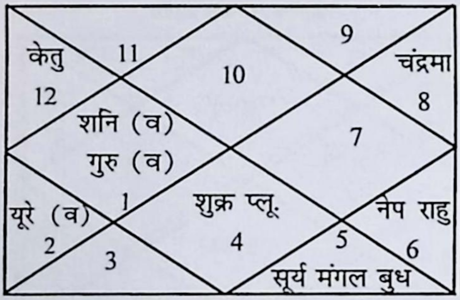

10.28 इंजी. विशाल (विदेश)
24.02.1972

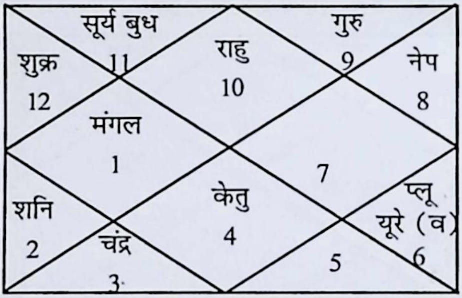

10.29 जया (सुपुत्री दीपक)
21.09.1980 , 15.10 अपराह्न
दिल्ली

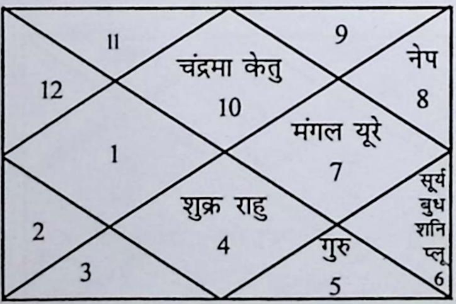

10.30 महावीर स्वामी (जैन धर्म संस्थापक)

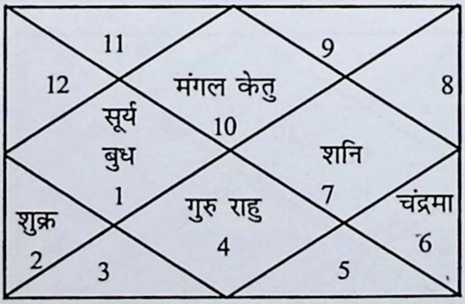

॥ मकर लग्न जातकम् ॥

10.31 प्रभात (मुख्य अभियन्ता विद्युत उत्पादन)
30.12.1947 , 09.28 घंटे
कोयंवतूर

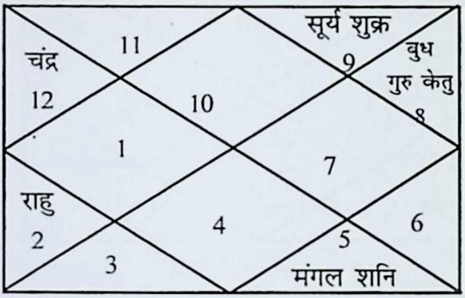

10.32 महारानी मैसूर

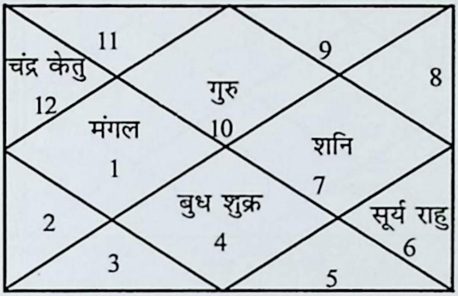

10.33 महाराणा प्रताप
चितौड़

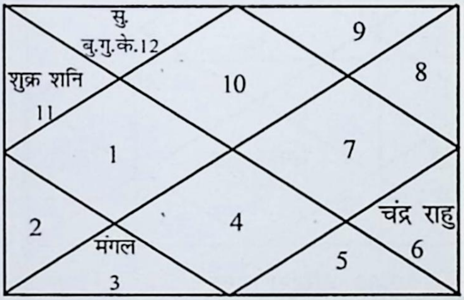

10.34 माता रुक्मिणी
(भगवान कृष्ण की पटरानी)

10.35 इंजी. दीपक सिंह
15.11.1975 , 11:45 प्रातः
गुड़गांव

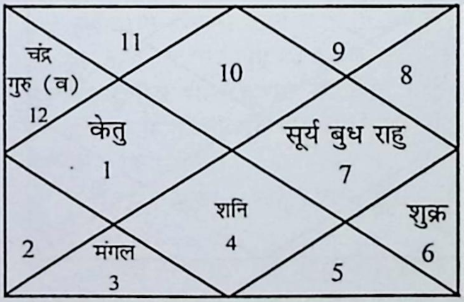

10.36. डॉ. नरिन्दर कौर
(स्त्री रोग विशेषज्ञ)
14.09.1953 , लाशिओ 16:05 बर्मा

॥ मकर लग्न जातकम् ॥

10.37 श्री बी. एम. सैनी (ज्योतिषी)

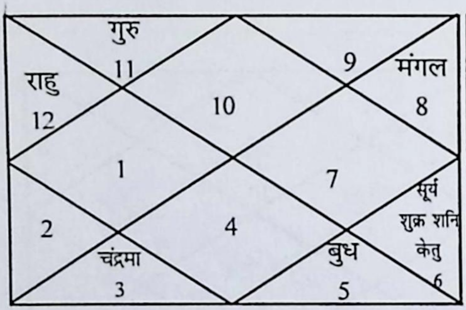

10.38 अनिल (रंजन)
16.12.1956, 10:30 प्रातः मेरठ

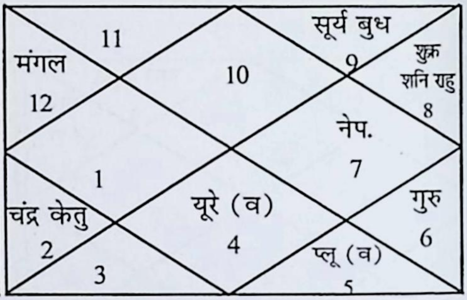

10.39 विनीत (मंजु)
13.11.1972, 12:10 घंटे
अलीगढ़

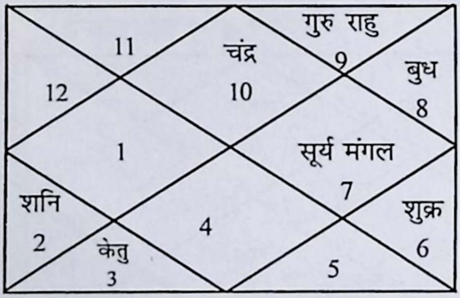

10.40 मार्शल बुल्गानिन
(युगोस्लाविया)

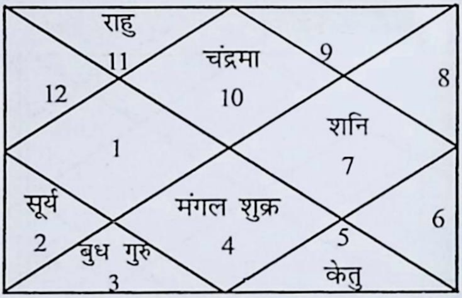

10.41 सर की उपाधि से सम्मानित
विद्वान

10.42 जस्टिस कपूर
12.04.1940, 01:22 रात्रि
27 N 53 79 E 55

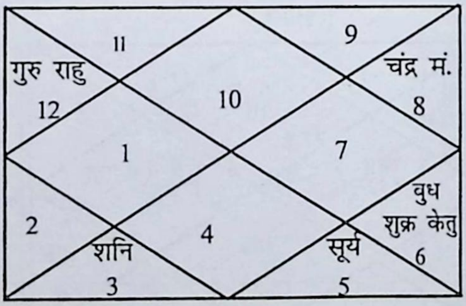

मकर लग्न जातक 42 कुण्डलियाँ

अध्याय - 11

कुम्भ लग्न

अन्तः शठः परवधूरति केलि लोल
कार्पण्यशील धनवान घट लग्नजातः॥

कुम्भ लग्न जातक शठ, कपट कुशल, परदारालोभी, कृपण व धनवान होता है। कोई जातक स्थिर स्वभाव, आलसी, शिष्टाचारी, कुलप्रधान, मन्दबुद्धि तथा धनी होने पर भी दुःखी व मन्दभागी होता है।

11.1 कुम्भ लग्न में 9L शुक्र की 10L मंगल से युति या दृष्टि हो अथवा सिंह लग्न में 9L मंगल तथा 10L शुक्र का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध योग कारक नहीं है।

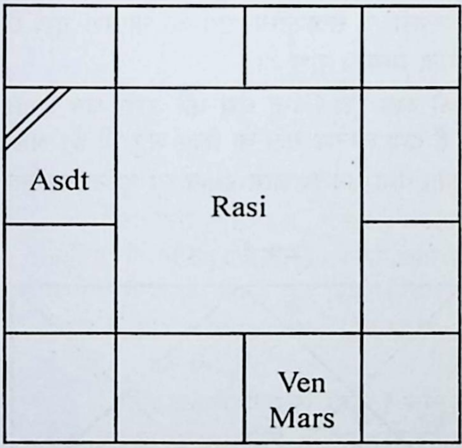

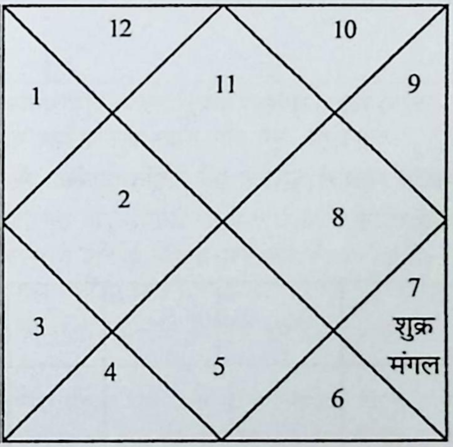

कारण–कुम्भ लग्न का 10L मंगल 3L भी है। इसी प्रकार सिंह लग्न में 10L शुक्र भी 3L हो जाता है। परेशानी यह है कि इन दोनों लग्नों की मूल त्रिकोण राशि तृतीय भाव में पड़ती है। और **तृतीय भाव दशम के लिए षष्ठ भाव होने से विघ्न बाधा व परेशानी का भाव** है। अतः दशमेश की मूल त्रिकोण राशि यदि तृतीय भाव में हो तो इसे योग भंग कहना सत्य के अधिक निकट होगा।

11.2 (शुक्र + राहु) लग्न में + सूर्य 10H = राहु-गुरु की दशा भुक्ति धन-मान की वृद्धि करेगी।

कुम्भ लग्न के लिए शुक्र योग कारक है। शुक्र सुखेश और भाग्येश होकर लग्न में है। अतः शुक्र के साथ बैठा राहु अपनी दशा में शुक्र के शुभ परिणाम देगा। सूर्य 7L या दशमात् दशम भाव

का स्वामी होकर दशमस्थ है तथा लग्न को त्रिपाद व गुरु की राशि को धन भाव में द्विपाद दृष्टि से देखता है। अब क्योंकि गुरु धनेश-लाभेश है अतः गुरु राहु की दशा में धन-धान्य, भाग्य, सुख व लाभ प्राप्ति सरीखे योगकारी परिणाम मिलेंगे।

(सन्दर्भ 11.2)

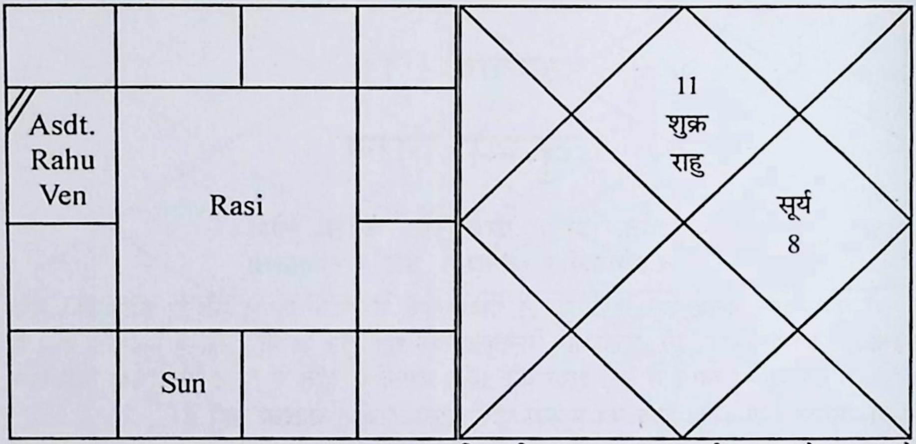

दिग्बली व सत्ताकारक सूर्य का भाग्येश शुक्र से केन्द्र सम्बन्ध शुभ है।

11.3 (सूर्य+ मंगल) 8H = सूर्य मंगल की दशा दुख किन्तु **बुध की दशा धन देगी।** ध्यान रहे, सूर्य और मंगल क्रूर या पाप ग्रह हैं तथा लग्नेश शनि के लिए शत्रु भी हैं। अतः अष्टम भाव में दशमेश की स्थिति कार्यक्षेत्र में हानि तथा धन व लाभ स्थान पर दृष्टि धन का नाश करेगी।

(सन्दर्भ 11.3)

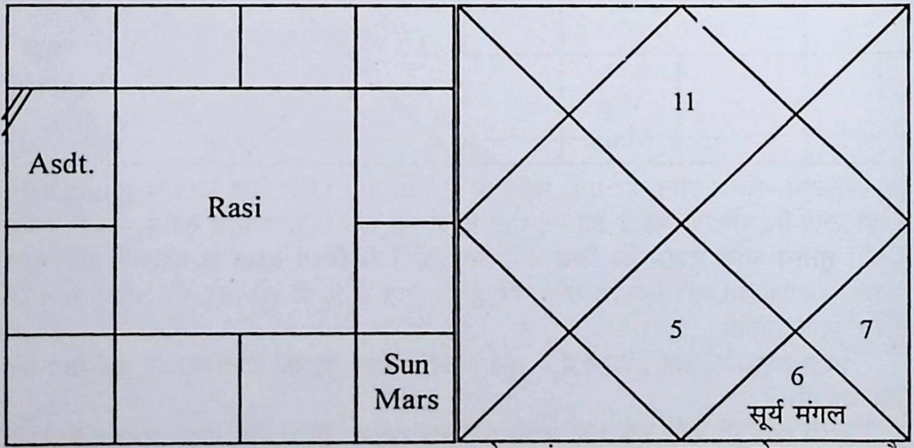

दशमेश मंगल का अष्टमस्थ होना अशुभ है। अष्टमेश बुध विपरीत राजयोग देगा। कारण अष्टमभाव पीड़ित हो गया है।

11.4 बुध की दशा में धन क्यों?

अष्टम भाव दु:स्थान है तथा सूर्य व मंगल सरीखे क्रूर ग्रहों की युति के कारण पीड़ित भी हो गया है। किसी भी **बुरे भाव का पीड़ित होना विपरीत राजयोग बनाता है।** अत: अष्टमेश बुध की दशा धन लाभ देगी।

(सन्दर्भ 11.4)

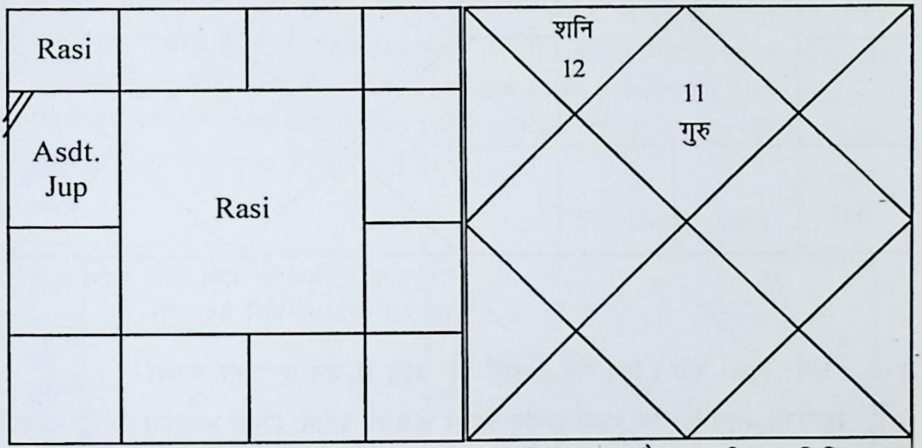

शनि की दशा शुभ है। गुरु की दशा मिश्रित फल देगी।

गुरु कुम्भ लग्न में शनि 2H = शनि की दशा बहुत शुभ, गुरु की दशा मिश्रित फल देगी।

टिप्पणी–2L-11L धनेश और लाभेश गुरु का लग्नस्थ होना शुभ फल देने वाला होना चाहिए। नियम तो यही है कि धनेश-लाभेश लग्न में होने से जातक धन और लाभ पाता है। किन्तु लग्न में बैठा गुरु अपनी मूल त्रिकोण राशि से 3H (तीसरे भाव) में तो मीन से भी 12 वें या हानि स्थान में हैं अत: शुभता का विरोध या बाधा की स्थिति होने से मिश्रित परिणाम ही गुरु की दशा में जातक को मिलेंगे।

शनि की दशा शुभ क्यों ? शनि लग्नेश होकर धन भाव में है। **लग्नेश जिस भाव में बैठे उसकी प्राय: वृद्धि ही हुआ करती है।** पुन: शनि धनेश-लाभेश गुरु का नियंत्रक होकर धन भाव में है। अत: शनि धन लाभ में सहायक होगा। कुछ विद्वान पाश्चात्य पद्धति अपना कर मूल त्रिकोण राशि को Positive या शुभ राशि तो अन्य विद्वान राशि का Negative या अशुभ राशि कहते हैं। यदि कोई ग्रह अपनी शुभ राशि से शुभ स्थान में अथवा अशुभ राशि से दु:स्थान में हो तो वह शुभ फल दिया करता है। यहाँ शनि अपनी मूल त्रिकोण या शुभ राशि कुम्भ से द्वितीय (धन प्रदायक) भाव में है तो अपनी मकर (अशुभ राशि) से तृतीय या बुरे भाव में हैं। अत: शनि अपनी दशा में शुभ फल अवश्य देगा।

11.5 (शुक्र+शनि) 11H धनु में = शुक्र की दशा शुभ होगी।

टिप्पणी–योग कारक शुक्र की लग्नेश के साथ लाभ स्थान में युति निश्चय ही लाभप्रद है। योगकारक ग्रह का लग्नेश के साथ लाभ स्थान में बैठना यदि लाभ न दे तब आश्चर्य होना चाहिए लाभ देने पर आश्चर्य कैसा?

(सन्दर्भ 11.5)

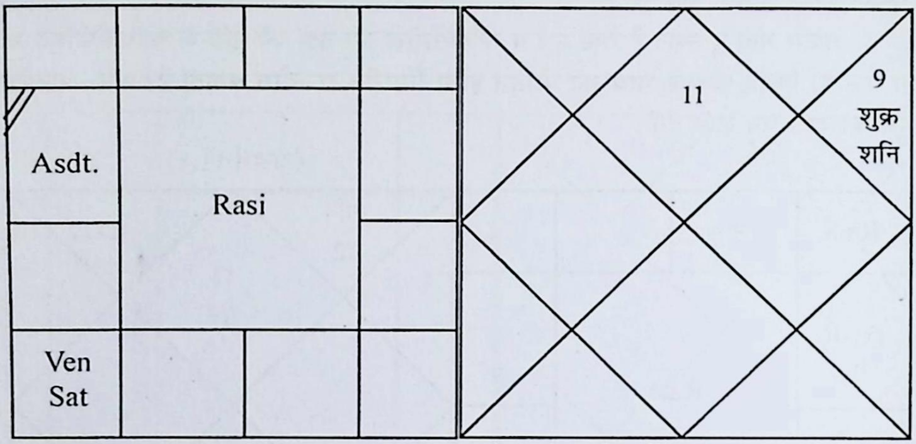

भाग्येश की लग्नेश के साथ लाभ स्थान में युति शुक्र की दशा को शुभ बनाएगी।

11.6 (सूर्य+ बुध+ गुरु) 3H मेष = सूर्य की दशा में धन व सत्ता लाभ।

टिप्पणी–सूर्य दशमात् दशम अर्थात सप्तम भाव का स्वामी होकर उच्चस्थ है और अपनी सिंह राशि मूल त्रिकोण से नवम भाव में है। इस प्रकार सूर्य की शुभता बहुत बढ़ गई है। पापी ग्रह केन्द्र का स्वामी होने पर पापी नहीं रहता है। इस प्रकार सूर्य का पाप प्रभाव पूरी तरह समाप्त हो गया है। गुरु धनेश+ लाभेश होकर अपनी शुभ राशि धनु से त्रिकोण में है। अतः धन व यश की वृद्धि करेगा। बुध अष्टमेश होने व अपनी दोनों राशियों से अष्टम–एकादश होने से अशुभ जान पड़ता है। किन्तु बुध पर संग का प्रभाव कुछ अधिक ही पड़ा करता है। गुरु और बुध की युति

(सन्दर्भ 11.6)

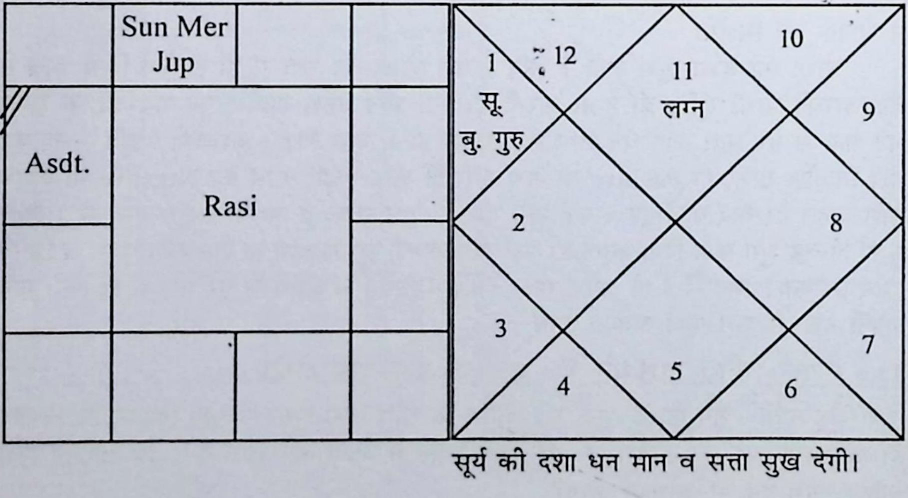

सूर्य की दशा धन मान व सत्ता सुख देगी।

बुध को गुरु के सभी गुण और विशेषताएँ देगी। पंचमेश बुध की अपने मित्र सूर्य से युति भी धन व सत्ता में बुध को सहयोगी ही बनाएगी।

पैग़म्बर मौहम्मद—का सूर्य केन्द्राधिपति होकर लग्न से तृतीय भाव में पंचमेश बुध से युति तथा भाग्यस्थ गुरु (धनेश-लाभेश) से दृष्टि सम्बन्ध कर रहा है। धनेश लाभेश की धर्मस्थान में स्थिति तथा लग्न व बुद्धि स्थान पर दृष्टि होने से इनकी बुद्धि व आत्मा धर्म से जुड़ी और ये पैगम्बर बने। पुनः बुध का सम्बन्ध भी विष्णु या सर्वव्यापी परमात्मा से है तो सूर्य आत्मा का कारक होकर पराक्रम भाव में उच्चस्थ है। ऐसा जातक साधन पथ पर आगे बढ़कर आत्मसाक्षात्कार करता है। पुनः सूर्य नियंत्रक मंगल की दृष्टि भी नवम भाव तथा लग्न (आत्मा) पर है। इसी प्रकार योगकारक शुक्र सुख स्थान में बैठकर दशम भाव में स्थित लग्नेश शनि से दृष्टि परिवर्तन कर रहा है। निश्चय ही ये उच्चकोटि के सिद्ध पुरुष की कुण्डली है।

पैग़म्बर मौहम्मद साहेब

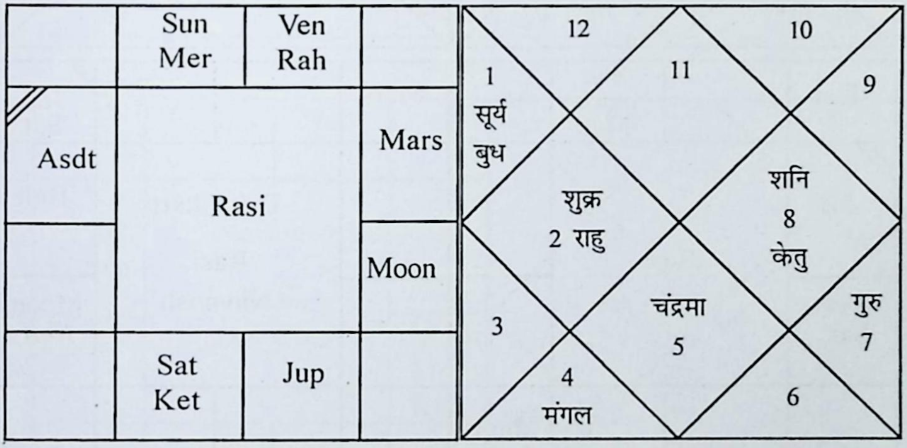

11.7 डॉक्टर बी. वी. रमण ने नवमेश दशमेश की युति शुभ परिणाम नहीं देगी इस बात पर आपत्ति की है। उनका मत है शुक्र और मंगल की युति यदि शुभ भावों में हो तो निश्चय ही परिणाम सुखद होना चाहिए।

उदाहरण : ब्रज किशोर

जन्म—28 मई, 1903 प्रात. 01:19 घंटे 9° उत्तर, 77° 42′ पूर्व

जन्म के समय दशा बुध 05 वर्ष 04 मास 24 दिन।

विश्लेषण—(*i*) दशमेश मंगल लाभ और धन भाव को देख रहा है।

(*ii*) लाभेश गुरु लग्नस्थ होकर पंचम भाव में बैठे भाग्येश शुक्र तथा भाग्य स्थान को देख रहा है।

(*iii*) लग्नेश शनि का दृष्टि सम्बन्ध धन तथा भाग्य स्थान से हुआ है।

निष्कर्ष—

शुक्र की दशा विद्या व धन लाभ में निश्चय ही शुभ परिणाम देगी। गुरु दोनों ही कुण्डलियों में लग्नस्थ है तथा भाग्य वृद्धि का संकेत दे रहा है।

जन्म कुण्डली

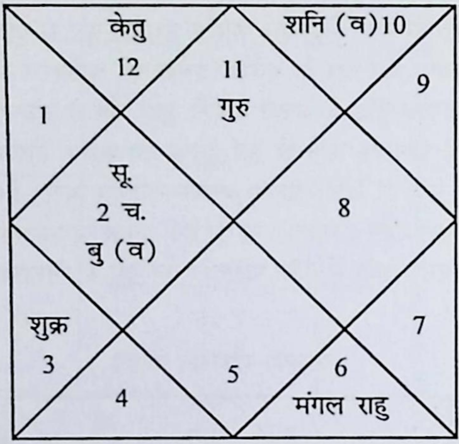

नवांश

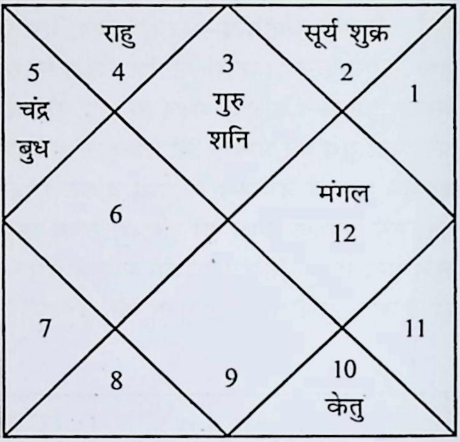

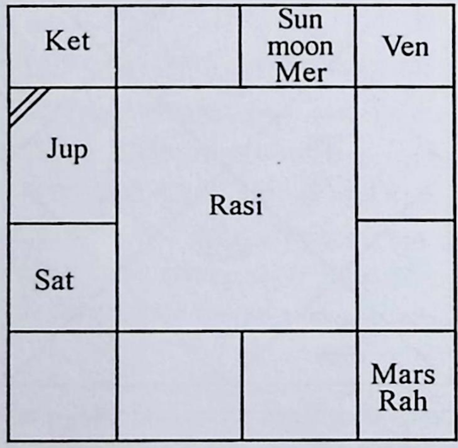

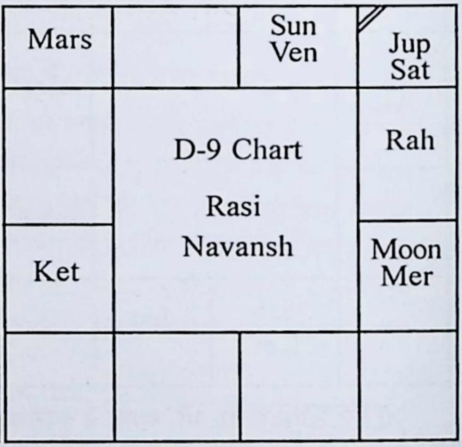

डॉ० बी. वी. रमण जन्म 08 अगस्त, 1912, 13° उत्तर, 77° 35′ पूर्व

जन्म दशा मंगल 06 वर्ष 10 दिन शेष

विश्लेषण–जन्म कुण्डली

(*i*) नवमेश शुक्र, दशमेश मंगल तथा पंचमेश बुध की युति चंद्रमा से पंचम भाव में है। इसने जातक को बुद्धि बली और विद्वान बनाया।

(*ii*) लाभेश–धनेश गुरु दशम भाव से धन भाव को देख रहा है।

(*iii*) लग्नेश शनि सुख भाव लाभेश गुरु से दृष्ट तथा चंद्रमा से युक्त होकर लग्न को देख रहा है।

नवांश कुण्डली

(*iv*) यहाँ भी लग्न पर लग्नेश तथा लाभेश की दृष्टि है तो लाभेश धनेश भी परस्पर सम सप्तक हैं।

जन्म कुण्डली

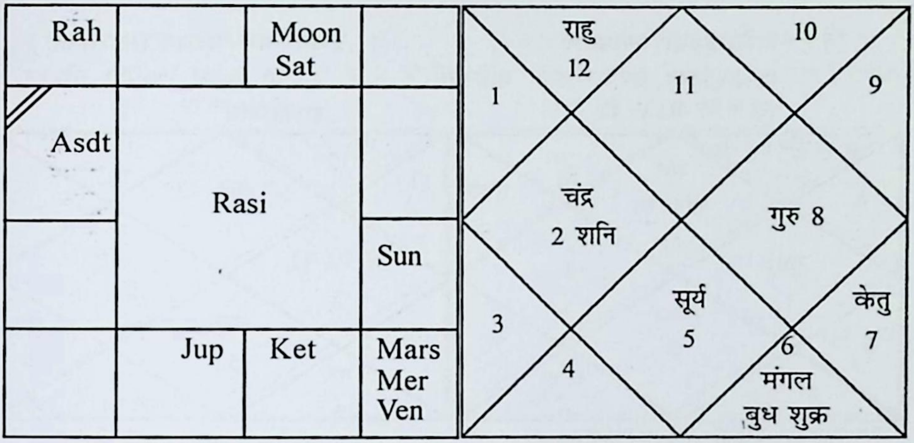

नवांश कुण्डली

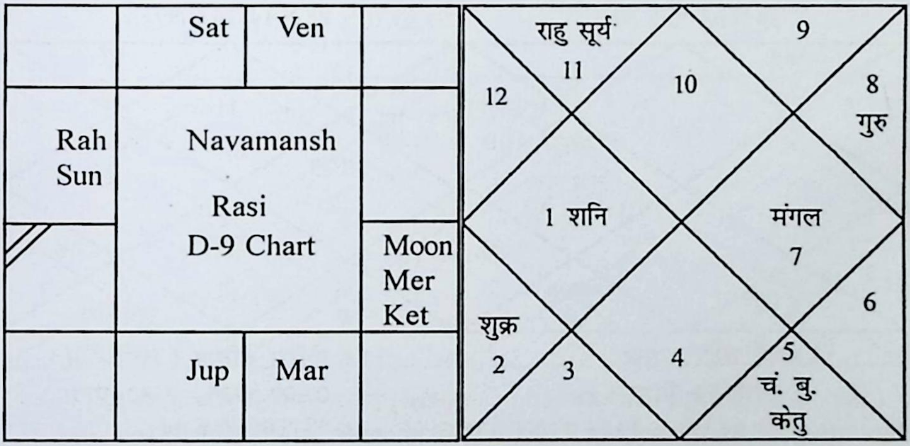

(*v*) जन्म लाभेश, गुरु, नवांश में लाभस्थ होकर जन्म भाग्येश शुक्र को पंचम भाव में देख रहा है।

निष्कर्ष–

गुरु का सम्बन्ध लाभ व धन भाव से होने के कारण गुरु की दशा ने जातक को धन व यश दिया।

॥ कुम्भ लग्न जातकम् ॥

11.1 अलेक्ज़ेण्डर ग्राहमबैल
03.03.1847, 07:00 प्रातः एडिनबर्ग
55 N 57 03 W 12

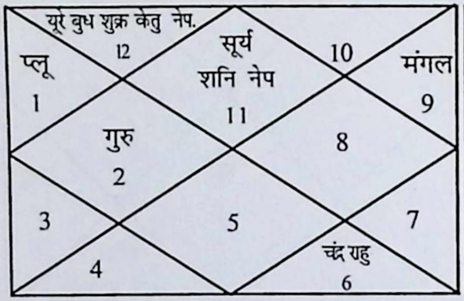

11.2 अमिताभ बच्चन (अभिनेता)
11.10.1942, 16:00 दोपहर
इलाहाबाद

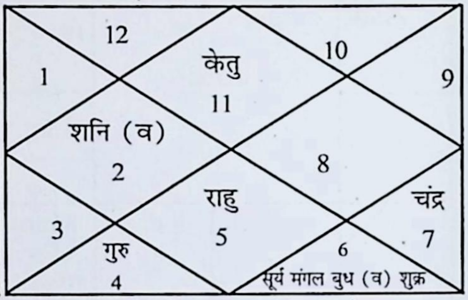

11.3 अनिल कपूर (अभिनेता)
24.12.1959, 12:00 दोप. चैम्बू
19 N 03 72 E 54

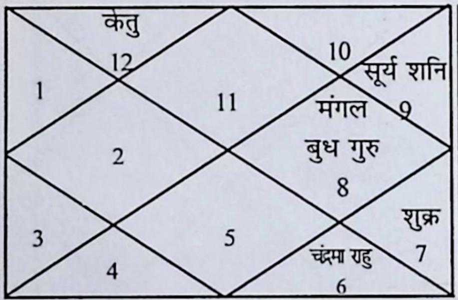

11.4 अशोक कुमार (अभिनेता)
13.10.1911, 14:45 अप. भागलपुर
25 N 14 26 E 59

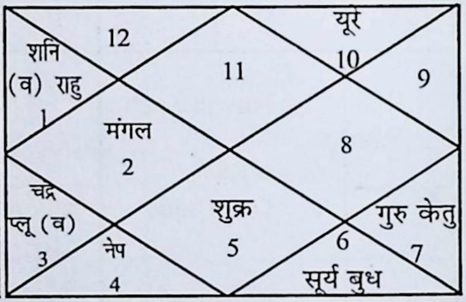

11.5 डॉ. बी.बी. रमण
(ज्योतिष पितामह)
08.08.1912, 19.15 दोपहर बैंगलौर

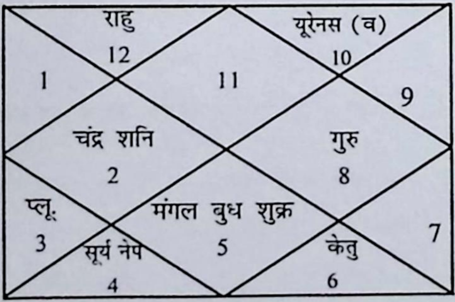

11.6 बोरिस येत्सिन (रूसी नेता)
07.02.1931, 7:50 प्रातः
48 N 05 39 E 40

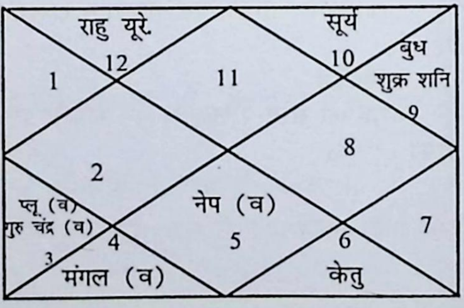

॥ कुम्भ लग्न जातकम् ॥

11.7 चार्ल्स डिकन्स (लेखक)
07.02.1812, 07:50 प्रातः पोर्टसी
50 N 48 01 W 05

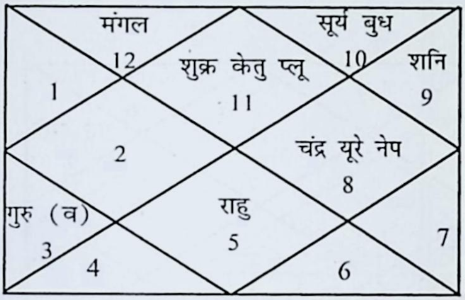

11.8 च्यांगकोई शेख़ (चीन का राजा)
31.10.1887, 14:00 घंटे दोपहर शिकाऊ
29 N 35 121 E 05

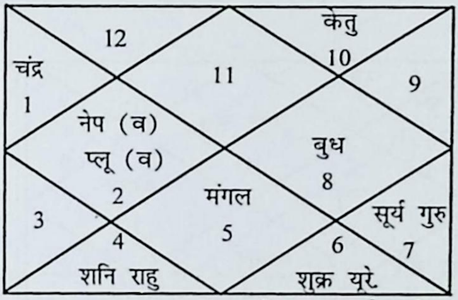

11.9 डॉ. मुरलीमनोहर जोशी
(नेता भा.ज.पा.)
05.01.1934, 10:17 प्रातः दिल्ली

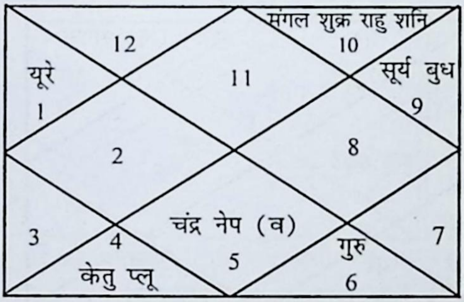

11.10 घनश्यामदास बिड़ला (उद्योगपति)
14.04.1894, 02:54 रात्रि पिलानी
28 N 22 75 E 32

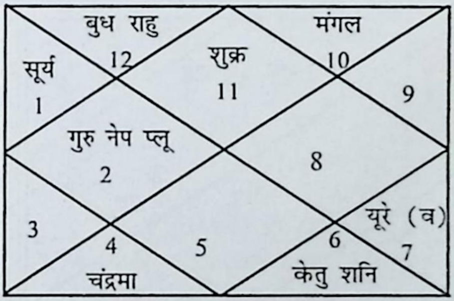

11.11 हेनरी फोर्ड द्वितीय (व्यापार उद्योग)
04.09.1917, 18:00 दोपहर डेटरायर
42 N 19 83 W 02

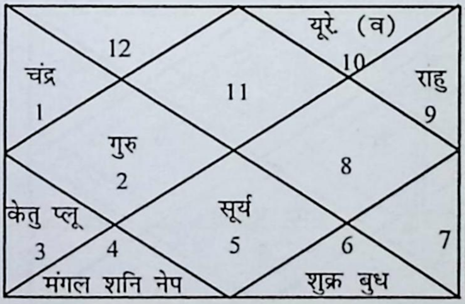

11.12 जयशंकर प्रसाद (लेखक कवि)
30.01.1890, 08:23 प्रातः वाराणसी
25 N 20 83 E 90

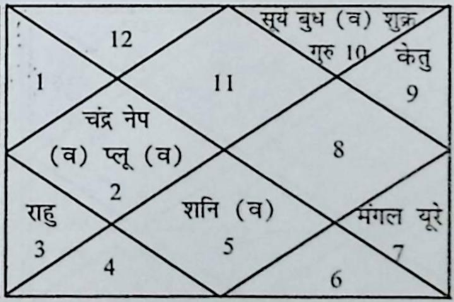

॥ कुम्भ लग्न जातकम् ॥

11.13 कुन्दनलाल सहगल (अमर गायक)
11.04.1905, 03:20 रात्रि
जालन्धर (पंजाब)
31 N 19 75 E 14

11.14 एम.जी. रामचन्द्रन (नेता/अभिनेता)
17.01.1917, 09:15 प्रातः कोलम्बो
6 N 56 79 E 58

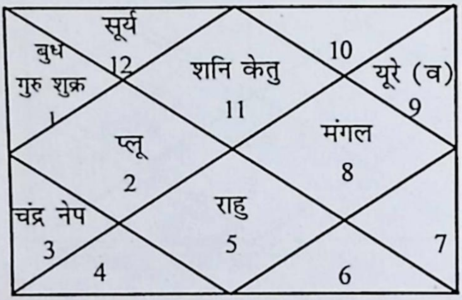

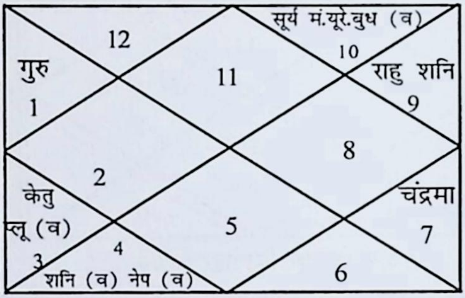

11.15 मधुबाला (अभिनेत्री)
14.02.1933, 07:00 प्रातः दिल्ली
28 N 39 77 E 13

11.16 मौहम्मद अली जिन्नाह
20.10.1875, 14:30 दोपहर. कराची
24 N 53 67 E 00

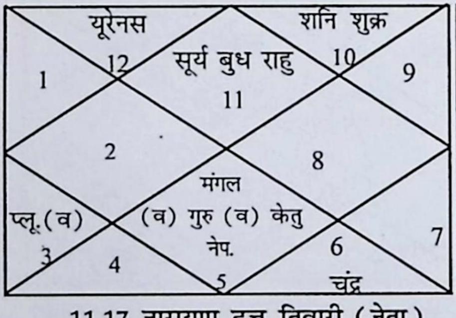

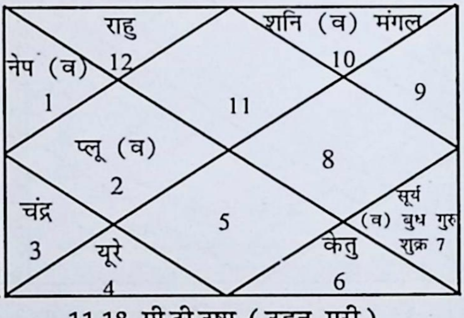

11.17 नारायण दत्त तिवारी (नेता)
18.10.1925, 16:00 दोपहर नैनीताल
29 N 23 79 E 27

11.18 पी.टी.उषा (उड़न परी)
25.05.1964, रात्रि 01:00 कालीकट
11 N 15 75 E 46

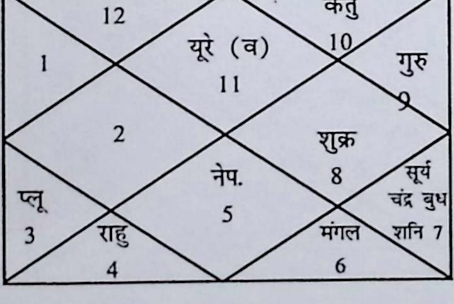

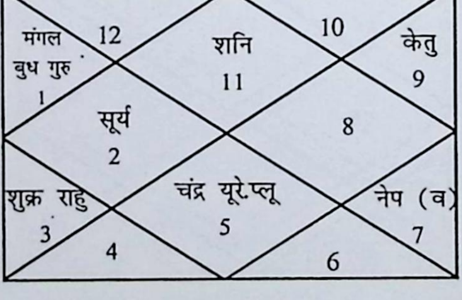

॥ कुम्भ लग्न जातकम् ॥

11.19 डॉ. प्रणव पांड्या
(गायत्री तीर्थ प्रबन्धक)
08.11.1950, 13:33 दोपहर मुम्बई.

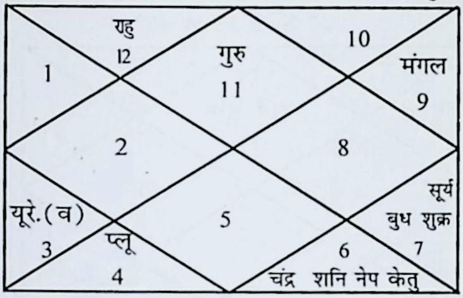

11.20 शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय (लेखक)
15.09.1876, 17:15 सायं
22 N 54 88 E 24

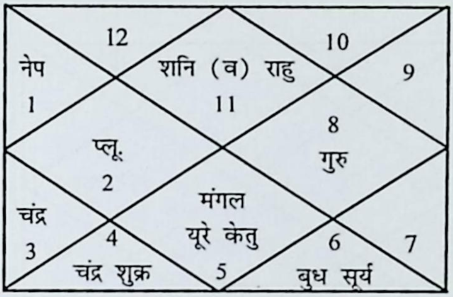

11.21 शिवाजी गणेशन (अभिनेता)
29.09.1928, 17:30 दोपहर विलीपुरम
11 N 56 79 E 29

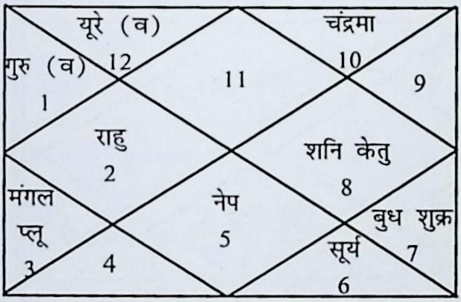

11.22 सीताराम जैपुरिया (उद्योग)
27.05.1926, 00:30 रात्रि जयपुर
26 N 53 75 E 50

11.23 जोसेफ स्टालिन (रूसी नेता)
21.12.1879, 10:45 प्रातः गौरी
42 N 00 44 E 05

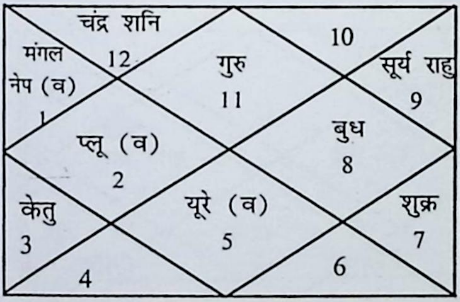

11.24 स्वामी रामकृष्ण परमहंस (सन्त)
18.02.1836, 6:21 प्रातः
22 N 40 88 E 22

॥ कुम्भ लग्न जातकम् ॥

11.25 विष्णु हरि डालमिया (उद्योग)
17.01.1928, 09:45 प्रातः
28 N 12 75 E 42

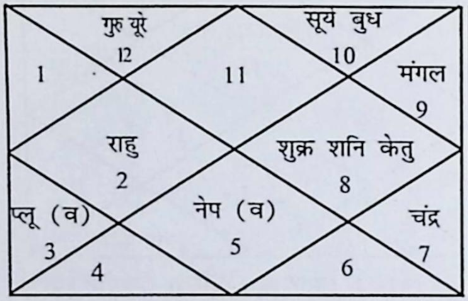

11.26. अब्राहम लिंकन (पूर्व राष्ट्रपति अमरीका)
12.02.1809, 07:32 दोपहर
37 N 33 85 W 46

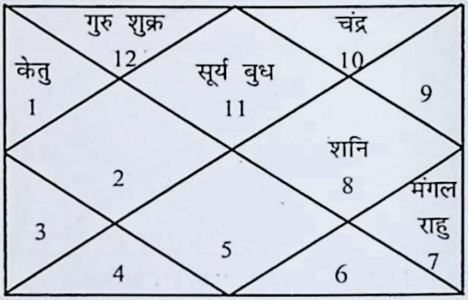

11.27 बादशाह औरंगज़ेब
03.11.1618, 14:00 दिल्ली

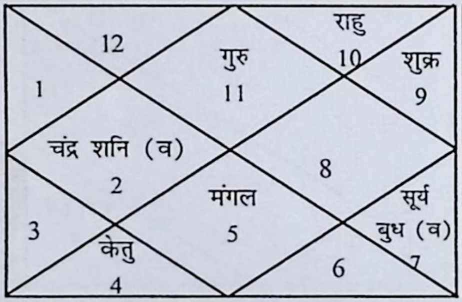

11.28 दलाई लामा (बौद्ध गुरु)
06.07.1935

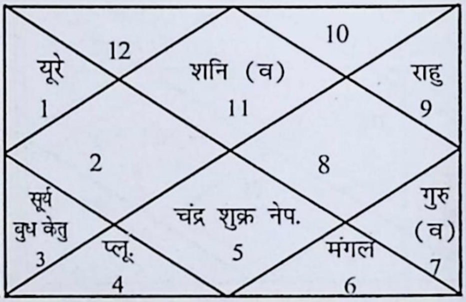

11.29 ऋतिका आहूजा
(कंप्यूटर इंजी.)
07.12.1984, 11.10 घंटे दिल्ली

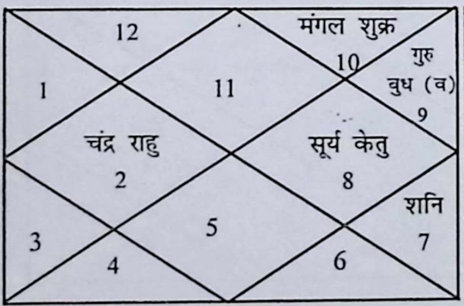

11.30 हज़रत मौहम्मद
(इस्लाम धर्म के प्रवर्तक)

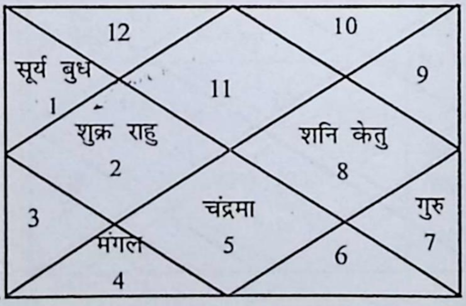

॥ कुम्भ लग्न जातकम् ॥

11.31 साधना
16.07.1958, 21:32 घंटे
खुर्जा

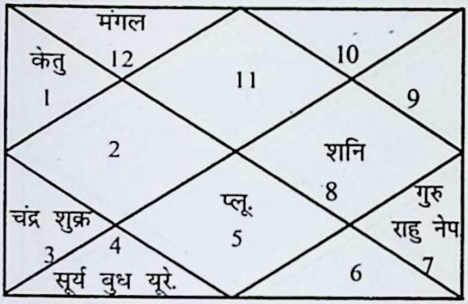

11.32 इंजी विकास-तृप्ति
01.10.1968, 17:20
अम्बाला

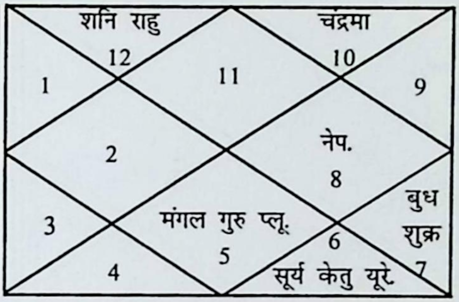

11.33 अमृता प्रीतम (लेखिका)

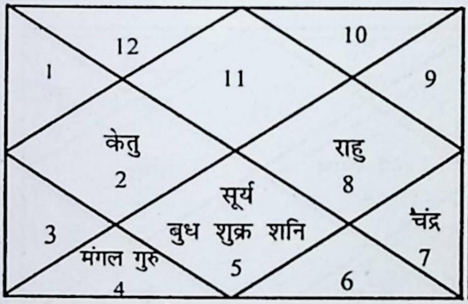

11.34 सोनिया गांधी (द्वितीय कुण्डली)
09.12.1947

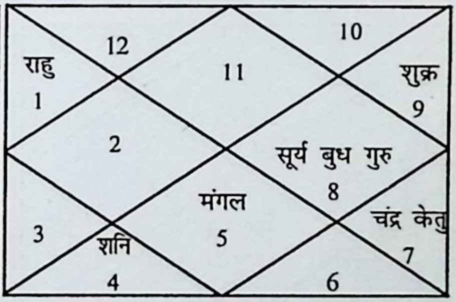

11.35 श्वेता
21.01.1981, 08:35 प्रातः
दिल्ली

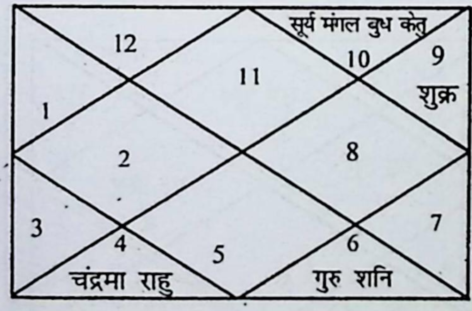

11.36 वन्दना पाठक
10.12.1981, 11:29 घंटे दिल्ली
पिता कर्मकांडी ज्योतिषी

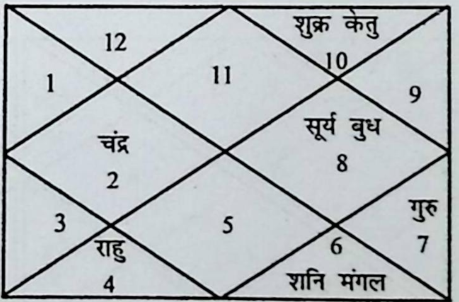

॥ कुम्भ लग्न जातकम् ॥

11.37 शुचि (पुत्री महेश)

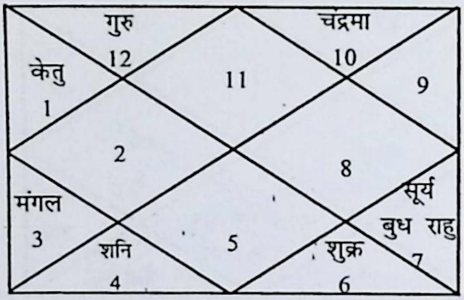

11.38 श्रीमती वेद गुप्ता
18.11.1933
खुर्जा

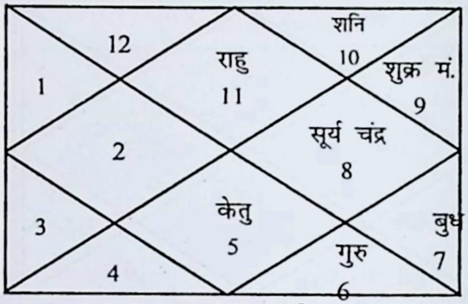

11.39 मीनाक्षी
21.04.1961, 03:20 लन्दन
(मधुमेह से नेत्रहानि)

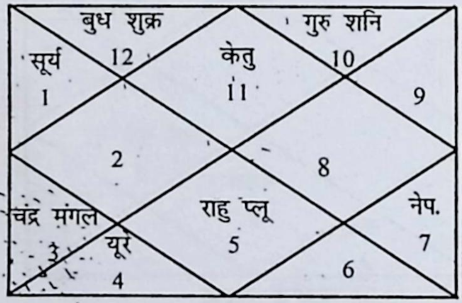

11.40 भगवान दास मित्तल
(ज्योतिष)

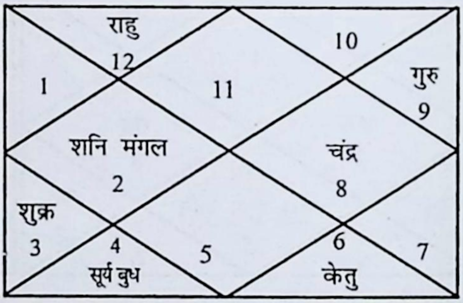

11.41 जयनारायण प्रश्नशास्त्री
26.04.1939

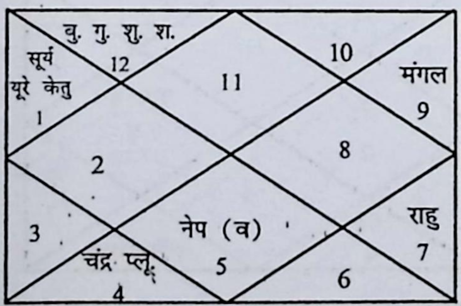

11.42 सविता सतीश जैक्सन
19 फरवरी 1947 07:00 प्रातः
मुजफ्फरनगर

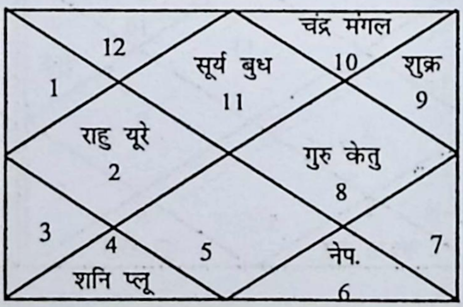

॥ कुम्भ लग्न जातकम् ॥

11.43 एडवर्ड अष्टम
(प्रेम के लिए सिंहासन त्यागा)

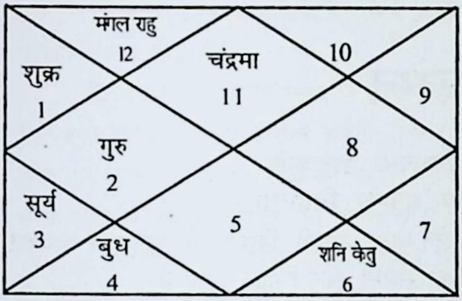

11.44 संजीव
26.08.1965, 19:00 सांय
दिल्ली

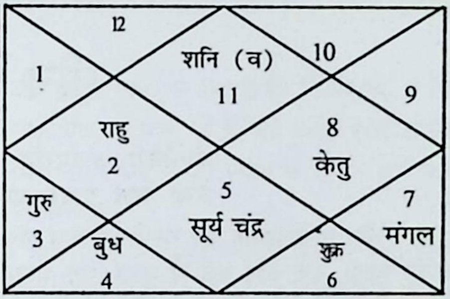

11.45 रवीना टंडन (अभिनेत्री)
27.10.1974

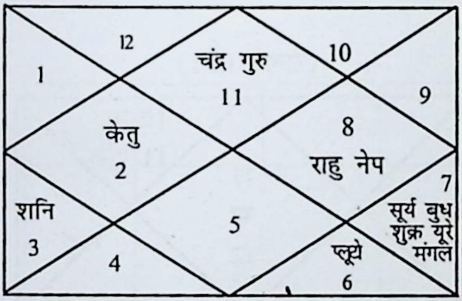

11.46 मैडम क्यूरी
07.11.1867, 13:53 दोपहर
52N13 21E00

अध्याय - 12

मीन लग्न

मीनोदये अल्परति इष्टजना अनुकूलः
तेजो बल प्रचुर धान्य धनश्च विद्वान्॥

मीन लग्न जातक स्त्री सम्भोग में कम रुचि लेने वाला, संयमी, प्रियजन के अनुकूल व्यवहार करने वाला, तेज और बल से युक्त, धन-धान्य का स्वामी और विद्वान होता है।

कोई जातक भाग्यशाली, विद्वान, धनी व यशस्वी तो कभी किंचित रोगी भी होता है।

12.1 यदि लग्न 11, 12 राशि अर्थात कुम्भ या मीन में हो तो 12H में बैठा शुक्र योगकारी नहीं। शेष सभी लग्नों में मेष से मकर पर्यन्त लग्न के लिए व्ययस्थ शुभ परिणाम नहीं देता है।

(सन्दर्भ 12.1)

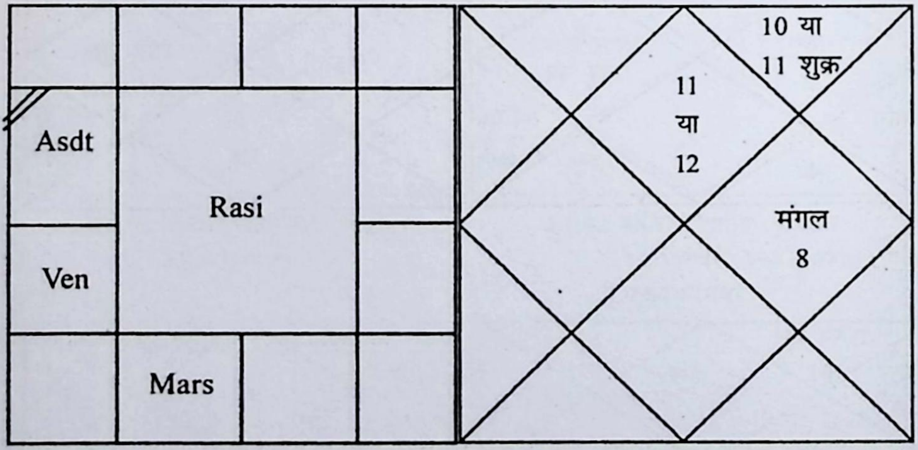

व्ययस्थ शुक्र, शनि क्षेत्री होने पर शुभ नहीं है।

टिप्पणी-शुक्र को लौकिक सुख वैभव देने वाला तो द्वादश भाव को भी सुख योग का भाव माना गया है। द्वादश भाव हानि स्थान नहीं है। अपितु जातक की क्रय शक्ति या सुख वैभव सामग्री जुटाने की क्षमता को दर्शाता है। इस प्रकार भोग स्थान में भोग प्रदायक शुक्र की स्थिति बहुधा

शुभ परिणाम व लौकिक सुख सामग्री देती है। फिर यहाँ **शुक्र शुभ क्यों नहीं?** कारण–द्वादश भाव में **शनि की राशि या नवांश में बैठा शुक्र शुभ फल नहीं दे पाता।** कारण–उस पर वैराग्य प्रधान शनि का नियंत्रण जो रहता है। शुक्र का नियंत्रक शनि होने पर शुक्र निष्प्रभावी या अल्पप्रभावी हो जाता है।

12.2 मीन लग्न जातक के व्यय भाव में मूल त्रिकोण राशि का **शनि शुभ किन्तु चन्द्रमा अशुभ** फल देता है।

टिप्पणी-(1) मीन लग्न में शनि लाभ और द्वादश भाव का स्वामी है। नियम यह है कि द्वितीय व द्वादक्ष भाव के स्वामी अपनी इतर (अन्य) राशि का फल देते हैं। इस प्रकार शनि लाभेश होने का फल देगा-हानि भाव का नहीं। अब लाभेश का अपने से धन स्थान में जाकर धन भाव तथा भाग्य स्थान को देखना भी भाग्य वृद्धि व लाभ देगा।

(2) चंद्रमा का पंचमेश 5L होकर व्यय भाव 12H में अपने भाव से अष्टम तथा लग्न से व्यय भाव में बैठना चन्द्रमा को अशुभ व निर्बल बनाता है। ऐसा जातक धन, विद्या व सन्तान सुख में यदि कमी पाए तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए। पंचमेश का व्यय भाव में शत्रु क्षेत्री होना निश्चय ही अनिष्टप्रद है।

(सन्दर्भ 12.2)

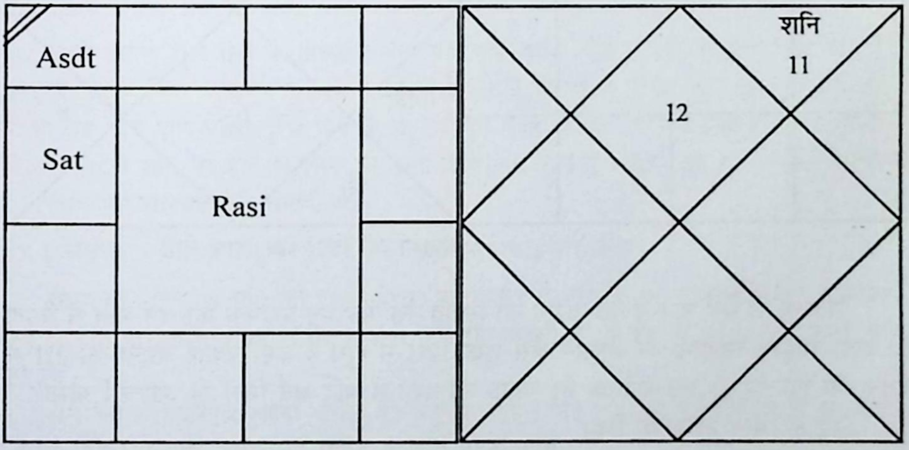

अपनी मूल त्रिकोण राशि का शनि व्यय भाव में शुभ है।

12.3 द्वादशस्थ चंद्रमा की भुक्ति, लग्नेश गुरु की दशा में अशुभ नहीं होगी। गुरु, मीन लग्न के लिए दशमेश-लग्नेश होने से बहुत शुभ है। पुनः चंद्रमा भी पंचमेश होने से त्रिकोण भाव का स्वामी है। लग्नेश में पंचमेश की भुक्ति प्रायः शुभ परिणाम देती है। यदि ग्रह निर्बल हो तो शुभता में थोड़ी कमी होना तो सम्भव है किन्तु अशुभ होना असम्भव जान पड़ता है। पुनः चंद्रमा यदि सूर्य से दूर रहकर पक्षबली हो तब शायद उसकी अशुभता नष्ट प्राय हो जाएगी।

12.4 गुरु पंचम भाव में **(कर्क राशि)** कन्याएँ अधिक पुत्र कम देता है।

लग्नेश गुरु पंचम भाव की कर्क राशि में उच्चस्थ होने से जातक को आस्तिक, धनी व विद्वान बनाएगा। फिर कन्या सन्तति की बात कहाँ से आ गई? सम्भव है, गुरु पाप पीड़ित होने से पुत्र का अभाव दर्शाता है। अथवा चंद्रमा, शुक्र सरीखे प्रबल ग्रहों का दृष्टि युति सम्बन्ध गुरु से हो या पंचमेश चंद्रमा का स्त्री राशि व स्त्री ग्रहों से सम्बन्ध भी कन्या बाहुल्य दे सकता है।

12.5 (चंद्रमा मेष राशि) 2H+ (मंगल कर्क) 5H= **चन्द्रमा की दशा में धन प्राप्ति**

मीन लग्न के लिए मंगल धनेश और भाग्येश होकर पंचम अर्थात लक्ष्मी स्थान में बैठकर लाभ स्थान को देख रहा है। पंचमेश चंद्रमा धन भाव में है। चंद्रमा और मंगल का परस्पर राशि परिवर्तन योग, चंद्रमा को मंगल की शक्ति व शुभता प्रदान कर भाग्य व लाभ वृद्धि देने वाला बनाएगा।

(सन्दर्भ 12.5)

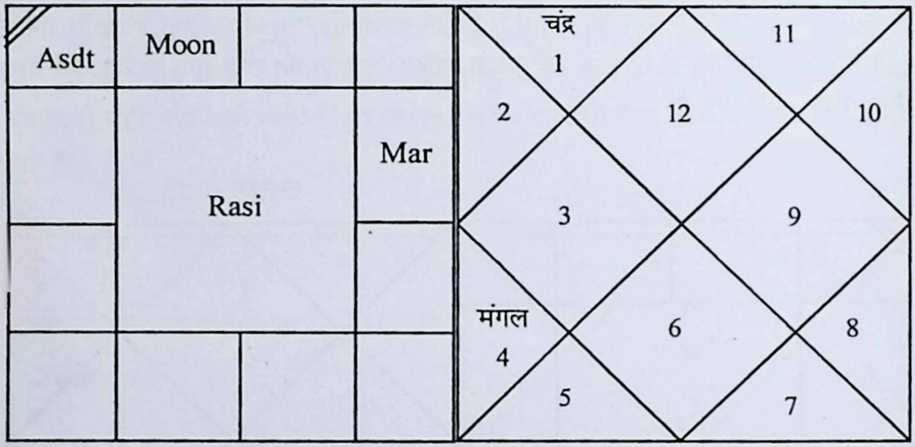

चन्द्रमा की दशा धन लाभ देगी

मतान्तर से धन भाव में बैठे चंद्रमा की स्थिति नैसर्गिक धन प्रदायक का धन भाव में बैठना है। अत: सादृश्य सिद्धान्त के अनुसार जैसे शुक्र 12H में शुभ है उसी प्रकार चंद्रमा का 2H में बैठना भी निश्चय ही धन प्रदायक है। चंद्रमा की दशा में यदि धन मिले तो आश्चर्य कैसा?

12.6 मीन लग्न के लिए

गुरु 6H+8H शुक्र+ शनि 9H + (मंगल + चंद्रमा) 11H में = **भाग्यशाली**

टिप्पणी

(*i*) लग्नेश-दशमेश गुरु मित्र क्षेत्री होकर दशम भाव में अपनी राशि को तथा धन भाव को देखेगा।

(*ii*) पराक्रमेश शुक्र अष्टम भाव में स्वगृही होकर धन भाव से दृष्टि सम्बन्ध करेगा।

(*iii*) लाभेश शनि, नवमस्थ होकर, लाभ स्थान तथा लग्नेश-दशमेश गुरु को देखेगा।

(*iv*) मंगल भाग्येश तो चंद्रमा पंचमेश होकर लाभ स्थान में परस्पर युति कर रहे हैं। यह

योग निश्चय ही धन वृद्धि करेगा। ध्यान देने की बात है कि धन भाव अपने स्वामी धनेश और भाग्येश मंगल से दृष्ट है तो लाभस्थान भी अपने स्वामी से दृष्ट है। धनेश का लाभ स्थान मे उच्चस्थ होकर लग्नेश से दृष्टि सम्बन्ध भी धन व सुख बढ़ाता है। पुन: दशम भाव भी अपने स्वामी से दृष्ट है।

Reference 12.6 (सन्दर्भ 12.6)

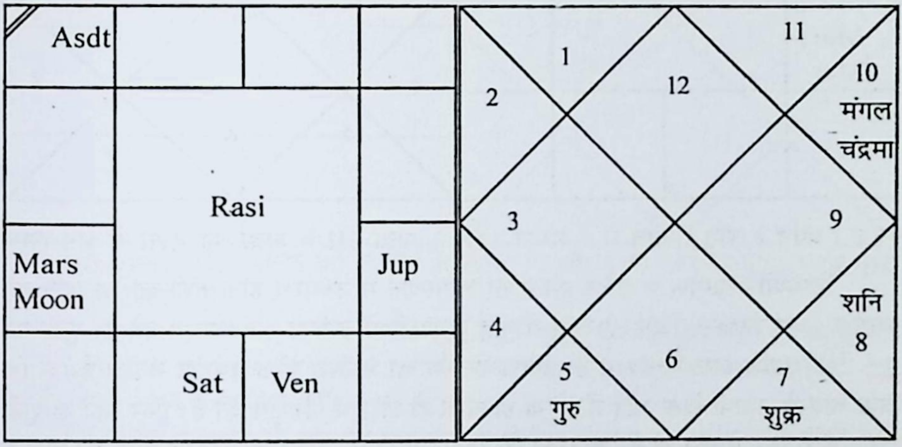

जिस प्रकार शुभ ग्रहों के मध्य में बैठा ग्रह शुभ कर्तरी योग में होने से शुभ फल देता है कुछ इसी प्रकार जिस भाव या ग्रह के आगे पीछे अर्थात द्वितीय व द्वादश भाव में शुभ ग्रह की दृष्टि हो वह भाव शुभ पार्श्व दृष्टि पाने के कारण शुभ बली हो पाता है। गुरु तथा शुक्र की दृष्टि, द्वितीय व द्वादश भाव पर होने से लग्न भी बहुत बली और शुभ है । अत: यह ग्रह स्थिति जातक को निश्चय ही **भाग्यशाली** बनाती है।

12.7 (चंद्रमा + मंगल +बुध) 11H = धन और वाहन प्राप्ति

टिप्पणी–त्रिकोण भाव को लक्ष्मी स्थान कहा जाता है। नवमेश का उच्चस्थ होकर पंचमेश चंद्रमा से युति कर लाभ स्थान में बैठना धनी और भाग्यशाली बनाता है। यह बात पहले कही जा चुकी है।

बुध को संग प्रभाव ज़्यादा लगता है। चतुर्थेश वाहन पति बुध की लाभ स्थान में भाग्येश के साथ युति धन और वाहन की प्राप्ति निश्चय ही कराएगी।

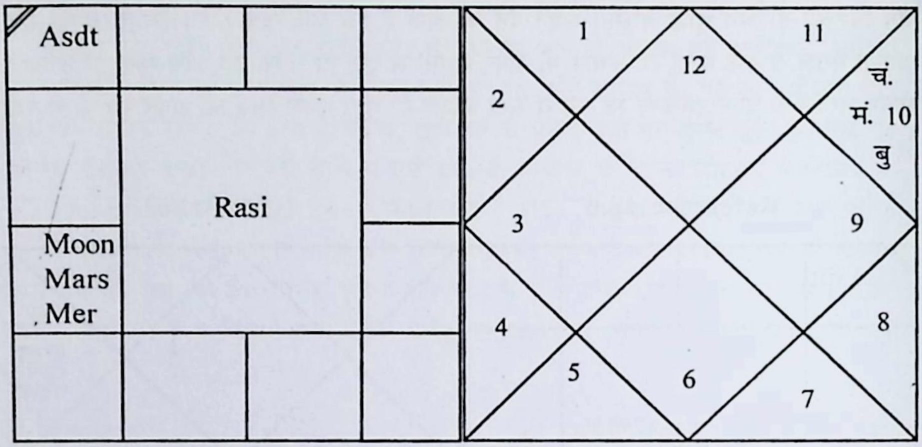

12.8 (शनि + चंद्र) लग्न में + मंगल 11H + शुक्र 6H = शुक्र की दशा में धन लाभ

टिप्पणी–भाग्येश व धनेश मंगल का लाभस्थान में उच्चस्थ होना तथा लाभेश शनि की पंचमेश (धन कारक) चंद्रमा से लग्न में युति कुण्डली में उत्कृष्ट धन योग दे रहे हैं। शुक्र की मूल त्रिकोणराशि अष्टम भाव में है। अत: अष्टमेश का षष्ठस्थ होना हर्षयोग बनाता है। कारण त्रिक भाव के स्वामी त्रिक भाव में रहें या हीनबली हो तो शुभ परिणाम देते हैं। फिर यहाँ तो शुक्र शत्रु क्षेत्री व शत्रु से दृष्ट भी है। **अष्टमेश जो कि दु:ख दैन्य, दरिद्रता तथा अपयश का सूचक है वह यदि अन्य दु:स्थान में हो तो दरिद्रता का नाश कर प्रचुर धन देगा।** यह विपरीत राजयोग की स्थिति है।

Ref 12.8 (सन्दर्भ 12.8)

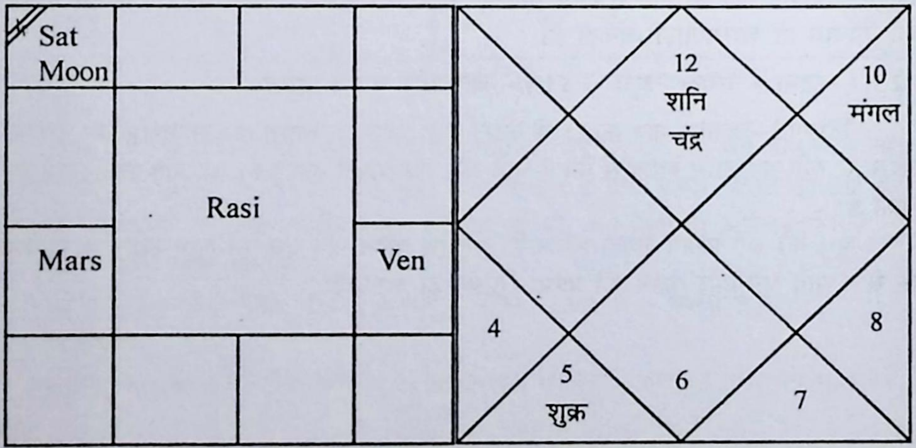

12.9 (चंद्र+मंगल+बुध+गुरु) 4H = सत्ता सुख व यश प्राप्ति

टिप्पणी (*i*) पंचमेश चंद्रमा, भाग्येश मंगल तथा सुखेश बुध की दशमेश–लग्नेश गुरु के साथ सुख भाव में युति निश्चय ही योग दायक है।

(सन्दर्भ 12.9)

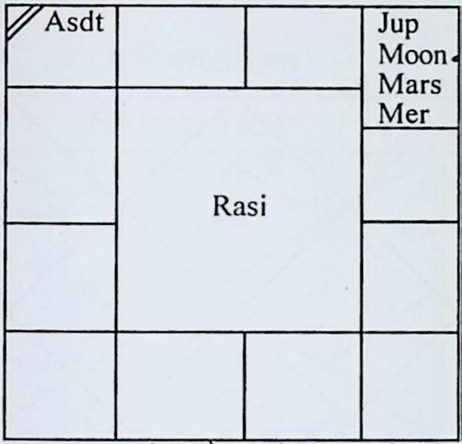

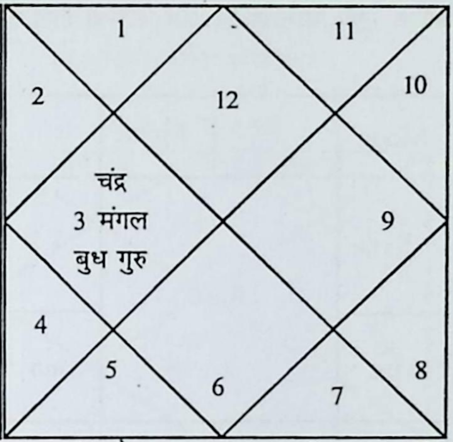

(*ii*) नवमेश और दशमेश की लग्नेश के साथ युति और दशम भाव पर दृष्टि भाग्य वृद्धि व सत्ता सुख दर्शाती है।

(*iii*) चंद्रमा और मंगल लग्नेश गुरु के मित्र हैं तो सुखेश बुध भी सुख स्थान में स्वगृही है।

(*iv*) दशम भाव अपने स्वामी से दृष्ट है तो भाग्येश भी दशम और लाभ स्थान को देख रहा है। अत: भाग्य और लाभ वृद्धि स्पष्ट है।

(*v*) भाग्येश का कर्म और एकादश भाव में उच्चराशि को देखना सत्ता सुख व अक्षय कीर्ति देगा।

अब यदि कहीं शुक्र भी इन ग्रहों के साथ युति करे (कारण–बुध और शुक्र सूर्य के आगे पीछे एक राशि से अधिक बहुधा नहीं जाते)। तो अष्टमेश शुक्र के कारण शुभता में निश्चय ही कमी आएगी। अष्टमेश का शुभ स्थान अर्थात केन्द्र तथा अष्टम से भाग्य में बैठना दैन्य, दीनता व निर्धनता दे सकता है।

12.10 गुरु दशम भाव में = सत्ता सुख व धन लाभ

लग्नेश का दशम भाव में स्वगृही होना निश्चय ही धन, मान और सत्ता सुख देगा। कारण–गुरु धन व राज्य कृपा का कारक होकर कर्म भाव में बैठकर धन व सुख भाव को देख रहा है।

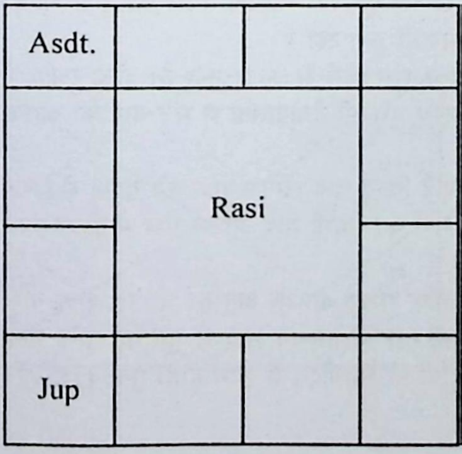

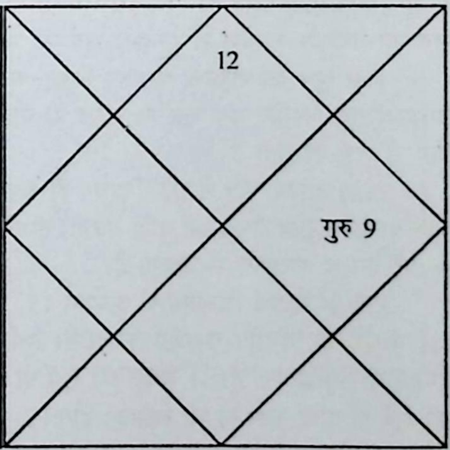

12.11 चंद्रमा 3H + सूर्य 6H + बुध 7H + शुक्र 8H + गुरु 10H+ मंगल 11H शनि 12H + जातक गुणी भाग्यशाली और यशस्वी होता है।

सन्दर्भ 12.11

Moon		Moon	
Sat	Rasi		
Mar			Sun
Jup		Ven	Mer

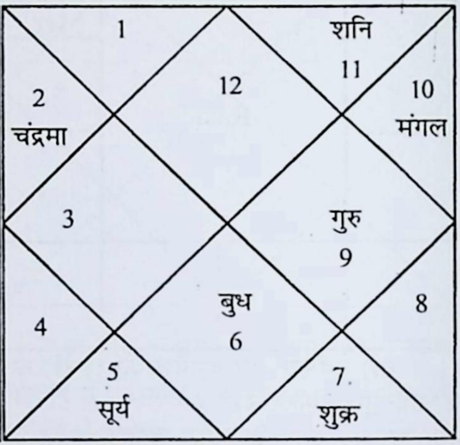

टिप्पणी (*i*) पंचमेश चंद्रमा का उच्चस्थ व सूर्य से पर्याप्त दूरी पर होना चंद्रमा को पक्षबली व शुभ बनाता है। त्रिकोण पति चंद्रमा की भाग्य स्थान पर दृष्टि जातक की भाग्यवृद्धि करेगी।

(*ii*) इसी प्रकार भाग्येश मंगल का लाभ स्थान में उच्चस्थ होकर धन भाव में अपनी ही राशि को देखना धन, मान व यश को बढ़ाता है।

(*iii*) लाभेश शनि का धन व भाग्य स्थान से दृष्टि सम्बन्ध भी शुभ फल अर्थात धन व भाग्य की वृद्धि देगा।

(*iv*) दशमेश गुरु का दशम भाव में स्वगृही होकर सुख स्थान व सूर्य को देखना सत्कर्म का शुभ फल दर्शाता है। ऐसा जातक सद्‌गुणी व धार्मिक प्रवृति का होता है तथा समाज में राजा सरीखा आदर मान पाता है।

(*v*) षष्ठस्थ सूर्य का स्वक्षेत्री व बली होना अनिष्टप्रद हो सकता था किन्तु क्रूर ग्रह त्रिषडाय में शुभ फल दिया करते हैं। फिर इस सूर्य पर तो लग्नेश गुरु और भाग्येश मंगल की दृष्टि भी है। सूर्य का नवमेश-दशमेश से सम्बन्ध सूर्य को योगकारी बना रहा है।

(*vi*) बुध का सम्बन्ध भगवान विष्णु, यज्ञ व शुभ कर्म से जोड़ा गया है। केन्द्र स्थान में उच्चस्थ बुध भद्रयोग बना रहा है। चंद्रमा से पंचमस्थ बुध भी देवोपासना व मंत्र बल का कारक होने से शुभ हो गया है।

(*vii*) अष्टम भाव में शुक्र निश्चय ही अशुभ है किन्तु चन्द्र लग्नेश शुक्र की चंद्रमा से द्वादश भाव पर दृष्टि सुख वैभव की वृद्धि करेगी। तीसरे भाव का स्वामी यदि अष्टम भाव में हो तो व्यर्थ के परिश्रम व भटकाव से बचाता है।

(*viii*) 'सर्वार्थ चिन्तामणि' अध्याय 15, श्लोक संख्या 40 के अनुसार भी 3L शुक्र यदि, 8H में बैठे तो विपरीत राजयोग बनाता है। सूर्य का 6H या उपचय भाव में गुरु की दृष्टि पाना उन्नति व समृद्धि देता है। 9L मंगल की सूर्य पर दृष्टि भी भाग्योदय व लाभ देगी। पुनः 11L शनि का सूर्य से दृष्टि सम्बन्ध भी लाभप्रद होगा।

॥ मीन लग्न जातकंम् ॥

12.1 मफतलाल अरविन्द
27.10.,17:00 घंटे सायं मुम्बई
18 N 58 72 E 50

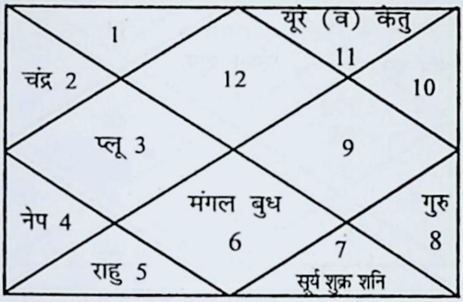

12.2 बाबा साहेब अम्बेडकर
14.04.1891 प्रात: 05:00 महू
22 N 35 75 E 50

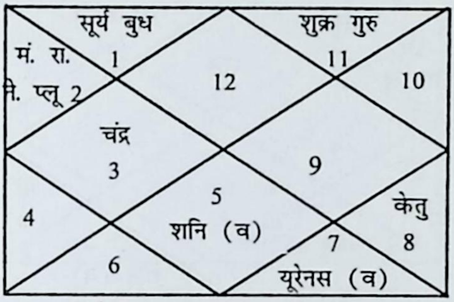

12.3 भजनलाल (पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा)
06.10.1930, 17:40 सायं हिसार
29 N 10 75 E 40

12.4 डिंपल कपाड़िया (अभिनेत्री)
08.06.1957, 02:48 रात्रि
मुम्बई

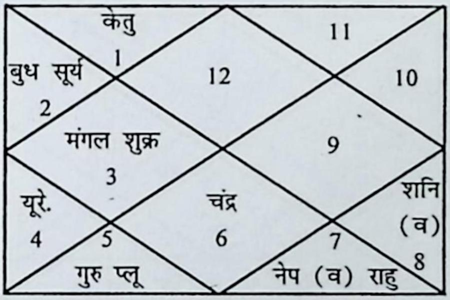

12.5 हृतिक रोशन (अभिनेता)
10.01.1974, 12:00 मध्यान्ह
मुम्बई

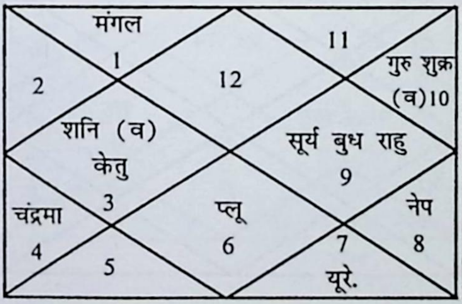

12.6 जीजी शैलबाला पांड्या
(सन्त गायत्री तीर्थ)
27.11.1952, 14:20 दोपहर. मथुरा
27 N 30 78 E 27

॥ मीन लग्न ॥

12.7 माँ आनन्दमयी (सन्त)

01.05.1896 , 03:45 रात्रि कलकत्ता
22 N 30 88 E 20

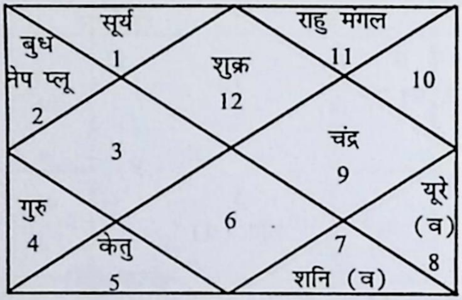

12.8 मामा वरेरकर (लेखक)

27.04.1883 , 04:15 प्रात:
17 N 32 73 E 32

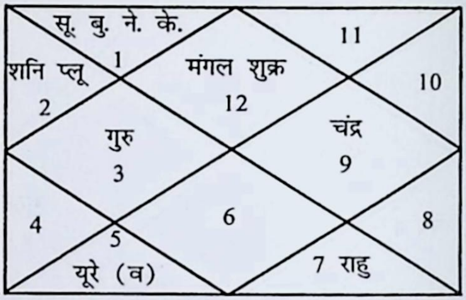

12.9 मार्टिन लूथर किंग जूनियर (नेता)

15.01.1929 , 11:21 प्रात:
33 N 44 84 W 23

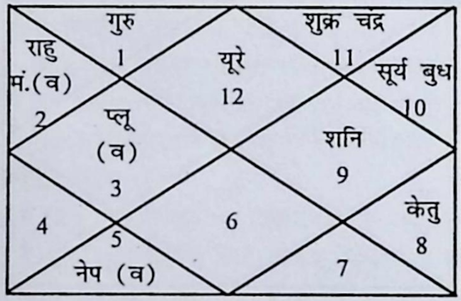

12.10 पू. शिवरेगे (लेखक)

02.08.1910 , 22:39 रात्रि देवगढ़
16 N 24 73 E 25

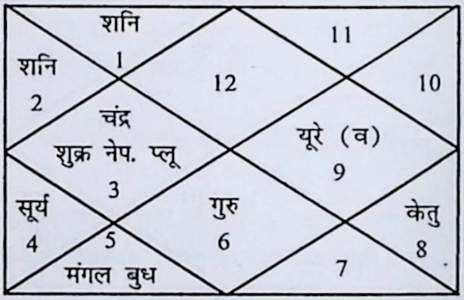

12.11 राधेश्याम शास्त्री

(ज्योतिष सम्पादक)

13.01.1949 ,11:06 प्रात: इलाहाबाद

12.12 रवीन्द्रनाथ ठाकुर (कवि)

07.05.1861 , 02:51 रात्रि कलकत्ता
22 N 30 88 E 20

॥ मीन लग्न ॥

12.13 सन्त तुकाराम
22.01.1607, 10:00 प्रातः देहू
18 N 35 73 E 51

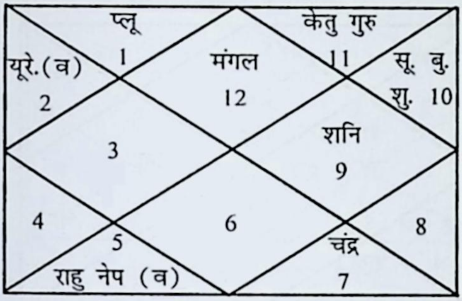

12.14 स्मिता पाटिल (अभिनेत्री)
07.10.1955, 17:30 सायं पुणे
18 N 34 73 E 58

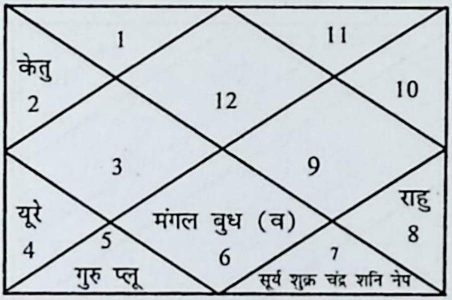

12.15. सूबेदार सिंह (ज्योतिष)
22.07.1925, 22:33 मुगल सराय
25 N 18 83 E 07

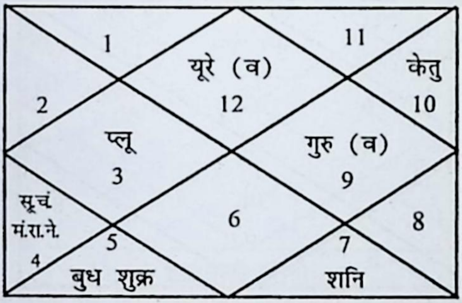

12.16. स्वामी अखन्डानन्द (सन्त)
30.09.1864, 18:00 सायं कलकत्ता
22 N 30 88 E 20

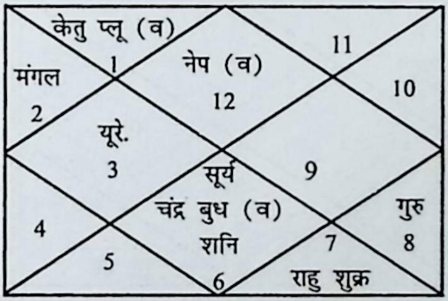

12.17. स्वामी रामतीर्थ (सन्त)
22.10.1873, 16:00 दोपहर लाहौर
31 N 32 74 E 22

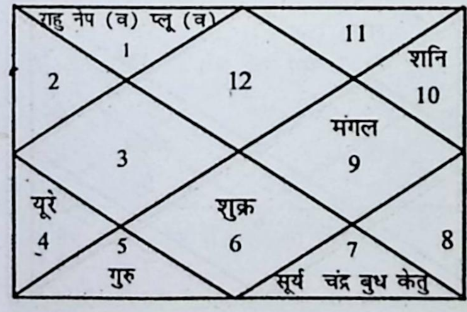

12.18. डॉ. वी.एन सिंह (भारत के राजदूत)
02.04.1946, आरा बिहार

॥ मीन लग्न ॥

12.19 राधेमोहन (टैक्स कन्सलटैंट)
17.10.1939 अक्टूबर
दिल्ली

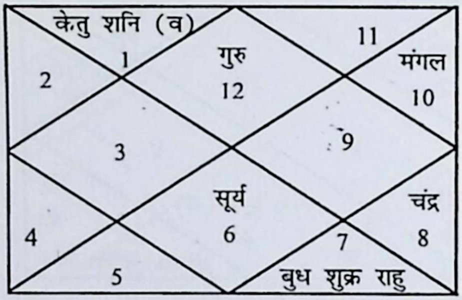

12.20 मिनी आशा
07.08.1973, रात्रि 21:35
लखनऊ (मूक बधिर)

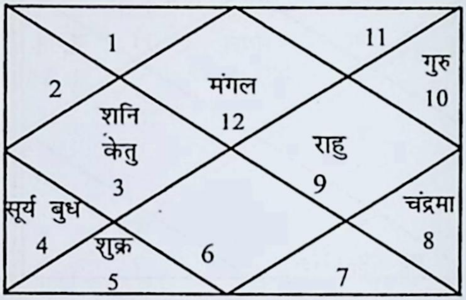

12.21 राष्ट्रपति आइजन हावर
(अमरीका)

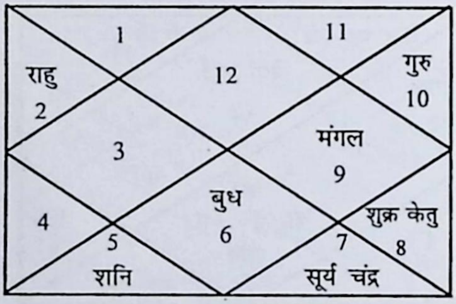

12.22 पं. शिवकुमार मिश्र
(वेदान्त शास्त्री)

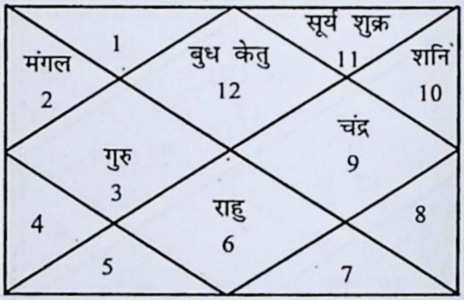

12.23 रंजन (सी. ए.)
16.05.1956
दिल्ली

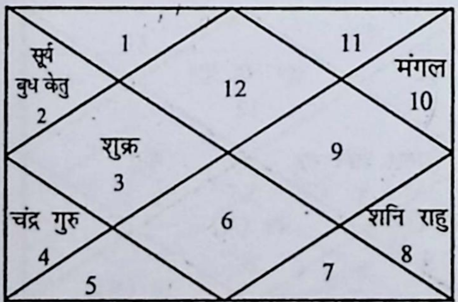

12.24 भावना-समीर जैक्सन
26 मार्च 1971, 5:50 प्रातः
दिल्ली

॥ मीन लग्न ॥

12.25 एनी बेसेण्ट

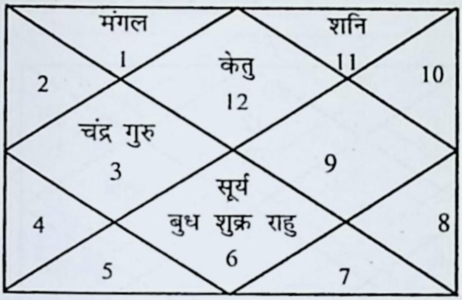

12.26 शंकराचार्य प्रयाग

12.27 अनिता-सन्दीप जैक्सन
01.04.1974, 06:00 प्रातः पुणे

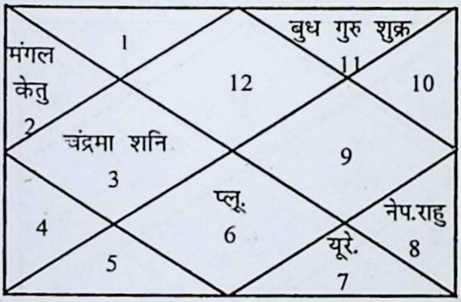

12.28 श्यामबाबा खाटू वाले

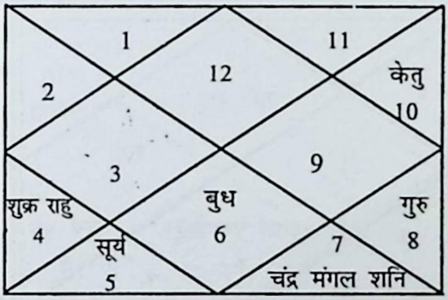

12.29 ब्रह्मज्ञानी योगी
26.12.1920

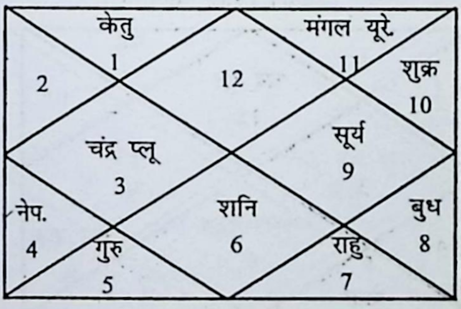

(बुध-गुरु में ब्रह्मज्ञान मिला)

12.30 कपड़ा मिल का स्वामी
25.04.1932

॥ मीन लग्न ॥

12.31 डॉ. आलोक
08.05.1975 रात्रि 03:30 दिल्ली

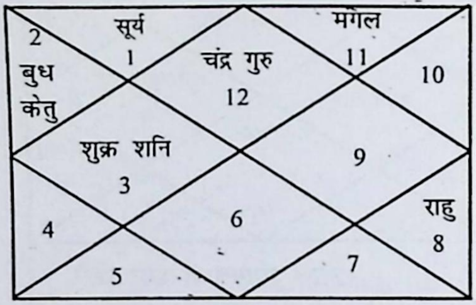

12.32 डॉ. अमित
14.01.1976 प्रातः 11:00 बजे दिल्ली

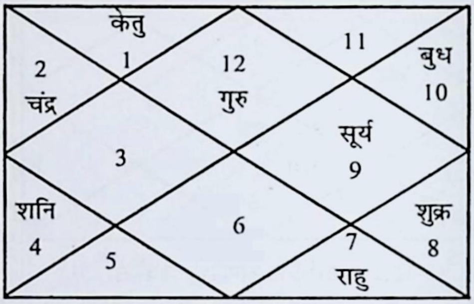

12.33. ज्योतिका (अध्यापिका-तलाकशुदा)
24.11.1968 दिल्ली 14:32 घंटे

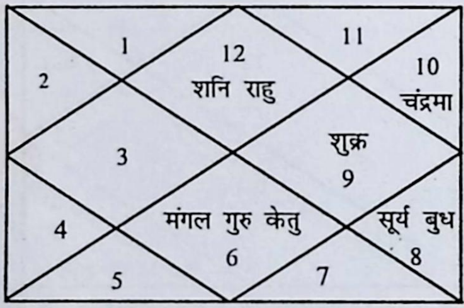

12.34 जूही (विवाह राहु-शनि)
13.10.1975 दिल्ली 11:55 घंटे

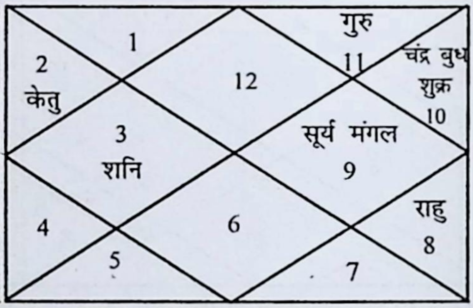

12.35 कृष्ण चन्द्र
22.12.1947 खुर्जा 13:15 घंटे

12.36 डॉ. मित्रा (कानून के प्रोफेसर)
14.01.1952 कलकत्ता

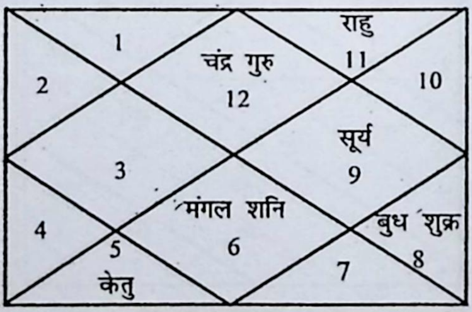

॥ मीन लग्न ॥

12.37 मीनाक्षी
29.1.1987 दिल्ली 10:35 घंटे

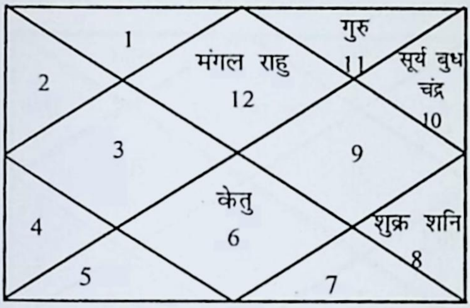

12.38 डॉ. लक्ष्मी M.S.
07.01.1968 दिल्ली 11:15

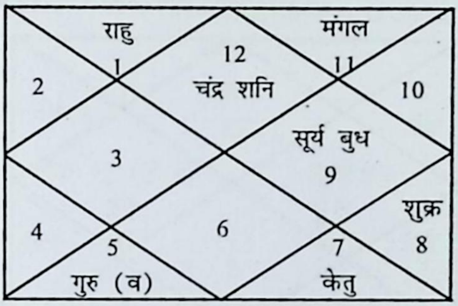

12.39 मालविका (गायिका)
29.12.1930 12:30 घंटे
26 N 30 80 E 54

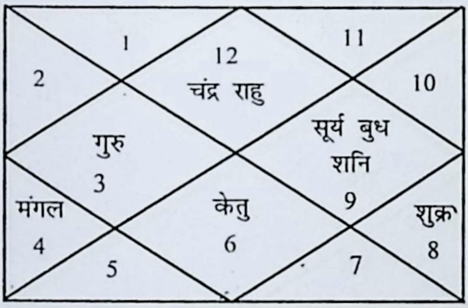

12.40 मनीष (व्यापारी)
08.10.1969 दिल्ली 18:10

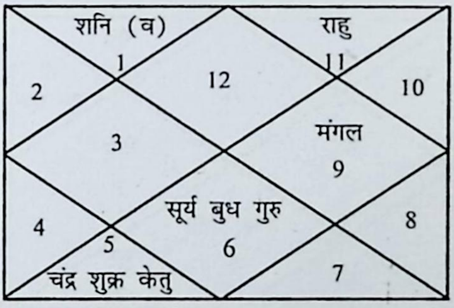

12.41 पवन अग्रवाल (प्रकाशक)
09.12.1963 मथुरा 13:00 घंटे

12.42 कर्नल राजकुमार (अभियन्ता)
10.10.1941 खुर्जा 16:52

॥ मीन लग्न ॥

12.43 राहुल द्रविड़ (क्रिकेटर)
11.01.1973 इंदौर (म.प्र.) 11:10 प्रातः

12.44 तुषार कपूर (अभिनेता)
20.11.1976 मुम्बई 15:20

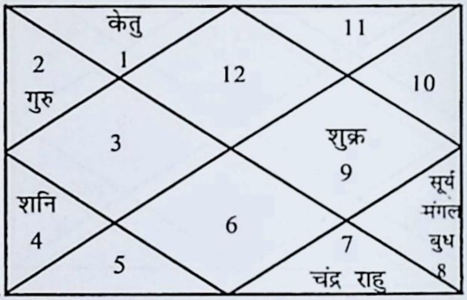

12.45 विक्रम (विकलांग)
03.03.1982 दिल्ली 08:45 प्रातः

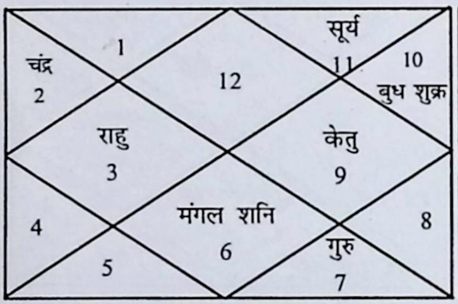

12.46 डॉ. बलजीत कौर (स्त्री रोग)
12.05.1951 बर्मा 03:30 रात्रि

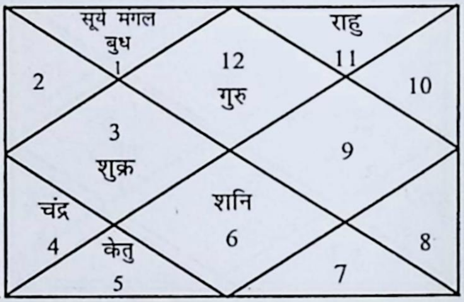

12.47 ओम प्रकाश (व्यापारी)
11.07.1957 दिल्ली 23:50 घंटे

12.48 पूनम
10.02.1973 अमृतसर 09:45 प्रातः

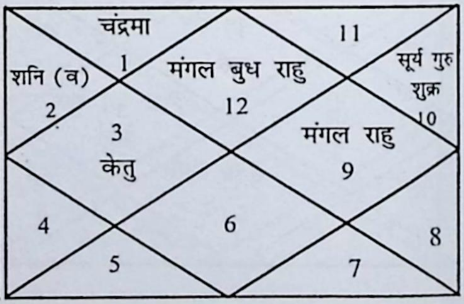

॥ मीन लग्न ॥

12.49 डॉ. प्रमोद

07.04.1989 दिल्ली 05:48 प्रातः

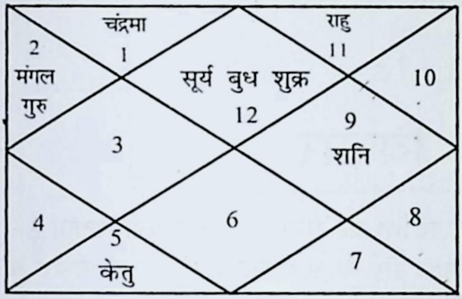

12.50 संजू बाला

27.12.1975 अलीगढ़ 12:20 घटे

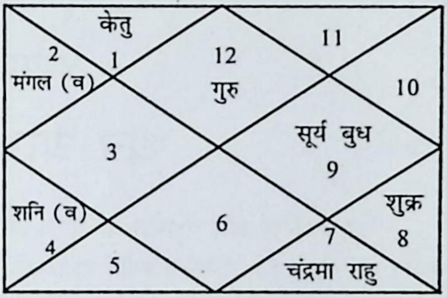

12.51 उन्नत जैन

27.02.1985 दिल्ली 08:05 प्रातः

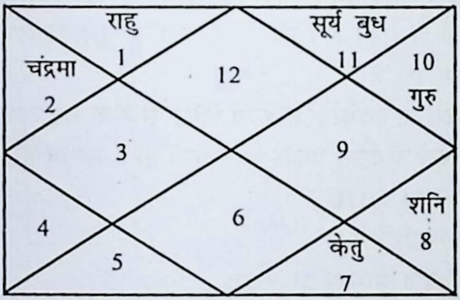

अध्याय -13

धन योग विचार

13.1 धनेश और पंचमेश या धनेश और लाभेश का स्थान परिवर्तन धनी बनाता है– ध्यान रहे, पंचम भाव त्रिकोण स्थान या लक्ष्मी स्थान होने के साथ एकादश भाव का सप्तम या पूरक स्थान भी है तो द्वितीय भाव से चतुर्थ होने के कारण धन का सुख स्थान भी है। अत: अनेक विद्वान धन सम्बन्धी सुख के लिए पंचम भाव का भी विचार किया करते हैं।

13.2-पंचमेश यदि पंचम भाव में तथा नवमेश नवम भाव में स्वगृही हो तो जातक बहुत धन कमाता है। त्रिकोण भाव अपने स्वामी से युक्त होने पर बहुत बली व शुभ हो जाते हैं। अत: जातक पर लक्ष्मी की कृपा होना स्वाभाविक है।

13.3 धनेश और लाभेश का सम्बन्ध पंचमेश या नवमेश (त्रिकोण पति) से होना धन लाभ या धन की वृद्धि होना स्वाभाविक है। ध्यानपूर्वक देखें तो निम्न प्रकार से सम्बन्ध होना सम्भव है:-

(*i*) धनेश का लाभेश से दृष्टि युति सम्बन्ध **2L+/11L**

(*ii*) धनेश का पंचमेश से दृष्टि युति सम्बन्ध **2L+/5L**

(*iii*) धनेश का नवमेश (भाग्येश) से दृष्टि युति सम्बन्ध **2L+/9L**

(*iv*) लाभेश का पंचमेश से दृष्टि युति सम्बन्ध **11L+/5L**

(*v*) लाभेश का भाग्येश से दृष्टि युति सम्बन्ध **11L+/9L**

(*vi*) पंचमेश का नवमेश (भाग्येश) से दृष्टि युति सम्बन्ध **5L+/9L**

(*vii*) लाभेश, धनेश, पंचमेश, भाग्येश में से कम-से-कम दो भावों का अपने स्वामी से दृष्टि-युति पाना धन योग बनाता है। यदि 2L, 11L, 5L, 9L का सम्बन्ध अन्य भावाधि पति से हो तो धन योग नहीं बनता।

13.4 धन की सादृश्यता (धनेश, लाभेश, पंचमेश, नवमेश) **न होने पर बहुधा अधिक धन नहीं मिल पाता।**

मोतीलाल नेहरू

(*i*) धनेश सूर्य की लाभेश शुक्र के साथ दशम में युति है।

(*ii*) धनेश-लाभेश नियंत्रक मंगल, लाभस्थ होकर, धन तथा पंचम भाव को देख रहा है।

(*iii*) नवमेश गुरु लग्न में उच्चस्थ होकर पंचम और नवम भाव को देख रहा है।

जन्म कुंण्डली

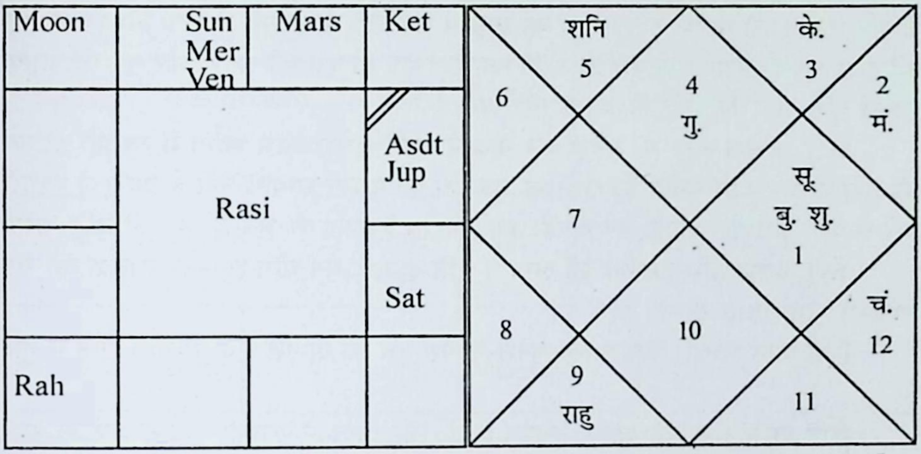

मौहम्मद अली जिन्ना

(*i*) धनेश सह लाभेश गुरु की पंचमेश बुध और भाग्येश शुक्र के साथ भाग्य स्थान में युति है।

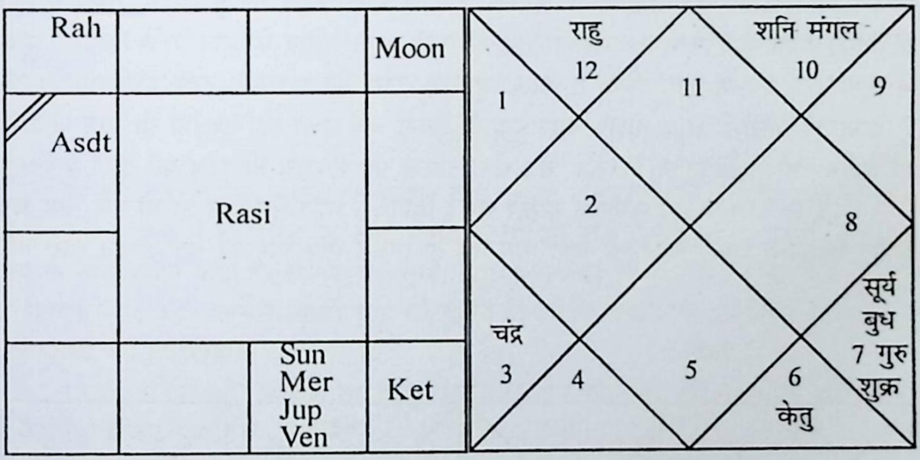

(*ii*) पंचमेश बुध की स्वगृही भाग्येश के साथ भाग्य स्थान में युति है।

(*iii*) धनेश की गुरु की भाग्य स्थान में भाग्येश और पंचमेश के साथ युति तथा पंचम भाव पर दृष्टि है।

(*iv*) चंद्र कुण्डली में लाभेश मंगल लाभ तथा धन भाव को देखता है। पंचम भाव अपने स्वामी से युक्त होने के कारण बली है।

पराधीन भारत में इन दो व्यक्तियों का नाम धनी व प्रतिष्ठित जन के बीच आदर से लिया जाता था।

13.5 धनेश या लाभेश की व्ययेश के साथ युति धन योग को थोड़ा दुर्बल बनाती है। ऐसा जातक बहुत अधिक धनी शायद नहीं बन पाता। कारण 6, 8, 12 भाव के स्वामी अशुभ व अनिष्टप्रद होते हैं। धन देने वाले ग्रहों का उनसे सम्बन्ध धन में कमी दे सकता है।

13.6 गुरु तथा बुध का धनेश से दृष्टि-युति सम्बन्ध धन दिया करता है। गुरु धन तो बुध व्यापार का कारक है इन दोनों का सम्बन्ध धन भाव के स्वामी से होना निश्चय ही धन की वृद्धि करेगा। मतान्तर से बुध तो संगति का फल देता है। बुध की धनेश और धन के कारक गुरु से युति, बुध की दशा को धन प्रदायक बना देगी।

13.7 लग्नेश लग्न में, धनेश धन भाव में तथा लाभेश लाभ स्थान में स्वगृही हो तब भी उत्कृष्ट धन योग बनता है। ध्यान रहे, इन ग्रहों का परस्पर सम्बन्ध नहीं है किन्तु ये स्वगृही होने से बली और योग कारक बन गए हैं। अत: सादृश्य सिद्धान्त के अनुसार धन की वृद्धि करेंगे।

13.8 धनेश और लाभेश की लग्न में युति उत्कृष्ट धन योग बनाकर जातक को धन सम्बन्धी सुख दिया करती है।

सिंह लग्न चौधरी बंसीलाल : धनेश-लाभेश बुध की लग्नेश सूर्य के साथ लग्न में युति है।

सिंह लग्न राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा : सिंह लग्न में स्वगृही लग्नेश सूर्य के साथ धनेश-लाभेश बुध की युति है।

13.9 कारक ग्रह का सम्बन्धित भाव में बैठना भाव सम्बन्धी फल में कमी देता है। अन्य शब्दों में नवम भाव में सूर्य पिता सम्बन्धी सुख में कमी, चतुर्थ भाव में चंद्रमा माता के सुख में कमी, तृतीय भाव में मंगल भाई के सुख में कमी, सप्तम भाव में शुक्र पत्नी सम्बन्धी सुख में कमी तथा धन या लाभ स्थान में कारक गुरु या चंद्रमा भी धन की कमी दे सकता है। इस सिद्धान्त को **कारको भाव नाश :** कहा गया है। किन्तु यदि उक्त ग्रह स्वक्षेत्री या मित्र क्षेत्री हो तो अशुभ नहीं होगे। इसके विपरीत, शत्रु क्षेत्री कारक ग्रह निश्चय ही भाव की हानि करेंगे।

13.10 यदि चंद्रमा सप्तमेश होकर धन (द्वितीय) भाव में स्थित हो तो इसे नष्ट धन प्राप्ति का योग जानें। ध्यान रहे, षष्ठ भाव चोर तो सप्तम भाव चोर का धन अर्थात चोरी गया धन है।

मकर 13

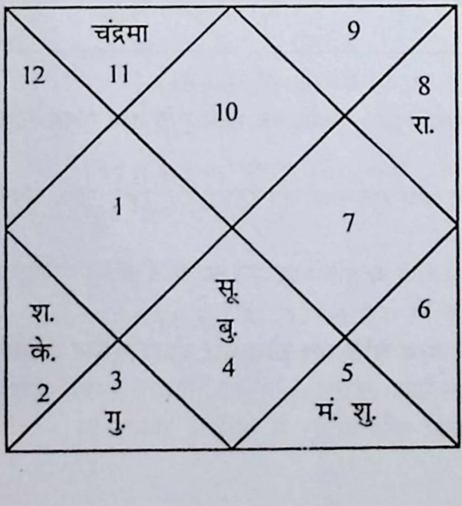

मकर 24

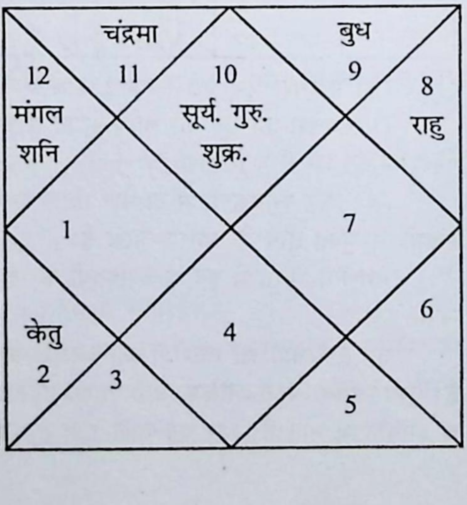

		Sat Ket	Jup
Moon	Capriconrn 13 Rasi		Sun Mer
Asdt	Shri P.D. Tandon		Mars Ven
	Rah		

Mars Sat		Ket	
Moon	Capriconrn 24 Rasi		
Asdt	Waheeda Rehman		
Mercury	Rah		

सप्तमेश की सप्तम से अष्टम (मृत्यु) भाव में स्थिति चोर के धन का नाश दर्शाती है। पुनः सप्तमेश (चोरी हुए धन) का पृच्छक के धन भाव में बैठना धन वापसी या खोए धन की प्राप्ति का संकेत देता है। **मकर 13 श्री पुरुषोत्तम दास टंडन** का सप्तमेश चंद्रमा धन भाव में अपने स्वामी शनि और लाभेश मंगल से दृष्ट है। कदाचित जातक ने विवाह के उपरान्त धन, मान और यश पाया। **मकर 24 अभिनेत्री वहीदा रहमान** का चंद्रमा सप्तमेश होकर धन भाव में स्थित है तो धनेश शनि की लाभेश मंगल के साथ युति और भाग्य स्थान पर दृष्टि है।

2. निर्धनता

13.11 यदि लग्नेश, सुखेश (चतुर्थेश) तथा भाग्येश (नवमेश) की **अष्टम भाव में युति** हो तो व्यक्ति जन्म से ही **दरिद्र या अर्थ संकट से पीड़ित** होता है। विद्वानों ने अष्टम भाव को मृत्यु या नाश स्थान कहा है। लग्नेश देह सुख, चतुर्थेश मन का या घर परिवार का सुख सन्तोष तो भाग्येश पिता और भाग्य सम्बन्धी सुख को दर्शाते हैं। इसका अष्टम भाव में बैठना निश्चय ही अर्थ संकट को बढ़ाएगा।

13.12 **धनेश और व्ययेश का स्थान परिवर्तन** धन की कमी और **व्यय की अधिकता** से आर्थिक संकट देता है।

13.13 व्ययेश लग्न में बैठकर मारकेश (2L–7L) की दृष्टि पाए तथा धनेश व्यय भाव में बैठे तो इसे निर्धनता या अर्थाभाव का संकेत जाने। कारण–द्वादश भाव हानि या कमी का भाव है। उसमें धनेश का बैठना धन की कमी देगा। पुनः व्यय भाव के स्वामी का लग्न या देह सुख में बैठना भी व्यय सम्बन्धी चिन्ता देगा। मारक भाव के स्वामी की लग्न पर दृष्टि भी सुख वैभव की कमी दर्शाती है

13.14 पंचमेश षष्ठभाव में तथा भाग्येश अष्टमस्थ हो कर यदि मारक ग्रह की दृष्टि पाए तो जातक निर्धन होता है। ध्यान रहे, **त्रिकोण भाव के स्वामी** धन को दर्शाते हैं किन्तु इनका **दुःस्थान में** बैठना निश्चय ही धन के लिए **अनिष्टप्रद** है। मारक ग्रह जिस भाव या भावेश से दृष्टि युति करे उसके सम्बन्ध में अनिष्ट फल दिया करता है। यह तथ्य ज्योतिष प्रेमियों के लिए अनजाना नहीं है। अतः धन का अभाव या आर्थिक संकट होना सुनिश्चित है।

13.15 (1) धन योग 2L का 5L, 9L या 11L से अथवा 2L, 5L, 9L, 11L का परस्पर सम्बन्ध धन-वैभव और मान-प्रतिष्ठा देता है।

(2) व्ययेश के साथ धनेश या लाभेश का सम्बन्ध धन की कमी देता है।

(3) (गुरु+बुध) का परस्पर सम्बन्ध धन व प्रतिष्ठा देता है।

(4) लग्नेश 1H + 2H में 2L + 11H में 11L = धन व सुख प्राप्ति।

(5) लग्न (2L + 11L) = धन सम्बन्धी सुख।

(6) 7L चंद्रमा यदि 2H में होने नष्ट धन का लाभ जानें।

(7) 8H में (1L + 4L + 9L) की युति आर्थिक संकट देती है।

(8) 2L तथा 12L का राशि परिवर्तन व्यय भार बढ़ाता है।

(9) लग्न में 12L पर मारकेश 2L/7L की दृष्टि + 2L भी 12H में हो = निर्धनता या अर्थ संकट।

(10) (6H में 5L + 8H में 9L) पर 2L/7L की दृष्टि-युति हो तो इसे आर्थिक संकट या निर्धनता का योग जानें।

अध्याय - 14

विद्या विचार

14.1 (*i*) शुक्र चतुर्थगो यस्य गान विद्या विशारदः।

शुक्र यदि चतुर्थ अर्थात मन के भाव में हो तो जातक की गायन विद्या में सहज रुचि होती है और वह गाने में निपुण होता है।

(*ii*) चतुर्थस् सोमसुतो ज्योतिषशास्त्र विशारदः।

चतुर्थ भाव में चंद्रमा के पुत्र बुध की स्थिति जातक को ज्योतिप शास्त्र में दक्षता देती है।

टिप्पणी—चतुर्थ भाव मन और मन की भावना या रुचि को दर्शाता है। उसमें जैसा भी ग्रह होगा जातक का मन भी वैसा ही हो जाएगा। शुक्र गीत-संगीत, अभिनय, माडलिंग व रूप-सज्जा का कारक है। अत: जातक की इन क्षेत्रों में स्वाभविक रुचि होगी। बुध बुद्धि, विद्या, हास-परिहास, पठन-पाठन, व्यापार, विज्ञापन, मंडी विश्लेपण का भाव है। अत: जातक इन कार्यों में रुचि होने से सहज ही दक्षता पा लेता है।

14.2 रविर वा बुध राहुर वा पंचम स्थान संस्थिताः
ज्योतिर् विद्या प्रवीण स्याद् विषवैद्य वरो भवेत् ॥ 2 ॥

सूर्य+बुध या राहु पंचम भाव (बुद्धि, विद्यास्थान) में होने पर कोई जातक ज्योतिषी तो कोई विष चिकित्सक बनता है। ध्यान रहे, त्रिकोण भाव लक्ष्मी स्थान है। इसमें बैठे ग्रह धन प्राप्ति का साधन बनते हैं। पुन: चतुर्थ भाव यदि मन है तो पंचम भाव बुद्धि, विवेक और स्मरण शाक्ति का भाव है। सूर्य और राहु, दोनों का सम्बन्ध चिकित्सा शास्त्र व रोग निवारण के उपाय से है। कभी सूर्य+बुध का योग जातक को तर्क कुशल बनाकर अन्तरिक्ष विज्ञान में रुचि देता है तथा सफल भविष्य वक्ता अथवा ज्योतिपी बनाता है।

14.3 (*i*) द्वितीय भाव में सूर्य और बुध की युति जातक को गणित में कुशलता प्रदान कर ज्योतिष विद्या में दक्षता देती है।

(सूर्य+बुध) 2II = ज्योतिषी

(*ii*) दितीय भाव में सूर्य और बुध की युति पर शनि की दृष्टि जातक को गणित या सांख्यिकी (Statistics) में निपुण बनाती है।

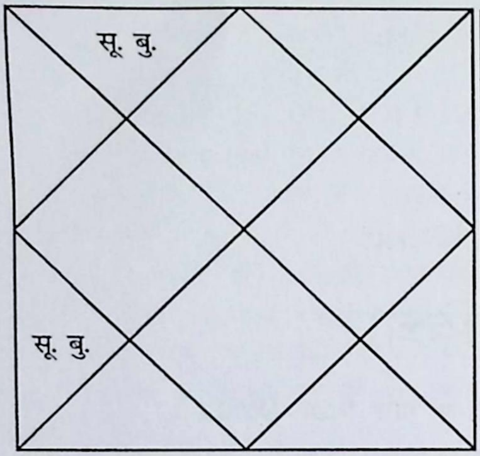

ज्योतिषी

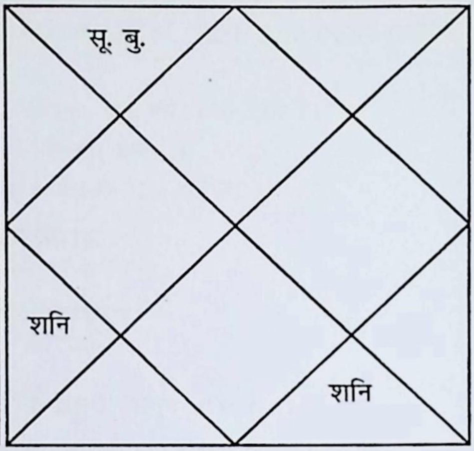

गणित व सांख्यिकी में दक्षता

टिप्पणी:–

चतुर्थ भाव मन, माता, भावनाएँ (emotions) तथा संस्कारों का प्रतिनिधि है। **पंचम भाव** बुद्धि, स्मरण शक्ति, विचार, तर्क, निश्चय व निर्णय करने की क्षमता, मेधा या विवेक है। **द्वितीय भाव** पंचम का कर्म स्थान है तो चतुर्थ का लाभ भाव है। परिवार में परम्परागत व्यापार, विशिष्ट दक्षता व धन का विचार तो द्वितीय भाव से किया जाता है। किन्तु जो विद्या जातक के व्यक्तित्व का अंग बन जाए, वाणी में बस जाए, वह विद्यारूपी सच्चा धन भी द्वितीय भाव से ही विचारणीय है। अतः यहाँ द्वितीय भाव में बने योगों से **श्री रामानुजाचार्य** ने विद्या सम्बन्धी विचार किया है।

14.4 (*i*) **(सूर्य +मंगल) 2H = तर्कशास्त्री**

(*ii*) **(सूर्य + बुध + शनि) 5H = वेदान्ती**

ध्यान रहे, द्वितीय भाव वाणी है तो पंचम भाव देवोपासना का भाव है। पुनः सूर्य आत्मा, बुध, बुद्धि मेधा तो शनि वैरागी व दार्शनिक प्रवृत्ति का है। इसी से पंचम भाव में सूर्य, बुध, शनि जातक को वेदान्त मर्मज्ञ व अध्यात्मवादी बनाती है। सूर्य राजा है, शासक होने से सर्वोपरि है तो मंगल प्रहार क्षमता व संघर्ष या स्पर्धा शक्ति का प्रतीक है। वाणी स्थान में सूर्य मंगल की युति होने पर जातक वाणी का प्रयोग शत्रु को पराजित करने के लिए करता है।

14.5 (*i*) **बुध भानु केन्द्र कोण लाभस्थो गणको भवेत्**

(*ii*) **द्वितीयस्थौ यदि भृगुः कविता धर्ममश्नुते ॥ 5 ॥**

(*i*) सूर्य और बुध यदि केन्द्र, त्रिकोण या लाभस्थान में बैठकर परस्पर सम्बन्ध करें तो मनुष्य गणक (गणितज्ञ या **कम्प्यूटर विशेषज्ञ**) होता है।

(*ii*) द्वितीय (वाणी) स्थान में बैठा शुक्र जातक को **आशुकवि** (तुरन्त कविता बनाने में सक्षम) बनाता है।

14.6 (*i*) **सैंहिकेय : पंचमस्थ गूढ़भावार्थ वित्भवेत ।**
(*ii*) **चतुर्थस्थ सैंहिकेयः जननीः आयुष्मती भवेत् ॥ 6 ॥**

(*i*) राहु यदि पंचम भाव में हो तो जातक गूढ़ व जटिल भावों को समझने में सक्षम अथवा गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता होती है। ध्यान रहे, अष्टम भाव गूढ़ रहस्य या अलौकिक विद्या का भाव है तो पंचम भाव अष्टम का कर्म स्थान है। आधुनिक शोधकर्ताओं ने **पंचमस्थ राहु को कंप्यूटर ज्ञान के लिए बहुत उपयोगी** पाया है। जिसके पंचम भाव में राहु की दृष्टि युति हो कम्प्यूटर में उस जातक की सहज रुचि हुआ करती है।

(*ii*) चतुर्थ भाव में बैठा राहु (राहु का प्रभाव शनि सरीखा होने से) माता को दीर्घ जीवी बनाता है।

14.7 **द्वितीयस्थो यदि गुरुः वेदवेदांग पारगः ।**
स्वोच्च स्वक्षेत्र युक्तश्चत् भवेद् एवं न संशयः ॥ 7 ॥

द्वितीय भाव में दर्शनशास्त्र, धर्म व अध्यात्म के कारक गुरु की स्थिति जातक को **वेद-वेदांग में पारंगत** बनाती है। यदि यह गुरु अपनी उच्च राशि कर्क या स्वराशि धनु या मीन में हो तब तो उसके दर्शनिक होने में कुछ भी सन्देह नहीं होगा।

14.8 यदि द्वितीयेश और गुरु केन्द्र या त्रिकोण स्थान में हो तो जातक अनेक विषयों का ज्ञाता और सभा में मान-सम्मान पाने वाला प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

ध्यान रहे–गुरु गहन अध्ययन, मनन-चिन्तन में रुचि देकर, जातक के ज्ञान को गम्भीर व गहनता देता है तो द्वितीयेश वाणी को सक्षम व प्रभावी बनाता है। केन्द्र स्थान विष्णु स्थान व्यापकता व जनाश्रय दर्शाते हैं तो त्रिकोण भाव लक्ष्मी स्थान होने के कारण धन, यश व कीर्ति देते हैं।

14.9 **द्वितीयस्थो यदि कुजस् तर्कशास्त्र विशारदः।**
तत्रैव च भवेद् इन्दुः सूत्रज्ञो यजको भवेत् ॥ 9 ॥

द्वितीय भाव में बैठा मंगल जातक को **तर्क कुशल** बनाता है। ऐसा जातक अपने अकाट्य तर्कों से शत्रु की बोलती बन्द कर देता है।

इसी द्वितीय भाव चंद्रमा की स्थिति जातक को धार्मिक अनुष्ठान, पूजा-पाठ, हवन में निपुणता देकर कर्मकांडी बनाती है।

टिप्पणी–कुछ विद्वान द्वितीयस्थ चंद्रमा को गीत, संगीत से जोड़ते हैं। कहीं पर चंद्रमा को तपस्वी भी कहा गया है। जातक पारिजात में यज्ञ का सम्बन्ध बुध और गुरु से जोड़ा है। सम्भवत आचार्य रामानुज का 'आशय' द्वितीयस्थ चंद्रमा यदि गुरु की दृष्टि पाए तो जातक यज्ञकर्ता होता है, यह बात कहने की रही हो।

14.10 (*i*) **द्वितीयस्थो यदि भृगुः काव्यालंकार शास्त्रवान् ।**
(*ii*) **तत्रैव स्याद् यदि शनिर् मूढ़ो दुष्टो भवेद् ध्रुवम् ॥ 10 ॥**

(*i*) द्वितीय स्थान में शुक्र होने पर जातक **कविता तथा अलंकार** शास्त्र का ज्ञाता होता है।

(*ii*) यदि द्वितीय भाव में शनि, (शुभ ग्रह की दृष्टि-युति से वंचित तथा पाप पीड़ित) हो तो जातक दुष्ट और मूर्ख होता है।

14.11 श्री रामानुजाचार्य ने विद्या विचार को मात्र 10 श्लोकों में समेट कर अपनी अद्भुत क्षमता का उदाहरण दिया है। विभिन्न योगों को तालिकाबद्ध किया जा रहा है।

श्लोक संख्या	योग का विवरण	परिणाम
1.	(अ) चतुर्थ भाव में शुक्र (ब) चतुर्थ भाव में बुध	गायन में निपुणता ज्योतिष में दक्षता
2.	पंचम भाव में सूर्य, बुध या राहु	विष चिकित्सक व ज्योतिषी
3.	(अ) द्वितीय भाव में सूर्य तथा बुध (ब) द्वितीयस्थ सूर्य, बुध पर शनि की दृष्टि भी हो तो	ज्योतिष विद्या में निपुण गणितज्ञ या कम्प्यूटर का ज्ञाता
4.	(अ) द्वितीय भाव में सूर्य तथा मंगल (ब) पंचम भाव में सूर्य तथा बुध	तर्क कुशल वेदान्त शास्त्री
5.	(अ) सूर्य, बुध केन्द्र, त्रिकोण या लाभ में (ब) द्वितीय भाव में शुक्र	गणक, कम्प्यूटर का ज्ञाता कवि
6.	(अ) पंचम भाव में राहु (ब) चतुर्थ भाव में राहु	मातादीर्घायु गूढ़ विषयों का ज्ञाता
7.	(अ) द्वितीय भाव में गुरु (ब) द्वितीयस्थ गुरु उच्चस्थ या स्वगृही	वेद वेदांग का ज्ञाता धर्म व अध्यात्मवेत्ता
8.	केन्द्र या त्रिकोण में, गुरु+ द्वितीयेश	सभा में आदर पाने वाला विद्वान
9.	(अ) द्वितीय भाव में मंगल (ब) द्वितीय भाव में चंद्रमा	तर्कशास्त्री पूजा और हवन कराने वाला
10.	(अ) द्वितीय भाव में शुक्र (ब) द्वितीय भाव में शनि	काव्य और छंद अलंकार का ज्ञाता दुष्ट और मूर्ख

अध्याय - 15

खान-पान

यूँ तो खान-पान का सम्बन्ध द्वितीय भाव से होता है किन्तु भावात् के कारण कभी तीसरे भाव से भी द्वितीय भाव के कारकत्व का विचार होता है। यही बात नीचे कही गई है।

15.1 तृतीयस्थो भवेन् मन्दः तृतीयेश युतो अपि वा
पश्यन्नपि तृतीयं च कटु वाअम्ल द्रव्य भुक्त भवेत ॥

यदि (*i*) शनि तृतीय भाव में स्थित हो या (*ii*) तृतीयेश के साथ शनि की युति हो अथवा (*iii*) तृतीय भाव पर शनि की दृष्टि हो तो जातक कटु या अम्ल (खट्टे) पदार्थों को खाने वाला होता है।

टिप्पणी–विज्ञ पाठक इस योग का विचार द्वितीय भाव या द्वितीयेश से शनि की दृष्टि युति में भी कर सकते हैं। जहाँ अन्य विद्वानों ने शनि को कसैला माना है, वहाँ **श्री रामानुजाचार्य** ने शनि को कटु व अम्ल क्यों कहा, यह बात गहन चिन्तन की अपेक्षा रखती है।

कटुश्च लवणस् तिक्तो मिश्रितो
मधुरो अम्लकः। कषाय : क्रमशो ज्ञेयाः
सूर्यादी नामिमे रसाः। (अध्याय 3: 35 वृ.पा. हो.शा.)

सूर्य कटु, चन्द्रमा नमकीन, मंगल तिक्त मिर्चीवाला, बुध मिश्रित (अनेक रसों का मेल), गुरु मीठा, शुक्र खट्टा तो शनि कसैले स्वाद का स्वामी है। विद्वानों ने विभिन्न ग्रहों का सम्बन्ध इन रसों के साथ जोड़ा है।

15.2 (*i*) तृतीये तु स्थितो भौमः उष्णद्रव्यप्रियो भवेत्
(*ii*) तत्र स्थितो वाक्पतिश्च एत्सात्विक द्रव्य भुक्तभवेत् ॥ खानपान 2 ॥

(*i*) तृतीय भाव (3H) में स्थित मंगल जातक को गरम वस्तुएँ खाने का शौकीन बनाता है।

(*ii*) तृतीय भाव में गुरु होने से जातक सात्विक पदार्थों के भोजन में रुचि होता है।

उदाहरण स्वामी शिवानन्द–का गुरु तृतीयेश होकर लग्न में स्थित है तथा पंचम भाव में लग्नेश और नवम भाव में चंद्रमा को देख रहा है।

स्वामी स्वरूपानन्द–के तृतीय भाव पर नवमस्थ गुरु की दृष्टि है। **स्वामी विवेकानन्द** का तृतीय भाव लाभस्थ गुरु से दृष्ट है।

स्वामी प्रभुपाद–(मकर लग्न) का तृतीयेश गुरु स्वगृही सूर्य से युति कर द्वितीय भाव को देख रहा है।

15.3 द्वितीय भाव में यदि शुक्र हो तो जातक विलासप्रिय और खान पान का शौकीन होता है। कोई जातक काम सुख लोभी या व्यभिचारी होता है।

15.4 (*i*) **द्वितीयस्थो यदि शनिर् मन्द वाग् लोभवान भवेत्**

(*ii*) **द्वितीयस्थो केतु गुरु व चतुर्निपुणो भवेत्। (खानपान 4)**

(*i*) द्वितीय भाव में शनि होने पर कटु, कठोर व कर्कश वाणी बोलता है। वह थोड़ा या आधे-अधूरे वाक्य बोलता है।

(*ii*) **द्वितीय भाव में गुरु या केतु की स्थिति जातक को वार्ता कुशल बनाती है।** उसकी बातें सारगर्भित व तथ्यपरक होती हैं।

टिप्पणी–(*i*) शनि एक पाप ग्रह है। वह संवेदन शून्य या कठोर हृदय भी है। ऐसा जातक कभी धीमी गति से अटक-अटक कर अथवा कठोर या कटु बातें कहता है।

(*ii*) कुज वत् केतु होने से द्वितीयस्थ केतु जातक को तर्क कुशल बनाता है। गुरु ज्ञान का अथाह भंडार है। अतः ऐसा जातक ज्ञानपूर्ण बातें कर सभी को प्रभावित करता है।

15.5 (*i*) द्वितीय भाव में सूर्य मंगल की युति जातक की वाणी में क्षोभ व कटुता देती है। कारण, सूर्य और मंगल, दोनों ही अग्नि तत्व ग्रह हैं। कभी तो ऐसा जातक वाणी से अपने भीतर की आग उगला करता है। 2H में (सूर्य+मंगल) = वाणी में क्षोभ/कटुता

(*ii*) द्वितीय भाव में चंद्रमा स्थित होने पर जातक बातूनी होता है। कभी तो उसकी बातें बेसिर-पैर की, तथ्य से परे, अफवाह सरीखी भ्रम बढ़ाने वाली होती है।

मतान्तर से द्वितीयस्थ चंद्रमा जातक को संवेदनशील बनाता है। वह लोगों की प्रसन्नता के लिए झूठी तसल्ली दिया करता है किन्तु उसके मन में किसी प्रकार की कालिमा नहीं होती।

15.6 (*i*) **द्वितीयस्थ सोम सुतो भुक्ति युक्त वचो भवेत् ।**

(*ii*) **तत्रैव संस्थितो राहुः वाक्क्षु दीनत्वमुच्यते ॥**

(*i*) बुध यदि द्वितीय भाव में हो तो जातक तथ्य, साक्ष्य व प्रमाणों के साथ अपनी बात करता है। उसकी बातें सत्य, तथ्यपरक व युक्तियुक्त होती हैं। आँकड़े एकत्रित करके उनका विश्लेषण कर, परिणाम निकालने में मानो वह सिद्धहस्त होता है।

(*ii*) द्वितीय भाव में स्थित राहु वाणी में दीनता देता है। जहाँ बुध तथ्य परक व तर्क संगत है इसके विपरीत राहु चतुर, कपटी तथा दूसरों में दया भाव या करुणा जगाकर अपनी बात मनवा लेता है।

उदाहरणः-द्वितीयस्थ राहु

(*i*) वृश्चिक लग्न कुण्डली संख्या 7 फिल्म **अभिनेता धर्मेन्द्र** का राहु धनु राशि का होकर द्वितीय भाव में है।

(*ii*) वृश्चिक 14 गारफील्ड **सोबर्स क्रिकेटर** का द्वितीयस्थ राहु अष्टम भाव में बैठे लग्नेश मंगल से दृष्ट है।

(*iii*) वृश्चिक 20 **लिओनार्डो दा विन्सी** (चित्रकार) के द्वितीय भाव में राहु है तो द्वितीयेश गुरु की सुख स्थान में भाग्येश चंद्रमा के साथ युति है।

(*iv*) **कैलाश खुर्जा** वृश्चिक 30 का राहु द्वितीय भाव में है तो द्वितीयेश गुरु लग्न में बैठकर स्वगृही सुखेश शनि से दृष्टि हैं।

15.7 (*i*) **द्वितीयस्थो यदि कविः क्षीरभक्ष्यादि भुक् भवेत्।**

(*ii*) **तत्रस्थो राहु केतु वै समयोचित भूक् भवेत् ॥ (खानपान 7)**

(*i*) द्वितीय भाव में यदि शुक्र हो तो जातक खीर खाने वाला होता है। शुक्र सुख वैभव और समृद्धि का प्रतीक है। अतः भोजन में भी दूध, घी व खोए के बने मिष्ठान में इसकी सहज रुचि होती है। खीर उच्च कोटि का भोजन स्वीकारते हुए श्री रामानुजाचार्य ने ऐसे जातक को खीर-प्रेमी कहा है।

(*ii*) द्वितीय भाव में यदि राहु हो तो जातक बिना किसी पूर्वाग्रह या संकोच के समयानुसार अच्छा बुरा सभी प्रकार का खाना खाने वाला होता है।

ध्यान रहे, शुक्र सुसंस्कृत व परिष्कृत रुचि वाला जल प्रधान ग्रह होने से उच्चकोटि का भोजन पसन्द करता है किन्तु राहु केतु आसुरी प्रकृति के होने से निन्द्य व हीन भोजन भी बेहिचक स्वीकारते हैं।

15.8 **द्वितीयस्थो यदि शनिः शूद्रान्नं कुत्सितों धनम् ।**

उच्छिष्टान्नं च श्राद्धान्न जातो ह्यन्ति न संशयः । 8

द्वितीय भाव में यदि शनि हो तो अल्पमोली हीनश्रेणी का सेवकों के योग्य भोजन खाता है। कभी तो वह दूसरों की थाली का जूठा भोजन या श्राद्ध आदि में दान दिए गए भोजन पर आश्रित होता है।

टिप्पणी—ग्रह परिषद में शनि को सेवक या दास कहा गया है। यूँ भी शनि दीन-हीन व अभावग्रस्त दरिद्र लोगों का प्रतिनिधि है। वह बहुधा घटिया क्वॉलिटी का सस्ता भोजन करता है तो कभी शूद्र या ब्रह्मभोज उच्छिष्ट भोजन में रुचि लेता है।

15.9 ग्रहों की स्वाद तालिका

ग्रह	रुचि	सारावली	उ.का.
सूर्य	कड़वा	कटु	कटुता
चंद्रमा	नमकीन	लवण	खारी या नमकीन
मंगल	तीखा (मिर्ची) तिक्त	तिक्त	तिकत (मांस भक्षण)
बुध	मिश्रित	मिश्र	मिश्रित वस्तुएँ
गुरु	मीठा	मधुर	मृदु (मीठा) ।
शुक्र	खट्टा	अम्लीय	खटाई व नमकीन
शनि	कसैला	कषाय	तामस गुण (विष)
राहु	आसुरी भोजन	मादक पदार्थ	मादक पदार्थ
केतु	बासी मिष्ठान	केक पेस्ट्री आदि	

15.10 ग्रहों की दिशा

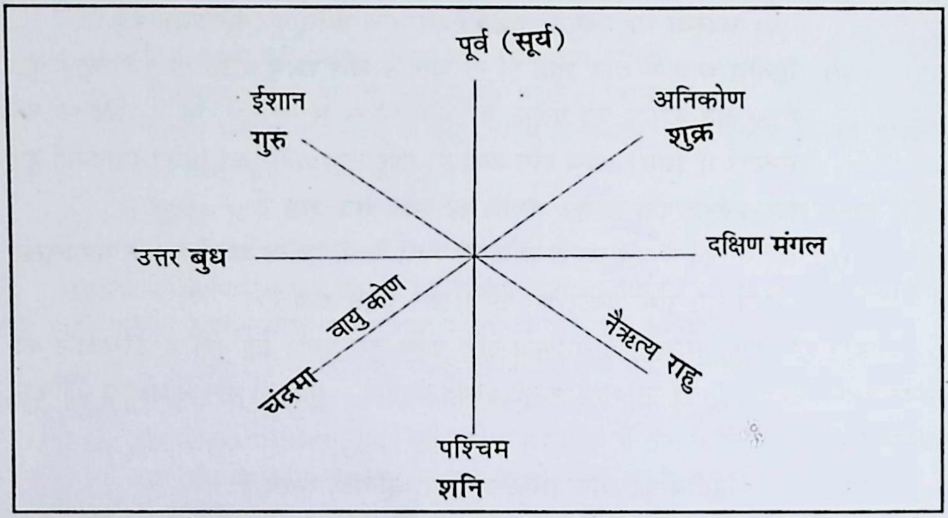

15.11 केन्द्रस्थिता मन्द निशाकरः आर्क जडो भवेदत्र मधु उपभोक्ता (जातक परिजात 6:81)

यूदि सूर्य, चन्द्रमा और शनि केन्द्र स्थान में हो तो मनुष्य **मदिरा का सेवन** करने वाला जड़ बुद्धि होता है।

यदि कभी द्वितीय भाव, द्वितीयेश तथा भोजन के नैसर्गिक कारक चंद्रमा पर राहु तथा शनि की दृष्टि युति हो तो भी जातक मद्यप या **मदिरापायी** होना सम्भव है।

15.12 समीक्षा

(1) आहार का संयम जातक के मन-मस्तिष्क के विकास के लिए आवश्यक है।

(2) हमारे ऋषियों ने आहार को अच्छे आचार-विचार की आधार शिला माना है।

ग्रह	रुचि (भोजन)	वाणी
सूर्य	कटु	नीति, न्यायपूर्ण धर्म संगत बातें।
चंद्र	नमकीन	बातूनी, संवेदनशील
मंगल	गरम व मिर्च मसाले वाला	क्षोभ व कटुता पूर्ण बातें
बुध	अनेक रसों का में खट्टा मीठा	तथ्यपरक व आंकड़े देकर बात कहने वाला
गुरु	मिष्ठान्न, मीठा, सात्विक पदार्थ	सारगर्भित ज्ञान युक्त बातें
शुक्र	खट्टा, खटाई युक्त (खीर प्रेमी)	विलास प्रिय, सरस बातें
शनि	कटु अम्लीय, कसैला	कटु, कठोर/कर्कश वाणी
राहु	सर्वभक्षी, हीन भोजन	दीनता पूर्ण वाणी
केतु	जंक फूड बासी खाद्य पदार्थ	तर्क निपुण, ज्ञान युक्त

अध्याय - 16

भ्रातृ-भाव

16.1 तृतीयेश या 3L का मंगल के साथ दृष्टि युति सम्बन्ध **बल पराक्रम** तथा भाइयों **की वृद्धि** दर्शाता है। (3L + मंगल) = बल पराक्रम

16.2 **(3L + सूर्य + मंगल) की युति 3H** में होने पर जातक **धैर्यवान और साहसी** हुआ करता है।

16.3 राहु या केतु 3H में बैठकर जातक को साहसी बनाते हैं किन्तु राहु या केतु की बुध के साथ तीसरे भाव में युति जातक को अधीर व भीरु बनाती है।

16.4 यदि तीसरा भाव निर्बल हो किन्तु कारक **मंगल का गुरु** से दृष्टि-युति **सम्बन्ध** हो तो **भाइयों की संख्या अधिक** होती है।

16.5 (*i*) गुरु यदि 11H में हो तो बड़े भाई को दुःख होता है।

(*ii*) **11H में मंगल पर शनि की दृष्टि** हो तो बड़े **भाई का अभाव** जानें।

(*iii*) **3L का 8H में बैठना भाइयों को जीवन भय** देता है।

16.6 (*i*) 10L यदि 3H में हो तो **सत्ता सुख में कमी** देता है।

(*ii*) (3L +2L) की युति उदार व **परोपकारी** बनाती है।

16.7 2L के साथ शनि का दृष्टि युति सम्बन्ध जातक को **कृपण व लोभी** बनाता है। 3L शुभ ग्रह की दृष्टि युति पाकर यदि दुः स्थान अर्थात 6H, 8H, 12H में हो तो **छोटे भाई की आयु में कमी** होती है।

अध्याय - 17

वाहन तथा भाग्य

17.1 (4L+9L) की युति लग्न में होने पर जातक भाग्यशाली और वाहन सुखी होता है। गुरु को सुख का कारक जानें। उस गुरु की चतुर्थ भाव में स्थिति या दृष्टि सुख की वृद्धि करती है। 4H पर गुरु की दृष्टि युति शुभ है। **(4L+गुरु) की युति, केन्द्र या त्रिकोण में** होने से जातक का **जीवन सुखी** होता है।

17.2 (*i*) (4L+शुक्र) 4H में होने पर वाहन सुख उत्तम होता है।

(*ii*) (4L+शुक्र) की युति 9H, 10H या 11H में हो तो श्रेष्ठ वाहन का सुख जानें।

(*iii*) 4L का दृष्टि युति सम्बन्ध चंद्रमा से होने पर बग्घी, तांगा या घोड़ी का सुख जानें। कारण, चंद्रमा घोड़ी है। अत: घोड़ी से चलने वाला वाहन जातक को प्राप्त होगा।

(सन्दर्भ 17.2)

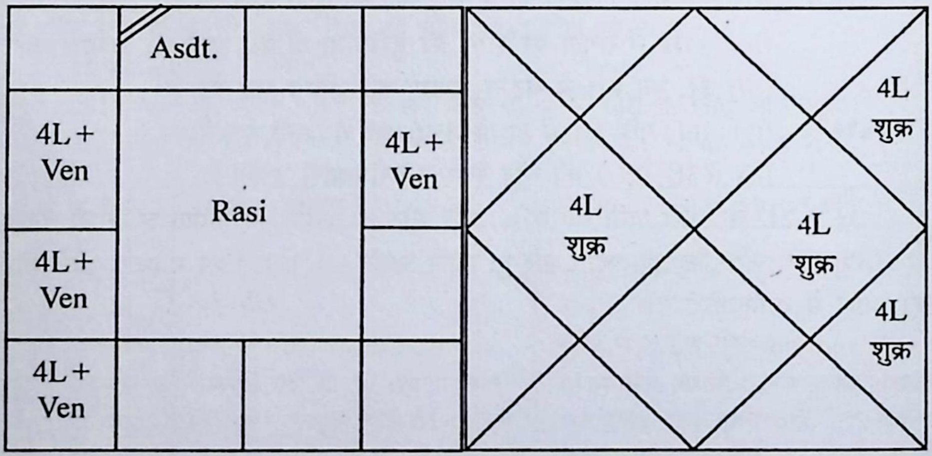

वाहन सुख

17.3 (*i*) कर्क लग्न जातक के 4H में (बुध+ शुक्र) की युति होने पर बुध शुक्र की दशा वाहन लाभ देती है।

(*ii*) गुरु यदि 4H में हो तो घोड़े की सवारी का सुख मिलता है।

(*iii*) शुक्र का 7H में बैठना जातक को कामातुर बनाता है।

(सन्दर्भ 17.3)

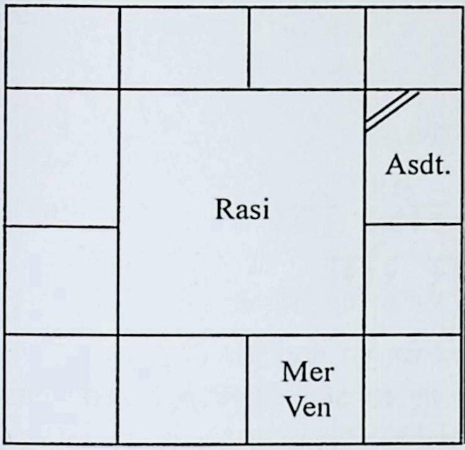

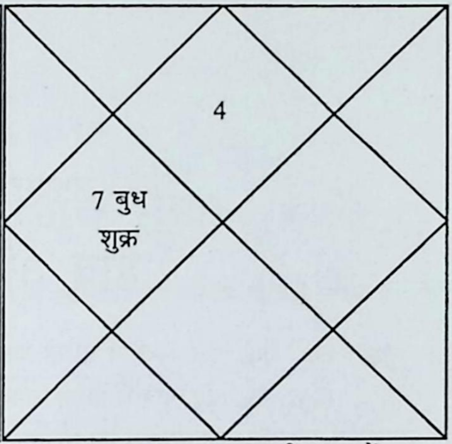

वाहन सुख बुध शुक्र की दशा में।

(*iv*) शनि यदि 4H में हो तो जातक जन्म स्थान छोड़कर परदेस में पुराने या जीर्ण मकान में रहता है। कारण–सूर्य, शनि, राहु तथा 12H (व्ययेश) को विद्वानों ने विच्छेदक या पृथकतावादी ग्रह माना है। ये ग्रह जिस भाव से सम्बन्ध करें उससे पृथकता कराता है। उदाहरण के लिए, 10H तथा 10H पर शनि और राहु की दृष्टि–युति राज्य त्याग का संकेत देती है।

17.4 (*i*) 4L तथा 9L का स्थान परिवर्तन भाग्य और वाहन सम्बन्धी सुख बढ़ाता है।

(*ii*) 4L तथा 11L का स्थान परिवर्तन लाभ और सुख को बढ़ाता है। अन्य शब्दों में चतुर्थभाष के कारकत्व भूमि, भवन, वाहन, मन–माता तथा बन्धु–बान्धव सम्बन्धी सुख की वृद्धि होती हैं। ध्यान रहे, 11L लाभ या वृद्धि का स्थान है। 4L तथा 5L का स्थान परिवर्तन भाग्य और वाहन सुख देता है। कारण–पंचम भाव नवम से नवम होने के कारण भाग्य को ही दर्शाता है।

17.5 (*i*) 4L तथा 1L अर्थात लग्नेश का राशि परिवर्तन भूमि भवन व वाहन का उत्तम सुख दिया करता है।

(*ii*) 5L तथा 11L का राशि परिवर्तन धन, मान तथा वाहन सुख देता है। 4L यदि 4H तथा 5L भी 5H में हो तो जातक बुद्धिमान, विद्वान और वाहन सुख पाने वाला होता है।

(iii) 9L और 1L क्रमशः 9H तथा 1H में स्वगृही हो तो जातक भाग्यशाली और सुखी होता है।

17.6 (*i*) 5L यदि 9H में तथा 9L (अर्थात 5L का नियंत्रक) यदि 10H में हो तो जातक **भाग्यशाली**, श्रेष्ठ आजीविका से युक्त और **वाहन सुखी** होता है।

(*ii*) गुरु का, 5L से दृष्टि युति सम्बन्ध **पुत्र प्राप्ति** का प्रबल योग बनाता है।

(*iii*) पुत्रकारक गुरु, 5L (पंचमेश) तथा 1L (लग्नेश) यदि केन्द्र त्रिकोण भाव में हो तो निश्चय ही इसे **पुत्र प्राप्ति** का शुभ संकेत जानें।

(*iv*) मतान्तर से पंचमेश या कारक गुरु से पंचम या नवम भाव भी पुत्र सम्बन्धी सुख दर्शाता है। अतः गुरु, 5L तथा लग्नेश का केन्द्र या त्रिकोण भाव में बैठना **पुत्र सम्बन्धी** सुख दिया करता है।

अध्याय - 18

शत्रु और रोग

18.1 (*i*) 8L यदि लग्न में हो तो जातक **रोग एवं पीड़ा** पाता है।

(*ii*) 6L यदि लग्न में हो तो जातक शत्रु, **रोग और ऋण** या मातृपक्ष से कष्ट पाता है। यदि लग्नस्थ ग्रह उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री हो तो अशुभ फल नहीं होता।

18.2 (*i*) यदि (1L+6L + सूर्य) की युति हो तो **गर्मी से उत्पन्न रोग** जातक को सताते हैं।

(*ii*) इसी प्रकार लग्नेश तथा षष्ठेश की चन्द्रमा से युति **जलसम्बन्धी रोग** दिया करती है।

(*iii*) (1L+6L+मंगल) की युति घाव, शस्त्र, गाँठ या **माँसपेशियों** के रोग से पीड़ा देती है।

(*iv*) (1L+6L+बुध) की युति पित्त या चेतना सम्बन्धी या **स्नायुविक** रोग देती है।

(*v*) (1L+6L+गुरु) की युति स्वास्थ्य व **आरोग्य** देती है।

(*vi*) (1L+6L+शुक्र) की युति हो तो स्त्री के कारण कष्ट हुआ करता है।

(*vii*) (1L+6L+शनि) की युति चोर या चान्डाल का भय देती है।

(*viii*) (1L+6L+ राहु) की युति सर्प या विष संक्रमण का भय देती है।

(*ix*) (1L+6L+केतु) की युति हिंसक वन्य पशु या दस्यु से कष्ट दर्शाती है।

(*x*) (1L+6L+ 3L+ मंगल) की युति से युद्ध भूमि में मृत्यु जानें।

18.3 (*i*) रोग नाश (स्वास्थ्य लाभ)

षष्ठेश की नीचस्थ ग्रह के साथ व्यय भाव में युति हो किन्तु लग्नेश बली हो तो इसे रोग नाश व **स्वास्थ्य लाभ** का संकेत जानें।

(*ii*) शत्रु से संधि (समझौता)

षष्ठेश की शुभ ग्रह से दृष्टि युति हो और लग्नेश बलवान हो तो **शत्रु से मैत्री** हो जाती है।

अध्याय - 19

स्त्री और काम सुख

19.1 (7L+शुक्र) की युति पर पाप प्रभाव नहीं होने पर जातक दीर्घायु **पत्नी का श्रेष्ठ** सुख पाता है।

19.2 (*i*) यदि सप्तमेश पर पाप ग्रहों की दृष्टि-युति हो।

(*ii*) पाप ग्रह द्वितीय या सप्तम भाव में हो।

(*iii*) शुक्र एकादश भाव (11H) में हो,

(*iv*) शुक्र नीचराशिस्थ अर्थात कन्या राशि में हो

(*v*)सप्तमेश षष्ठ या द्वादश भाव में हो,

(*vi*) लग्न में बैठा पाप ग्रह सप्तम भाव को देखे

तो प्रथम स्त्री की मृत्यु के बाद दूसरी स्त्री से काम सुख प्राप्त होता है।

19.3 दाम्पत्य सुख का कारक शुक्र यदि शनि और मंगल की दृष्टि युति पाकर 2H, 4H, 7H, 8H, या 12H में हो तथा शुक्र हीनबली हो तो जातक पहली पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह करता है। विद्वानों ने इसे **पुनर्विवाह** योग माना है।

19.4 मंगल यदि 2, 4, 7, 8, 12 भाव में हो तथा गुरु कुटुम्ब अर्थात द्वितीय भाव या पत्नी के आयुष्य स्थान में हो तो स्त्री की मृत्यु शीघ्र नहीं होती। अपितु विलम्ब से होती है।

19.5 शनि यदि 2H में तथा राहु 7H में हो तो इसे दो विवाह का योग जानें।

19.6 (2L+7L+शुक्र) की युति 2H या 7H में हो तो जितने शुभ ग्रह इस युति से सम्बन्ध करें उतनी स्त्रियों का सुख जानें किन्तु यदि 2L, 7L तथा शुक्र पाप ग्रहों की दृष्टि युति पाएँ इसे स्त्री सुख-हानि का संकेत जानें। जितने पाप ग्रहों का सम्बन्ध द्वितीयेश सप्तमेश में होगा उतनी स्त्रियों से मृत्यु या विच्छेद होगा। बाद में मात्र एक स्त्री ही बचेगी।

19.7 (शनि+शुक्र) की युति सप्तम भाव (7H) में हो तो जातक अपनी ही पत्नी में आसक्त रहता है। विवाहेतर प्रणय में उसकी प्रवृत्ति नहीं होती।

ध्यान रहे, इन ग्रहों का शत्रु क्षेत्री होना या सूर्य और राहु की दृष्टि पाना परस्पर मतभेद व अलगाव दे सकता है।

19.8 गुरु यदि 7H में हो तो मन के **अनुकूल पत्नी** मिलती है।

19.9 बुध यदि 7H में हो तो जातक का परदारासक्त होना सम्भव है।

19.10 यदि (2L+7L+10L) की युति 4H (चतुर्थ भाव) में हो तो जातक परस्त्रीगामी होता है।

19.11 सप्तम भाव में राहु की स्थिति जातक को रति कुशल बनाती है। वह बुद्धिमान, चतुर, कार्य-कुशल व सक्षम होता है।

19.12 सप्तम भाव में बैठा केतु पत्नी को धूर्त, प्रपंची व कपट, कुशल बनाता है। वह स्वार्थी, लोभी व दुस्साहसी होती है।

अध्याय - 20

आयु और स्वास्थ्य

20.1 धन, सन्तान एवम देह और मानसिक सुख का कारक गुरु यदि लग्न अथवा लग्नेश से दृष्टि युति सम्बन्ध करें तो जातक स्वस्थ व दीर्घायु हुआ करता है।
(गुरु+लग्नेश) = स्वस्थ व दीर्घायु।

20.2 आयुष्य वृद्धि देने वाला शनि यदि अष्टमेश से दृष्टि-युति करें तो जातक दीर्घायु पाता है। **(शनि+8L)= दीर्घायु।**

20.3 अष्टम भाव में स्थित शनि दीर्घायु देता है। **शनि 8H में = दीर्घायु।**

20.4 अष्टमेश की केतु के साथ लग्न में युति आयु में कमी करती है।
(8L+केतु) लग्न में = अल्पायु।

20.5 पिता का नैसर्गिक कारक सूर्य यदि नवमेश से दृष्टि युति करें तो पिता को दीर्घायु जानें।
(सूर्य+9L)= पिता दीर्घायु।

20.6 सूर्य नवम भाव में हो या चंद्रमा चतुर्थ भाव में हो तो **'कारको भाव नाशाय'** के अनुसार पिता या माता की आयु थोड़ी ही जानें।
टिप्पणी : आदरणीय श्री जगन्नाथ भसीन ने **'कारको भाव नाशाय'** को नकारा है। उनका मत है–यदि कारक ग्रह अपने कारकत्व वाले भाव में बैठकर पाप ग्रह की दृष्टि युति पाए तब भाव पर पाप प्रभाव होने से सम्बन्धी फल में कमी देता है। कारक ग्रह की स्थिति से फल में कमी नहीं होती।

20.7 सूर्य की नवम भाव में नवमेश से युति पिता को अल्पायु बनाती है।

20.8 नवमेश का लाभस्थ होना पिता की आयु बढ़ाता है। **9Lका 11H में होना = पिता की दीर्घायु**

20.9 चंद्रमा पर चतुर्थेश की दृष्टि युति माता की आयु बढ़ाती है।

20.10 भ्रातृ कारक मंगल तृतीय भाव में होने पर छोटे भाई की आयु में कमी करता है। **मंगल 3H में = छोटा भाई अल्पायु।**

20.11 तृतीय भाव में गुरु (यदि पाप दृष्ट) हो तो भाई को कष्ट होता है।

20.12 तृतीयेश की गुरु के साथ युति तृतीय भाव में हो तो जातक का मात्र एक भाई होता है। **(3L+ गुरु) 3H = मात्र एक भाई।**

टिप्पणी:

> **'स्थान हानि करो जीवः स्थान वृद्धि करो शनि'**
> गुरु जिस भाव में बैठे उसकी हानि किन्तु जिस भाव को देखे उस भाव के कारकत्व की वृद्धि किया करता है। इसके विपरीत शनि जिस भाव में बैठे उस भाव के कारकत्व बढ़ाता है तथा जिस भाव पर शनि की दृष्टि हो उसका नाश करता है।

20.13 गुरु यदि पंचम भाव में हो तो पुत्र की आयु में कमी करता है। **गुरु 5H=पुत्र अल्पायु।**

20.14 पत्नी का कारक शुक्र सप्तमस्थ होने पर पत्नी की आयु को क्षीण करता है।
शुक्र 7H = दाम्पत्य सुख में कमी।

20.15 चन्द्रमा की चतुर्थेश के साथ नवम, दशम या एकादश भाव में युति माता को दीर्घायु देती है। **(चंद्रमा+ 4L) 9H/ 10H /11H = माता दीर्घायु**

20.16 चतुर्थेश या कोई बली शुभ ग्रह चतुर्य भाव में हो तो माता दीर्घायु होती है।

20.17 माता का नैसर्गिक कारक चंद्रमा यदि पक्षबल में हीन हो अर्थात सूर्य से 72 अंश आगे पीछे या कम दूरी पर पीछे हो तथा शनि की चतुर्थ भाव पर दृष्टि हो तो चंद्रमा व चतुर्थेश की युति भी शुभ फल नहीं दे पाती । दुर्बल चंद्रमा तथा चतुर्थ भाव या चतुर्थेश पर शनि की दृष्टि होने से माता अल्पायु होती है।

(हीनबली चंद्रमा+चतुर्थेश) + चतुर्थ भाव पर शनि की दृष्टि = माता अल्पायु।

अध्याय - 21

भाग्य योग

21.1 (*i*) यदि **नवमेश**, लाभ स्थान में हो अथवा
(*ii*) लाभेश भाग्य स्थान (नवम भाव) में हो या
(*iii*) लाभेश और भाग्येश का परस्पर दृष्टि युति सम्बन्ध हो या
(*iv*) लाभेश और भाग्येश का स्थान परिवर्तन योग हो तो जातक **धनी, मानी और भाग्यशाली** होता है।

21.2 जन्म कुण्डली के चार भावों में ग्रह दो की जोड़ी बनाकर युगल ग्रह के रूप में बैठे तो जातक **भाग्यशाली** होता है।

21.3 यदि 6 ग्रह जोड़े से तीन राशियों में स्थिति हों तो जातक **भाग्यशाली** होता है।

21.4 यदि नैसर्गिक **शुभ ग्रह चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र पाप प्रभाव से मुक्त हो** तो जातक **धनी, विद्वान और भाग्यशाली** होता है।

21.5 **तृतीय षष्ठ लाभेषु स्थिताश्चेत क्रूर**
जातस्य योगो भाग्यस्थ वक्तव्यस्सूरिस्तथा खेचराः ॥ (8: 5)
नैसर्गिक पाप ग्रह सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु यदि त्रिषडाय अर्थात 3, 6, 11 वें भाव में हो तो धन व भाग्य की वृद्धि करते हैं।

टिप्पणी:

अनेक विद्वानों ने त्रिषडाय में क्रूर ग्रहों की स्थिति को शुभ माना है। श्री जगन्नाथ भसीन के अनुसार यदि ये क्रूर ग्रह शुभ भावाधिपति होकर शुभ भावों से दृष्टि सम्बन्ध करें तो निश्चय ही शुभ फल देंगे।

21.6 लग्न से द्वादश भाव में बैठा ग्रह अपने कारकत्व की वृद्धि कर शुभ परिणाम देता है।

टिप्पणी:

मंगल तृतीय भाव का कारक है। (*i*) द्वादश भाव में बैठा मंगल तृतीय भाव से केन्द्र या दशम भाव में होने से शुभ परिणाम देगा। (*ii*) इसी प्रकार चंद्रमा माता या चतुर्थ भाव से नवम भाव में होने के कारण शुभ परिणाम देगा। (*iii*) पिता का कारक सूर्य नवम से चतुर्थ या सुख स्थान में होने से पिता सम्बन्धी सुख बढ़ाएगा। (*iv*) अष्टम भाव का कारक शनि भी, द्वादश भाव में अष्टम से पंचम होने के कारण आयुष्य की वृद्धि करेगा। (*v*) इसी प्रकार अन्य कारकों पर भी विचार करें तो इस सूत्र को सटीक पाएँगे।

21.7 शनि की दशा में वाहन प्राप्ति

यदि चतुर्थेश, सप्तमेश, भाग्येश और शुक्र की युति लाभ या भाग्य स्थान में हो (इस युति का शनि से सम्बन्ध भी हो) तो जातक शनि की दशा या अन्तर्दशा में श्रेष्ठ वाहन पाता है। कारण–चतुर्थ भाव सुख स्थान है तो सप्तम भाव भी भावात भावम् अर्थात चतुर्थ से चतुर्थ होने के कारण वाहन सुख को दर्शाता है। पुनः भाग्य (9H) या लाभ (11H) स्थान में भाग्येश और वाहन कारक शुक्र के साथ युति भी श्रेष्ठ वाहन्सुख की पुष्टि करती है। अब यदि शनि जो स्वयं सेवक या भारवाहक है इस चतुर्थेश सप्तमेश भाग्येश और शुक्र से दृष्टि युति सम्बन्ध करें तो निश्चय ही हाथी सरीखे उत्कृष्ट वाहन प्राप्ति का योग अपनी दशा–भुक्ति में देगा। 9H/11H में (4L + 7L + 9L + शुक्र) = वाहन सुख

21.8 सत्ता लाभ व यश प्राप्ति

1L लग्नेश, 4L सुखेश, 9L भाग्येश की युति यदि:

(*i*) दशमेश के साथ दशम भाव में हो या

(*ii*) लग्नेश, सुखेश, भाग्येश की लग्न में युति हो या

(*iii*) लग्नेश, सुखेश भाग्येश की सप्तम भाव में युति हो तो जातक निश्चय ही लग्नेश, सुखेश या भाग्येश की दशा भुक्ति में धन, मान, यश व सत्ता सुख पाता है।

कारण–लग्नेश की भाग्येश के साथ युति जातक को भाग्यशाली बनाती है। पुनः इसमें सुखेश का योग होना भाग्यवश देह सुख की वृद्धि करता है। दशम भाव राज्य या सत्ता सुख का भाव है। सप्तम भाव दशमात् दशम, होने से उच्च अधिकारी बनाता है। कारण–सप्तम भाव में बैठे ग्रह लग्न को देखते हैं।

टिप्पणी-कतिपय शोधकर्ताओं के विचार से यह योग यदि चतुर्थ, पंचम अथवा नवम भाव में बने तब भी धन, मान व सत्ता सुख जातक को प्राप्त होता है।

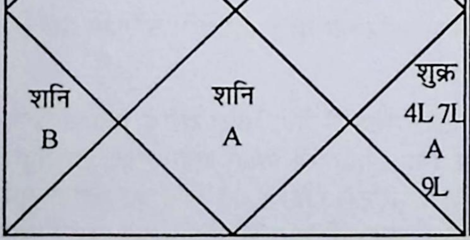

(सन्दर्भ 21.7)

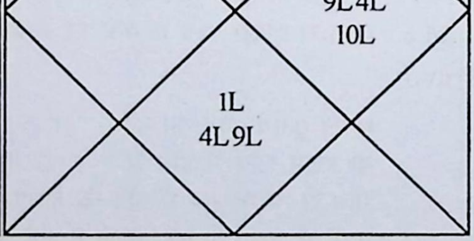

(सन्दर्भ 21.8)

(4L + 7L) 9L पर शनि की दृष्टि

(4L + 7L + 9L) 11L पर शनि की दृष्टि

(1L + 4L + 9L) की केन्द्र में युति

21.9 धन व प्रतिष्ठा–पंचम या नवम भाव में उच्चराशिस्थ ग्रह अपनी दशा-भुक्ति में धन, मान व यश दिया करता है।

(उच्चस्थ ग्रह)5/9H = धन व यश की प्राप्ति।

ध्यान रहे, कोई भी भाव उच्चस्थ ग्रह का संग पाने से बली व शुभ हो जाता है फिर नवम भाव तो भाग्य है। अत: नवम भाव या नवम से नवम भाव अर्थात पंचम भाव की शुभता धन व यश देगी । इसमें सन्देह केसा?

21.10 विशेष धन–यदि सूर्य, बुध और शुक्र की युति पंचम भाव में हो और लाभस्थ गुरु की पंचम भाव पर दृष्टि हो तो बुध की दशा में जातक विशेष धन, मान व यश पाएगा। **(सूर्य+ बुध+शुक्र) 5 H+गुरु 11= बुध की दशा-विशेष धन देगी।**

ध्यान रहे, सूर्य पद प्रतिष्ठा व सत्ता सुख का कारक है तो बुध और शुक्र धन, वैभव और बन्धु-बान्धवों के स्नेह व सहयोग जनित सुख को दर्शाते हैं। बुध पर संग प्रभाव शीघ्र और अधिक मात्रा में पड़ता है। बुध का अपने मित्र सूर्य व शुक्र से युति कर, लाभस्थान में बैठे गुरु की शुभ दृष्टि पाना, बुध की दशा को उत्कृष्टता देता है।

21.11 भाग्यशाली पिता–पिता का नैसर्गिक कारक सूर्य यदि नवमेश के साथ द्वादश भाव में युति करें तो पिता धनी-मानी और भाग्यशाली होता है। कारण, द्वादश भाव में स्थित ग्रह अपने भाव विषयक या कारकत्व के सम्बन्ध में शुभ फल देते हैं। यूँ भी विद्वानों ने द्वादश भाव को धन-वैभव, ऐश्वर्य, क्रय शक्ति (purchasing power) या भोग स्थान कहा है।

(सूर्य+9L) 12H= पिता के कारण भोगों की प्राप्ति

21.12 सूर्य की स्थिति से पिता की स्थिति का ज्ञान

यदि पिता का कारक सूर्य मेष राशि में उच्चस्थ हो तो पिता भाग्यशाली धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। इसके विपरीत सूर्य का तुला राशि में बैठना पिता को दैन्य व दरिद्रता या निर्धनता देता है।

टिप्पणी-ध्यान रहे, नवम भाव और नवमेश की शुभता न केवल जातक की भाग्य वृद्धि में सहायक होती है अपितु पिता की आर्थिक व सामाजिक स्थिति भी सुदृढ़ करती है। अत: नवम भाव और उसके स्वामी का विचार करना भी ज़रूरी है।

21.13 नीचस्थ सूर्य भी शुभ

धनु लग्न जातक का भाग्येश सूर्य यदि लाभ स्थान में नीचस्थ हो तब भी पिता से लाभ होता है। कारण यहाँ पिता का नैसर्गिक कारक सूर्य नवमेश होकर लाभ स्थान अर्थात उपचय भाव में है। पुन: पिता के भाव अर्थात नवम भाव से तृतीय या उपचय भाव में होने से बली व शुभ हो गया है। आदरणीय **महेन्द्रनाथ केदार** जी का कथन है कि **''क्रूर ग्रह जिस भाव से उपचय भाव (3, 6, 10, 11 वें भाव) में बैठें उस भाव की वृद्धि करते हैं।''** **सूर्य, मंगल शनि या राहु का भाग्य स्थान से 3, 6, 10, 11 वें भाव में बैठना भाग्य की वृद्धि करेगा।**

21.14 व्ययस्थ ग्रह शुभ

(*i*) यदि भाग्येश, व्ययेश और सूर्य की युति द्वादश भाव में हो तो जातक का पिता भाग्यशाली होता है।

(9L+12L+सूर्य) 12H = भाग्यशाली पिता।

(*ii*) यदि गुरु की व्ययेश के साथ व्यय भाव में युति हो तो भी जातक, पिता की सामाजिक स्थिति का लाभ पाता है।

कारण नवम भाव यदि पिता का लग्न है तो द्वादश भाव पिता का सुख स्थान है। वहाँ पर गुरु की स्वगृही सुखेश के साथ युति जातक को धनी-मानी पिता का सुख देगी।

(गुरु+12L) 12H = प्रतिष्ठित पिता से लाभ।

(*iii*) शुक्र यदि व्यय भाव में हो तो पत्नी का सहयोग, सुख, वैभव व उत्तम भोगों की प्राप्ति होती है। **शुक्र 12H = पत्नी के कारण भाग्य और भोग वृद्धि।**

(*iv*) चंद्रमा यदि व्यय भाव में हो तो माता से धन व ऐश्वर्य की प्राप्ति हुआ करती है। **चंद्रमा 12H =माता से भाग्य वृद्धि।**

(*v*) मंगल 12H यदि द्वादश अर्थात व्यय भाव में हो तो छोटे भाई-बहन के कारण सुख सुविधा और भोगों की प्राप्ति होती है।

मंगल 12H = भाइयों के कारण भाग्य वृद्धि।

(*vi*) भाग्येश (पिता का लग्नेश)यदि द्वादश भाव में हीन बली हो तब भी पिता से भाग्य की प्राप्ति जानें। कारण भाग्येश का भाव स्थान से सुख तथा लग्न से भोग स्थान में बैठना पिता से भाग्य और भोग की वृद्धि कराएगा।

(*vii*) **पत्नी के कारण भाग्य वृद्धि**-यदि भाग्येश और सप्तमेश का राशि परिवर्तन हो तो स्त्री से धन प्राप्ति के साथ स्वअर्जित सम्पदा का भी योग बनता है।

(9L) 7H + (7L) 9H= पत्नी से धन लाभ, भाग्य वृद्धि।

टिप्पणी-भाग्यस्थान में बैठा कोई भी ग्रह उस ग्रह या भावेश द्वारा भाग्य वृद्धि का संकेत देता है। सप्तमेश का भाग्यस्थ होना पत्नी से भाग्य प्राप्ति दर्शाता है तो पुनः भाग्येश का सप्तमस्थ होने भी जातक के भाग्य को पत्नी के साथ जोड़ता है। ध्यान रहे, नवमस्थ ग्रह की दृष्टि तीसरे भाव पर होने से पराक्रम व परिश्रम से भाग्य वृद्धि देती है तो सप्तमस्थ ग्रह का लग्न से दृष्टि सम्बन्ध भी आत्मा या देह के योग से भाग्य प्राप्ति की बात कहता जान पड़ता है।

21.15 षष्ठस्थ बुध से लाभ

द्वितीयेश बुधः षष्ठे ज्ञातीनां
केवल तु बुधः षष्ठे ज्ञातीनां धनमश्नुते धनमश्नुते (8: 20)

(*i*) बुध द्वितीयेश होकर षष्ठ भाव में हो या (*ii*) षष्ठ भाव में केवल बुध हो तो जातक को मामा व चचेरे भाइयों से **धन की प्राप्ति** होती है।

(2L+बुध) 6H=मामा से धन प्राप्ति

बुध 6H = मामा से धन लाभ

टिप्पणी–कुछ विद्वान मानते हैं कि द्वादश में स्थित ग्रह यदि अपने कारकत्व के सम्बन्ध में शुभ परिणाम देते हैं तो द्वादश भाव से दृष्टि सम्बन्ध करने वाले ग्रह भी न्यूनाधिक रूप से अपने कारकत्व का शुभ फल अवश्य देंगे। शायद यही बात रामानुजाचार्य अपनी कृति भावार्थ रत्नाकर में कहना चाह रहे हैं। यूँ भी त्रिषडाय उपचय भाव होने से गुरु में चाहे थोड़ी-बहुत परेशानी दे तो भी अन्त में उपचय भाव में बैठे ग्रह निश्चय ही कल्याणकारी सिद्ध होते हैं।

21.16 भाग्यशाली सन्तान

यदि पंचमेश और गुरु, दोनों ही अपनी उच्चराशियों में स्थित हों तो जातक की सन्तान सुखी और भाग्यशाली होती है। कारण-पंचमेश और गुरु का बली होना सन्तान पक्ष की ओर से जातक को सुख, सम्मान व यश दिलाता है।

5L उच्चस्थ+गुरु कर्क में = भाग्यशाली सन्तान।

टिप्पणी : कुछ शोधकर्ता 'वागीश' का अर्थ वाणी स्थान का स्वामी या द्वितीयेश करते हैं। उस परिस्थिति में धन भाव, सन्तान का दशम या आजीविका स्थान, बली होने से सन्तान व्यापार-व्यवसाय में सफलता पाकर जातक को यश देगी।

(5L+2L) दोनों ही उच्चस्थ = भाग्यशाली सन्तान।

अध्याय - 22

राजयोग

22.1 **द्वितीयेश और पंचमेश की युति 2, 5, 9 या 10 वें भाव में हो तो इसे राजयोग जानें।** (2L+5L) 2H, 5H, 9H, या 10H = राजयोग। कारण–धनेश तथा त्रिकोण अधिपति पंचमेश दोनों ही धन और भाग्य के क़ारक हैं। यूँ भी पंचम भाव नवम से नवम होने के कारण भाग्य व राजकृपा दर्शाता है तो धन भाव भी दशम से पंचम होने के कारण, कर्म का त्रिकोण स्थान होने से शुभ फल देने वाला बन जाता है।

22.2 **धनेश और लाभेश की दशम भाव में युति राजयोग देती है।**
(2L+11L) 10H = राजयोग।
ध्यान रहे, लाभ स्थान दशम भाव के लिए धन स्थान है तो धनेश भी दशमेश का पंचमेश होता है ये बात ऊपर कही जा चुकी है।

22.3 **राज्य लाभ चतुर्थेषु पंचमे वा स्थितो यदि।**
राजयोग प्रदो राहु स्तद्दशा अर्न्तदशा सु च ॥ (9: 3)
यदि राहु चतुर्थ, पंचम, दशम या एकादश भाव में हो तो अपने नियंत्रक की दशा और अपनी भुक्ति में राहु राज़योग का फल देता है। अन्य शब्दों में, **राहु की दशा-भुक्ति सत्ता सुख** देती है।
(राहु) 4H, 5H ,10H, या 11H = राजयोग–राहु की दशा भुक्ति में।

22.4 **तृतीय भाव में** स्थित **केतु कल्याणकारी** किन्तु त्रिकोण भाव में केतु को अनिष्टप्रद जानें। ध्यान रहे, उपचय भाव अर्थात 3, 6, 10, 11 वें भाव में क्रूर ग्रह शुभ फल देते हैं। तृतीय भाव उपचय भाव होने से इसमें केतु की स्थिति को शुभ माना गया है।

22.5 तृतीय भाव में चन्द्र शुक्र की युति होने पर शुक्र अपनी दशा भुक्ति में धन वैभव और यश देता है।
(चंद्रमा+शुक्र) 3H= शुक्र की दशा भुक्ति योगप्रद।
चंद्रमा स्वयं धन प्रदायक व लग्न भी है। इसकी शुक्र से युति धन वैभव देने की क्षमता बढ़ाती है। पुन: जन्म लग्न का चंद्रमा से लाभ स्थान में होना भी लाभ की वृद्धि करता है।

22.6 दशमेश यदि लाभ अथवा तृतीय भाव में हो तो कभी जातक को लाभ भी अवश्य होता है किन्तु निरन्तर व स्थायी लाभ की सम्भावना कम ही हुआ करती है।

(10L) 11H या 3H = स्थायी लाभ नहीं।

ध्यान रहे, दशम भाव के लिए, तृतीय भाव षष्ठ या शत्रु स्थान है तो लाभ स्थान द्वितीय होने से मारक भाव का फल भी दिया करता है।

22.7 गुरु यदि दशमेश होकर अपने दशम भाव से षष्ठ अर्थात लग्न से तृतीय भाव में हो तो छोटे भाई से शत्रुता देता है किन्तु धन भी अवश्य देता है।

(10L गुरु) 3H= भाई से शत्रुता और धन देने वाला।

ध्यान रहे, तृतीय भाव के लिए दशम भाव अष्टम भाव तो दशमेश अष्टमेश बन जाता है। अष्टमेश का लग्नस्थ होना छोटे भाइयों को बेचैनी व सन्ताप दे सकता है। पुनः धनप्रदायक गुरु का तीसरे भाव में बैठकर नवम व एकादश भाव से दृष्टि सम्बन्ध भाग्य व लाभ वृद्धि में सहायक होगा, इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए।

22.8 सामान्यतः भाग्येश का (अपने से द्वादश या हानि स्थान) लग्न से अष्टम में बैठना धन व भाग्य में कमी देता है किन्तु भाग्येश गुरु अष्टमस्थ होने पर भी धन देता है।

(गुरु) 8H = धन प्राप्ति।

कारण, गुरु का सम्बन्ध धन से है। अष्टमस्थ गुरु की धन व सुख-स्थान पर दृष्टि धन व सुख प्रदान करेगी। अब यदि गुरु भाग्येश भी हो तब तो निश्चय ही गुरु की दशा भुक्ति राजयोग सरीखा शुभ परिणाम देगी।

22.9 नवमेश की दृष्टि-युति पाने से अष्टमेश की दशा धन व भाग्य वृद्धि देगी।

(8L+9L) = अष्टमेश की दशा में धन प्राप्ति।

ध्यान रहे, त्रिकोण भाव के स्वामी जिस किसी ग्रह से दृष्टि-युति सम्बन्ध करें वह शुभ फलदायी हो जाता है। विद्वानों का कथन है–जैसे पारस के स्पर्श से लौह स्वर्ण बन जाता है कुछ इसी प्रकार पंचमेश या नमवेश के सम्बन्ध से भाव और ग्रह शुभ व कल्याणकारी हो जाते हैं।

22.10 अष्टमेश और नवमेश का दृष्टि युति सम्बन्ध नवमेश की दशा को दुर्बलता देता है किन्तु भाग्येश की दशा में अष्टमेश की अन्तर्दशा में शुभ फल प्राप्त होता है।

भौतिकी विज्ञान के छात्र जानते है गर्म पानी में ठंडा पानी मिलाने से ठंडा पानी गर्म तो गर्म पानी ठंडा हो जाता है। यहाँ अशुभ ग्रह यदि शुभ ग्रह के सम्बन्ध से शुभता पाता है तो उसी अनुपात में शुभ ग्रह की शुभता पाप ग्रह के संग दोष से कुछ कम हो जाती है।

(8L+/9L)= नवमेश दशा विशेष शुभ नहीं।

(टिप्पणी–इसके आगे दृष्टि युति के लिए + /संकेत का प्रयोग हुआ है।)

22.11 लाभेश और दशमेश की युति होने पर लाभेश की दशा में सत्ता सुख मिलता है।

(11L+/10L)= लाभेश की दशा में सत्ता लाभ।

22.12 दशमेश और लाभेश का दृष्टि युति सम्बन्ध होने पर दशमेश की दशा में सम्मान और धन की प्राप्ति होती है।

(10L+/11L)= दशमेश की दशा में धन व यश की प्राप्ति।

22.13 दशमेश और लाभेश की दृष्टि युति होने पर

(*i*) लाभेश की दशा विशेष शुभ फल नहीं दे पाती

(*ii*) दशम भाव में बैठा शुक्र अधिक अच्छा फल नहीं दे पाता

(*iii*) सप्तम भाव में बैठा शनि धन प्रदायक होता है।

ध्यान रहे, दशमेश व लाभेश की युति सत्ता लाभ, धन व यश देती है। आचार्य रामानुज का यह कहना कि लाभेश की दशा अधिक शुभ फल नहीं देती कदाचित इस बात का संकेत है कि दशम भाव यूँ तो विष्णुस्थान और आजीविका स्थान है किन्तु एकादश भाव से तो आजीविका हानि स्थान ही कहलाएगा। अब द्वादशेश से युक्त ग्रह अपने फल में कमी करें तो आश्चर्य कैसा? चंद्रमा और शुक्र दशम भाव में शून्य दिग्बल पाते हैं किन्तु शनि सप्तम भाव में पूरा एक रूप या 60 विरूप दिग्बल पाता है। दिग्बली ग्रह धन देते हैं ये बात विज्ञ पाठकों से छिपी नहीं है।

22.14 (*i*) **सप्तमस्थ: सैंहिकेयो योगदो भवति घ्रुवम्**

सप्तम भाव में बैठा राहु शुभ फल देता है। कारण यदि राहु को शनि सरीखा मानें। सप्तम भाव का राहु पूर्ण दिग्बली होने से तथा पंचम दृष्टि से लाभ स्थान को देखने से धन प्रदायक हो जाएगा।

(*ii*) **तृतीय भाग्यगो मन्दो योगप्रद इति स्मृत :** (9:14)

तृतीय या नवम भाव में स्थित शनि शुभ फल देता है। शनि एक पाप ग्रह होने से उपचय स्थान अर्थात 3, 6,10, 11 वें भाव में शुभ फल देगा यह तो निश्चित है। भाग्यस्थान का शनि भी शुभ फल देगा। इसके दो कारण हैं—पहला तो **त्रिकोण भाव लक्ष्मी स्थान होने से बहुत शुभ है। इनमें स्थित ग्रह कभी अशुभ परिणाम नहीं दिया करते।** दूसरा कारण भी समझ लें—जिस किसी भाव का विचार करें उससे उपचय भाव में बैठे क्रूर ग्रह शुभ फल देते है। लाभ स्थान के लिए नवम भाव, एकादश या उपचय भाव है। अत: लाभ वृद्धि में, भाग्यस्थ क्रूर ग्रह, निश्चय ही सहायक होगा।

22.15 (*i*) गुरु यदि तीसरे, आठवें या नवम भाव में बैठे तो निश्चय ही धन, मान व यश देता है।

(*ii*) इसी प्रकार द्वादश भाव में बैठा गुरु मृत्यु के बाद उत्तम लोकों की प्राप्ति कराता है।

15 (*i*)

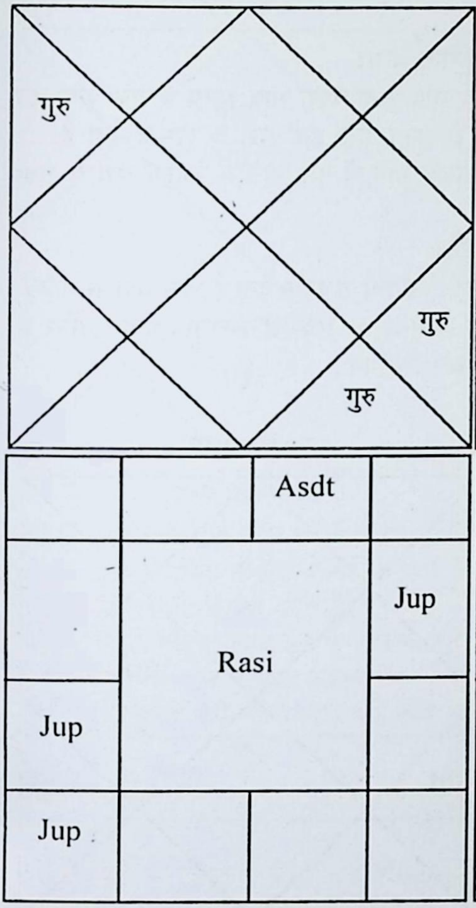

15 (*ii*)

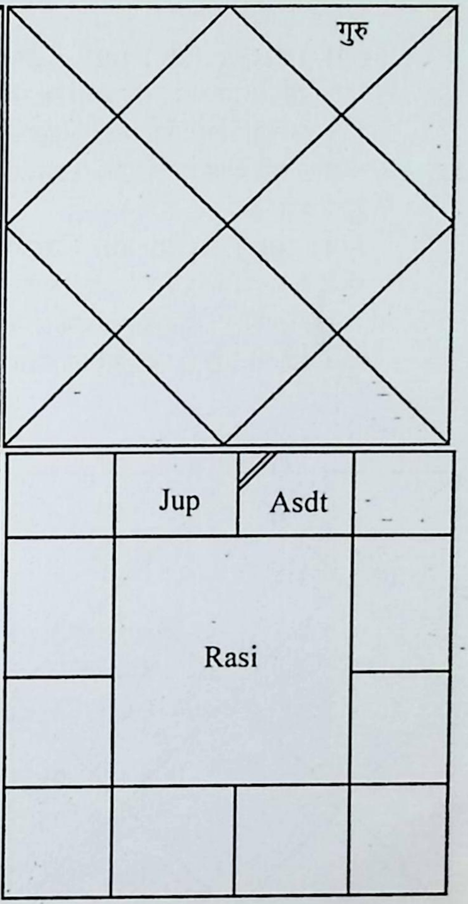

टिप्पणी (*i*) तृतीयस्थ गुरु सप्तम, नवम और एकादश भाव से दृष्टि सम्बन्ध कर व्यापार द्वारा धन लाभ और **भाग्य वृद्धि** देगा। अष्टम भाव में स्थित गुरु धन व सुख स्थान को देखेगा तो लग्न के दोनों ओर गुरु की अमृत पार्श्व दृष्टि लग्न को बल व शुभता देगी। भाग्यस्थ गुरु की दृष्टि लग्न और पंचम भाव में होने पर शुभ परिणाम देगी यह तो सत्य व सटीक बात है।

(*ii*) द्वादश भाव मरणोत्तर गति दर्शाता है वहाँ देव गुरु की उपस्थिति यदि जातक को देवलोक प्रदान करें तो इसमें आश्चर्य कैसा?

22.16 भाग्येश और दशमेश की युति यदि भाग्य या दशम भाव में हो तो इसे उत्कृष्ट राजयोग जानें।

(9L+10L) 9H या 10H = उत्कृष्ट राज योग।

22.17 नवमेश और दशमेश का स्थान परिवर्तन पद, प्रतिष्ठा धन, वैभव और यश देता है।

(9L) 10H + (10L) 9H = उत्कृष्ट राजयोग।

22.18 नवमेश यदि नवम भाव में तथा दशमेश भी दशम भाव में हो तो इसे सत्ता सुख का संकेत जानें।

(9L) 9H+ (10L) 10H = श्रेष्ठ राज योग।

ध्यान रहे, दशम भाव यदि राज्य या सत्ता सुख है तो नवम भाव भाग्य व राज कृपा का भाव है। इन भावों का अपने स्वामियों से युक्त होना इन्हें बल व शुभता देता है।

22.19 पंचमेश की दशमेश के साथ पंचम या दशम भाव में युति होने से जातक यश व सत्ता सुख पाता है।

(5L+10L) 5H या 10H = राजयोग।

केन्द्र व त्रिकोण भाव का परस्पर दृष्टि युति सम्बन्ध राजयोग देता है, इस बात से पाठक अनजान नहीं है। यदि इनमें से कोई ग्रह (दशमेश या पंचमेश) स्वगृही होकर अन्य से युति करें तो निश्चय ही अधिक शुभ फल मिलेगा।

(सन्दर्भ 22.18)

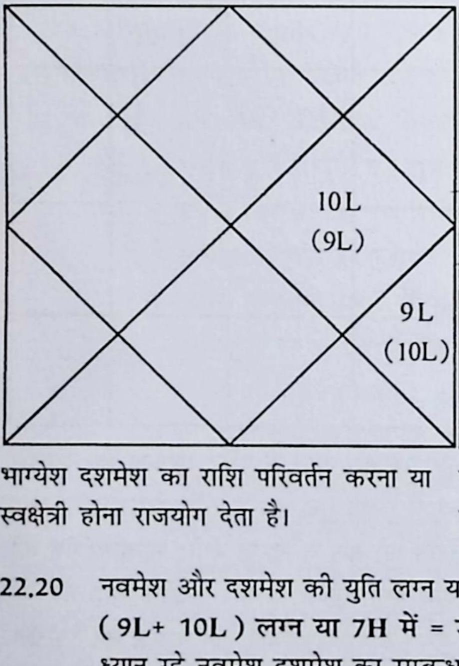

भाग्येश दशमेश का राशि परिवर्तन करना या स्वक्षेत्री होना राजयोग देता है।

(सन्दर्भ 22.19)

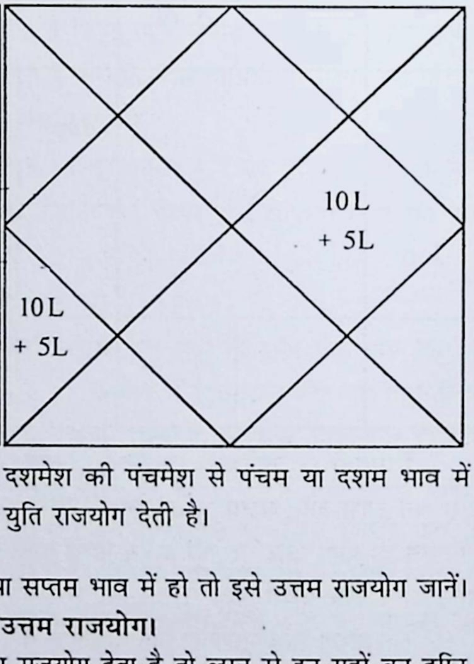

दशमेश की पंचमेश से पंचम या दशम भाव में युति राजयोग देती है।

22.20 नवमेश और दशमेश की युति लग्न या सप्तम भाव में हो तो इसे उत्तम राजयोग जानें।

(9L+ 10L) लग्न या 7H में = उत्तम राजयोग।

ध्यान रहे नवमेश दशमेश का सम्बन्ध राजयोग देता है तो लग्न से इन ग्रहों का दृष्टि सम्बन्ध जातक के व्यक्तित्व व देह सुख को निखारता है।

22.21 षष्ठेश, सप्तमेश व दशमेश यदि केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में हो तो इसे सत्तालाभ व यश प्राप्ति का संकेत जानें। कारण–**सप्तम भाव 'दशमात् दशम्' होने से सत्ता लाभ का प्रतिनिधि है।** इसी प्रकार, षष्ठ भाव, दशम का भाग्य स्थान होने से सत्ता प्राप्ति के लिए शुभ परिणाम देगा। इसी प्रकार नवम भाव तो भाग्य स्थान ही है किन्तु पंचमभाव भाग्य का होने से भी भाग्य का फल देगा।

(सन्दर्भ 22.20)

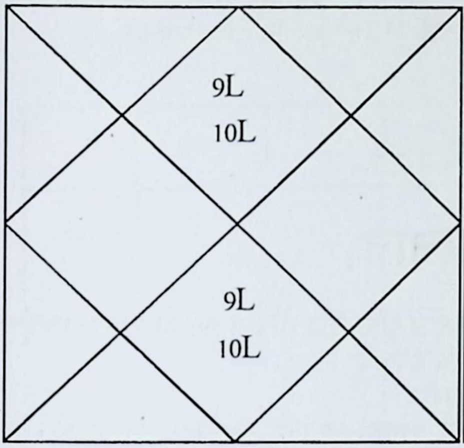

(सन्दर्भ 22.21)

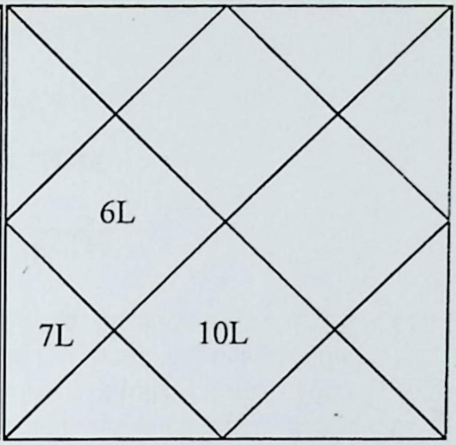

उत्तम राजयोग

22.22 सूर्य यदि मेष राशि में हो, चन्द्रमा की युति उच्चस्थ गुरु के साथ हो, शनि और मंगल भी उच्चस्थ होकर परस्पर केन्द्र में हो तो जातक धनी, मानी व सत्तालाभ पाने वाला प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

ध्यान रहे, केन्द्र स्थान में उच्चस्थ ग्रह उत्कृष्ट राजयोग देते हैं। विद्वानों ने सूर्य व चंद्रमा को भी लग्न सरीखा महत्व दिया है। अत: चंद्र कुण्डली के केंन्द्र भाव उच्चस्थ ग्रहों से युक्त होने पर जातक को राजा सरीखा प्रतापी व **धनी, मानी** बनाते हैं।

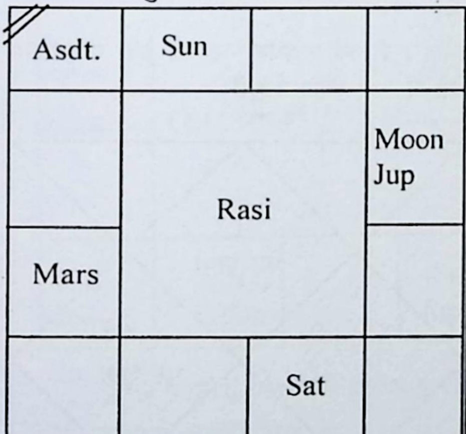

टिप्पणी

(*i*) लग्न का वर्गोत्तम होना

(*ii*) सूर्य से द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हो,

(*iii*) जन्म लग्न या चन्द्र लग्न से चार केन्द्र ग्रहों से युक्त हों,

(*iv*) स्वक्षेत्री या उच्चस्थ ग्रह परस्पर केन्द्र में हो तो व्यक्ति **धन, वैभव, पद-प्रतिष्ठा व सत्ता सुख** पाता है।

अध्याय - 23

तीर्थ स्नान

23.1 धर्म का नैसर्गिक कारक गुरु यदि दशमेश से दृष्टि-युति सम्बन्ध करे तो जातक धार्मिक प्रवृति, परोपकारी व सत्कर्म करने वाला होता है।
(10L+/गुरु) = धार्मिक व सदाचारी।

23.2 पंचमेश, नवमेश का सम्बन्ध सप्तमेश या दशमेश के साथ जल तत्व राशि में होने पर जातक पुण्य तीर्थों में स्नान करता है। ध्यान रहे, सप्तम भाव, दशम से दशम है तो पंचम भी, नवम से नवम होने के कारण कर्म को धर्म के साथ जोड़ता है। पुनः इन ग्रहों की युति जलीय राशि में होना तीर्थ स्नान की पुष्टि करता है।
(5L या 9L +7L या 10L) जलीय राशि = तीर्थ स्नान।

23.3 पंचमेश या सप्तमेश की दशा में यदि तीर्थ यात्रा न हो पाए तब पुण्यकथाओं के श्रवण तथा धार्मिक ग्रन्थों पर प्रवचन सुनने का अवसर तो अवश्य ही मिलता है।

23.4 मिथुन लग्न के लिए यदि नवमेश शनि, नवम भाव में दशमेश गुरु से युति करें तो शनि या गुरु की दशा में **गंगा स्नान** होता है।

23.5 मेष लग्न जातक के पंचमेश सूर्य, सप्तमेश शुक्र तथा नवमेश गुरु की युति यदि दशम भाव में हो तो ये ग्रह अपनी दशा भुक्ति में गंगा स्नान देते हैं।

(सन्दर्भ 23.5)

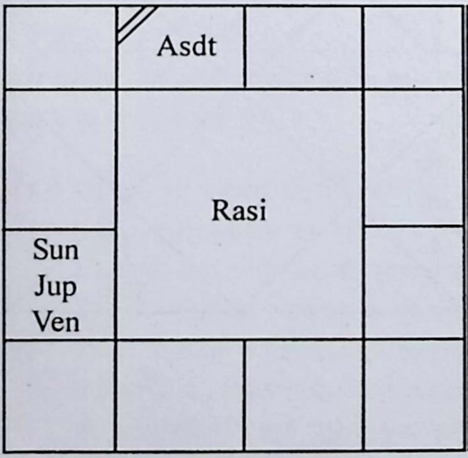

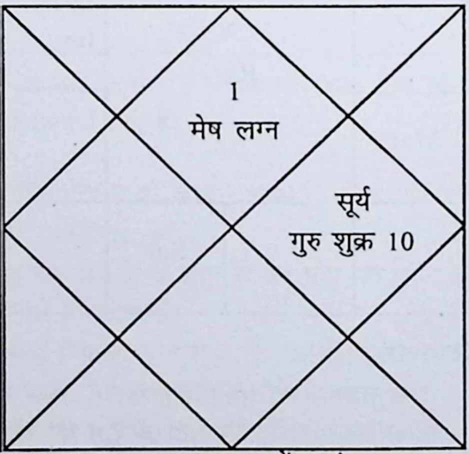

(5L+9L+7L) 10H में = गंगा स्नान

23.6 यदि दशमेश की युति गुरु के साथ हो तो जातक धार्मिक अनुष्ठान कथा, कीर्तन व देवी जागरण आदि में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता है।

(सन्दर्भ 23.4)

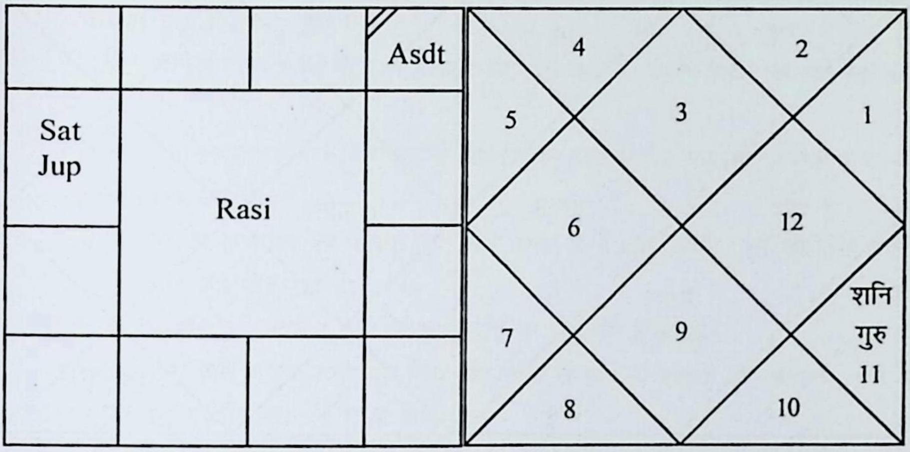

(सन्दर्भ 23.6)

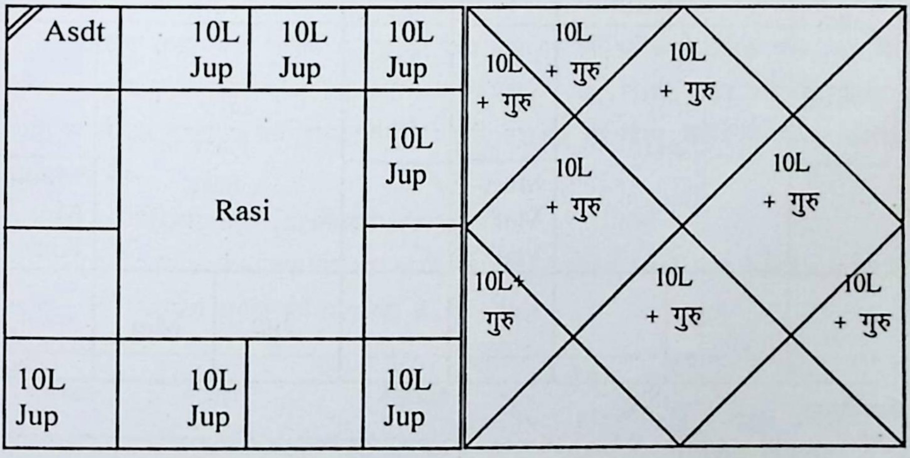

23.7 दशमेश यदि षष्ठ अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक धर्म कार्यों से हीन या गरीब और बेरोज़गार व्यक्ति होता है।

कारण—विद्वानों ने षष्ठ भाव को रोग, ऋण व शत्रु भय का, तो द्वादश भाव को हानि, बंधन व दुर्व्यसन का भाव माना है। दशमेश का षष्ठस्थ होना देह कष्ट व शत्रु जन्य बाधा देता है तो व्यय भाव में बैठा दशमेश भी कभी-कभी स्वार्थ व सुख-लिप्सा के कारण सत्कर्मों में बाधा डालता है।

23.8 उदाहरण डॉ० बी.वी. रमन 8 अगस्त, 1912–19:23 घंटे (स्थानीय समय) 13° उत्तर 0 77° पूर्व 35′

लग्न कुण्डली | नवांश कुण्डली

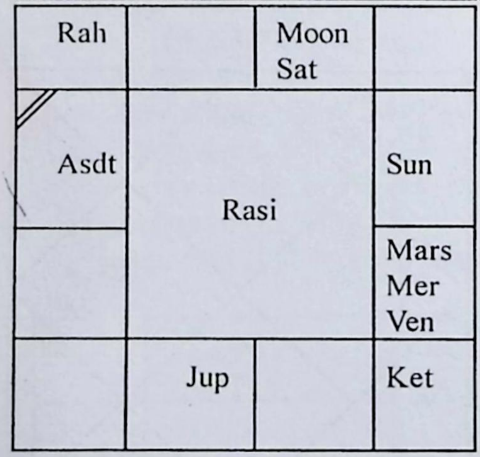

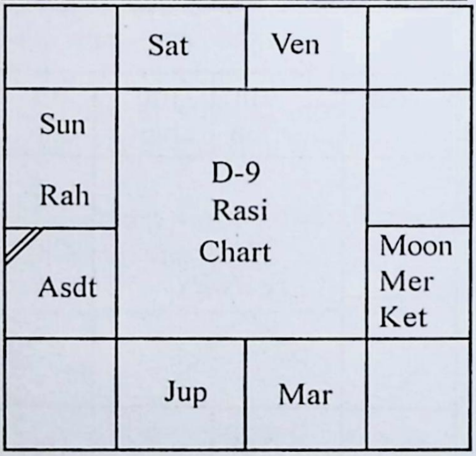

विश्लेषण

लग्न कुण्डली:

(*i*) नवमेश शुक्र, पंचमेश बुध तथा दशमेश मंगल की सप्तम भाव में युति और लग्न पर दृष्टि है।

(*ii*) धर्म का नैसर्गिक कारक गुरु, दशम भाव में बैठकर लग्नेश शनि, चन्द्रमा तथा दशमेश मंगल से दृष्ट है।

(*iii*) गुरु का दृष्टि सम्बन्ध सूर्य, चन्द्रमा तथा लग्नेश शनि से हुआ है।

(*iv*) दशमस्थ गुरु ने जातक को सदाचारी व धार्मिक प्रवृति का बनाया तो पंचमेश की दशमेश के साथ युति व लग्न पर दृष्टि ने जातक की बुद्धि और आत्मा को धार्मिक अनुष्ठान व तीर्थ यात्रा से जोड़ा।

(*v*) विद्वानों ने चन्द्रमा को मन, लग्नेश को आत्मा तो सूर्य को कर्मों का नियंत्रक माना है। इन तीनों पर गुरु की अमृत दृष्टि ने जातक को आध्यात्मिक या दार्शनिक विचारधारा देकर सच्चा कर्मयोगी बनाया।

नवांश कुण्डली

(*i*) लग्नेश शनि चतुर्थ भाव में बैठकर दशमस्थ चतुर्थेश मंगल तथा लग्न को देख रहा है।

(*ii*) चतुर्थेश मंगल लग्न, लग्नेश शनि तथा पंचम भाव में बैठे स्वक्षेत्री दशमेश शुक्र को देख रहा है।

(*iii*) धर्म व अध्यात्म का कारक गुरु, लाभ स्थान में बैठकर, पंचम भाव में बैठे दशमेश शुक्र को देख रहा है।

(*iv*) चन्द्रमा की नवमेश बुध के साथ युति पर सूर्य की दृष्टि है।

(*v*) शनि और मंगल का दशम भाव और लग्न से सम्बन्ध जातक को पराक्रम, धैर्य व दृढ़ इच्छाशक्ति देने वाला बना।

(*vi*) दशमेश–पंचमेश शुक्र का पंचम भाव में स्वगृही होकर गुरु से दृष्टि पाना जातक की बुद्धि व विवेक को सात्विक बनाने में सहायक हुआ।

जीवन-तथ्य–इस जातक ने गुरु की दशा और गुरु की भुक्ति में अनेक तीर्थों की यात्रा की और पुण्य स्नान का लाभ पाया। इन्हें भारतीय ज्योतिष का पितामह कहा जाता है। पाश्चात्य जगत में वैदिक ज्योतिष का प्रकाश पहुँचाने तथा ज्योतिष का गौरव बढ़ाने में इनका योगदान प्रशंसनीय है।

23.9 वैरागी सन्त विश्लेषण–

(*i*) मीन लग्न जातक का गुरु लग्नेश व दशमेश होकर, दशम भाव में स्थित सूर्य तथा नवमेश मंगल को देख रहा है।

Asdt	Ket		Moon
Mars	Rasi		
Mer			Jup
Sun	Ven	Rah	Sat

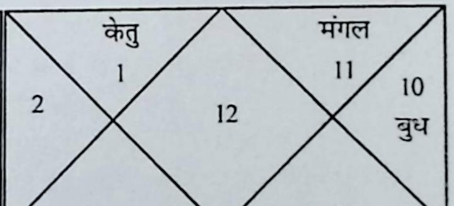

(*ii*) पंचमेश चन्द्रमा चतुर्थ भाव में बैठ कर दशमेश नियंत्रक सूर्य और दशम भाव को देख रहा है।

(*iii*) नवमेश मंगल का दशमेश गुरु से दृष्टि विनिमय या परस्पर दृष्टि सम्बन्ध हुआ है।

चन्द्र कुण्डली–में नवमेश शनि की दशम भाव पर दृष्टि है तो दशमेश गुरु का दृष्टि सम्बन्ध नवम भाव और लाभ स्थान से हुआ है। दशम भाव का गुरु की पार्श्व दृष्टि तथा धर्मेश की दृष्टि पाना जातक को आध्यात्मिक क्षेत्र में महान उपलब्धि देने वाला बना।

जीवन तथ्य–धर्म कर्म भाव के स्वामी ग्रहों के परस्पर दृष्टि सम्बन्ध ने इन्हें सहज समाधि व ब्रह्माकार वृत्ति प्रदान की। ये महान वैरागी सन्त बने।

अध्याय - 24

मृत्यु योग

24.1 व्ययेश की दशा में धनेश का अन्तर अथवा धनेश की दशा में व्ययेश की अन्तर्दशा मृत्यु दे सकती है।

कारण–द्वादश भाव देह की हानि या नाश दर्शाता है तो द्वितीय भाव भी बल पराक्रम की हानि वाला भाव है। अत: इनकी दशा अर्न्तदशा मृत्यु दे सकती है।

24.2 व्ययेश (12L) की महादशा में धनेश (2L) से दृष्टि युति करने वाले ग्रह की भुक्ति में मृत्यु होना सम्भव है।

24.3 द्वितीयेश (2L) की महादशा में व्यय भाव में स्थित और व्ययेश से दृष्ट ग्रह की भुक्ति मृत्यु कराती है।

24.4 व्ययेश (12L) की दशा में व्ययस्थ (12H) पाप ग्रह की भुक्ति मारक होती है।

24.5 द्वितीय भाव (2H) में स्थित पाप ग्रह की द्वादशेश (12L) से युति होने पर उक्त पाप ग्रह की दशा भुक्ति मृत्यु देती है।

(12L+पाप ग्रह) 2H= पाप ग्रह की दशा में व्ययेश की भुक्ति मृत्युप्रद।

24.6 द्वादश भाव (12H) में स्थित पाप ग्रह का दृष्टि-युति सम्बन्ध द्वितीयेश (2L) से होने पर पाप ग्रह की दशा में द्वितीयेश की भुक्ति मृत्यु दे सकती है।

(2L+पाप ग्रह) 12H = पाप ग्रह की दशा में द्वितीयेश की भुक्ति कष्टप्रद।

24.7 (*i*) **अष्टमेश दशाकाले तत्भुक्तौ सोऽपि मारकः**

अष्टम भाव के स्वामी की दशा में उसकी अपनी ही भुक्ति अर्थात अष्टमेश की दशा में अष्टमेश की भुक्ति मरण तुल्य कष्ट या मृत्यु दे सकती है।

(*ii*) **षष्ठेशदाये निधन रन्ध्रेशः अन्तर हुतो भवेत् ॥ (11:7)**

षष्ठेश की दशा में अष्टमेश की अन्तर्दशा भी मृत्यु देने में सक्षम है।

24.8 अष्टमेश की दशा में षष्ठ भाव में स्थित पापी ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु) की भुक्ति मृत्यु दे सकती है।

24.9 **षष्ठनाथे दशाकाले अष्टमस्थ खगस्य च।**
हतौं जातस्य निधनं वदन्ति विबुधोत्तमा; ॥ (11: 9)

षष्ठेश (6L) की दशा में अष्टम भाव में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा मृत्यु दे सकती है, ऐसा विद्वानों का कथन है।

24.10 अष्टमेश की दशा में (*i*) अष्टमेश की दृष्टि पाने वाले ग्रह या (*ii*) षष्ठेश के साथ बैठे ग्रह की अन्तर्दशा मारक सिद्ध हो सकती है।

24.11 अष्टमस्थित पापस्य दशाकाले
षष्ठस्थानपतेर (अ) न्तर्दशाकालो हि मारक : वदन्ति हि॥ ('11: 11)

अष्टम भाव (8H)में बैठे पाप ग्रह की दशा में षष्ठेश (6L) की भुक्ति मारक हो सकती है।

(पाप ग्रह 8H की दशा) में (6L की भुक्ति) = मृत्युप्रद।

24.12. षष्ठ भाव में स्थित पाप ग्रह की महादशा होने पर अष्टमेश की अन्तर्दशा मारक या मृत्यु देने वाली होती है। **(पाप ग्रह 6H) में 8L की भुक्ति = मृत्युप्रद**

24.13 षष्ठस्थ पाप ग्रह की दशा में अष्टम भाव में स्थित ग्रह या अष्टमेश की अन्तर्दशा मारक या मृत्यु देने वाली होती है।

24.13 षष्ठस्थ पाप ग्रह की दशा में अष्टम भाव में स्थित अष्टमेश की भुक्ति प्रबल मारक हो जाती है।

ध्यान रहे, अष्टमेश अष्टम भाव में स्वगृही होने पर अन्य बातों में भले ही शुभ हो किन्तु मारक का कार्य अवश्य करता है।

24.14 अष्टम भाव में बैठे पाप ग्रह की महादशा में षष्ठस्थ पाप ग्रह की भुक्ति मृत्युप्रद होती है। ध्यान रहे, शुभ ग्रह मृत्यु नहीं देते।

24.15 अशुभ स्थान के स्वामी होकर नैसर्गिक शुभ ग्रह बुध और शुक्र यदि पंचम भाव में भी हो तब भी बुध में शुक्र या शुक्र में बुध की भुक्ति मृत्यु दिया करती है।

ध्यान रहे, पापाधिपत्य शुभ ग्रहों को भी मारक बना सकता है। इसका स्पष्टीकरण नीचे दी गई तालिका में देखें:-

लग्न	पाप ग्रह
मेष लग्न	बुध (3L, 6L) शुक्र (2L-7L)
वृष लग्न	गुरु (8L-11L), शुक्र 6L, चन्द्रमा 3L
मिथुन लग्न	गुरु 7L, सूर्य 3, मंगल 11L-6L,
कर्क लग्न	शुक्र 11L, बुध 12L-3L,
सिंह लग्न	बुध 11L-2L; शुक्र 3L, शनि 6L-7L
कन्या लग्न	मंगल 3L, गुरु 7L, चन्द्रमा 11L
तुला लग्न	गुरु 3L-6L; सूर्य 11L मंगल 2L-7L
वृश्चिक लग्न	शुक्र 7L-12L बुध 11L-8Lशनि 3L
धनु लग्न	शुक्र 6L-11L, बुध 7L, चन्द्र 8L, शनि 2L-3L
मकर लग्न	मंगल 11L, गुरु 12L, चन्द्रमा 7L
कुम्भ लग्न	गुरु 2L-11L, चन्द्रमा 6L, मंगल 3L
मीन	शनि 11L-12L शुक्र 3L-8L सूर्य 6L, बुध 7L

नियम :– विद्वानों के मतानुसार–

(*i*) द्वितीय व सप्तम भाव (2H, 7H) को मारक बताया गया है अत: वे अनिष्टप्रद हैं।

(*ii*) तृतीय, षष्ठ व आय स्थान को त्रिषडाय भाव माना है ये भी अनिष्टप्रद हैं।

(*iii*) पुन: षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव त्रिक या दु:स्थान कहलाते हैं।
इनका भावाधिपत्य पाने से चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र सरीखे नैसर्गिक शुभ ग्रह भी पापी कहलाते हैं।

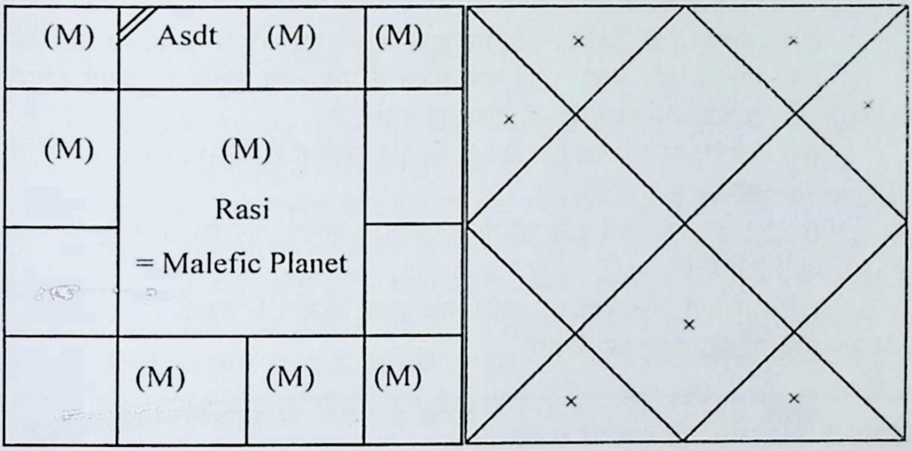

× = अशुभ स्थान

24.16. मंगल यदि पाप या अशुभ स्थान का स्वामी होकर भले ही पंचम भाव (लक्ष्मी स्थान) में हो तब भी अपनी दशा भुक्ति में मृत्यु दे दिया करता है।

24.17 शनि यदि शुभ भावों (केन्द्र और त्रिकोण भाव) का स्वामी होकर किसी मारक ग्रह के साथ बैठे तो कुसंगति दोष से शनि की दशा भुक्ति मृत्यु दिया करती है।

24.18 अष्टमेश यदि लग्न में हो तो भी अपना मारक प्रभाव नहीं छोड़ता। अष्टमेश की दशा भुक्ति में जातक की मृत्यु होना सम्भव है।

24.19 द्वेये त्रयाणां पुत्राणां संप्राप्ते राहुदायके
पितु: निधनामित्या हुस्तद् दशामध्य एव च ॥ (11:19)

यदि कभी किसी व्यक्ति के दो या तीन पुत्रों की राहु की दशा (भुक्ति) चल रही हो तो उस अवधि में जातक की मृत्यु होना सम्भव है।

टिप्पणी–यहाँ श्री रामानुजाचार्य ने परिवार के सदस्यों के भाग्य के परस्पर जुड़े होने की बात का संकेत दिया है। आधुनिक शोधकर्ता इसे inter linked destiny या दशा का साझा प्रभाव कहते हैं। यदि कभी पुत्र और अपनी पत्नी की शुभ दशा हो तो पिता या पति की मारक दशा भी मात्र देह कष्ट देती है किन्तु मृत्यु तो कदापि नहीं दे पाती । किन्तु यदि कभी घर में सभी की अशुभ दशा चल रही हो तो छोटी-छोटी बातें भी बहुत कष्ट दिया करती हैं।

श्री जगन्नाथ भसीन ने राहु को सूर्य का प्रबल शत्रु कहा है। यही सूर्य पिता का नैसर्गिक कारक भी है। अत: पुत्रों का राहु अपनी दशा में यदि पिता का मारक बने तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

24.20 बी. सूर्य नारायण राव के विचार:-

(*i*) द्वितीय और सप्तमेश मारकेश कहलाते है। इनकी दशा में मृत्यु होना सामान्य बात है

(*ii*) द्वितीय व सप्तम भाव मारक भाव हैं। इनमें बैठे पाप ग्रह अधिक पापी होने से अपनी दशा भुक्ति में मृत्यु दिया करते हैं।

(*iii*) द्वितीय व सप्तमेश अर्थात मारकेश के साथ बैठे पाप ग्रह अधिक पापी व प्रबल मारक होते हैं।

(*iv*) मारकेश (2L+7L)के साथ बैठे शुभ ग्रह भी संग दोष से मारक बन जाते हैं।

(*v*) सप्तमेश और अष्टमेश की दशा भुक्ति में मृत्यु होना सम्भव है। कारण–अष्टम भाव जीवन की पूर्णता या अन्त को दर्शाता है

(*vi*) तृतीयेश या अष्टमेश (3L+8L) की युति मारकेश से होने पर इनकी दशा भुक्ति मृत्यु दिया करती है।

(*vii*) मारकेश के साथ शनि का सम्बन्ध आयुष्य कारक शनि को भी मृत्यु देने वाला बनाता है।

(*viii*)सर्वाधिक हीन बली ग्रह अपनी दशा भुक्ति में मृत्यु दे सकता है।

24.21 डॉ० बी.वी. रमण के विचार

मारक दशा		मारक अन्तर्दशा या भुक्ति
(*i*)	अष्टमेश की दशा में	अष्टमेश की भुक्ति मृत्यु दे सकती है
(*ii*)	षष्ठेश की दशा में	अष्टमेश की भुक्ति मृत्यु दे सकती है।
(*iii*)	अष्टमेश की दशा में	षष्ठस्थ पाप ग्रह की भुक्ति मृत्यु दे सकती है।
(*iv*)	षष्ठेश की दशा में	अष्टम भाव में बैठा ग्रह मृत्यु दे सकता है।
(*v*)	अष्टमेश की दशा में	अष्टमेश से दृष्ट षष्ठेश के संग बैठा ग्रह मृत्यु दे सकता है।
(*vi*)	अष्टमस्थ पाप ग्रह	षष्ठेश मृत्यु दे सकता है।
(*vii*)	षष्ठ भाव में स्थित ग्रह	अष्टमेश मृत्यु दे सकता है।
(*viii*)	षष्ठस्थ पाप ग्रह	अष्टमेश मृत्यु दे सकता है।
(*ix*)	अष्टम भाव में पाप ग्रह	षष्ठ भाव में स्थित पाप ग्रह मृत्यु दे सकता है।

अध्याय - 25

दशा के परिणाम

25.1 (*i*) शनि की दशा में शुक्र की भुक्ति तथा **शुक्र की दशा में शनि की भुक्ति** या अन्तर्दशा बहुधा **अनिष्ट परिणाम** देती है।

टिप्पणी–यूँ तो लग्नेश शनि होने पर शुक्र योगकारक तो लग्नेश शुक्र के लिए शनि केन्द्र व त्रिकोण का स्वामी होने से योगकारक हुआ करता है किन्तु शनि भोगों के प्रति तनिक भी आदर बुद्धि नहीं रखता। वह निरासक्त, निष्काम तथा वैरागी सन्त सरीखा है। इसके विपरीत शुक्र लौकिक सुख को अधिक महत्व देता है। सुख, भोग, ऐश्वर्य को वह जीवन का लक्ष्य मानता है। कदाचित स्वभाव वैषम्य के कारण, जातक उलझन या तनाव महसूस करता है। मेरे गुरु कभी हँसी में कहते हैं कि यदि स्वामी मधुमेह रोग से पीड़ित है तथा घर में मिष्ठान्न का प्रवेश होता ही नहीं तो सेवक भला मिठाई केसे खा पाएगा? शनि यदि भोग विमुख त्यागी सन्यासी होकर दशानाथ बने तो भुक्ति नाथ शुक्र सामान्य-सी सुख-सुविधाओं से भी वंचित रह जाएगा।

25.2 **धनु या मीन लग्न** होने पर शुक्र में शनि या **शनि में शुक्र की अन्तर्दशा धनदायक** होती है। कारण धनु लग्न के लिए शुक्र लाभेश तो शनि धनेश होता है। लाभेश में धनेश

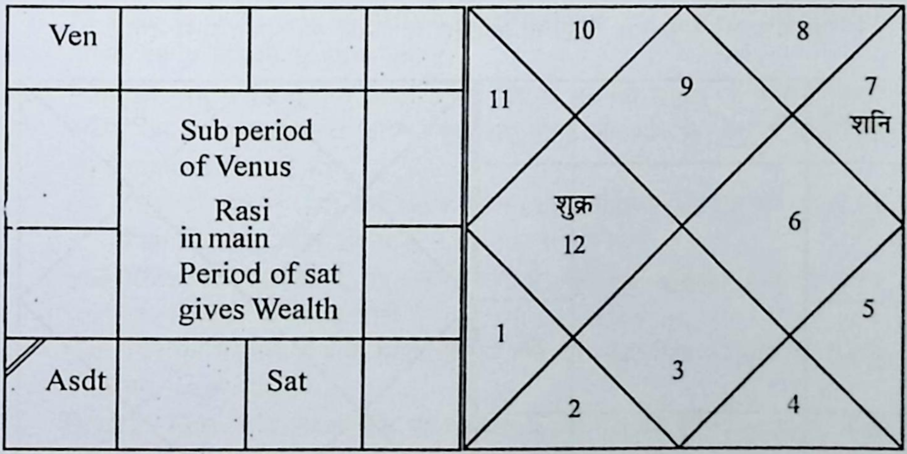

की भुक्ति या धनेश में लाभेश की भुक्ति यदि धन नहीं दे तब अवश्य आश्चर्य होना चाहिए--धन देने में भला आश्चर्य कैसा? मीन लग्न जातक के लिए अष्टमेश शुक्र तृतीय या उपचय भाव का स्वामी होने से शुभ है तो व्ययेयश शनि भी त्रिषडायपति आयेश होने से शुभ है। यूँ भी लाभेश शनि के लिए तृतीयेश शुक्र त्रिकोण (लाभ स्थान से पंचम भाव) का स्वामी होने से धन प्रदायक है।

पुनः तृतीयेश शुक्र के लिए लग्नेश शनि भाग्येश होने से शुभ फल अर्थात धन लाभ देगा।

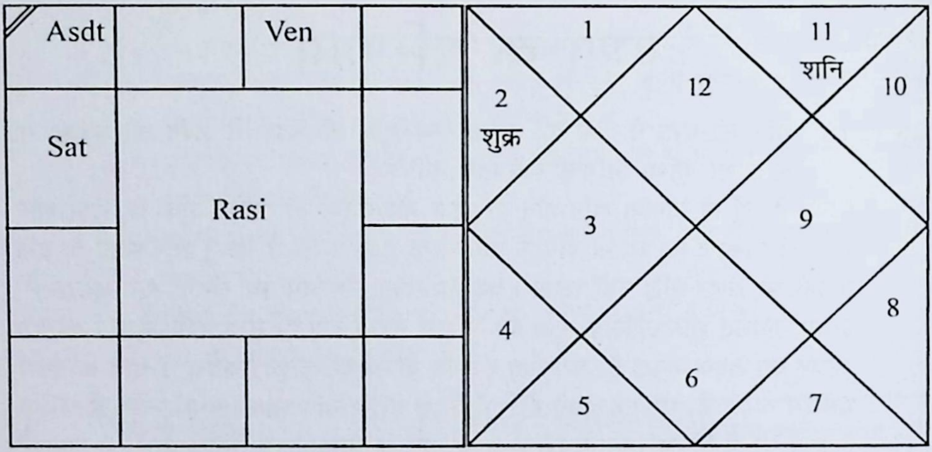

25.3 अष्टमेश नियंत्रक की भुक्ति मारक

अष्टमेश (8L) यदि षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में हो तो अष्टमेश नियंत्रक की भुक्ति ओर **अष्टमेश की दशा मृत्युप्रद** हो सकती है। ध्यान रहे, त्रिक भाव या दुः स्थान बहुधा अशुभ परिणाम देते हैं। अष्टम या मृत्यु भाव का स्वामी यदि दुःस्थान में हो तो उक्त भाव और भावेश भी निश्चय ही अधिक मारक हो जाएँगे। ऐसी परिस्थिति में (क) अष्टमेश यदि षष्ठ भाव में हो तो अष्टमेश में षष्ठेश की भुक्ति मृत्यु देगी।

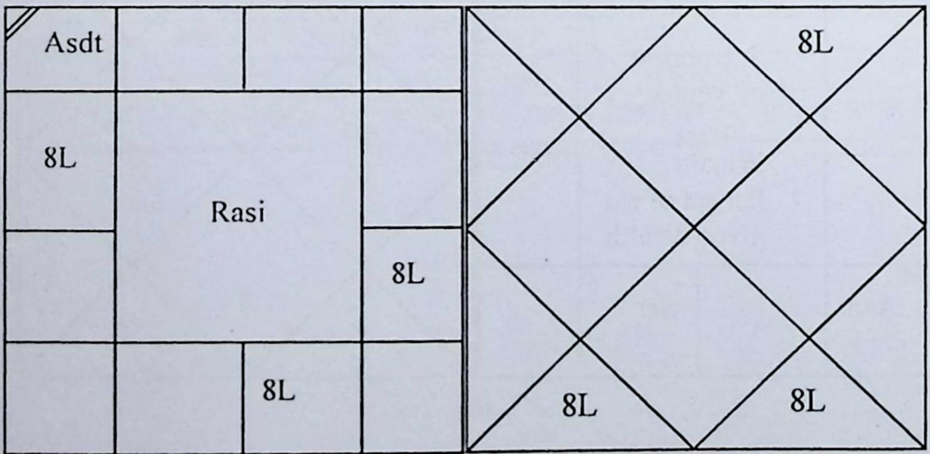

(ख) अष्टमेश अष्टम भाव में स्वगृही होने पर अष्टमेश की दशा में अष्टमेश की अपनी ही भुक्ति मृत्यु दे सकती है

(ग) अष्टमेश यदि द्वादश भाव में हो तो अष्टमेश की दशा में व्ययेश की भुक्ति मृत्यु दे सकती है।

25.4 राज्य विक्रमपत्योश्च सम्बन्धो यदि विद्यते।
राज्येशदाये च योगस्सुयोगो विक्रमेशतुः ॥ (12: 4)

दशमेश और तृतीयेश का दृष्टि युति या स्थान (राशि) सम्बन्ध होने पर दशमेश की दशा मान-सम्मान, यश व सफलता देती है तो **तृतीयेश की दशा उससे भी अधिक उत्कृष्ट** परिणाम व राज्य लाभ देगी।

टिप्पणी—तृतीय भाव बल, पराक्रम, साहस व शौर्य का भाव है। निश्चय ही राज्य प्राप्ति के लिए ये गुण आवश्यक मानें गए हैं। दशम भाव तो राज्य, सत्ता सुख, सत्कर्म व आजीविका भाव है ही, अतः उसकी दशा में शुभ फल मिलना युक्ति युक्त है। पुनः 3H, 6H, 10H, 11H, उपचय भाव हैं इनके स्वामी अपनी दशा में शुरू में भले ही कुछ बाधा या परेशानी दे। किन्तु अन्ततः उन्नति, विकास व समृद्धि दिया करते हैं।

25.5 यदि पंचमेश पंचम भाव में, सप्तमेश सप्तम भाव में तथा नवमेश नवम भाव में स्वगृही हों तो एक ही दशा में दूसरे की भुक्ति **गंगास्नान** का लाभ देती है। कारण-पंचम और नवम भाव धर्म सम्बन्धी सत्कर्मों का भाव है तो सप्तम भाव का सम्बन्ध लग्न से है। देह का धर्म से जुड़ना तीर्थ यात्रा व पुण्य स्नान दिया करता है। यही बात गंगा स्नान शब्द से कही गई है।

25.6 पुरुषार्थ से धन प्राप्ति

(*i*) लग्नेश यदि सप्तम भाव में हो तो जातक लग्नेश की दशा में अपने पुरुषार्थ से धन पाएगा। 7H में लग्नेश की दशा = पुरुषार्थ से धन प्राप्ति।

(*ii*) भाग्येश यदि सप्तम भाव में हो तो जातक अपने पुरुषार्थ से धन कमाता है।

टिप्पणी—सप्तम भाव वीर्य या पुंसत्व बल अर्थात उत्साह व पुरुषार्थ का भाव है तो लग्न भी आत्मा या देह है। अतः सप्तमस्थ ग्रह का दृष्टि सम्बन्ध लग्न से होने के कारण जातक अपनी देह व परिश्रम से लाभ पाता है।

25.7 **पिता की मृत्यु**—(*i*) **राहु केतु या शनि की दशा में सूर्य की भुक्ति को पिता के लिए** अनिष्ट प्रद या **मारक** जानें। कारण—सूर्य, राहु, केतु और शनि का शत्रु है तथा पिता का नैसर्गिक कारक भी है।

(*ii*) केतु की दशा में (अ) सूर्य (आ) मंगल (इ) शनि तथा (ई) राहु की भुक्ति को पिता के लिए अनिष्टप्रद जानें।

(*iii*) मंगल की महादशा में राहु, केतु, शनि या सूर्य की अन्तर्दशा पिता के लिए अमंगलकारी या मारक होती है।

(*iv*) शनि की महादशा में सूर्य, मंगल, राहु या केतु की भुक्ति पिता की मृत्यु का कारण बन सकती है।

टिप्पणी—मंगल, शनि अथवा केतु की महादशा में शेष पाप ग्रह की भुक्ति बहुधा पिता की मृत्यु दिया करती है। इसके विपरीत मंगल, शनि, राहु, केतु में सूर्य की भुक्ति पिता के लिए हानिकारक तो है किन्तु शायद मरणप्रद नहीं।

(*v*) मंगल की दशा समाप्ति पर राहु की दशा के आरम्भ में पिता की मृत्यु होना सम्भव है।

(*vi*) क्रूर ग्रह मंगल, शनि या केतु की दशा में राहु की अन्तर्दशा पिता को मृत्यु दिया करती है।

25.8 गुरु शुक्रो वृश्चिकस्थो शुक्रदाये समागमे
राजयोग करः शुक्रो भवे देव न संशय (II: 12: 13)

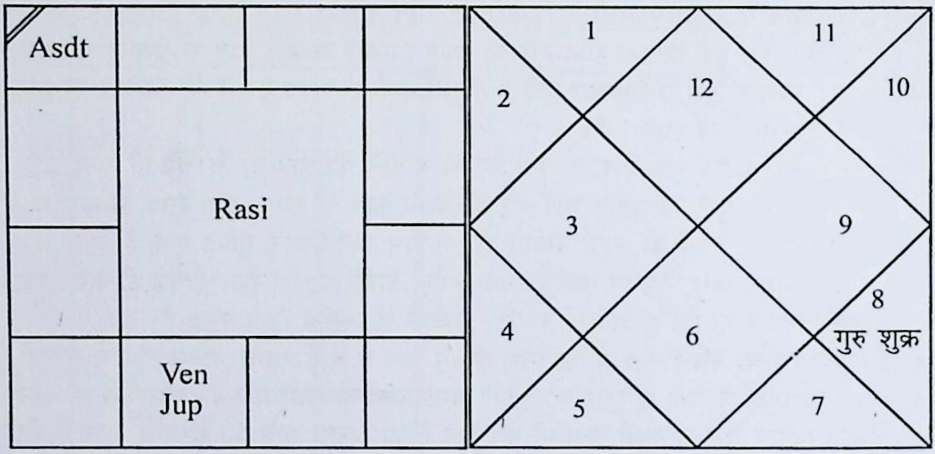

यदि गुरु और शुक्र की युति वृश्चिक राशि में हो तो शुक्र की दशा में **राजयोग** अर्थात धन, वैभव और यश की प्राप्ति होगी।

टिप्पणी—धन का नैसर्गिक गुरु यदि भोग कारक शुक्र के साथ बहुप्रसव कीट राशि वृश्चिक में युति करें तो धन-वैभव की वृद्धि होना सामान्य बात है। वृश्चिक राशि का गुरु पंचम दृष्टि से अपनी राशि मीन तो नवम दृष्टि से अपनी उच्च राशि कर्क को देखेगा। इसी प्रकार वृष राशि जो कि काल पुरुष का धन भाव है, उस पर गुरु और शुक्र की सप्तम दृष्टि भी धन की वृद्धि करेगी। ऐसा शुक्र यदि राजयोग का परिणाम दे, तो आश्चर्य कैसा?

25.9 यदि सूर्य की बुध के साथ युति हो तो बुध की दशा बहुत शुभ फल देगी, किन्तु सूर्य की दशा में जातक मध्यम या साधारण फल पाएगा।

कारण—सूर्य की युति से बुध अधिक बल और महता पाएगा जब कि सूर्य थोड़ा अधिक वार्ता कुशल या व्यापार दक्ष भले ही हो जाए, किन्तु अपने तेज, बल व प्रतिभा में कुछ कमी अवश्य पाएगा। अतः बुध संग प्रभाव से अधिक शुभ फल देगा तो सूर्य संग दोष से (नंपुसक बुध के साथ बैठने से) मध्यम फल देगा।

25.10 चन्द्रमा और मंगल की युति होने पर **चन्द्रमंगल योग** बनता है। ऐसा व्यक्ति **बुद्धिमान, परिश्रमी, उद्यमी, धनी व प्रतिष्ठित** होता है। **चन्द्रमा की दशा में मंगल की भुक्ति उत्कृष्ट परिणाम** देगी। किन्तु मंगल की दशा में चन्द्रमा की अर्न्तदशा सामान्य परिणाम देगी। ध्यान रहे, शुभाशुभ परिणाम में **भुक्तिनाथ का महत्व दशानाथ से अधिक** होता है।

क्योंकि, चन्द्रमा प्रत्येक मास में लगभग दस दिन कृष्णपक्ष दशमी के बाद शुक्ल पक्ष की पंचमी तक पक्षबल में हीन होता है। अतः मंगल में चन्द्रमा की भुक्ति अधिक श्रेष्ठ परिणाम नहीं दे पाएगी।

25.11 गुरु और शनि का परस्पर दृष्टि-युति सम्बन्ध होने पर **शनि की दशा विशेष योग** देगी किन्तु गुरु की दशा मध्यम फल देगी। ध्यान रहे, यहाँ शनि को देव गुरु का साथ मिला है। सत्संग के कारण शनि की शुभता व फल देने की क्षमता बढ़ी है। इसके विपरीत गुरु, शनि के संग दोष से अपने शुभत्व में कुछ कमी पाएगा।

25.12 गुरु और मंगल की युति होने पर **मंगल की दशा** (शुभ संगति के कारण) **विशेष शुभ** परिणाम देगी. जब कि गुरु की दशा में जातक मध्यम फल पाएगा।

25.13 गुरु और चन्द्रमा की युति होने पर चन्द्रमा की दशा श्रेष्ठ किन्तु गुरु की दशा मध्यम फल दिया करती है।

25.14 राहु केतु की दशा में राजयोग

राहु यदि केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में हो तो अपनी दशा में केन्द्र या त्रिकोण अधिपति का शुभ फल अर्थात राजयोग व यश देता है।

25.15 बुध, गुरु, शुक्र, के परस्पर सम्बन्ध से उत्कृष्ट फल

यदि (बुध+गुरु+शुक्र) का परस्पर दृष्टि युति सम्बन्ध हो तो इन ग्रहों की दशा भुक्ति धन, मान व यश बढ़ाती है।

25.16 शुक्र का दृष्टि युति सम्बन्ध यदि बुध और गुरु के साथ हो तो **शुक्र की दशा में शुभ परिणाम** मिलते हैं। ध्यान रहे–गुरु धर्म, भाग्य और धन का कारक है तो बुध भी बुद्धि, विद्या तथा हास्य-विनोद व बन्धु-बान्धवों से सुख दिलाने वाला है। इनका सहयोग पाकर यदि शुक्र अधिक शुभ परिणाम दे तो आश्चर्य कैसा?

25.17 बुध, गुरु और शुक्र का परस्पर सम्बन्ध होने पर गुरु की दशा में आर्थिक कष्ट किन्तु बुध की दशा में सामान्य फल जातक को मिलेगा।

टिप्पणी–गुरु भले ही धर्म, धन व सुख का कारक हो किन्तु वह बुध और शुक्र दो शत्रु ग्रहों के प्रभाव में है। अतः आर्थिक तंगी या धन का अभाव होना सम्भव है। बुध के लिए शुक्र मित्र है किन्तु गुरु तो शुक्र को अपना शत्रु ही मानता है। अतः बुध की दशा मध्यम फल देगी।

25.18 सूर्य की यदि किसी अन्य ग्रह से युति हो तो **सूर्य की दशा तो शुभ फल** देती है किन्तु सूर्य से अस्त अन्य ग्रह की दशा मध्यम फल देती है।

टिप्पणी–चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र सरीखे शुभ ग्रह की युति के कारण सूर्य की शुभता बढ़ेगी तथा सूर्य दशा में जातक धन, मान व यश पाएगा। मंगल भले ही क्रूर या पाप ग्रह सही, किन्तु सूर्य का मित्र ग्रह होने से अपनी युति से सूर्य को शक्ति व शुभता देगा। शनि की युति से सूर्य को अवश्य कुछ हानि पहुँच सकती है किन्तु शनि का नैसर्गिक बल सूर्य का सातवां भाग है। अतः शनि भी सूर्य की दशा बिगाड़ नहीं पाएगा। निश्चय ही ये सभी ग्रह सूर्य का सामीप्य पाने से अपना तेज खो बैठेंगे या पूर्णतः अस्त हो जाने से अधिक शुभ परिणाम नहीं दे पाएँगे।

25.19 राहु प्रायः दृष्टि–युति करने वाले ग्रह का फल देता है। यदि जन्म कुण्डली में राहु का अन्य ग्रहों से दृष्टि–युति सम्बन्ध हो तो उनमें सर्वाधिक बली और शुभ ग्रह का फल जातक को राहु की दशा में प्राप्त होगा। कारण–राहु एक छाया ग्रह है तथा अन्य ग्रहों के प्रभाव शीघ्रता से ग्रहण करता है।

25.20 यदि लग्न से तीसरे भाव में बैठे सूर्य तथा शनि की राहु से युति हो तो राहु की दशा में जातक भाग्य और पराक्रम की वृद्धि पाएगा।

(सूर्य+शनि+राहु) 3H = राहु की दशा में भाग्य और पराक्रम की वृद्धि।

विद्वानों ने तृतीय, षष्ठ व एकादश भाव में क्रूर ग्रह की स्थिति को शुभ माना है। सूर्य तृतीय भाव में बैठकर बल पराक्रम की वृद्धि करेगा तो शनि कालपुरुष का भाग्येश होने से भाग्यवृद्धि में सहायक होगा। मतान्तर से सूर्य अकेला ही बल पराक्रम तथा सत्तालाभ व राज सम्मान देने में सक्षम है।

25.21 **राहोर्दशा विपाकेतु विक्रमस्थो बुधोयदि**
धैर्यहीनो भवेत् ज़ात ईति जातक कोविदाः (II: 12: 26)

राहु की दशा में, राहु के साथ तृतीय भाव में बैठे बुध और शनि की युति के कारण, जातक धैर्यहीन, अधीर व भीरु होगा।

(बुध+शनि+राहु) 3H = राहु की दशा में जातक कायर व अधीर हो

डॉक्टर रमन ने इस श्लोक में पिछले श्लोक से पृथक कर लिखा है कि तृतीय भाव में बुध होने पर राहु की दशा में जातक डरपोक या कायर होता है।

टिप्पणी–तृतीय भाव में क्रूर ग्रह शनि, मंगल, राहु बहुधा शुभ परिणाम देते हैं तो शुभ ग्रह तृतीयस्थ होकर जातक को आलसी, दीर्घ सूत्री व अकर्मण्य बनाते हैं। बुध का तीसरे भाव में बैठना जातक को बुद्धिहीन, डरपोक व शीघ्र घबरा जाने वाला बनाएगा।

25.22 डॉ० बी.वी. रमण ने इन ग्रहों का प्रभाव जानने के लिए उपयोगी तालिका बनाई है। वही तालिका नीचे दी जा रही है।

ग्रहो का परस्पर दृष्टि युति सम्बन्ध	उत्कृष्ट फल	सामान्य फल
(गुरु+शुक्र) वृश्चिक राशि में	शुक्र की दशा में राजयोग	–
(सूर्य+बुध) की युति	बुध की दशा में	सूर्य की दशा
(चन्द्रमा+मंगल) की दृष्टि युति	चंद्र–मंगल	मंगल–चंद्र
(गुरु+शनि) की दृष्टि युति	शनि	गुरु
(गुरु+मंगल) की दृष्टि युति	मंगल	गुरु
(गुरु+चन्द्रमा) की दृष्टि युति	चन्द्रमा	गुरु
(बुध+गुरु+शुक्र) दृष्टि युति	शुक्र	बुध सामान्य
(सूर्य+अन्य ग्रह) की युति	सूर्य	अन्य ग्रह
(राहु+सूर्य+शनि) 3H	राहु	राहु भीरूता
(बुध) 3H	राहु	भीरूता

25.23 स्वंय जातक की मृत्यु

(i) अष्टमेश यदि षष्ठस्थ हो तो अष्टमेश की दशा में षष्ठेश की भुक्ति मृत्युप्रद है।

(8L) 6H=8L में 6L की भुक्ति

(8L) 8H=8L में 8L की भुक्ति

(8L) 12=8Lमें 12L की भुक्ति मृत्युप्रद जानें।

25.24

ग्रह दृष्टि युति	परिणाम
(i) (10L+3L)की दृष्टि युति	10L की दशा सामान्य शुभ 3L की दशा उत्कृष्ट या अति शुभ
(ii) (5L) 5H, (7L) 7H; (9L) 9H	(क) 5L की दशा में 7L या 9L की भुक्ति (ख) 7L में 5L या 9L की भुक्ति (ग) 9L में 5L या 9L की भुक्ति गंगा स्नान का पुण्य देगी।
(iii) (1L) 7H (9L) 7H	IL की दशा में पुरुषार्थ से धन लाभ 9L की दशा में पुरुषार्थ से धन प्राप्ति (सप्तम भाव या लग्न में बैठे ग्रह की दशा भुक्ति पुरुषार्थ से धन लाभ देती है-डॉ०रमण

पिता की मृत्यु कब?

(1) राहु केतु, शनि की महादशा में सूर्य की भुक्ति में मृत्यु सम्भव।

(1ब) राहु की महादशा में राहु, शनि, केतु, सूर्य की मंगल, शनि या राहु की भुक्ति में मृत्यु सम्भव ·

(2) केतु की दशा में सूर्य, मंगल, शनि या राहु की भुक्ति में मृत्यु सम्भव।

(3) मंगल की दशा में राहु, केतु, शनि या सूर्य भुक्ति में मृत्यु होना सम्भव।

(4) शनि की दशा में राहु, सूर्य मंगल या केतु की भुक्ति में मृत्यु होना सम्भव

(5) मंगल की दशा समाप्त होने पर राहु की दशा के आरम्भ में मृत्यु होना सम्भव।

(6) क्रूर ग्रह की दशा में राहु की भुक्ति में पिता की मृत्यु सम्भव है।

अध्याय - 26

सामान्य योग

26.1 यदि कोई भावेश, भाव सम्बन्धी कारक के साथ युति करे तो भाव की वृद्धि जानें। उदाहरण के लिए द्वितीयेश की युति धन के नैसर्गिक कारक गुरु के साथ होने पर जातक धनवान होगा। इसी प्रकार:-

3 L+ मंगल = जातक बली,पराक्रमी व भाइयों का सुख पाने वाला
4 L+ चन्द्रमा= जातक को माता से स्नेह व सुख हो
5 L+ गुरु = जातक विद्वान तथा सन्तान सुखी हो
7 L+ शुक्र = पत्नी सुन्दर, सुशील व सुख बढ़ाने वाली हो
8 L+ शनि = जातक दीर्घायु हो
9 L+ सूर्य = जातक भाग्यशाली व प्रतिष्ठित पिता का पुत्र हो
10L+ बुध = जातक व्यापार कुशल हो
11 L+ गुरु = जातक धन व यश पाए

26.2 **तृतीयेश, अष्टमेश व लाभेश दोष युक्त होने से** अपनी दशा भुक्ति में **चिन्ता व परेशानी** दिया करते हैं। इसके विपरीत त्रिकोण भाव के स्वामी अर्थात पंचमेश, नवमेश प्राय: शुभ फल दिया करते हैं। डॉ०बी.वी. रमण ने अष्टमेश की अपेक्षा षष्ठेश को अधिक पापी माना है। लाभस्थ ग्रह तथा लाभेश की दशा अर्न्तदशा निश्चय ही लाभ व आय की वृद्धि करती है।

26.3 **गुरु अशुभ नहीं**–गुरु तृतीयेश, षष्ठेश व अष्टमेश होकर यदि अष्टम भाव में स्थित हो तब भी शुभ फल दिया करता है।

टिप्पणी–तृतीय व षष्ठ भाव उपचय भाव है जो धन की वृद्धि करते हैं। पुन: गुरु धन का नैसर्गिक कारक है। अत: तुला लग्न जातक के लिए 3L-6L गुरु प्राय: शुभ परिणाम देते हैं। सिंह लग्न जातक के लिए गुरु 5L-8L होगा तो वृष लग्न के लिए गुरु 8L-11L होगा। यहाँ गुरु पंचमेश होने से शुभ है तो दूसरी स्थिति में लाभेश गुरु उपचय भाव का स्वामी होने से शुभ परिणाम देगा।

26.4 **शुक्र षष्ठ और व्यय भाव में शुभ**

शुक्र षष्ठ भाव में होने पर भी उतना ही कल्याणकारी है जितना कि द्वादश भाव में बैठा शुक्र हुआ करता है।

टिप्पणी–कालिदास ने अपनी कृति उत्तरकालामृत में इस बात की पुष्टि की है। **''षष्ठस्थो शुभ कृत् कवि''** अर्थात षष्ठ भाव में स्थित **शुक्र द्वादश भाव से दृष्टि सम्बन्ध कर सुख वैभव की वृद्धि** करता है।

26.5 **राहु भी योगप्रद** राहु यदि चतुर्थ, पंचम, दशम या एकादश भाव में हो तो शुभ व कल्याणकारी अथवा योगप्रद होता है।

26.6 **केन्द्रधिपति दोष** नैसर्गिक शुभ ग्रह चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र केन्द्र भावों के स्वामी होने पर अधिक उत्कृष्ट या शुभ फल नहीं दे पाते । इसके विपरीत पापी ग्रह सूर्य, मंगल और शनि केन्द्र के स्वामी होकर केन्द्र में बैठने से राजयोग देते हैं।

26.7 **शनि अभाव देता है**–शनि की दृष्टि जिन भावों पर पड़े वे सभी भाव तथा शनि जहाँ बैठे वह भाव दुर्बल या दोष युक्त हो जाते हैं। कारण–शनि अभाव या कमी देने वाला ग्रह है तथा अपने दृष्टि-युति सम्बन्ध से भाव सम्वन्धी कारकत्व के फल में कमी करता है।
टिप्पणी–विद्वानों ने अष्टम भाव के शनि को स्वास्थ्य व दीर्घायु देने वाला तथा दशमस्थ शनि को नौकरी के लिए उपयोगी माना है।

26.8 **शनि भी शुभ**–यदि तृतीय अथवा नवम भाव पर शनि की दृष्टि हो तो ये भाव बली हो जाते हैं। ऐसा जातक **परिश्रमी तथा वेदान्त का ज्ञाता** होता है।

(A) तृतीय भाव पर दृष्टि के लिए शनि लग्न, षष्ठ या नवम भाव में स्थित होगा। ऐसा जातक सरल चित्त सादगी पसन्द, रोग युक्त तथा वैरागी या अनासक्त होगा।

(B) नवम भाव पर दृष्टि के लिए शनि व्यय भाव में, तृतीय भाव में या सप्तम भाव में होगा। ऐसा व्यक्ति सुख सुविधा में आदर वुद्धि न रखकर सादगीपूर्ण जीवन वाला, शान्तिप्रिय तथा काम सुख से विमुख अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाला होगा। निश्चय ही वह वीतरागी हुआ करता है।

(A)

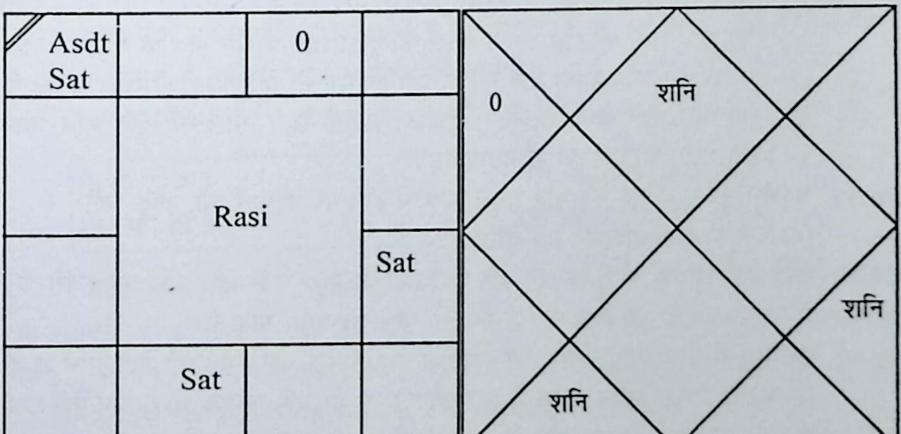

0 शनि की दृष्टि जानें।

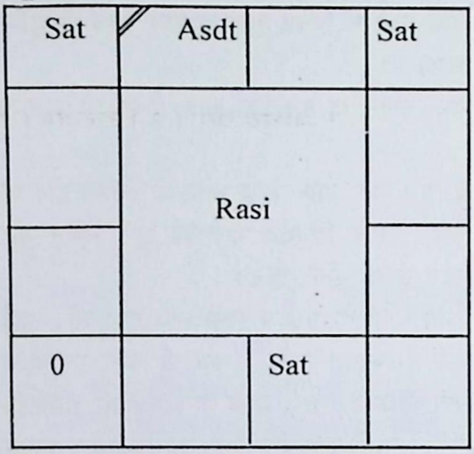

(B)

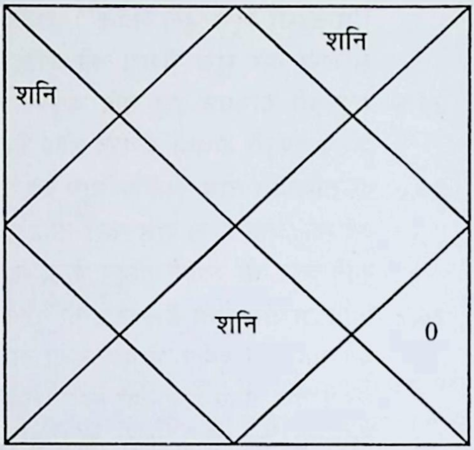

(0 शनि द्वारा दृष्टभाव)

26.9 यदि जातक का जन्म कृष्ण पक्ष की दशमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि के बीच, पक्ष बल से हीन चन्द्रमा में हुआ हो तो वह पराश्रित और मन्दबुद्धि होता है। इसके विपरीत शुक्ल पक्ष की दशमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक पक्ष बली चन्द्रमा के समय जन्मपाने वाला व्यक्ति बुद्धिमान, गुणी तथा धनी होता है। ध्यान रहे, ज्योतिष शास्त्र में हीन बली व पाप पीड़ित चन्द्रमा को अशुभ माना जाता है। चन्द्रमा लग्न होने से जातक के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। हीन बली चन्द्रमा जातक के तन, मन और धन पर प्रतिकूल प्रभाव देगा।

26.10. **चन्द्र मंगल योग**–(*i*) यदि चन्द्रमा और मंगल की युति लग्न या अष्टम भाव में हो तो जातक भाग्यशाली होता है।

(*ii*) मंगल की चतुर्थेश के साथ युति जातक को भू सम्पदा देती है।
ध्यान रहे, लग्नस्थ मंगल चतुर्थ दृष्टि से सुख स्थान को देखेगा तथा भू सम्पदा बढ़ाएगा। इसी प्रकार अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ व धन भाव पर पड़ने से लाभ व धन की वृद्धि होगी। भाव कारक और भावेश की युति भाव की वृद्धि करती है, यह बात पहले कही जा चुकी है। अत: 4L के साथ मंगल की युति भूमि भवन का सुख निश्चित रूप से बढ़ाएगी।

26.11 चतुर्थेश के साथ गुरु की युति चतुर्थ भाव में होने पर पशुधन की वृद्धि जानें।
(4L+ गुरु) 4H= पशुधन की वृद्धि

26.12 कोई भाव, भावेश या कारक ग्रह यदि पापी ग्रहों के मध्य में स्थित अर्थात पापकर्तरी योग में हो तो जातक उस भाव के सम्बन्ध से सुख की कमी पाता है।
उदाहरण के लिए यदि पंचम भाव, पंचमेश तथा कारक बुध–तीनों ही पापकर्तरी में हो तो जातक **शिक्षा प्राप्त करने में असफल** रहता है। यदि सप्तम भाव, सप्तमेश तथा कारक शुक्र तीनों ही पाप ग्रहों के मध्य में हो अर्थात इनके आगे पीछे वाले भाव पाप ग्रह से युक्त हो तो जातक दाम्पत्य सुख से वंचित रहता है।

26.13 (*i*) **लाभ व्याधिपत्योश्च सम्बन्धों योगदो भवेत्।**

लाभेश और व्ययेश का परस्पर दृष्टि–युति सम्बन्ध योगप्रद होता है। ऐसा जातक धन वैभव सम्पन्न, उदार और परोपकारी होता है। **(11L +/ 12 L) = धनी परोपकारी**

(*ii*) **लाभधिपस् तृतीये वा व्यये वा योगदो भवेत् ॥ 3॥**

लाभेश यदि तीसरे स्थान में हो या व्यय भाव में हो तब भी शुभ फलदायक अर्थात योगप्रद होता है। **(11L) 11H/12H = धनी, मानी**

टिप्पणी–(*i*) व्ययेश प्राय: स्थानान्तर का फल देता है। **व्ययेश का लाभेश से दृष्टि युति सम्बन्ध** व्ययेश को लाभ देने वाला या **आय की वृद्धि** करने वाला बनाएगा।

(*ii*) तृतीय भाव उपचय स्थान के साथ लाभ स्थान का त्रिकोण भाव भी है। अत: लाभेश का तृतीयस्थ होना भाग्यवृद्धि में सहायक होगा।

26.14 नवमेश या भाग्येश अष्टम भाव में स्थित होने पर बहुत शुभ फल नहीं दे पाता–बल्कि साधारण फल दिया करता है।

(9L) 8H = भाग्य में कमी।

26.15 (*i*) षष्ठ भाव में बैठा चन्द्रमा जातक को तीक्ष्ण बुद्धि और विद्वान बनाता है। कारण–षष्ठ भाव उपचय या वृद्धि का भाव तथा चन्द्रमा बहुत तेज़ी से पक्षवल प्राप्त करता है। अत: षष्ठस्थ चन्द्रमा जातक को स्वाध्याय में रुचि देकर विद्वान बनाएगा। **(चन्द्रमा) 6H = तीक्ष्ण बुद्धि**

(*ii*) चन्द्रमा द्वितीय भाव में होने से जातक के नेत्र चंचल होते हैं। ध्यान रहे, विद्वानों ने दूसरे भाव और द्वादश भाव को नेत्र माना है। चन्द्रमा शीघ्र गति से चलने वाला ग्रह है। इसका नेत्र भाव से सम्बन्ध नेत्रों को चंचलता प्रदान करेगा।

26.16 **भचक्र की राशियाँ** मेष से गणना करने पर क्रमश: विषम और सम जानें। ध्यान रहे, विषम राशियाँ पुरुष तो सम राशियाँ स्त्री संज्ञक है। इसी प्रकार चन्द्रमा और शुक्र स्त्री ग्रह सम राशियों में अधिक बली व प्रभावी होते हैं तो सूर्य मंगल गुरु पुरुष ग्रह विषम राशियों में अधिक बली व शुभ मानें जाते हैं।

गर्भस्थ शिशु पुत्र है या पुत्री, यह जानने के लिए स्त्री पुरुष व राशि का उपयोग होता है।

विषम राशियाँ	1 3 5 7 9 11	पुरुष ग्रह सूर्य, मंगल, गुरु
सम राशियाँ	2 4 6 8 10 12	स्त्री ग्रह चन्द्रमा और शुक्र

नोट:–बुध और शनि नपुंसक ग्रह यदि विषम राशि में हो तो इन्हें पुरुष ग्रह माने। यदि ये ग्रह समराशि में हो तो इन्हें स्त्री ग्रह मानें। ओज युग्म बल के लिए मात्र चन्द्रमा और शुक्र स्त्री ग्रह होने से सम राशि व सम नवांश में 15–15 विरूप बल पाते हैं। अन्य सभी ग्रह बुध और शनि भी विषम राशि व विषम नवांश में ओज युग्म बल प्राप्त करते हैं।

अध्याय - 27

ग्रह मालिका योग

जिस प्रकार माला में विभिन्न रंग के पुष्प या मोती पिरोकर माला तैयार की जाती है। वह सुन्दर माला जिस गले में पड़े उसको गौरव प्रदान करती है, कुछ ऐसी ही बात नव ग्रहों के सम्बन्ध में है। पुन: यहाँ तो जिस भाव के आगे पीछे चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र सरीखे शुभ ग्रह हो अथवा शुभ ग्रह जिस भाव में बैठे वह भाव निश्चय ही उत्कृष्ट फल देता है।

27.1 **लग्नादि वाण संख्याक राशिगा नवखेचरा।**
स्थिताश्च एत पंच खेटाख्य मालिकायोगा उच्यते ॥ (14 :I)

लग्न से पंचम भाव तक यदि सभी भाव ग्रह युक्त हो तो इसे **पंच ग्रह मालिका** योग कहते हैं।

टिप्पणी–विज्ञ पाठक जानते हैं कि लग्न सुन्दर रंग रूप, स्वास्थ्य, आकर्षक व्यक्तित्व व सद्गुणों का कारक है तो द्वितीय भाव धन, वाणी और कुटुम्ब का भाव है। तृतीय भाव बल, पराक्रम, साहस, शौर्य व भाई बहन से प्राप्त सुख तो चतुर्थ भाव माता, मन, मकान व मोटर गाड़ी को दर्शाता है। पंचम भाव विद्या बुद्धि, देवोपासना, मित्र, अभिरुची व मनोरंजन का भाव है। यदि उक्त सभी भाव ग्रहों की युति से बली हो जाएँ तो जातक धनी, मानी, पराक्रमी भू-सम्पदा से लाभ पाने वाला, निष्ठावान मित्र व आज्ञाकारी सन्तान का सुख पाने वाला विद्वान व्यक्ति होगा, इसमें भला क्या सन्देह हो सकता है?

27.2 यदि लग्न से षष्ठ भाव तक सभी भावों में ग्रह स्थित हो तथा 1H से 6H तक सभी भाव ग्रहों से युक्त हो तो **षटमालिका योग** जानें। ऐसा व्यक्ति धनी, मानी, पराक्रमी होने के साथ शत्रु पर विजय पाने वाला अद्भुत योद्धा होता है। कोई जातक ननसाल, मामा, मौसी आदि का उत्तम सुख भी पाता है।

27.3 यदि लग्न से आरम्भ कर सप्तम भाव पर्यन्त सभी भाव ग्रहों से युक्त हो तो इसे **सप्तमालिका योग** कहते हैं। इस योग में जातक धनी, मानी, पराक्रमी, मित्रों और भाइयों से स्नेह व सम्मान पाने वाला तो होता ही है, इसके अतिरिक्त उसकी **पत्नी भी सुन्दर, सुशील और गुणी होने से उसका दाम्पत्य जीवन बहुत सुखी** होता है।

27.4 यदि लग्न से आरम्भ कर अष्टम भाव पर्यन्त सभी भाव ग्रहों से युक्त हो तो जातक में ऊपर लिखी विशेषताओं के साथ दीर्घायु पाने का गुण भी होगा। कारण अष्टम भाव आयुष्य का भाव जो शायद सर्वाधिक महत्वपूर्ण भी है। यदि जीवन ही न रहा तो सारे योग और गुण निरर्थक हो जाते हैं।

27.5 लग्न से नवम भाव पर्यन्त सभी भाव ग्रहों से युक्त हो तो यह **नवमालिका योग** बनता है। ऐसा जातक सुन्दर, स्वस्थ, धनी, पराक्रमी, भूमि भवन और वाहन युक्त, मित्र व सन्तान का सुख पाने वाला, शत्रुजयी, श्रेष्ठ दाम्पत्य जीवन वाला, दीर्घायु होने के साथ **धार्मिक प्रकृति का भाग्यशाली व्यक्ति** होता है। उसका पिता प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

टिप्पणी–(*i*) कुछ विद्वान पंचमालिका का अर्थ मात्र 5 ग्रह 5 भावों में, षष्ठमालिका 6 भाव में 6 ग्रह, सप्तमालिका में 7 ग्रह 7 भावों में, अष्टमालिका 8 ग्रह 8 भावों में तो नव मालिका का अर्थ नौ ग्रह नौ भावों में करते हैं।

(*ii*) उनका विचार है कि न तो बीच का कोई भाव ग्रह शून्य हो तथा न ही किसी भी भाव में एक से अधिक ग्रह हो

(*iii*) अन्य विद्वान 'ग्रह मालिका योग' में ग्रह और भावों के परस्पर सम्बन्ध को अधिक महत्व देते हैं। यदि किसी भाव में दो ग्रह हो तो वह अधिक परिणाम देगा। यथा गुरु, चंद्र, सूर्य, मंगल, बुध-आदित्य, गुरु-मंगल, गुरु-शनि योग आदि।

(*iv*) यदि एक भाव में एक ग्रह के तर्क को मानें तो गुरु शनि या शनि राहु का गोचर एक राशि में होने पर कम-से-कम एक वर्ष में पैदा होने वाले सभी बच्चे ग्रह मालिका योग से वंचित रहेंगे। यह बात अनुचित जान पड़ती है।

27.6 कुछ लोग ग्रह मालिका योग में वार क्रम अर्थात सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु की शर्त (Condition) लगाते हैं। यह स्थिति असम्भव जान पड़ती है। कारण बुध सूर्य से 24 अंश तो शुक्र 48 अंश से अधिक दूरी पर कभी नहीं जा पाता।

27.7 6, 7, 8, या 9 ग्रहों की मालिका से जो योग बने वे सभी योग प्रद हैं।

27.8 जिस जातक के लग्न से पंचम भाव तक अर्थात पहले पांच भाव ग्रह युक्त हो तो ऐसे जातक को **भाग्यशाली** समझना चाहिए।

भाव सम्बन्धी दशा फल

27.9 सम राशि (2, 4, 6, 8, 10, 12 वीं राशि) में बैठे ग्रह पहले अपनी मूल त्रिकोण राशि का फल तथा बाद में अपनी अन्य राशि का फल दिया करते हैं।

टिप्पणी–पश्चिमी विद्वान मूल त्रिकोण राशि को धनात्मक या Positive Sign मानते हैं। इस राशि का निश्चय ही विशेष महत्व है। यदि किसी ग्रह की मूल त्रिकोण राशि शुभ स्थान में हो तो अन्य राशि अशुभ स्थान में हो तो उसे शुभ ही मानना चाहिए।

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मूल त्रिकोण राशि	5	2	1	6	9	7	11
साधारण राशि	5	4	8	3	12	2	10

27.10 **विषम राशि** (1, 3, 5, 7, 9, 11 वीं राशि) **में बैठे ग्रह** पहले अपनी साधारण राशि का फल देते हैं किन्तु **बाद में अपनी मूल त्रिकोण राशि का फल** देते हैं।

टिप्पणी—ऐसा प्रतीत होता है मानो रामानुजाचार्य दशा फल को दो भागों में बाँट कर यह कहना चाहते हैं कि कोई ग्रह उन दोनों भावों का फल देगा जिनका वह स्वामी है या जिन भावों में उस ग्रह की राशि पड़ी है। सम राशिस्थ ग्रह दशकाल के पूर्वार्ध में अपनी मूल त्रिकोण राशि वाले भाव का फल देगा तथा उत्तरार्ध में उस भाव का फल देगा, जहाँ दशानाथ की साधारण राशि हो इसके विपरीत, विषम राशि में बैठा कोई ग्रह अपनी दशा अवधि के पूर्वार्ध में उस भाव का फल देगा, जहाँ उसकी सामान्य राशि है। किन्तु विषम राशि में बैठा दशानाथ ग्रह अपनी दशा के उत्तरार्ध भाग में मूल त्रिकोण राशि वाले भाव सम्बन्धी फल प्रदान करेगा।

सूर्य से दूरी का ग्रहों की गति पर प्रभाव:

27.11 (*i*) सूर्य से द्वितीय भाव में स्थित ग्रह शीघ्र गति से (Fast speed) चलता है।

(*ii*) सूर्य से तृतीय भाव में स्थिति ग्रह सामान्य (Average) गति से चलता है।

(*iii*) सूर्य से चतुर्थ भाव में स्थित ग्रह मन्द (Slow) गति से चलता है।

(*iv*) सूर्य से पंचम और षष्ठ भाव में ग्रह थोड़े वक्री (Retugrade) (अनुवक्री) हो जाते हैं।

(*v*) सूर्य से सप्तम और अष्टम भाव में ग्रह बहुत वक्री (Retrogrede) होते हैं।

(*vi*) सूर्य से नवम और दशम भाव में ग्रह कुटिल गति कहलाता है।

(*vii*) सूर्य से एकादश और द्वादश भात्र में ग्रह अतिचारी (Abnormal speed) गति से चलता है।

Sun	Fast	Average	Slow
Very fast	Rasi		retrograte
Very fast			retrograte
Mischie-vous	Mis	retro	retro

परिशिष्ट-1

ग्रहों का राशि आधिपत्य व राशि मैत्री विचार

ग्रह

राशि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
1. मेष	उच्च राशि	सम	स्वराशि मूल त्रिकोण	सम	मित्र	सम	नीचराशि शत्रु	शत्रु	मित्र
2. वृष	शत्रु	उच्चराशि मूल त्रिकोण	शत्रु	मित्र	शत्रु	स्वराशि	मित्र	उच्च राशि मित्र	नीच-राशि
3. मिथुन	सम	मित्र	शत्रु	स्वराशि	शत्रु	मित्र	मित्र	मूल त्रिकोण	शत्रु
4. कर्क	मित्र	स्वराशि	नीच राशि मित्र	शत्रु	उच्च राशि मित्र	शत्रु	शत्रु	मूल त्रिकोण	मित्र
5. सिंह	मूल त्रिकोण और स्वराशि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
6. कन्या	सम	मित्र	शत्रु	उच्च-राशि स्वराशि	शत्रु	नीच राशि मित्र	मित्र	स्वराशि	शत्रु
7. तुला	शत्रु व नीच	शत्रु	सम	मित्र	सम	स्वराशि	मूल-त्रिकोण उच्च मित्र	मित्र	मित्र
8. वृश्चिक	मित्र	नीच राशि सम	स्वराशि	सम	मित्र	सम	शत्रु	नीच राशि शत्रु	उच्च-राशि
9. धनु	मित्र	सम	मित्र	सम	मूल त्रिकोण स्वराशि	शत्रु	सम	सम	मूल त्रिकोण
10. मकर	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम, नीच	मित्र	स्वराशि	मित्र	मूल त्रिकोण
11. कुम्भ	शत्रु	सम	उच्च-राशि शत्रु	सम	सम	मित्र	मूलत्रि-कोण स्वराशि	मित्र	शत्रु
12. मीन	मित्र	सम	मित्र	सम नीच राशि	स्वराशि	उच्च-राशि शत्रु	सम	सम	स्वराशि

नाभस योग

| आश्रय योग (3) दलयोग (2) आकृति योग (20) तथा संख्या योग (7) होने से कुल 32 योग होते हैं। महर्षि पाराशर ने इन योगों को महत्वपूर्ण माना है। |

आश्रय योग (तीन)

1. रज्जु योग–सभी ग्रह यदि चर राशियों में स्थित हो तो रज्जु योग होता है। ऐसा जातक चंचल मन या व्यग्र बुद्धि, सुन्दर, स्वस्थ व भ्रमण प्रिय होता है। कोई जातक क्रूर व दुष्ट स्वभाव तथा परदेश में जाकर बसने वाला होता है।

2. मूसल योग–जन्म के समय सभी ग्रह यदि स्थिर राशियों में हो तो मूसल योग होता है। ऐसा जातक धन, मान, वैभव युक्त, स्थिर बुद्धि, विद्वान होता है। वह प्रशासन के उच्च-अधिकारियों से स्नेह व सम्मान पाने वाला उनका कृपा-पात्र होता है।

3. नल योग–जन्म के समय यदि सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियों में हो तो नल योग होता है। ऐसा जातक व्यवहार कुशल, बन्धु-बान्धवों का प्रेमी, हँसमुख, मिलनसार, धन संचय में कुशल, अपने कार्यक्षेत्र में सुदक्ष तथा विद्वान होता है। मतान्तर से कोई जातक हीनांग या अधिक अंग होना भी सम्भव है।

दल योग (दो)

4. माला योग–सभी शुभ ग्रह (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र) यदि तीन केन्द्र स्थान में और पाप ग्रह केन्द्र को छोड़कर अन्यत्र हो तो माला योग होता है। ऐसा जातक धन-धान्य व सुविधा सम्पन्न सुखी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। वह राजा सरीखा प्रतापी, धनी और वैभव सम्पन्न होता है।

5. सर्प योग–सभी पाप ग्रह (मंगल, शनि, राहु, केतु) किन्हीं तीन केन्द्र स्थान में हो तथा शुक्र ग्रह केन्द्र में न होकर अन्यत्र हो तो सर्प योग होता है। ऐसा जातक कुटिल हृदय, दुष्ट, दीन दु:खी व पराश्रित होता है।

टिप्पणी

अनेक विद्वानों ने लग्न व दशम भाव के सूर्य को शुभ ग्रह माना है तो कुछ लोग सूर्य को मात्र सप्तम भाव में अशुभ व अन्य तीन केन्द्रों में शुभ मानते हैं।

कुछ विद्वान केन्द्र, त्रिकोण, धन तथा लाभ स्थान के स्वामी ग्रह को शुभ तो त्रिक भाव (6,8,12) से सम्बन्ध करने वाले ग्रह या त्रिषडाय के स्वायी ग्रह को भी अशुभ ग्रह मानते हैं।

आकृति योग (बीस)

6. गदा योग–आसन्नवर्ती दो केन्द्र स्थानों में सभी शुभाशुभ ग्रह होने पर गदा योग होता है। *(i)* लग्न व चतुर्थ भाव *(ii)* चतुर्थ व सप्तम भाव *(iii)* सप्तम व दशम भाव *(iv)* दशम व लग्न भाव ये चारों आसन्नवर्ती केन्द्र स्थान कहलाते हैं। गदा योग में उत्पन्न जातक कर्मठ, सतत प्रयत्नशील, परिश्रमी, विद्या-बुद्धि सम्पन्न, कलाप्रेमी, धनी मानी व यशस्वी होता है। कोई जातक शास्त्र व गान विद्या में प्रवीण तथा स्वर्ण रत्नों से परिपूर्ण होता है।

7. शकट योग–सभी ग्रह यदि लग्न व सप्तम भाव में स्थित हो तो शकट योग बनता है। ऐसा जातक कुत्सित मूर्ख, रोग पीड़ित, निर्धन तथा मित्र-आत्मीयजनों के सुख से वंचित होता है। ऐसा जातक घर-परिवार से दूर ट्रक आदि चलाकर जीवन निर्वाह करने वाला होता है।

8. विहग या पक्षी योग–चतुर्थ व दशम भाव में सभी ग्रह होने से विहग या पक्षी योग बनता है। ऐसा जातक भ्रमण या पर्यटन प्रेमी, दूतकार्य करने वाला, धृष्ट तो कभी विवाद प्रिय या झगड़ालू होता है। पक्षी सरीखा खुले आकाश में उड़ना उसे अच्छा लगता है। एक स्थान पर एकाग्रचित्त होकर बैठ पाना उसे असम्भव ज्ञान पड़ता है।

9. श्रृंगाटक योग–सभी ग्रह लग्न, पंचम व भाग्य स्थान में हो तो श्रृंगाटक योग होता है। ऐसा जातक बुद्धिमान, पराक्रमी, राजप्रिय, सुन्दर स्त्री वाला, धनी व यशस्वी होता है। कोई जातक पत्नी व प्रियजन से द्वेष या कलह-क्लेश करने वाला होता है।

10. हलयोग–लग्न से अन्यत्र बने त्रिकोण (2, 6, 10 भाव; 3, 7, 11 भाव या 4, 8, 12 भाव) में स्थित सभी ग्रह हल योग बनाते हैं। हल योग में जन्मा जातक मित्र व बन्धुओं का सुख पाने वाला तो कभी दीन, दु:खी, उद्विग्न व दासवृत्ति से आजीविका पाने वाला होता है।

11. वज्र योग–यदि शुभ ग्रह लग्न व सप्तम भाव में तथा पाप ग्रह चतुर्थ व दशम भाव में हो तो वज्र योग होता है। ऐसा जातक बाल्य और वृद्धावस्था में सुखी, पराक्रमी व सुन्दर होता है। जीवन की मध्य अवस्था में कोई जातक दुष्ट, भाग्यहीन तथा समाज विरोधी कार्यों में रुचि लेने वाला होता है।

12. यव योग–यदि लग्न व सप्तम भाव में पाप ग्रह और चतुर्थ व दशम भाव में शुभ ग्रह हो तो यव योग होता है। ऐसा जातक धर्म कार्य व व्रत उपवास में रुचि लेने वाला, धनी-मानी व परोपकारी होता है। वह स्त्री व पुत्र का श्रेष्ठ सुख पाने वाला स्थिर बुद्धि होता है।

13. कमल योग–यदि सभी ग्रह चार केन्द्र स्थानों में हो तो कमल योग होता है। ऐसा जातक धन वैभव सम्पन्न ऐश्वर्यशाली, दानी, परोपकारी, गुणी विद्वान व दीर्घायु होता है। वह अनेक सत्कर्म करने से यश व प्रतिष्ठा पाता है।

14. वापी योग–सभी ग्रह केन्द्र को छोड़कर पणफर या आपोक्लिम भाव में हो तो वापी योग होता है। ऐसा जातक गुणी विद्वान, कलाप्रेमी तथा धन उपार्जन में सुदक्ष होता है। उसका धन व सुख प्राय: स्थिर व स्थायी होता है।

15. यूप योग–सभी ग्रह यदि लग्न से चतुर्थ भाव तक चार भावों में हो तो यूप योग होता है। ऐसा जातक धार्मिक प्रवृति, व्रत-उपवास तथा यम-नियम का पालन करने वाला, धार्मिक अनुष्ठान में संलग्न, आत्मज्ञानी या अध्यात्मवादी होता है।

16. शर योग–चतुर्थ से सप्तम भाव तक सभी ग्रह इन चार स्थानों में होने से शर योग होता है। ऐसा जातक शस्त्रास्त्र के प्रयोग में दक्ष, सैनिक, सिपाही या सुरक्षाकर्मी होता है। कोई जातक कारागार अधीक्षक या हिंसा अथवा आखेट से धन पाने वाला होता है।

17. शक्ति योग–सप्तम में दशम भाव तक सभी शुभाशुभ ग्रह होने से शक्ति योग होता है। ऐसा जातक स्थिर बुद्धि, संघर्ष व स्पर्धा प्रेमी तथा सुन्दर, गुणी व दीर्घायु होता है। लग्नेश यदि पाप पीड़ित हो तो जातक निर्धन, आलसी, असफलताओं के कारण दु:खी व निराश होता है।

18. दंड योग—दशम भाव से लग्न पर्यन्त चार भावों में सभी ग्रह स्थित होने से दंड योग होता है। ऐसा जातक आत्मीयजन से बहिष्कृत, स्त्री व पुत्र से हीन, निर्धन, निर्दयी, नीच व दासवृत्ति वाला होता है।

19. नौका योग—लग्न से सप्तम भाव पर्यन्त सभी ग्रह इन सात राशियों में होने से नौका योग होता है। ऐसा जातक समुद्र या जलसम्बन्धी कार्यों से आजीविका पाने वाला, प्रसिद्ध व्यापारी या आयातकर्ता धनी व यशस्वी होता है। कोई जातक पाप ग्रह अधिक बली होने से दुष्ट, लोभी, स्वार्थी, कृपण व करवंचक या टैक्स की चोरी करने वाला होता है।

20. कूट योग—चतुर्थ से सात राशियों में अर्थात दशम भाव पर्यन्त सभी ग्रह होने से कूट योग होता है। ऐसा जातक पर्वत व दुर्ग में रहने वाला, कारागार का अध्यक्ष, क्रूर व पराक्रमी होता है। कोई जातक शठ, असत्यभाषी की व अकिंचन या मन्दभागी होता है।

21. छत्र योग—सप्तम से लग्न पर्यन्त सात भावों में सभी ग्रह होने से छत्र योग होता है। ऐसा जातक अपने आश्रितजन का भरण-पोषण करने वाला, दयालु, परोपकारी, बुद्धिमान तथा वरिष्ठ अधिकारी व नेताओं का कृपा-पात्र होता है। उसकी वृद्धावस्था व बचपन बहुत सुख सम्पन्न होते हैं।

22. चाप योग—दशम भाव से चतुर्थ भाव तक सात राशियों में सभी ग्रह होने पर चाप योग बनता है। ऐसा व्यक्ति असत्य भाषी, प्रपंच प्रिय, धूर्त, चोर या कारागृह का अध्यक्ष होता है। उसके जीवन का मध्य भाग धन-वैभव सम्पन्न व बहुत सुखी होता है।

23. अर्धचंद्र योग—केन्द्र स्थान को छोड़कर पणफर या आपोक्लिम अर्थात 2 से 8 भाव, 3 से 9 भाव, 5 से 11 भाव, 6 से 12 भाव, 8 से 2 भाव, 9 से 3 भाव 11 से 5वें भाव या 12वें से 6वें भाव तक सभी ग्रह होने से अर्धचंद्र योग बनता है। ऐसा जातक सुन्दर, स्वस्थ, साहसी, पराक्रमी, राजा का स्नेहभाजन, धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। वह राजा व प्रजा से सम्मान व यश पाता है।

24. चक्र योग—लग्न से एकान्तर भाव अर्थात 1, 3, 5, 7, 9, 11वें भाव में सभी ग्रह होने पर चक्र योग होता है। ऐसा जातक धन, वैभव सम्पन्न राजा सरीखा प्रतापी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। मतान्तर से ऐसा जातक चक्रवर्ती राजा होता है। सभी धनी, मानी व्यक्ति नतमस्तक होकर उसको प्रणाम करते हैं।

25. समुद्र योग—लग्न से सम भाव अर्थात 2, 4, 6, 8, 10, 12वें भाव में सभी ग्रह होने पर समुद्र योग होता है। ऐसा जातक धनी, परोपकारी, लोकप्रिय, साधु स्वभाव, धन, वैभव सम्पन्न व पुत्र, मित्र का श्रेष्ठ सुख पाने वाला होता है।

संख्या योग (सात)

26. गोल योग—सभी ग्रह एक ही राशि में होने पर गोल योग होता है। ऐसा जातक साहसी बलशाली, मलिन हृदय, अशिक्षित व निर्धन होता है।

27. युग योग—जन्म के समय सभी ग्रह मात्र दो राशियों में होने से युग योग बनता है। ऐसा जातक मिथ्याचारी, पाखंडी, निर्धन, माता, पुत्र व पत्नी के सुख से वंचित, धर्म विरुद्ध आचरण करने वाला तथा समाज से बहिष्कृत होता है।

28. शूलयोग—सभी ग्रह यदि किन्हीं भी तीन राशियों में हो तो शूल योग होता है। ऐसा जातक आलसी, दरिद्र, हिंसाप्रिय, उग्र स्वभाव, शूरवीर तो कभी समाज से बहिष्कृत भी होता है।

29. केदार योग—सभी ग्रह जन्म के समय किन्हीं चार राशियों में होने पर केदार योग होता है। ऐसा जातक सत्यवादी, धार्मिक, परोपकारी, कृषि या उद्योग से जीविका पाने वाला, धनी व सुखी व्यक्ति होता है।

30. पाश योग—सभी ग्रह किन्हीं भी 5 राशियों में होने से पाश योग बनता है। ऐसा जातक बात करने में कुशल, प्रपंची, आडम्बर प्रिय व कार्य कुशल होता है। उसका परिवार विशाल होता हैं वह अनेक दास--दासियों का सुख पाता है। कभी बन्धन योग की सम्भावना भी हुआ करती है।

31. दाम योग—सभी ग्रह 6 राशियों में स्थित होने पर दाम योग होता है। ऐसा जातक धीर, वीर, सत्य व न्याय का पक्षधर, पुत्र रत्नों से समृद्ध, ऐश्वर्यशाली, परोपकारी, धनी और विद्वान होता है।

32. वीणा योग—सभी ग्रह 7 राशियों में किसी भी प्रकार स्थित होने से वीणा योग होता है। ऐसा जातक गीत-संगीत व नृत्य-नाट्य प्रेमी, व्यवहार कुशल, धनी, सुखी व अनेक सेवकों वाला लोकप्रिय नेता सरीखा यशस्वी व प्रतिष्ठित होता है।

2

हं,
व

र
र

भावार्थ रत्नाकर

लेखक के अन्य प्रकाशन

1.	षड्वर्ग फलम	200.00
2.	षड्बल रहस्य	120.00
3.	ज्योतिष और रोग भाग 1, 2	350.00
4.	आजीविका विचार ज्योतिष भाग 1, 2	500.00
5.	दशाफल विचार	200.00
6.	बुद्धि विद्या विचार	225.00
7.	भावफल विचार भाग 1, 2	300.00
8.	राहु केतु	180.00
9.	ज्योतिष और दाम्पत्य जीवन	200.00
10.	सन्तान सुख विचार	150.00
11.	उत्तर कालामृत	300.00
12.	होरा शत्तक	130.00
13.	प्रशन दर्पण	120.00
14.	ज्योतिष और घटना चक्र	300.00
15.	फलित सूत्रम	
16.	अनिष्ठ ग्रह उपचार	300.00
17.	प्रशन रहस्य	120.00
18.	वास्तु शास्त्र के रहस्य भाग 1	200.00
	वास्तु शास्त्र के रहस्य भाग 2	250.00
19.	नक्षत्र विचार	250.00
20.	संज्ञा विचार	120.00
21.	ज्योतिष मे नवांश का महत्व	
22.	त्रिक भाव विचार	
23.	सत्य जातकम्	
24.	नव ग्रह और द्वादश भाव	

एल्फा पब्लिकेशन
2640, रोशनपुरा, नई सड़क,
दिल्ली-110006 ₹ 150/-